॥ ॐ श्री गणेशाय नमः॥

सुलभ सामग्री दुर्लभ प्रयोग

—: श्री गणपति प्रार्थना :—

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
भक्तार्त्तिनाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः। नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे। भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।
लम्बोदरं नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति, भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति, तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव।।

❁ प्रस्तावना ❁

आदरणीय धर्म प्रेमी भक्तजनों,

प्रस्तुत पुस्तक **"सुलभ सामग्री दुर्लभ प्रयोग"** का डिजिटल संस्करण आपके हाथों में देते हुए अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। पिछले दो वर्षों के अथाह मेहनत से इसे तैयार कर पाने में मैं सक्षम हुआ हूँ।

Honesty is the best policy. अर्थात् ईमानदारी ही सबसे अच्छी नीति है। अतः सबसे पहले मैं यह स्पष्ट कर दूं कि यह मेरी कोई स्वतंत्र रचना नहीं है। बल्कि इसके वास्तविक लेखक कोई और हैं। और वे लेखक भी कोई मूल उद्गाता अथवा खोजकर्त्ता नहीं हैं। वास्तव में इस पुस्तक का विषय–वस्तु भारतीय संस्कृति में अनादि काल से चली आ रही अपने आसपास के वस्तुओं के सुलभ तांत्रिक एवं चिकित्सीय प्रयोग की परम्पराओं से है। गाँव–देहातों में, हमारे परिवारों में जिन वस्तुओं के द्वारा छोटे–मोटे टोटके अथवा चिकित्सीय प्रयोग किए जाते हैं, उनका संकलन मात्र है। ज्ञान के मोती सर्वत्र बिखरे पड़े हैं। एक ही व्यक्ति सभी प्रयोगों को नहीं जानता। एक ही बैद्य कोई एक जड़ी–बूटी के सभी प्रयोग नहीं जानता। प्रत्येक परिवार, समाज अथवा देश की परम्परायें एवं मान्यतायें भिन्न–भिन्न होती हैं। इस पुस्तक के लेखक का प्रयास वास्तव में सराहनीय है कि उन सभी परम्पराओं का, जानकारियों का, प्रयोगों का एक जगह यथासाध्य एकत्रीकरण किया है। वास्तव में इस पुस्तक के लेखकत्रय श्री राजेश वर्मा (सोनी), श्री भरतबोधा एवं श्रीमती संतोष कुमावत जी हैं। उनका प्रयास एवं संकल्प शक्ति निश्चय ही स्तुति योग्य है कि तीनों लेखकों ने मतैक्य कर कैसे एक ही विषय पर अलग–अलग जानकारियाँ जुटाईं और जीवन की विभिन्न समस्याओं के सुलभ सामग्री से उपायों पर आधारित यह पुस्तक प्रस्तुत की।

इस पुस्तक में वर्णित सामग्री कोई अति दुर्लभ नहीं है, बल्कि हमारे घरों में एवं आसपास के वातावरण में, बाजारों में अति सहजता से उपलब्ध हो जाने वाली हैं, जैसे–हल्दी, तुलसी, रुद्राक्ष, शंख, कौड़ी, लोहे की अंगूठी इत्यादि। और प्रयोग भी कोई बहुत श्रमसाध्य नहीं है। इनमें से अधिकतर प्रयोग तो हमारे घर की नानी–दादियाँ, माँ–चाची, बड़ी– बूढ़ी करती हैं। कुछ विशेष प्रयोग तो गाँव–देहातों के अनपढ़ ओझा–गुणी और भगत भी संपन्न कर लेते हैं, जिससे उनको प्रार्थियों को लाभ पहुँचता है। हाँ, इसमें कुछ गिने–चुने प्रयोग ही श्रम साध्य हैं।

मूल पुस्तक में वस्तुओं को शीर्षक बनाकर के विभिन्न समस्याओं का, प्रयोगों का वर्णन किया गया था, जिससे कि एक ही प्रकार के समस्याओं के विभिन्न प्रयोग बिखर गए थे। जैसे रोगों से निवृत्ति के विभिन्न प्रयोग हल्दी के अध्याय में, शंख के अध्याय में, रूद्राक्ष के अध्यायों में बिखरे पड़े थे। जिससे पाठकों को, प्रयोगकर्त्ताओं को असुविधा हो

रही थी। इसका सुधार कर मैंने समस्याओं एवं कार्यों को मूल में रखा। उनका शीर्षक बनाकर उनसे संबंधित सभी प्रयोग एक जगह एकत्रित कर दिए। इससे समय की बचत भी होगी और पाठक वृन्द व्यर्थ में पेज पलटने से बच जाएगा। जैसे आकर्षण के विभिन्न प्रयोग, रोग निवृत्ति के विभिन्न प्रयोग, ग्रह शांति के विभिन्न प्रयोग लगातार आपको मिलते जाएंगें इनमें से जो भी व्यक्ति को सुलभ लगे, वह अपने विचार से कर सकता है।

इस पुस्तक की खरीदारी भी संयोग से हुई। हुआ ये था कि मैं कुछ अन्य किताबों एवं पूजन सामग्री के लिए मार्केट गया हुआ था। जो किताबें मुझे चाहिए थी, उनमें से कुछ मिले। किताबों के ढूंढने के क्रम में संयोग से यह किताब भी मेरे हाथ लग गयी। इसके विषयवस्तु को मैंने पढ़ा। बहुत ही अच्छा लगा और मैंने इसे खरीद लिया। आप लोग मन में सोच रहे होंगे कि मैंने तो धर्म, आध्यात्म, ज्योतिष इत्यादि की सैंकड़ों किताबें खरीदी हैं, फिर भला ऐसी क्या बात हो गयी कि मैं इस पुस्तक की इतनी प्रशंसा कर रहा हूँ और इसको पूरा टाइप भी कर लिया। हाँ, यह बात सही है कि यह तो मेरा कार्य क्षेत्र है और इससे संबंधित सभी पुस्तकें मुझे अच्छी लगती हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि यह पुस्तक मुझे अच्छी लगने के अलावा अन्य सामान्य जिज्ञासुओं को भी अच्छी लगी। उन लोगों को भी जो धर्म की बड़ी– बड़ी जटिलताओं से अनजान हैं अथवा उनसे भी, जिनसे भारी–भरकम मंत्र सिद्धि, यंत्र सिद्धि नहीं हो सकती। और संयोग तो देखिए कि उसके बाद आज तक यह किताब मुझे बाजार में फिर नहीं दिखा।

मेरी बहन को यह पुस्तक इतनी अच्छी लगी कि उसने इसे मुझसे मांग लिया। मैंने भी उसे सहर्ष दे दिया। लगभग एक साल तक उसके पास यह किताब रहा। इस बीच मैं इस किताब को बाजार में विभिन्न बुक स्टॉलों (पुस्तक बिक्री केंद्र) पर दुबारा खरीदने के लिए ढूंढता रहा, पर नहीं मिलना था, सो नहीं मिला। फिर मेरे मन में विचार आया कि मेरी बहन के यहाँ तो यह यूँ ही पड़ा रहेगा। इसके जनोपयोगी सामग्री से मात्र एक ही परिवार का भला होगा। पर मेरे द्वारा तो अनेक लोगों का भला होगा। उन लोगों का भी जो ज्यादा खर्च नहीं कर सकते अथवा उन लोगों का भी जो धर्म–कर्म में ज्यादा समय नहीं दे पाते। ठीक है, सदा–सदा के लिए नहीं, कुछ तो तात्कालिक तौर पर लाभ अवश्य ही मिलेगा। अतः मैंने इसे अपनी बहन से माँग लिया, इस वादे पर कि मैं इसको टाइप कर इसकी Print Copy एवं Soft Copy भी दूंगा। बस यहीं से इसको टाइप करने की प्रक्रिया चालू हुई।

टाइप करने के दौरान ही कुछ मित्रों ने इसे देख लिया और यह पुस्तक कुछ दिनों के लिए मुझसे माँग लिया। उन सभी को भी यह बहुत अच्छी लगी और इसके लिए वे मुझे दुगुनी–तिगुनी कीमत भी चुकाने को तैयार हो गए। फिर मैंने उनसे इस वादे पर किताब वापस लिया कि मैं स्वयं बाजार से खरीद कर आपको दूंगा। किंतु यह किताब नहीं मिलनी थी, सो नहीं मिली। **शायद ईश्वर ने मेरे द्वारा मानवहित एवं धर्म के कार्यों से प्रसन्न होकर ज्यादा सहयोग देने के लिए एक उपहार (Gift) के रूप में इसे प्रदान किया था।**

पुनः उन मित्रों से भी वादा करना पड़ा कि इस पुस्तक को पूर्ण रूप से टाइप हो जाने दो, इसकी soft copy के साथ एक print copy भी अपनी ओर से आपको gift दूँगा। इस प्रकार से इस पुस्तक को तैयार करने की इच्छा और भी बलवती होती गयी। और जब यह तैयार हुआ है मैं बहुत ही प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ कि इसमें बताये गए उपायों से मेरे सभी मित्र मंडली, अनुयायियों, शिष्यों और रिश्तेदारों को भी लाभ होगा। छोटी–छोटी बातों के लिए वे न तो मुझे परेशान करेंगे और न ही उनको अनपढ़, मूर्ख ओझा–गुणियों के यहाँ दौड़ लगानी पड़ेगी। **हाँ, जब समस्या बहुत विकट हो अथवा उन्हें भक्ति एवं ज्ञान की आवश्यकता हो, ये छोटे–मोटे उपाय काम न कर रहे हों और उन्हें मेरे परा ब्रह्माण्डीय ज्ञान, दिव्य शक्तियों, भक्ति एवं साधना की शक्तियों की नितांत ही आवश्यकता पड़े, तो सहर्ष स्वागत है।**

पर एक बात ध्यान से समझ लें कि इसमें बताए गए उपाय पूर्ण आध्यात्म नहीं है अथवा इनके प्रयोगों को कर के कोई यह दावा नहीं कर सकता कि वह पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुका है अथवा एक आध्यात्मिक व्यक्तित्व है। ऐसा करना और कहना उसका स्वयं के साथ छल होगा। इसमें बताये गए प्रयोग केवल टोटके हैं, जिनमें से कुछ आयुर्वेद के प्रतिपादित औषधीय ज्ञान भी हैं, जो भारत की लोक–संस्कृति में प्राचीन काल से पीढ़ी–दर–पीढ़ी चले आ रहे हैं। इनमें से बहुत सारे प्रयोग को तो आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर कसा भी नहीं जा सकता, कोई तारतम्य ही नहीं

बैठेगा। जैसे बहुत दिनों से असाध्य रोग की स्थिति में रोगी के वजन के बराबर कोयले को पानी में बहाना अथवा गोमती चक्र को चांदी में मढ़ाकर रोगी के पलंग के पाये में बांधना।

वास्तव में देखा जाए तो इनका कोई वैज्ञानिक आधार सिद्ध नहीं होता। लेकिन इन प्रयोगों को सफल होते हुए भी देखा गया है।

इनमें से सभी प्रयोगों को मैं मान्यता भी नहीं देता। मेरे तर्क की कसौटी पर खरे भी नहीं उतरते। कुछ तो घृणास्पद भी हैं और कुछ अति दुर्लभ।

इनमें से जो भी आपको सुलभ लगे और आसपास के वातावरण से सहजता से उपलब्ध हों, उन्हे ही करें। अब देखा जाए तो दक्षिणावर्त्ती नर शंख, एक मुखी या 21 मुखी गोल नेपाली रूद्राक्ष कहाँ मिलेगा? अति दुर्लभ हैं। इसी प्रकार से सिंहनी का दूध, जंगली सूअर का दाँत, सियारसिंगी, बर्फीले रिछ (भालू) का बाल कहाँ से खोजोगे? बहुत ही दुर्लभ है। अब तो कस्तूरी, गोरोचन, शुद्ध केसर, प्राकृतिक कपूर, कामया सिंदूर भी अप्राप्य ही हैं अथवा दुर्लभ तो हैं ही।

कुछ प्रयोग तो अति घृणाप्रद हैं, जिन्हें करने से स्वयं तो घिन लगेगा ही, अगर किसी को पता चल गया तो सामाजिक प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचेगी, सो अलग। अतः इन प्रयोगों को मैं न करने की ही सलाह देता हूँ।

मेरे पास किताब था, उसमें ये प्रयोग लिखे हुए थे, बस मैंने अपनी ओर से कमी नहीं की, पूरा का पूरा छाप दिया। प्रयोगों को करना या न करना, ये आपके विचार एवं समझदारी पर निर्भर करता है। एक दुकान में दवाओं के साथ विष भी बिकता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि दुकानदार दवाओं के साथ विष का भी प्रयोग कर लेता हो।

इस पुस्तक में लिखे गए प्रयोगों को संपन्न करें। स्वयं भी लाभान्वित हों और अपने मित्रों, रिश्तेदारों को भी लाभान्वित करें और धीरे–धीरे वास्तविक आध्यात्म को समझें और पूर्ण आध्यात्मिक व्यक्तित्व बनें। ऐसा ही मेरी मंगलकामना है। शुभ आशिर्वाद।

अंतिम में एक बात अवश्य कहना चाहूँगा कि जब इस पुस्तक को टाइप करने की शुरुआत की थी, तो मन बहुत ही प्रसन्न था कि सामान्य लोगों के लिए एक अनमोल उपहार पेश कर रहा हूँ। लेकिन इसके टाइपिंग का कार्य अंतिम चरण में आते–आते मन बहुत ही खिन्न हो गया। यह सोचकर कि क्या व्यक्ति का जीवन वास्तविक आध्यात्म एवं ईश्वर के प्रति निष्काम प्रेम से हटकर इन्हीं टोने–टोटकों में सिमटकर रह जाएगा। क्या मैं एक नये प्रकार के अंधविश्वास को तो बढ़ावा नहीं दे रहा? आज किसी भी समाचार के चैनल को खोलकर देख लीजिए, ज्योंही ज्योतिष से संबंधित कार्यक्रम आते हैं, ज्योतिषी य व्याख्या के अलावा बहुत सारे टोने–टोटके एवं प्रयोगों की भरमार रहती है। ये कर लीजिए,वो कर लीजिए, कैलेंडर इधर टांगिए, उधर टांगिए किस्मत चमक जाएगी। ठीक है, मैं इनसे इंकार नहीं करता हूँ। क्या किसी समस्या के निदान हेतु यही टोटके काफी हैं? बहुत सारे प्रश्न हैं। जैसे किसी बिमारी को ही लीजिए। एक व्यक्ति अनेक कारणों से बीमार पड़ सकता है। प्रत्यक्ष रूप में उसका खान–पान, जीवनशैली, दुर्घटना, प्रदूषित वातावरण, संक्रमण, दवाओं का गलत प्रयोग, सही समय पर उचित दवा न लेना इत्यादि। लेकिन इसके अलावा कुछ अप्रत्यक्ष कारण भी होते हैं, जैसे–वास्तुदोष, ग्रहों का प्रतिकूल फल, कुण्डली में स्वास्थ्य कारक ग्रहों का कमजोर स्थिति में होना, किसी के द्वारा टोना–टोटका अथवा तांत्रिक अभिचार करवा दिया जाना, स्थानदोष अथवा ऐसे जगह पर रहना जो स्वास्थ्य के लिए अनुकूल न हो, भूत–प्रेत का दोष, नित्य कलह, प्रदूषण, अवसाद, मानसिक चिंता इत्यादि। ऐसी स्थिति में रोग के वास्तविक कारणों को जानना बहुत आवश्यक है। शारीरिक रोग में दवा ही असर करेंगे। हाँ, कभी–कभी ऐसा होता है कि दवा असर नहीं करते अथवा बीमारी समझ में नहीं आती। वैसी परिस्थिति में व्यक्ति के ग्रह–नक्षत्रों, वातावरण, वास्तु इत्यादि का अध्ययन किया जाता हैं। तब यहाँ वर्णित उपाय काम में आते हैं। होम्योपैथ एवं प्राचीन आयुर्वेद बीमारी के एक अन्य कारण का भी चर्चा करते हैं, वो है हमारी मानसिक स्थिति, हमारा विचार एवं रहन–सहन। हमारे मन में अगर गंदे विचार उत्पन्न होते हैं, तो उसका असर हमारे शरीर पर भी पड़ता है। इसलिए होम्योपैथ में शारीरिक लक्षणों के अलावा मन के विचारों एवं क्रिया–कलापों का भी अध्ययन किया जाता है। इसे इस प्रकार से समझ सकते हैं – हमारे शरीर तथा मस्तिष्क की प्रकृति ने अद्‌भुत रचना बनाई है। एक–दूसरे के

क्रिया–कलापों का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। कहा भी गया है, स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन रहता है। इसी प्रकार अच्छे विचारों वाला व्यक्ति ही एक अच्छा जीवन, स्वस्थ जीवन प्राप्त कर सकता है। मनुष्य की अपनी विचारधारा का उस के शरीर पर उसी क्षण से प्रभाव पड़ता है। हमारे मस्तिष्क में कुछ विशेष प्रकार की ग्रंथियाँ हैं, जो कि हमारी विचारधारा पर प्रतिक्रिया स्वरूप उत्तेजित होकर एक विशेष प्रकार के तरल द्रव (हार्मोन्स) उत्पन्न करती हैं। उदाहरण के लिए जब हम भावुक होते हैं, तो रुदन से आँखों में आँसू उत्पन्न हो जाते हैं। जब हममें स्वादिष्ट भोजन का लोभ जागता है, तो मुँह में पानी आ जाता है। ठीक उसी प्रकार जब हम मन–मस्तिष्क को एकाग्र कर प्रभु के नाम सुमिरण में लीन हो जाते हैं, उस परम पुरुष से निष्काम प्रेम करते हैं, तो उस समय मस्तिष्क में एक विशेष प्रकार की ग्रंथियों से उत्पन्न रस, 'अमृत' होता है, जिससे व्यक्ति विशेषतः आनंदित होता है तथा व्यक्ति तेज, प्रतापी और नीरोग हो जाता है। किंतु इस के विपरीत यदि कोई मनुष्य अपना ध्यान विषय–विकारों में केंद्रित कर, उस में संलग्न रहता है, तो उस के मस्तिष्क में एक प्रकार का विष उत्पन्न होता है। जिस के विषाणुओं से शरीर असाध्य रोग से पीड़ित हो जाता है। जो व्यक्ति दिन–रात कामवासना के भावना से पीड़ित होता है, पराये स्त्री–पुरुषों के चिंतन में रत रहेगा, उसे निश्चित ही किसी न किसी प्रकार की गुप्त बीमारी अथवा कामेन्द्रिय से संबंधित बीमारी अवश्य होगी। जो बहुत ही दुर्लभ वस्तुओं की चिंता करेगा अथवा असाध्य को साधने के लिए सोचेगा, वह निश्चित ही टीबी (क्षय रोग) की बीमारी से ग्रसित होगा। जिसे अपने धन के सुरक्षा की चिंता ज्यादा सताएगी अथवा किसी अनजान शत्रु के प्रति सशंकति रहेगा, वह निश्चित ही हृदयरोग से पीड़ित होगा। अतः स्वस्थ विचार से युक्त व्यक्ति ही अपने प्रयास से एक स्वस्थ जीवन जी सकता है। इसी प्रकार रोग–बीमारी से मुक्ति हेतु उत्तम खाद्य–पदार्थों का सेवन, योग–ध्यान भी जरूरी हैं। अतः एक व्यक्ति को अपने निर्बाध जीवन हेतु सभी प्रकार के उत्तम जीवन–शैली एवं उपायों पर ध्यान देना चाहिए। अब इस चर्चा को यहीं विराम देता हूँ। नहीं तो यह एक अलग ही चर्चा का विषय हो जाएगा, जो कि इस पुस्तक का विषय–वस्तु नहीं है।

इसकी एक सबसे बड़ी विशेषता है, Print Friendly होना। इसमें रंगीन चित्रों एवं लिपि का प्रयोग न के बराबर अथवा बहुत कम किया गया है। A4 साईज के पेपर पर इसे आसानी से कोई भी प्रिंट कर सकता है और इसे इस प्रकार तैयार किया गया है कि कम लागत में यह आसानी से प्रिंट हो जाए और पढ़ने में भी असुविधा न हो। मेरे द्वारा टंकित इस पुस्तक की विशेषता इस प्रकार और भी बढ़ गयी है कि इसमें उक्त एक पुस्तक के अलावा अन्य जगहों एवं कुछ अन्य पुस्तकों द्वारा भी कुछ अतिरिक्त सामग्रियाँ/जानकारियाँ प्रस्तुत की गयी हैं।

मेरा यह प्रयास कैसा लगा, इस हेतु अपने अमूल्य विचार से मुझे अवश्य अवगत करायेंगे। इस पुस्तक के अलावा मैंने इस DVD कैसेट में अन्यपुस्तकों तथा अपने द्वारा रचित विभिन्न आध्यात्मिक लेखों को भी समाहित किया है, जिनसे कि निश्चित ही आप लाभान्वित होंगे।

प्रिंट कैसे करें :– इसमें आप पेज नं० 1–4 तक आगे–पीछे प्रिंट करें। फिर जिस पेज में विषयसूची एवं उसके पेज संख्या को प्रदर्शित किया गया है, उसे बिल्कुल अलग कागज पर प्रिंट करें, उसके पीछे कुछ भी प्रिंट न करें। पुनः पेज नं० 5 से लेकर 126 तक आगे–पीछे प्रिंट करें। अथवा जिस विषय–वस्तु की आपको आवश्यकता हो, उसकी जानकारी चाहिए केवल उसमें ही प्रदत्त सामग्रियों को आगे–पीछे प्रिंट करें। इससे आपके कागज की बचत होगी। विषय सूची के लिए कृपया सबसे अंतिम पेज पर (पृष्ठ–127) पर जाएं।

॥ शुभमस्तु ॥

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो०:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

विवाह एवं प्रेम संबंधी प्रयोग

1. **विवाह विलम्ब** :– मंगल या शनिवश विवाह में विलम्ब हो तो लड़की से हनुमान जी के मंदिर में चमेली का तेल, सिंदूर, वर्क एवं एक सूखा नारियल 7 शनिवार दान करवाएं।
2. लड़की को वर न मिल रहा हो तो गुरुवार को पीले व शुक्रवार को सफेद नये वस्त्र पहनायें। यह प्रयोग 5 गुरुवार व शुक्रवार को करें। इनमें से कोई वस्त्र दुबारा न पहनें व विवाह की वार्ता के समय लाल वस्त्र पहनें, लाभ होगा।
3. जिन कन्याओं के विवाह में बाधा आए, बार–बार सगाई होकर छूटती हो या रिश्ता लगकर छूटता हो, तो गुरुवार को स्नान करने के बाद पाव भर कच्चे दूध में केसर या थोड़ी हल्दी मिलाएं, 7 पीले पुष्प, 7 बेसन के लड्डु, सवा मीटर रेशमी पीला वस्त्र, पाँच अगरबत्ती, एक चौमुखा दीपक तथा एक सूखा जटा सहित नारियल प्रातः काल सात गुरुवार को शिव को अप्रण कर दें।
4. 250 ग्राम काले तिल, 250 ग्राम काले उड़द साबुत, 250 ग्राम तिल का तेल, सवा मीटर काला कपड़ा व एक नारियल शनिवार को रखकर पूजा करें। विवाह में देरी या बाधा दूर होगी।
5. शीघ्र विवाह एवं वैवाहिक विलम्ब निवारण हेतु :– शुक्ल पक्ष में गुरुवार को प्रातः काल स्नान से निवृत्त होकर सात पीली वस्तुएँ, जैसे– पीला कपड़ा, पीले पुष्प, पीतल, चने की दाल, गुड़ या अन्य मिठाई, यज्ञोपवीत, हल्दी की गाँठ इत्यादि एक कपड़े में बांधकर अपने इष्ट देव का स्मरण करते हुए घर में किसी ऐसे स्थान पर रख दें, जिसे कोई देख न सके। विवाहोपरांत उक्त सामग्री बहते हुए जल में प्रवाहित कर दें।
6. शीघ्र विवाह हेतु कन्या नहाने के जल में एक चुटकी हल्दी का चूर्ण डालकर स्नान करें।
7. शनिवार को प्रातः सूर्योदय के समय सरसों के तेल का दीपक तथा 3 अगरबत्ती जलायें व शनि चालीसा पढ़ें। ऐसा लगातार शनिवार से 45 दिनों तक करें। शनि देव की कृपा से विवाह में आ रही बाधा दूर होगी।
8. यदि विवाह नहीं हो रहा है या बार–बार रिश्ते की बात आकर बात बन नहीं पा रही हो, तो बुधवार के दिन आठ बेसन के लड्डू, तीन माला, एक पान, थोड़ा सिंदूर और घी गणेश जी को अप्रण करें। आठ बुधवार ऐसा करने से आपको लाभ मिलेगा।
9. लड़की वाले जब शादी की बात करने जाए, उस समय लड़की प्रसन्न होकर मिठाई खिलाकर भेजें व बालों को खुला रखें।
10. जिन लड़कियों के विवाह में विलम्ब हो रहा हो, उस घर में खरगोश पालें व कुँआरी लड़की से उसे खाना खिलवायें।
11. जब भी किसी के विवाह में जाए तो दूल्हे या दूल्हन को जो मेंहदी लगाते हैं, उसमें से थोड़ी मेंहदी लेकर अपने हाथ पर लगायें।
12. वैवाहिक बाधा दूर करने हेतु विवाह इच्छुक कन्या अपने हाथ से 7 गुरुवार को बछड़े वाली पीली गाय को एक पपीता खिलाए।
13. शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को प्रातः स्नानादि के पश्चात् केले के वृक्ष की पूजा करें व चने की दाल व गुड़ का भोग लगाए और केले के पौधे पर मौली लपेटकर 21 परिक्रमा करें व 16 गुरुवार का व्रत करें। शीघ्र लाभ होगा।
14. सोमवार को सवा किलो चने की दाल व सवा लीटर दूध दान करें।
15. **ससुराल में प्रीति हेतु** :– 7 साबुत हल्दी की गांठ, पीतल का एक टुकड़ा, थोड़ा सा गुड़ अगर कन्या अपने हाथ से ससुराल की तरफ फेंके तो ससुराल में सदैवा सुरक्षापूर्वक और सुखी रहती है।
16. **सुखी वैवाहिक जीवन हेतु** :– कन्या का जब विवाह हो चुका हो और विदा हो रही हो तब एक लोटे में गंगाजल लेकर उसमें थोड़ी हल्दी, एक पीला सिक्का डालकर लड़की के ऊपर उतारकर उसके आगे फेंक दें। वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा।
17. शुक्लपक्ष के गुरुवार की शाम को 5 मिठाई, हरी इलायची का जोड़ा रखकर शुद्ध घी का दीपक पीपल के वृक्ष के पास या मंदिर में जलाएं।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

18. जिन युवतियों का विवाह न हो पा रहा हो या विलम्ब हो रहा हो, वे माता गौरी के मंत्र का जप कर गुरुवार को विधि पूर्वक पूजा करके हल्दी की माला धारण करें। अतिशीघ्र सुयोग्य वर प्राप्त होगा।
19. शीघ्र विवाह हेतु गुरुवार को पीली गाय को दो आटे के पेड़े, थोड़ी हल्दी, गुड़ व चने की भिंगी दाल खिलाएं।
20. शीघ्र विवाह हेतु शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से शिव का संकल्प कर व्रत प्रारम्भ करें। श्वेतार्क के वृक्ष के पास पूजा अर्चना कर 8 पत्ते लाएं। 7 पत्ते की पत्तल बनावें व आठवें पत्ते पर अपना नाम लिखकर शिव को अप्रित करें। व्रत का भोजन पत्तों की पत्तल पर करें। व्रत पूर्ण होने के बाद श्वेतार्क के पुष्प भगवान शिव को अप्रण करें व विवाह के बाद पति के साथ 108 पुष्पों की माला शिव को चढ़ायें।
21. विवाह में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो मंगलवार को प्रातःकाल सूखे नारियल में छेद करके सवा पाव बूरा (चीनी) एवं पंचमेवा भर दें व पीपल के वृक्ष के नीचे दबाएं। जो शक्कर बचे तो उसे वृक्ष के नीचे बाहर डालें। ऐसा सात मंगलवार करें।
22. शुक्रवार की रात को 8 छुहारे जल में उबालकर जल के साथ सोने के कमरे में सिरहाने रखें व शनिवार को बहते पानी (किसी नदी) में डालें तो विवाह बाधा दूर होती है।
23. विवाह बाधा निवारण के लिए यदि किसी भी सोमवार को 5 तांत्रोक्त नारियल लेकर कोई कुमारी कन्या यह मंत्र **''ॐ श्रीं वर प्रदाय श्री नमः''** मंत्र की 5 माला जपकर एक–एक नारियल भगवान शिव को अप्रित करें और फिर वह लघु नारियल किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें तो उसे विवाह में आने वाली समस्त बाधाएँ समाप्त होती हैं।
24. यदि विवाह में निरंतर बाधा आ रही हो तो वैजयंति माला से ''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'' मंत्र का जप करें व केले का पूजन करें, विवाह बाधा दूर होगी।
25. मनोवांछित पत्नी की प्राप्ति हेतु :– स्वयं का तस्वीर एवं मनोवांछित लड़की की तस्वीर परस्पर आमने–सामने मिलाकर किसी पत्थर से दबाकर एकांत स्थान में रख दें, विवाह की स्थिति बनेगी।
26. जिन लड़के–लडकियों का विवाह का उम्र बीत रहा हो, उन्हें यह उपाय अवश्य करना चाहिए। किसी भी शुक्लपक्ष के बृहस्पतिवार को अपने घर के किसी भी पूर्व दिशा की तरफ की दीवार पर हल्दी के घोल से एक वर्ग बनायें और उस वर्ग में अपना नाम रोली या सिंदूर से लिखें। अब प्रत्येक दिन सुबह–शाम अथवा शाम में इसे दीपक एवं धूप दिखायें। शीघ्र ही विवाह होगा।
27. विवाह योग्य युवक/युवतियों को पूजन के समय नित्य 11 पुष्प एक साथ अपने इष्टदेव को अप्रण करना चाहिए। अप्रण करते समय विवाह की शीघ्र सिद्धि हेतु अपनी मनोकामना भी कहनी चाहिए। फुल कोई भी हो सकता है, किंतु एक ही प्रजाति एवं एक ही रंग के हों। साथ ही पूर्णिमा के दिन पुष्पों के अलावा 11 अगरबत्ती भी एक साथ प्रज्वलित करें।

शीघ्र विवाह कैसे हो ?

आजकल मांगलिक योग का बड़ा बोलबाला है। अनेक अभिभावक अपनी संतान की कुण्डली में इसकी उपस्थिति सुनकर ही भयभीत हो जाते हैं। साधारण रूप में कुण्डली में 1, 4, 7, 8, एवं 12वें भाव में (दक्षिण भारत में 2 भाव में भी) मंगल स्थित होने पर इस योग की सृष्टि होती है। मांगलिक योग हमेशा ही बुरे फल प्रदान नहीं करते हैं। इसके अपवाद भी हैं। अर्थात् यह कुछ विशेष परिस्थितियों में भंग भी हो जाता है।

यदि मांगलिक योग भंग नहीं होता है, तो विवाह में अड़चन आती है। इससे घबराने की जरूरत नहीं है। अपितु साधारण से उपचारों द्वारा इस योग के दुष्प्रभाव कम हो सकते हैं।

शीघ्र विवाह हेतु कुछ प्रयोग :–

1. पुरुषों को विवाह बाधा होने पर गुरुवार को संध्याकाल में सरपोखा के पौधे पर जल चढ़ायें एवं दो अगरबत्ती जलाकर निमंत्रण दें कि प्रातः काल थोड़ी सी जड़ लेंगे। पुनः शुक्रवार को स्नान कर सूर्योदय के समय एक लोटा जल पौधे पर चढ़ावें, अगरबत्ती जलावें तथा ''ॐ शुं शुक्राय नमः'' का जप करते हुए सात परिक्रमा करें। फिर थोड़ी सी जड़ लें। इसे घर लाकर गंगाजल से शुद्ध कर श्वेत वस्त्र में लपेटकर दायें हाथ की भुजा पर बांध लें, शीघ्र विवाह हो जाएगा।

2. कन्याओं के लिए उक्त विधि से बुधवार संध्याकाल में भांगरे अथवा केले के पौधे को निमंत्रण दें तथा गुरुवार को प्रातः काल उक्त विधि से ही केले के पौधे की परिक्रमा कर जड़ प्राप्त कर लें। घर लाकर हल्दी मिश्रित जल से स्नान करावें एवं पीले वस्त्र में लपेट कर पीले धागे में गले में धारण कर लें तथा बृहस्पति के मंत्र ''ॐ बृं बृहस्पतये नमः'' का नित्य 108 बार जप करें। एक स्फटिक की माला 108 दानों की धारण कर लें।
3. कन्या शुक्लपक्ष के सोमवार को सीताराम जी अथवा शिव–पार्वती के चित्र के सम्मुख तुलसी की माला से रामचरित मानस की निम्न चौपाई को 108 बार मंत्र के रूप में जपें तो शीघ्र विवाह होता है।
मंत्र – **सुनुसिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तिहारी।।**
4. यदि विवाह में अत्यधिक विलम्ब हो गया हो और सम्भावनायें भी क्षीण होती लग रही हों तो शुक्लपक्ष के प्रथम बृहस्पतिवार को देवी भगवती के चित्र के सम्मुख सरसों के तेल का दीपक जला नैवेद्य चढ़ावें तथा नित्य 108 मंत्रों का जप करें तो देवी भगवती की कृपा से शीघ्र ही मनोवांछित घर व वर प्राप्त होता है।
मंत्र – **कात्यायनी महामाये, महायोगिन्यधीश्वरी। नन्दगोप सुतं देवं, पति मे कुरु ते नमः।।**
जप करने के लिए कमलगट्टे की माला लें तो अति उत्तम है।
5. शीघ्र विवाह की अभिलाषी कन्या को किसी कन्या के विवाह में उस समय जाने का अवसर प्राप्त हो, जब तेल चढ़ता है, तो उस समय लगाए जाने वाले उबटन में से थोड़ा–सा उबटन प्राप्त कर लें तथा घर लाकर उसकी गणेश प्रतिमा की अनुकृति बनाएं एवं हल्दी व सिंदूर चढ़ायें। कामना करें कि उसका भी विवाह शीघ्र हो तथा उसको किसी कटोरी में पीले वस्त्र के आसन पर विराजित करके पूजा स्थल में रख दें व नित्य पूजा करें। इससे शीघ्र विवाह हो जाता है।

प्रेम प्राप्ति हेतु प्रयोग

1. **प्रेम पाने हेतु** :– यदि प्रेमी या प्रेमिका में मनमुटाव हो तो एक गुलाब का पुष्प लेकर प्रेमी का नाम लेकर मन ही मन आकर्षण की भावना प्रार्थना करते हुए परस्पर भेंट करें, प्रीति बढ़ेगी।
2. दशहरे के दिन कचनार के पत्तों को अपने मिलने वालों को देने से आपकी प्रेम प्रगाढ़ होता है।
3. **प्रेम में मजबूती के लिए** :– फेंगशुई में वास्तु या घर के दक्षिण–पश्चिमी कोने को आपसी संबंध, प्रेम और रोमांस का क्षेत्र माना गया है। इस कोने को ऊर्जान्वित रखने से दाम्पत्य संबंधों में प्रगाढ़ता आती है और आपसी प्रेम बना रहता है। अविवाहित युवक–युवतियों के शयन कक्ष के दक्षिण–पश्चिम में यदि मेडेरियन डक्स के जोड़े या उनकी तस्वीर रखी जाए तो उनका विवाह शीघ्र हो जाता है।
4. **वर–वधु में प्यार बढ़ाने के लिए** :– साबुत काले उड़द में मेंहदी मिलाकर जिस दिशा में वर या वधु का घर हो उस तरफ फेंक देने से क्लेश समाप्त होकर वर–वधु में प्यार बढ़ता है। यह जहाँ पर विवाह हुआ है, वहीं से ही यह करना है।
5. **पत्नी जिद्दी हो** :– यदि स्त्री हो तो तो एक सवा मीटर लाल कपड़े में सवा पाव मसूर, सात गुलाब के पुष्प, लाल मिठाई, सवा किलो गुड़, एक अनार हनुमान जी के मंदिर में रखवायें व लाल रंग के वस्त्र कम पहनें। मंगलवार को रोटी पर गुड़ रखकर गाय को खिलायें।
6. पति के सौभाग्य हेतु सौभाग्य सामग्री में कौड़ी रखकर देने से सौभाग्य में वृद्धि होती है।
7. वर–वधु को नजर बाधा से बचाने हेतु कौड़ी बांधनी चाहिए। इससे बुरी नजर से बचाव होता है।
8. विवाह में वर–वधु को गुंजा या सफेद रत्ती को धागे में पिरोकर हाथ में बांधने से वर–वधु की सुरक्षा होती है। उन्हें नजर नहीं लगती, ना ही कोई अतृप्त आत्मा का भय सताता है।
9. कन्या के वैवाहिक जीवन की खुशहाली के लिए :– पिता अपनी कन्या के विवाह उपरांत केसर, हल्दी व सोना लेकर दो पुड़िया बनायें व अपनी कन्या को दें। कन्या इनमें से एक पुड़िया अपने पास धन रखने के स्थान पर रखें व दूसरी पीपल की जड़ में चढ़ायें। इससे खुशहाली होगी।
10. **पति–पत्नी में कलह समाप्ति** :– यदि पति–पत्नी में मतभेद हो तो तीन गोमती चक्र लेकर घर के दक्षिण में **'हलूं बलजाद'** कहकर फेंक दें। मतभेद समाप्त हो जाएंगे।
11. **मित्रता हेतु** :– छुहारे की जुड़वाँ गुठली अगर मिले तो उसे जल से धोकर धूप–दीप करके ताबीज में धारण करने से मित्रता बढ़ती है।

नजर भय व भूत–प्रेत बाधा से मुक्ति हेतु

1. नजर लगने पर शनिवार को हनुमानजी के कंधे पर लगा सिंदूर रोगी के मस्तक पर लगाएं।
2. नजर लगने पर गाय के ताजा गोबर का दीपक बनाकर उसमें छोटा–सा गुड़ का एक टुकड़ा व सरसों का तेल डालकर घर के प्रमुख द्वार की दहलीज के मध्य जलाकर रखें एवं नजर लगे व्यक्ति अथवा बच्चे को दिखाकर दीपक की ज्योति को किसी चमड़े की चप्पल या जूते से बुझा दें।
3. **बार–बार नजर लगने पर** :– बच्चे को बार–बार नजर लगने पर रूई की बत्ती को सरसों के तेल में भिंगोकर शनिवार या मंगलवार को बच्चे पर सात बार उसारें तथा उसे किसी चिमटे से पकड़कर उसका एक सिरा जला दें तथा बच्चे को दिखाते हुए उसको जलने दें। जब बत्ती पूरी तरह से जल जाए तो बच्चे की चप्पल या जूते से उसको सात बार थपेड़ें।
4. नजर लगने पर रोगी को पीठ के बल लिटा दें। ऐसा कपड़ा पहनायें जो बिना सिला हो और एक ही हो। आक का एक पीला पत्ता लें और उसे घी में चुपड़कर रोगी के सिर से पाँव तक 21 बार क्रम से शरीर से आधे इंच ऊपर नीचे की ओर लाकर फिर सिर से शुरू करें। इस प्रकार 21 बार करके पत्ते को दहकते हुए आग में डाल दें। नजर बाधा दूर होगी।
5. **नजर दोष** :– पीड़ित व्यक्ति पर 7 बार नींबू उतार कर 2 टुकड़े कर चौराहे पर फेंक दें।
6. **नजर बाधा** :– अगर धन पर नजर लग गया हो तो, प्रातःकाल या सायंकाल पीला नींबू काटकर तिजोरी पर घुमाकर उसे आढ़ा रखकर काटें व एक टुकड़ा दाई व एक टुकड़ा बाईं ओर फेंके।
7. **नजर लगने पर** :– कभी–कभी बहुत गहरी नजर लग जाती है, तब एक नींबू लेकर सात बार सिर पर से उबार कर गैस या छाने की आँच पर रख दें। तब नींबू फूटकर दूर जा गिरेगा, उसमें से पटाखे जैसी आवाज आएगी। इससे नजर खत्म हो जाएगी।
8. दुकान या फैक्ट्री के बीचोबीच हरी मिर्च व नींबू लटकाने से व्यापार को नजर नहीं लगती। इसे प्रत्येक मंगलवार या शनिवार को बदल लेना चाहिए।
9. गेहूँ के आटे का दीपक बनाकर काले धागे की ज्योति जलायें व दो लाल मिर्च रखकर रोगी पर से उतारा करें। इससे नजर बाधा दूर होगी।
10. **तांत्रिक अभिकर्म** :– यदि दुश्मन तांत्रिक अभिकर्म कर रहा हो तो नींबू को चार भागों में काटकर चारों दिशाओं में फेंके व फेंकने से पूर्व निवेदन करें कि मुझे इस तांत्रिक अभिकर्म से छुटकारा मिले व इष्ट का ध्यान करके फेंके व घर आकर हाथ–पैर धोयें।
11. नजर ग्रस्त व्यक्ति को दरवाजे के बीच में बैठाकर सेधा नमक व मिट्टी 7 बार उसके सिर एवं पूरे शरीर से उतारा करें।
12. नमक, राई, बाल, लहसुन, प्याज के सूखे छिलके, सूखी लाल मिर्च को अंगारों पर डालें और वह अंगारे नजर लगे व्यक्ति पर से सात बार उतारकर फेंक दें। यदि जलने पर बदबू आने लगे तो मानो नजर थी, जो अब उतर गयी।
13. हल्दी के द्वारा रंगे गए पीले रंग के सूती कपड़े में अजवायन रखकर, पोटली–सी बनाकर काले धागे में बच्चे के गले में लटकाने से उसे बुरी नजर नहीं लगती।
14. नजर लगने पर दिवार पर सफेद मकड़ी का जाला उतारकर उसे थोड़ी–सी हल्दी में मिलाकर धूनी देने से नजर उतर जाती है।
15. **नजर दोष दूर करना** :– थोड़ी–सी राई एवं चीनी लेकर बच्चे पर सात बार उतारें तथा उसे किसी नाली में बिना किसी के टोके बहा दें, बच्चा स्वस्थ हो जाएगा। काले डोरे को धूप–दीप देकर हनुमानजी का स्मरण करके बच्चे के गले में बांध दें। बच्चे को नजर लगना बंद हो जाएगा तथा बच्चा स्वस्थ हो जाएगा।

16. **ऊपरी बाधा दूर करने के लिए** :– काली हल्दी के 7, 9 या 11 दाने धागे में पिरोकर पूजा करके गले में धारण करने से टोने–टोटके व नजर आदि दोष समाप्त होते हैं।

17. **नजर लगने पर लाल मिर्च के प्रयोग** :–

(क) 7 मिर्ची डंडी सहित लेकर रोगी पर 7 बार उतार कर जला दें, नजर बाधा दूर होगी।

(ख) एक साबुत लाल मिर्च, सिन्दूर, लोहे की एक नुकीली कील व साबुत उड़द के दाने–इन सबको सफेद सूती वस्त्र में पोटली–सी बनाकर बांध दें। फिर किसी भी नजर परेशान नहीं कर पाएगी।

(ग) डंडी वाली सात लाल मिर्च लेकर डंडी को नीचे रखते हुए 21 बार रोगी के शरीर पर सर से तलवों तक 21 बार स्पर्श कराते लाएं, फिर मिर्च को कंडे की दहकती हुई अग्नि में डाल दें।

(घ) लाल मिर्च व अजवायन को आग में डालकर तपाने तथा बच्चे के माथे पर से सात बार घुमाकर आग में डाल देने से नजर का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

18. **नजर एवं प्रेत बाधा** :– प्रेत बाधा होने पर हनुमानजी के माथे पर लगा सिंदूर, एक लाल मिर्च, लोहे की कील, काली उड़द को सफेद वस्त्र में काला धागा बांधकर बच्चे के पालने पर बांधें, प्रेत बाधा नहीं रहेगी।

19. **भूत भय** :– रविवार को तुलसी, काली मिर्च तथा सहदेई की जड़ लाकर तीनों को तांबे में भरकर धूप देकर धारण करने से भूत भय दूर हो जाता है।

20. गोमती चक्र को चांदी में जड़वा कर बच्चे के गले में पहना दिया जाय तो बच्चे को नजर नहीं लगती और वह स्वस्थ बना रहता है।

21. **ऊपरी बाधा दूर** :– यदि घर में भूत–प्रेतों का उपद्रव हो तो दो गोमती चक्र लेकर घर के मुखिया के ऊपर घुमाकर आग में डाल दें। घर में भूत–प्रेत का उपद्रव शांत हो जाएगा।

22. **नजर व टोटके का निवारण** :– घोड़े की नाल को गंगाजल से धोकर, मकान का मुख पूर्व हो तो रविवार को, पश्चिम हो तो शुक्रवार को सिंदूर व तेल से पूजा करके मुख्य द्वार पर ठोकें। खुला मुँह नीचे रहे।

23. **बच्चों को टोटके से बचाव व दाँत सरलता से निकलने हेतु** :– हाथ–पैर में लोहे या तांबे का छल्ला पहनाने, गले में चंद्रमा या सूरज बनाकर पहनाने से या राठे के दल को छेद कर पहनाने से नजर, टोना–टोटका आदि अनेक व्याधियों का प्रभाव बच्चे पर नहीं पड़ता तथा दाँत सरलता से निकलते हैं।

24. **नजर बाधा में फिटकरी के प्रयोग** :–

(क) नजराए व्यक्ति पर सात बार फिटकरी उवार कर बायें हाथ से पीसकर उसका बुरादा कुएँ या अन्य जगह फेंके, इससे नजर बाधा दूर होगी। अन्या मतानुसार उसको छाने की आँच या फिर गैस पर उस टुकड़े को रख दें।

(ख) अस्वस्थ व नजर लगे व्यक्ति के ऊपर चारों ओर से फिटकरी का टुकड़ा घुमाकर चूल्हे में डाल दें। तीन दिनों तक लगातार तीनों समय यह क्रिया करें, नजर उतर जाएगी तथा वह व्यक्ति भी स्वस्थ हो जाएगा।

(ग) **रोग निवारण** :– 125 ग्राम फिटकरी रोगी के ऊपर से 21 बार उतारकर किसी चौराहे पर दक्षिण दिशा की ओर फेंक कर वापस आ जाएं व दीपक और कपूर को जला दें, इसमें पीछे मुड़कर न देखें। घर आकर पहले हाथ–पैर अवश्य धोयें। अगले दिन किसी सफाई कर्मचारी को 11 रूपये व पुराना वस्त्र दान करें।

(घ) **व्यापार स्थल पर नजर** :– थोड़ी साबुत फिटकरी लेकर 31 बार दुकान में उसारें व दुकान से बाहर किसी चौराहे पर जाकर उसे उत्तर दिशा में फेंक दें।

(ङ) **बच्चे का डरना** :– रात को सोते समय बच्चा डरे तो उसके सिरहाने फिटकरी का टुकड़ा रख दें। बच्चे का डरना बंद होगा। अगर सोते वक्त बच्चे को बुरे स्वप्न आते हों तो किसी भी मंगलवार या रविवार के दिन फिटकरी का एक टुकड़ा बच्चे के सिरहाने रख दें। रात में सोते समय बच्चे को बुरे स्वप्न नहीं दिखाई देंगे तथा बच्चा चमकेगा भी नहीं।

(च) **बच्चे के अध्यधिक रोने तथा नींद न आने पर** :– किसी भी गुरुवार के दिन एक फिटकरी का टुकड़ा सफेद रंग के कपड़े के टुकड़े में बांधकर बच्चे के गले में काले धागे में बांध दें तो बच्चा चैन की नींद सोएगा।

25. **नजर बाधा में दूध के प्रयोग** :–

(क) रविवार या शनिवार को नजराए व्यक्ति के सर से तीन बार दूध उतार कर मिट्टी की परात में रखें व कुत्ते को पिलायें। कुत्ता दूध पी ले तो नजर दूर हो जाएगी।

(ख) दूध में पाँच चम्मच घी मिलाकर उसमें अकवन की जड़ की एक चम्मच राख डालें और दूध को सिर से लेकर तलवों तक मलें। फिर गर्म पानी से स्नान कर लें। स्मरण रहे कि नजर उतारने के लिए सिर से प्रारम्भ करके तलवों तकि क्रिया की जाती है, उल्टा न करें।

(ग) किसी रोज संध्याकाल में गाय का कच्चा दूध मिट्टी के किसी बर्त्तन में भरकर, बायें हाथ से नजर लगे बच्चे के सिर से सात बार उतारकर चौराहे पर रख आएँ या किसी कुत्ते को पिला दें।

(घ) **बच्चा दूध न पीए** :– एक सकोरे में कच्चा दूध लें और बच्चे के सिर पर से 7 बार उतारकर काले कुत्ते को पिलाएं। बच्चा स्वयं दूध पीने लगेगा।

26. **घर की शुद्धि हेतु** :– परिवार में प्रतिदिन पारस्परिक झगड़े होने व बढ़ने लगे, प्रत्येक कार्य में विध्न–बाधा हो, दुष्टात्माओं का निवास होता जा रहा हो 21 दिनों तक प्रतिदिन ठीक सूर्यास्त के वक्त आधा किलो कच्चे दूध में नौ बूंद शहद मिलाकर, एक साफ बर्त्तन में डालकर मकान की सबसे ऊपरी छत से नीचे आते हुए सब कमरों में दूध के छींटे मारते हुए घर के द्वार से बाहर निकल जायें तथा चौराहे पर दूध के उस बर्त्तन को रखकर, पलटकर घर वापस लौट आएँ। यह 21 रोज तक करने से घर की शुद्धि हो जाती है। इसको करते समय पलटकर नहीं देखना चाहिए व किसी भी प्रकार की टोक नहीं होनी चाहिए।
27. **भोजन में नजर लगने पर** :– जिस व्यक्ति के खाने में बराबर नजर लगती हो तो भोजन से पूर्व थाली के नीचे जल से क्रॉस (+) बनाकर खाने से नजर नहीं लगती।
28. कभी–कभी छोटे–बड़े सबको ऐसी नजर लग जाती है कि वह खाना–पीना छोड़ देता है और सुस्ती आने लगती है। तब खाना बनाने के बाद थोड़ा–सा आटा जो बचे, वह और जमीन पर बिखरा हुआ आटा मिलाकर एक मोटी रोटी बनाएं। उसको सेंककर और उस पर तेल लगाकर जिस व्यक्ति के नजर लग जााए, उसका मुख रोटी को दिखाकर कुत्ते को डाल देने से नजर समाप्त हो जाती है।
29. भोजन को नजर लग जाए तो थाली में से प्रत्येक चीज थोड़ी–थोड़ी लेकर एक पत्ते पर रखें, उस पर गुलाल बिखेरें तथा रास्ते में रख दें।
30. **भूत बाधा** :– जिन्हें भूत–प्रेत के बाधा का भय हो, वे लोहे का चाकू सिरहाने रखकर सोयें व पाँव धोकर अपने इष्ट की फोटो पर अगरबत्ती जलायें, भूत–बाधा समाप्त होगा।
31. **कौए के पंख का प्रयोग** :– नजर लगने पर शुक्रवार की शाम में कौए के पंख को बच्चे के सिरहाने रखें तथा एक पात्र में पानी भरकर उन पंखों से छींटे दें।
32. **उल्लू के पंख का प्रयोग** :– शुक्रवार को उल्लू के 4 पंख लेकर काले धागे में बांधकर सिरहाने रखें। अगले दिन तांबे को लोटे में गंगाजल लेकर पंख से बच्चों को छींटे दें।
33. नजर लगने पर तुलसी जी के पाँच पत्ते लेकर उसमें पाँच काली मिर्च मिलाएँ और इन्हें हाथ से साफ करके मुट्ठी में बंद करके 21 बार **'ॐ'** का जप करें। इन पत्तों और काली मिर्च को रोगी को खिला दें और दो मिनट तक तलवों पर हाथ फेरें।
34. नजर लगने पर रोगी को लिटाकर पूर्ण एकाग्र होकर सर से तलवों तक हाथ फेरें। इस प्रकार 21 बार करके अपने हाथ को सेंधा नमक मिले गर्म पानी में दो मिनट तक डुबायें। फिर मलकर साफ करें और साफ कपड़े से पोछ लें।
35. बच्चे को गले में सफेद अकवन की माला अथवा सफेद अकवन के जड़ को पहनाने से नजर नहीं लगती। ऊपरी टोने–टोटके के प्रभाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
36. **तांत्रिक अभिकर्म** :– यदि किसी पर तांत्रिक अभिकर्म किया हुआ है तो सफेद अकवन का एक टुकड़ा कमर में धारण करें। तांत्रिक अभिकर्म से मुक्ति मिलेगी।

37. **तांत्रिक अभिकर्म से मुक्ति एवं शिव कृपा प्राप्ति हेतु** :– जावित्री, गायत्री व केसर लाकर उनको कूट कर धूप बना लें तथा सुबह शाम घर में 21 दिनों तक धूप करें तथा अगर, तगर व गोलोचन को थोड़ी मात्रा में लाकर उन्हें लाल वस्त्र में बांधकर पूजा के स्थान में रखें। शिव कृपा से तमाम टोने–टोटके का असर खत्म होकर आपके घर में मांगलिक कार्य होंगे। जब सभी उपाय निष्फल हो जाते हैं तो यह उपाय किया जाता है।
38. तांत्रिक अभिकर्मों से मुक्ति हेतु घर में साफ–सफाई रखें, कहीं पर भी गंदगी, कूड़ा–करकट न रहने दें तथा सभी वस्तुओं पर पीपल के पत्ते से गोमूत्र के छींटे लगाएं। यह सात दिनों तक लगातार करें। उसके बाद शुद्ध गूगल का धूप जलाएं।
39. **भूत बाधा** :– मुंडी, गोखरु और बिनौला बराबर मात्रा में लेकर गोमूत्र में पीसकर रोगग्रस्त को सुंघावे तो ठीक हो जाता है।
40. **तांत्रिक अभिकर्म** :– शत्रु आपकी सफलता से चिढ़कर तांत्रिकों द्वारा अभिचार कर्म करवा देता है। इससे व्यवसाय बाधा एवं गृह कलह होता है। अतः इसके दुष्प्रभाव से बचने के लिए शनिवार को मन–ही–मन हनुमानजी का ध्यान करते हुए सवा किलो उड़द, सवा किलो कोयला व सवा मीटर काले कपड़े में बांध कर घर में 21 बार घुमाकर शनिवार के दिन तालाब में विसर्जित करें। ऐसा 7 शनिवार करें, टोना–टोटका खत्म होकर लाभ मिलेगा।
41. **तांत्रिक अभिकर्म** :– यदि आपको ऐसा लगता है कि कोई मंत्र प्रयोग करके आपको मारना चाहता है तो सोमवार को पपीते के 21 बीज लेकर शिव मंदिर में जाएं एव कच्चा दूध शिवलिंग पर चढ़ाकर धूप–बत्ती करें और वहीं बैठ कर पपीते के बीज अपने सामने रखें। अपना नाम, गोत्र उच्चारित करके शिव से अपनी रक्षा की गुहार करें व एक माला महामृत्युंजय मंत्र की जप करें और बीज को तांबे के ताबीज में भरकर कंठ में धारण करें।
42. **तांत्रिक प्रभाव समाप्त** :– यदि चार गोमती चक्र बुधवार के दिन अपने सिर पर घुमाकर चारों दिशाओं में फेंक दें, तो व्यक्ति पर किए गए तांत्रिक प्रभाव की समाप्ति हो जाती है।
43. तांत्रिक अभिकर्म समाप्ति हेतु एक नींबू व चार कौड़ियाँ लेकर 7 बार अपने ऊपर से उतारें, नींबू के 4 टुकड़े करके कौड़ी के साथ चारों ओर फेंके, इससे राहत मिलती है।
44. **मन में भ्रम व भय** :– यदि बिना किसी ठोस कारण के मन में भय रहता हो, दिमाग व मन स्थिर न रहे तो 43 खोटे सिक्के लेकर प्रतिदिन 1 सिक्का अपने ऊपर उसार कर नदी में फेंके। 43 दिन बाद मन शांत होगा।

    यदि सड़क पर पड़े हुए पैसे मिल जाएं तो उन्हें धोकर अपने इष्ट के चरणों में श्रीफल के साथ रखें तथा पूजन सामग्री के साथ इसके हल्दी के छींटे मारें।
45. **पारिवारिक आपदा** :– यदि पूरे परिवार पर कोई विपत्ति हो तो परिवार के जितने सदस्य हों उनसे यथा शक्ति पैसे लेकर धार्मिक ट्रस्ट या मंदिर में पुस्तकें आदि या अन्य कार्य हेतु दान करें।
46. **भय व भ्रम हेतु** :– यदि मन में भय व भ्रम बना रहता है तो शनिवार को रात को लोहे के बर्त्तन में सवा मुट्ठी बाजरा रखकर अपने ऊपर उसार कर प्रातःकाल दोनों हाथों में मसलकर भ्रम व भय समाप्ति की प्रार्थना करते हुए पक्षियों को डालें।
47. **भय व अवसाद दूर करने हेतु** :– यदि आपको एकाकीपन से भय लगे व अवसाद (डिप्रेशन) महसूस होता हो तो शनिवार को एक मुट्ठी राई अपने ऊपर वारकर चारों दिशाओं में फेंकें।
48. **भय मुक्ति** :– मन में भय हो, शत्रु अधिक हो या हानि पहुँचाते हो तो शनिवार को सवा पाव काले तिल काले कपड़े में बांधकर 7 बार सिर पर से उवार कर नदी में फेंकें, दिल का भय दूर होगा।
49. सफेद गुंजा को चौकोर काटकर ताबीज की भांति गले में पहनने से मस्तिष्क रोग, मिर्गी, उन्माद व भूत भय समाप्त होता है।
50. **भय से मुक्ति** :– आश्लेषा नक्षत्र में धीमी की जड़ हाथ में धारण करने से व्यक्ति को सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिलती है।

51. **भूत–प्रेत बाधा या ऊपरी हवा से मुक्ति** :– शुक्लपक्ष के रविवार को काले धतूरे की जड़ लावें। उसको पंचोपचार (पंचोपचार–गंगाजल, शहद, दूध, दही, बूरा से स्नान कराकर धूप–दीप करें) से शुद्ध करें तथा घर में ईशान कोण की तरफ पड़ने वाले शिव मंदिर से चरणामृत लाकर उस पर छिड़कें तथा **'ॐ नमः शिवाय'** की 11 माला जपें एवं लोबान की धूनी देकर काले धागे में लपेटकर रोगी की दाहिनी भुजा में बांध दें। पीड़ित व्यक्ति के स्वस्थ हो जाने पर चावल उबाल कर घी एवं बूरे के साथ अमावस्या को गाय को खिला दें।
52. **रोग व गृह कलह** :– असाध्य रोग व गृह कलह को मिटाने की ऊर्जा से युक्त काले धतूरे की भभूत को या पंचांग को घर में रखें।

विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति हेतु

1. **स्वास्थ्य** :– घोड़े की नाल की अंगूठी यदि कोई पुरुष दायें हाथ की अनामिका में, स्त्री बायें हाथ की अनामिका में पहने तो स्वास्थ्य, रक्त, अस्थि, कांति, रूप, यौवन, धन, संतान, कामशक्ति और कामसुख प्राप्त होता है।
2. **स्वास्थ्य लाभ** :– यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं हो, तो सात गोमती चक्र अपने सिर पर से घुमाकर किसी ब्राह्मण या फकीर को दान में दे दें, तो रोग उसी क्षण से समाप्त होना शुरू हो जाता है।
3. **जलना** :– शरीर जलने पर या छालों आदि से बचाव हेतु जले हुए स्थान पर कौड़ी बांधने से राहत मिलती है।
4. **मधुमेह** :– (क) मणिपुष्पक शंख में रात्रि में गंगाजल या शुद्ध जल भरकर तांबे की प्लेट से ढंककर प्रातः मधुमेह एवं हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों को आचमन करने से शरीर स्वस्थ रहता है। (ख) मधुमेह नियंत्रण करने के लिए दक्षिण की तरफ सिरहाना कर के सोयें। शयन कक्ष में 100 ग्राम फिटकरी का टुकड़ा रखें, सवा पाँच रत्ती का मोती चांदी की अंगूठी में जड़वा कर पुष्य नक्षत्र के दिन अनामिका अंगूली में पहनें, लाभ होता है। (ग) भूखण्ड और कमरों के उत्तर–पश्चिम दिशा (वायव्य कोण) में नीले रंग के फूलों का गमला अथवा गुलदस्ता रखना हितकर है। इससे मधुमेह रोग में राहत मिलेगी। यदि मधमेह रोगी न हो तो ऐसा करने से इसके होने की संभावना कम होगी। (घ) यदि भवन के अग्नि कोण और ईशानकोण में दोष है व आप अक्सर इसमें समय गुजारते हैं तो आपको डायबिटीज होने की संभावना हो सकती है। यदि पूर्व से ही मधुमेह से पीड़ित हैं तो वह नियंत्रण में नहीं रह पाती है।
5. **असाध्य रोग** :– (क) अगर आपके परिवार में कोई रोगी है और चिकित्सा के पश्चात् भी नहीं सुधर रहा है, तब एक देशी अखण्डित पान, गुलाब का फूल और कुछ बताशे पान पर रखकर रोगी पर से 31 बार उतारें और बिना टोक किसी चौराहे पर रख दें। रोगी की दशा में अपेक्षित सुधार होगा। (ख) क्षय रोग, कैंसर या कोई असाध्य रोग हो तो जौ को गौमूत्र में धोकर लाल कपड़े में बांधकर रोगी के पास रखें व गोमूत्र से दाँत साफ करें। धीरे–धीरे रोग समाप्त होगा। (ग) आंतरिक असाध्य रोगों की समाप्ति हेतु नीलकण्ठ शंख में काली बकरी का दूध डालकर पीने से आंतरिक असाध्य रोग समाप्त होता है। सफेद गाय का दूध डालकर पीने से मानसिक तनाव से हमेशा–हमेशा के लिए मुक्ति मिल जाती है। (घ) अगर कोई रोग जाने का नाम न ले तो रोगी के वजन के बराबर कोयला लेकर बहते पानी में शनिवार को बहायें। (ङ) दीर्घकालीन रोग हो अथवा रोग समझ न आ रहा हो, शारीरिक कमजोरी व अशक्तता हो तो रविवार को पुष्य नक्षत्र के दिन सफेद अकवन एवं अरण्ड की जड़ लावें। गंगाजल से धोकर उस पर सिंदूर का लेप करें तथा गूगल की धूप दें। इसके बाद गणेश मंत्र का 108 बार जप कर रोगी पर सात बार उसे घुमायें तथा किसी सुनसान जगह में संध्याकाल में जमीन में गड्ढा खोदकर दबा दें, रोग नष्ट होगा। (च) असाध्य रोग जैसे कैंसर, मधुमेह, किडनी के फेल हो जाने की स्थिति में भूखण्ड के दक्षिण–पश्चिम दिशा (नैर्ऋत्य कोण) को भारी करें व इस कोने में गड्ढा हो तो उसे भर दें। उत्तर–पश्चिम दिशा को खाली नहीं रखें। बारह बजे के बाद की सूर्य की किरणों को घर में आने से रोकें, मोटा पर्दा लगायें। भवन के सभी दरवाजों के कब्जों में तेल डालें, ताकि आवाज न करें। इससे असाध्य रोग नहीं

होंगे। (छ) यदि घर में बीमारी हो या किसी का रोग शांत नहीं हो रहा हो तो एक गोमती चक्र लेकर उसे चांदी में पिरोकर रोगी के पलंग के पाये पर बांध दें। उसी दिन से रोगी का रोग समाप्त होने लगता है। (ज) यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं हो तो सात गोमती चक्र अपने सिर पर से घुमाकर किसी ब्राह्मण या फकीर को दान में दे तो रोग उसी क्षण से समााप्त होना शुरू हो जाता है।

6. **रोग** :– (1) यदि आपके भवन पर किसी वृक्ष, मंदिर आदि की छाया पड़ती है तो वह रोग उत्पन्न करेगा। (2) यदि घर में कोई बार–बार बीमार होता है अथवा नजर लगती है तो पूजन से पहले आटे का एक चार मुख का दीपक बनवा कर उसमें कपूर भर कर जला दें। (3) सोमवार को शिवलिंग पर जामुन चढ़ाने से रोग नष्ट होता है। (4) यदि घर में कोई बीमारी हो या किसी का रोग शांत नहीं हो रहा हो तो एक गोमती चक्र लेकर उसे चांदी में पिरोकर रोगी के पलंग के पाये पर बांध दें, उसी दिन से रोगी का रोग समाप्त होने लगता है। (5) गोमती चक्र का प्रयोग बीमारी पर विशेष रूप से किया जाता है। कोई बीमार हो, तो एक साफ गिलास में शुद्ध जल लेकर उसमें यह गोमती चक्र डाल दें और निम्नोक्त मंत्र को 21 बार मन–ही–मन उच्चारण कर उस गोमती चक्र को बाहर निकाल लें तथा वह पानी रोगी को पिला दें, तो वह रोगी आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ होने लगता है। मंत्र – **ॐ वं आरोग्यानिकरी रोगानशेषा नमः।**

इस मंत्र को सिद्ध करने की विधि यह है कि होली, दीपावली अथवा ग्रहण काल में तीन गोमती चक्र अपने सामने किसी लाल कपड़े पर रख लें और उस पर (उसके सामने) उपरोक्त मंत्र की 11 माला फेरे। इस प्रकार जब ग्यारह मालाएं पूरी हो जाएं तब साधक को वह गोमती चक्र सावधानी पूर्वक एक तरफ कहीं अपने पास सुरक्षित रख लेना चाहिए। यह सिद्ध गोमती चक्र तीन वर्षों तक प्रभाव युक्त रहता है।

(6) जिस अंग में रोग हो, उस पर पिरामिड रखने या बांधने से शीघ्र लाभ होता है।

7. **दीर्घकालीन रोग** :– (1) यदि लंबे समय से बीमार चल रहे हों, दवा असर न कर रही हो तो चर्म आसन पर सोयें व घर के दक्षिण दिशा में लोहे का नाखून पूजा करके लटकायें, राहत मिलेगा। (2) जो व्यक्ति प्रायः बीमार रहता है, उस व्यक्ति की अनामिका अंगुली से थोड़ा–सा खून लेकर किसी तांत्रोक्त नारियल पर छिड़क दिया जाय और उस नारियल को अग्नि में जला दिया जाय तो उस व्यक्ति का रोग भी अग्नि में भस्म हो जाता है, ऐसी मान्यता है।

8. **घर में कोई न कोई रोगी हो** :– जब घर में कोई न कोई रोगी हो, एक के बाद दूसरा बीमार रहे तो घर में जितने भी व्यक्ति हों (अगर उस समय घर में कोई मेहमान आया हुआ है, तो उसे भी गिन लें) उससे अधिक छोटी–छोटी मीठी रोटियाँ बनायें। तवे पर न सेंकें। हर माह कौवे या कुत्ते को खिलायें।

9. **स्त्री के रोग** :– अशोक के वृक्ष की छाल को उबालकर पीने से स्त्री के रोग नष्ट होते हैं तथा स्वास्थ्य सुधरता है।

10. **कष्ट** :– यदि आपका मकान मार्ग या गली के अंत में है तो वह कष्टमय सिद्ध होगा।

11. **आयुक्षय** :– यदि नैर्ऋत्य कोण में कुआँ आदि है तो वह आयु का क्षय करता है।

12. **जी मिचलाना, ज्वर व बवासीर** :– हरी इलायची मुँह में रखने से जी मिचलाना, 2–3 इलायची मुँह में चबाने से हिचकियाँ, इसका चूर्ण काली मिर्च के चूर्ण के साथ सेवन करने से ज्वर, तीन बार इलायची का चूर्ण पानी के साथ लेने से बवासीर ठीक होता है।

13. **दस्त** :– (क) जायफल घिसकर उस पानी को पीएँ व पानी का नाभी पर लेप करें। (ख) दस्त में सहदेवी के पौधे की जड़ के सात टुकड़े करें। उन्हें माला की भांति लाल धागे में पिरोयें। यह माला कमर में बांधने या पहनने से अधिक दस्त होना शांत हो जाता है। (ग) करीपत्ता (मीठा नीम) की कुछ मात्रा जल में हल्के से उबालकर उस जल को पीने से त्वरित लाभ होता है।

14. **कील एवं मुहासे** :– (क) काली हल्दी का उबटन बनाकर चेहरे पर लेप करने से कील एवं मुहासे समाप्त होते हैं। (ख) मुँहासे हेतु जायफल दूध में घिसकर लेप करें।

15. **मिर्गी** :– (क) काली हल्दी को गले में धारण करने से मिरगी की बाधा समाप्त होती है। (ख) राई पीसकर मिर्गी के रोगी को सुंघाए। ऐसा करने से मिर्गी दूर होती है। (ग) मिरगी का रोगी जब दौरे में बेहोश हो जाए,

उस समय रजस्वला स्त्री यदि उसे हाथ पकड़कर उठाए तो वह ठीक हो जाती है। (घ) गाय के बायें सिंग की या जंगली सुअर के नाखून की अंगूठी बनवाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में पहनने से मिरगी रोग का दौरा पड़ना बंद होता है। (ङ) यदि किसी को मिर्गी आदि का कोई रोग हो तो गधे के अगले दाहिने पैर का नाखून लेकर अंगूठी के द्वारा उसे अपने अंगुली में धारण करना चाहिए। (च) भेड़िये के दाँत गले में बांधने से बच्चे को मिर्गी या अन्य कोई प्रकार का दौरा नहीं पड़ता। (छ) मिर्गी या अन्य दौरों में तथा अनिद्रा के रोगी के पलंग के गद्दे के नीचे उत्तर–पश्चिम दिशा में सफेद रंग का रूमाल रखें। इससे मिर्गी रोग में राहत मिलेगी।

16. **खाँसी, दमा तथा जीर्ण ज्वर** :– (क) इन तीनों के लिए दिन में 3 बर आमा हल्दी को शहद मिलाकर चाटें। अथवा आमा हल्दी का चूर्ण 3 बार दूध के साथ लें। (ख) लोबान पौधे की जड़ लाकर उसे गले में बांधने से खांसी मिट जाती है।
17. **गले में खराश** :– गले में खराश होने पर हल्दी की गांठ गर्म राख में भूनकर पीसकर भोजन के बाद शहद के साथ लें।
18. **तपेदिक व त्वचा रोग** :– लौंग का चूर्ण दिन में 3 बार लें, ज्वर/भय व खाँसी में राहत मिलेगी। लौंग पानी में पीसकर लेप करें या लौंग का तेल लगाने से त्वचा रोग समाप्त होगा।
19. **सर्दी–जुकाम** :– (क) लौंग को तेल या पानी में घिसकर कनपटी व सिर पर लेप करें, सिरदद्र समाप्त होगा। मिश्री में कुछ बूंद लौंग का तेल मिलाकर लें, जुकाम ठीक होगा। (ख) यदि मकान के ब्रह्मस्थल में दोष है व आप अक्सर इसमें समय गुजारते हैं तो आपको सर्दी–जुकाम रहेगा। अतः इस दोष को ठीक कराएं।
20. **प्यास अधिक लगने अथवा जी मिचलाने पर** :– पानी में लौंग उबालकर गुनगुना करके पीयें। यह प्रयोग हैजा में भी हितकर है। 4–5 लौंग मुँह में डालकर रखें, जी मिचलाना बंद होगा।
21. **नकसीर** :– (क) लौंग जलाकर पानी में डालकर नाक में डालें, नकसीर बंद होगी। (ख) गर्म पानी में हाथ–पैर डुबोयें या गाय का सूखा गोबर बारीक पीस कर सूंघने से नकसीर रुक जाएगी। (ग) उड़द को पानी में भिंगोकर माथे पर लेप करने से नकसीर दूर होती है।
22. **दमा व गलना** :– जौ की राख में मिश्री डालकर गर्म पानी से लेने से दमा व जौ की रख तिल के तेल में मिलाकर लगाने से गलना दूर होगा।
23. **दमा या श्वासरोग** :– जब दमे का जोर का दौरा हो तब जिस नासिका से निःश्वास चलता हो, उसे बंद करके दूसरी नासिका से श्वास चलाना चाहिए। दस–पंद्रह मिनट में दमे का जोर कम हो जाएगा। प्रतिदिन ऐसा करने से महीने भर में पीड़ा शांत हो जाएगी। दिन में जितने ही अधिक समय तक क्रिया की जाएगी, उतना ही शीघ्र यह रोग दूर हो जाएगा। इस क्रिया से बिना किसी दवा के बीमारी चल जाती है।
24. **खून की कमी, टी0बी0 व दुर्बलता** :– (क) मक्के की रोटी खायें व मक्का के तेल से मालिश करने से रक्त की कमी, टीबी व दुर्बलता दूर होगी। (ख) मूंगे की माला पहनने से रक्त में वृद्धि व शुद्धि होती है।
25. **कमजोरी, खून की कमी व कुष्ठरोग** :– रात को चने भिगोकर सुबह उबाल कर चौथाई पानी रहने पर पीएं व अंकुरित चने खायें व सोयाबीन का दूध पीएं। कमजोरी ठीक होगी व अंकुरित चने खाने से खून की कमी, कुष्ठरोग ठीक होगा।
26. **चोटवाला दर्द, खून की कमी एवं दुग्धविकार** :– पानी में हल्दी डालकर पीएं, हल्दी का चूर्ण दूध या पानी के साथ लें। दुग्धपान कराने वाली महिला ताजे पानी में चुटकी भर हल्दी डालकर पीयें।
27. **दाद** : – हरे मूंग को पानी में भिगोएं, पानी सोखने पर वह दाद पर मलें।
28. **झाइयाँ व दाद** :– बेसन, दूध व दही को सरसों के तेल में मिलाकर मलने से झाइयाँ एवं बेसन, हल्दी व सरसों का तेल मिलाकर उबटन करने के बाद पानी से धोने से दाद ठीक होगा।
29. **पसीना अधिक आने पर तथा नेत्र ज्योति बढ़ाने के लिए** :– हरे मूंग का भून कर उबटन की तरह मलने से पसीना सामान्य होता है व नियमित सेवन करने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।
30. **मतिभ्रम** :– यदि व्यवसाय में मन नहीं लगता हो तो मंगलवार को सवा मुट्ठी हरा मूंग सिरहाने रखकर सुबह पक्षियों को डालें।

31. **गंजापन** :– (क) उड़द को उबाल कर पीसकर सर पर लेप करने से गंजापन दूर होता है। (ख) हाथीदाँत के चूर्ण को तिल के तेल में या गाय के घी में मिलाकर सिर में लगाने से बाल उगने लगते हैं। (ग) हाथी की लीद को जलाकर उसकी राख को उसी के मूत्र में मिलाकर बालों में लगाने से गंजापन दूर होता है।
32. **हड्डी में चोट** :– गेहूँ का आटा व हल्दी को तेल में मिलाकर पट्टी बांधें, मोच ठीक होगी। गेहूँ चोकर का हलवा गुड़ में मिलाकर खाने से हड्डी टूटने पर जल्दी ठीक होगी।
33. **सरदद्र, चोट व मोच** – लोबान के साथ वन हल्दी को पीसकर लेप करें, सरदद्र में राहत मिलेगी व पानी में मिलाकर लेप करें या इसका तेल लगायें, चोट–मोच में राहत मिलेगी।
34. **सौन्दर्य, पसलियों में दद्र, सर दद्र व चक्कर आना** :– हल्दी, बसेन, सरसों का तेल व कच्चा दूध का उबटन चेहरे पर मलें, सौन्दर्य बढ़ेगा। पसलियों में दद्र हेतु हल्दी पानी में घोलकर लेप करें, सरदद्र, चक्कर आए तो पीसी हुई हल्दी पानी में डालकर लेप करें।
35. **गला खराब एवं खाँसी** :– पानी में गेहूँ का चोकर उबाले, उसमें शक्कर व दूध डालकर चाय की तरह पीए या गेहूँ की चाय पीएं, गला ठीक होगा।
36. **गला खराब, दुर्गन्ध व हिचकी** :– लौंग को दीपक पर भूनकर मुख में रखें व 4–5 लौंग मुख में रखकर चबाने से दुर्गन्ध से राहत मिलेगी। 2–3 लौंग मुख में डालकर चूसे हिचकी दूर हो जाएगी।
37. **भूख का अनुभव नहीं होना** :– कमल के बीजों को चावल के साथ बकरी के दूध में पीसकर शुद्ध देशी घी का हलवा या खीर बनाकर खायें। इसके सेवन करने से कई दिनों तक भूख का अनुभव नहीं होगा।
38. **चर्म रोग व अन्य रोग हेतु** :– (क) चर्म रोगों हेतु चम्पा संजीवनी है। इसके फूलों को पीसकर चर्मरोग या कुष्ठ रोगी के शरीर पर लगाने से लाभ मिलता है। यह ज्वर नाशक व पुरुषों में शक्ति उत्तेजना देता है। (ख) कीकर के फूलों का लेप बनाकर त्वचा पर लगाने से चर्म रोग दूर होते हैं व इसके अर्क से रक्त विकार दूर होता है। इसके जल को कुल्ला करने से दंत विकार दूर होते हैं। (ग) सूखी त्वचा :– सूखी त्वचा पर हल्दी और नींबू का रस मिलाकर पेस्ट बना लें तथा त्वचा पर लेप करके आधे घंटे बाद धोएं। त्वचा का सूखापन दूर हो जाएगा। (घ) त्वचा रोग या जलना :– त्वचा रोग हेतु गेहूँ को भूनकर जला कर उसकी राख सरसों के तेल में मिलाकर लेप करें व आटा लगाए या गेहूँ–घास का रस साफ कपड़े में तर करके पट्टी बांधने से जलने में राहत मिलती है। (ङ) दाद, खाज, खुजली, फोड़े, फुंसी में त्वचा पर राई का लेप करें, त्वचा रोग दूर होगा। (च) त्वचा संबंधी रोग होन पर शंख में जल भरकर उस जल से स्नान करने से सभी प्रकार के रोग शीघ्र नष्ट हो जाते हैं तथा त्वचा शुद्ध हो जाती है। (छ) चर्म रोग निदान हेतु नौसादर को कौड़ी के साथ घिसकर रोग पर लगाने से लाभ होता है। (ज) सफेद व लाल कौड़ी पीसकर जख्म पर लगाने से जख्म शीघ्र भरता है। (झ) त्वचा रोगों अथवा फोड़े–फुन्सियों पर कचनार की छाल को घिस कर पेस्ट बना कर संबंधित स्थान पर लगाने से त्वचा रोग ठीक हो जाता है।
39. **पेशाब में रुकावट** :– पेडू पर राई का लेप करने से पेशाब की रूकावट दूर होगी।
40. **बेचैनी** :– किसी भी कारण से बहुत बेचैनी, टेंशन अनुभव कर रहे हों तो एक गिलास में साफ पानी लेकर 21 बार पानी पर **'ॐ हंसः हंसः'** मंत्र पढ़कर वह पानी पी लें। धीरे–धीरे टेंशन मुक्त हो जाएंगे।
41. **बच्चा पानी नहीं पीता** :– कभी–कभी बच्चा पानी नहीं पीता व उल्टी करता है तो एक लोटा पानी लेकर बच्चे पर सात बार या इक्कीस बार उतार कर दरवाजे के बाहर दायें–बायें तरफ डाल दें, उससे बच्चा पानी पीने लग जाएगा।
42. **कान का दर्द** :– (क) कान का दद्र होने पर ग्वारपाठा (घृतकुमारी) के पत्तों का रस गुनगुना करके 2 बूंद कान में टपकाएं। (ख) केवड़े की इत्र को दो बूंद कान में डालने से कान का दद्र ठीक होता है।
43. **थकान व सिरदर्द मिटाने हेतु** :– केवड़े का अर्क पानी में डालकर पीने से थकान दूर होती है व इसके जल से स्नान करने से चर्म रोग ठीक होते हैं।
44. **दुर्गन्ध नाशक व उत्तेजना हेतु** :– इसकी गंध कस्तूरी जैसी होती है, जो दुर्गंध नाशक है व इसका तेल उन्मादक होता है। इसका इत्र सिरदद्र व गठिया हेतु मंजरी चर्म रोगों में लाभदायक है।

45. **मुँह में बदबू** :– अनार का छिलका पानी में उबालकर गर्म पानी से कुल्ले करने से मुँह की बदबू दूर होगी।

46. **लीवर व चर्म रोग** :– लीवर में सूजर, पथरी व चर्मरोग हेतु वैद्य की सलाह से गेंदे के फूल का अर्क लगाना हितकारी होता है।

47. **शीतलता हेतु** :– गुलाब का गुलकंद पेट की आँतों की गर्मी की शांति हेतु व हृदय में प्रसन्नता हेतु अच्छा होता है। आँखों में इसका गुलाबजल डालने से जलन, सूजन समाप्त होकर शीतलता आती है। गुलाब का इत्र उत्तेजक होता है व इसका तेल मस्तिष्क को ठंडा रखता है। इसका शर्बत पेट की गर्मी को शांत करता है।

48. **रोगों में उतारा** :– शरीर के जिस अंग में रोग हो, उस अंग से संबंधित रंग के वस्त्र में सम्मुख लिखी सामग्री को लपेटकर पीड़ित अंग से छुआएं व रविवार को 12 बजे के आस–पास अपने इष्ट व गायत्री का ध्यान करते हुए मन–ही–मन विचारें कि मेरी बीमारी धीरे–धीरे सिमट कर उस वस्त्र में आ रही है। वस्त्र शरीर पर बांधें व मंगलवार को वह सामग्री कपड़े सहित अपने ऊपर से उतारा कर चौराहे पर फेंक आवें। घर आकर हाथ–मुँह धोयें व गायत्री का ध्यान करें कि अब मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ। विभिन्न रोगों में सामग्री तथा वस्त्र का रंग इस प्रकार है:–

(i) मुख रोग :– यदि मुख में रोग हो तो सफेद कपड़े में जीरा बांधें।

(ii) स्नायु विकार या साँस के रोग :– यदि स्नायु विकार या साँस के रोग हो तो काले कपड़े में कालाजीरा बांधें।

(iii) हाथ के रोग :– यदि हाथ के रोग हो तो बैंगनी कपड़े में हींग बांधें।

(iv) हृदय के रोग :– यदि हृदय के रोग हो तो नीले कपड़े में काली मिर्च बांधें।

(v) कमर के रोग :– यदि कमर के रोग हो तो हरे कपड़े में इलायची बांधें।

(vi) जाँघ के रोग :– यदि जाँघ के रोग हो तो लाल कपड़े में लाल मिर्च बांधें।

(vii) पेट के रोग :– यदि पेट के रोग हों तो आसमानी वस्त्र में तुलसी के पौधे की जड़ बांधें।

(viii) मूत्र रोग :– यदि मूत्र रोग हो तो पीले वस्त्र में हल्दी बांधें।

49. **पशुओं की चिकित्सा** :– जब किसी गाय या भैंस को व्याधि हो, कीड़ा लगा हो तो नीला कपड़ा लेकर रविवार या बुधवार के दिन तुलसी की शाखा लेकर उसे मोड़कर कपड़े में बांध लें और उसको सींग में बांध दें। तीन दिन में कीड़े मर जाएंगे और सात दिन बाद घाव भी सूख जाएगा, तब दवाई को सींग से हटा लें और एक नारियल भगवान शंकर के नाम से फोड़ दें।

50. **गायों की बीमारी में** :– कदम्ब की टहनी को गौशाला में रखने से गायों को रोग नहीं होते।

51. **बुखार** :– (क) बुखार होने पर नाक का जो स्वर चल रहा है, उसी दिशा की करवट लेकर लेट जाएं तो दूसरा स्वर चलने लगेगा तथा मन–ही–मन सफेद धवल वस्त्रधारी गायत्री का ध्यान करते हुए गायत्री मंत्र का जप करें। पलंग पर श्वेत चादर बिछायें व श्वेत वस्त्र पहनें, बुखार चला जाएगा। (ख) यदि बुखार न उतर रहा हो तो रोगी के ऊपर से सात बार सीताफल उसारकर चौराहे पर रख आएं। बुखार शीघ्र उतर जाएगा। (ग) प्रसूति के समय जो कपड़ा स्त्री ओढ़े हुए हो, वह यदि बादी से आने वाले ज्वर रोगी को ओढ़ाया जाय, तो ज्वर दूर होता है। (घ) रविवार को उल्लू के पंख धोकर सुखायें। लाल–काले धागे में सिरहाने रखें, सोमवार को पंख से 21 बार झाड़ा लगायें व वह धागा रोगी में बांधें। (ङ) पारी ज्वर के रोगी के शरीर से सौली मछली का स्पर्श कराकर किसी चौराहे पर फेंक देने से ज्वर शांत हो जाता है। (च) श्वेत अपामार्ग की पत्तियों को गुड़ में मिलाकर खाने से ज्वर नष्ट होता है। (छ) मेंहदी की जड़ व बीज को ताबिज में भरकार कंठ पर धारण करने से ज्वर नष्ट होता है।

52. **माहवारी की परेशानी** :– (क) मासिक धर्म (माहवारी) में महिलायें जब परेशानी अनुभव करें, तब एक मिट्टी की छोटी हंडिया में गंगाजल भर लें। उसमें थोड़ी सी लाल रोली डाल दें। उसे रोगी महिला पर 21 बार उतारकर चौराहे पर रख दें। प्रयास करें कि कोई टोके नहीं। माहवारी की परेशानी दूर हो जाएगी। (ख) जिन स्त्रियों को मासिक धर्म की समस्या है, उन्हें बेला फूल की कलियाँ चबाने से राहत मिलती है व यह सुगंधयुक्त पुष्प अपने

पास रखने से पसीने में दुर्गंध नहीं आती। (ग) दारु हल्दी का काढ़ा दिन में 3 बार लेने से मासिक रक्त स्राव ठीक होता है।

53. **वायु दोष व लक्ष्मी प्राप्ति** :– प्रतिदिन प्रातः व सायंकाल को कपूर घर या दुकान में जलाने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वातावरण का वायुदोष शांत होता है।

54. **वायु दोष (पेट के गैस) की समाप्ति** :– (क) एक गिलास पानी में काले घोड़े के नाल का छलला डालकर पीने से वायु दोष समाप्त होता है। (ख) रविवार के दिन नाव की कील और काले घोड़े की नाल प्राप्त कर उसका कड़ा बनवायें। यह कड़ा हाथ में धारण करने से वायुगोला का रोग दूर हो जाता है। (ग) प्रतिदिन भोजन करने के बाद कंघी से सिर झाड़ना चाहिए। कंघी इस प्रकार चलानी चाहिए, जिससे उसके कांटे सिर को स्पर्श करें। उसके बाद दोनों पैर पीछे की ओर मोड़कर पंद्रह मिनट तक बैठना चाहिए। प्रतिदिन दोनों समय भोजन के बाद इस प्रकार बैठने से कितना भी पुराना वात क्यों न हो, अच्छा हो जाएगा। यदि स्वस्थ आदमी करे, तो उसे वातरोग होने की कोई आशंका नहीं रहेगी।

55. **मानसिक तनाव दूर करने के लिए** :– (क) अपने शयन कक्ष में रात्रि में सोने से पूर्व अपने सिरहाने कर्पूर का एक टुकड़ा नित्य जलाने से मानसिक तनाव से मुक्ति मिलती है। (ख) चांदी, तांबा व स्वर्ण धातु से निर्मित छल्ला धर्म, विद्या, व्यापार एवं व्यवसाय में सफलता के लिए पहना जाता है। यह बुध एवं गुरु ग्रह को प्रसन्न करने के लिए पहना जाता है। इससे वाणी, बुद्धि एवं मानसिक शांति मिलती है। इसको बुधवार के दिन प्रातः साढ़े नौ बजे तक धारण करना चाहिए। इसके दायें हाथ की छोटी अंगुली (कनिष्ठिका) में धारण करना चाहिए। (ग) जिन्हें क्रोध अधिक आता है अथवा जिनका मन विचलित रहता है, मानसिक रोग घेरे रहता है, कल्पनायें घेरे रहती हैं, उन्हें चांदी का माला धारण करना चाहिए। चांदी का माला धारण करने से मन नियंत्रण में रहता है। इसकी विधि यह है कि शुक्लपक्ष के सोमवार को गंगा जल व दूध से धोकर देवी के मंत्र अथवा चंद्रमा के मंत्रों का जाप करके इसे धारण करें। (घ) स्फटिक का माला शीतलता प्रदान करती है, मन को शांत करती है। यदि गायत्री मंत्र के जप के साथ स्फटिक के माला को धारण किया जाय, तो मानसिक शांति मिलती है, क्रोध में कमी आती है। (ङ) शंख के माला से जप करने से मानसिक शांति मिलती है, क्योंकि यह जल में उत्पन्न होता है। चंद्र व शुक्र को जल का कारक ग्रह मानते हैं। (च) विधानपूर्वक निगुण्डी के जड़ को कवच के रूप में धारण करने या घर में रखने से दरिद्रता दूर होती है। विवाद समाप्त होते हैं, मानसिक तनाव दूर होता है।

56. **सौन्दर्य वृद्धि हेतु** :– (क) एक लाल फर्शी पर हल्दी की गांठ को जल में मिला कर घिसें व इसमें ही सफेद चंदन घिसें। इस को रात्रि में चेहरे पर लगाएं व सुबह इसे धो डालें। इस प्रयोग से चेहरा तरोताजा होगा, झुर्रीयाँ कम होकर चेहरे की चमक बढ़ती है। (ख) कमल के फूल की पंखुड़ियों को पीसकर उबटन करने से चेहरा कांतिमय हो जाता है। (ग) रात को सोते समय चेहरे पर नींबू रगड़कर सोयें व प्रातःकाल धोएं। चेहरे के धब्बे साफ हो जाएंगे। (घ) काली हल्दी का चूर्ण दूध में मिलाकार लेप करने से सौन्दर्य वृद्धि होती है। (ङ) गोरोचन का लेप शरीर में लगाने से सौन्दर्य वृद्धि के चमत्कारी परिणाम मिलते हैं। (च) पूर्व दिशा की ओर मुख करके ताम्र पात्र में जल रखकर थोड़ी कुमकुम व लाल पुष्प डालकर सात बार 'ॐ घृणीः सूर्याय नमः' का जप करते हुए प्रदक्षिणा करें। (छ) सौन्दर्य वृद्धि हेतु कनेर के पुष्पों को मसलकर चेहरे पर मलें। कुछ समय पश्चात् चेहरे को गुनगुने पानी से धोयें। इससे चेहरा खिल उठता है। (ज) हल्दी, बेसन, सरसों का तेल व कच्चा दूध का उबटन चेहरे पर मलें, सौन्दर्य बढ़ेगा।

57. **मुँहासे व नेत्र ज्योति** :– मसूर की दाल को भिगोकर सुखा लें, फिर पीसकर दूध से लें व सोते समय जायफल, काली मिर्च पीस कर चेहरे पर मलने से मुँहासे दूर होते हैं व दाल घी में छौंककर खाने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।

58. **सरदर्द व आधाशीशी** :– (क) जो व्यक्ति अत्यधिक तनाव के परिणामस्वरूप शिरोपीड़ा से पीड़ित रहते हैं, उन्हें चंदन की लकड़ी को घिसकर रात्रि पर्यन्त मस्तक पर लगाना चाहिए। इससे शिरोपीड़ा दूर होकर तनाव नष्ट होता है। (ख) कपूर को सूंघने से अथवा इसे तेल या घी में घिसकर मस्तक पर लगाने से सरदद्र ठीक होता है। (ग) सर दद्र और चक्कर आए तो पिसी हल्दी पानी में डालकर लेप करें। पसलियों में दद्र हेतु भी

हल्दी को पानी में घोलकर लेप करने से दर्द ठीक होता है। (घ) इलायची पीसकर सिर पर लेप करने से सरदर्द ठीक होता है व इसका चूर्ण सूंघने पर छींक आती है। एक इलायची के बीज, 3 बादाम व मिश्री के साथ खायें, साफ दिखने लगेगा, आँखों की ज्योति बढ़ेगी। (ङ) रूद्राक्ष को चंदन की भांति घिसें और इसका लेप माथे पर तिलक के रूप में धारण करने से शिरो पीड़ा दूर होती है तथा शिव की कृपा प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति जहाँ भी जाता है, लोगों पर उसका सम्मोहन जैसा प्रभाव पड़ता है। (च) दोनों हाथ की कोहनी के ऊपर रस्सी से खूब कसकर बांधें। 5–10 मिनट में सरदद्र चला जाएगा। इतना जोर से बांधें कि हाथ में दद्र महसूस हो। बंधे–बंधे गायत्री का ध्यान करें। सिरदद्र जाते ही बाँह पर बंधी रस्सी खोल दें। (छ) सूअर के नाखून की अंगूठी पहनने से सिर के रोग नहीं होते।

59. **दर्द, कब्ज व सरदर्द** :– गेहूँ की रोटी एक तरफ सेकें व एक तरफ कच्ची रखें। इसमें तिल का तेल लगाकर दद्र वाले स्थान पर बांधें। दद्र दूर होगा। चोकर युक्त आटे की रोटी खाने से कब्ज व सरदद्र में लाभ होगा।

60. **आधाशीशी** :– (क) सिरदर्द दूसरे प्रकार का एक और होता है, जिसे साधारणतः 'अधकपारी' या 'आधासीसी' कहते हैं। कपाल के मध्य से बाईं या दाहिनी ओर आधे कपाल और मस्तक में अत्यंत पीड़ा महसूस होती है। प्रायः यह पीड़ा सूर्योदय के समय आरंभ होती है और दिन चढ़ने के साथ–साथ यह बढ़ती भी जाती है। दोपहर के बाद घटनी प्रारम्भ होती है और सायंकाल तक प्रायः नहीं रहती है। जिस तरफ के कपाल में दद्र हो, उसी तरफ के कोहिनी के ऊपर जोर से रस्सी बांध देनी चाहिए। थोड़ी ही देर में दद्र शांत हो जाएगा। यदि पुनः दद्र शुरू हो और प्रतिदिन एक ही नासिका से श्वास चलते समय हो तो सिरदद्र मालूम होते ही उस नाक को बंद कर देना चाहिए और हाथ को बांधे रखना चाहिए। (ख) सूर्योदय से पूर्व यदि कोई स्त्री या पुरुष किसी चौराहे पर जाकर छोटा–सा गुड़ का टुकड़ा दांतों से काटकर वहीं फेंक दें, तो भयंकर आधासीसी के दद्र एवं पीड़ा से मुक्त हो जाएगा/जाएगी। इस प्रयोग में दांत से गुड़ काटते समय रोगी का मुख दक्षिण दिशा की ओर ही होना चाहिए।

61. **गंजापन दूर करना** :– घोड़े की लीद को छाया में सुखाकर जला लें। इसकी राख को उसी के मूत्र में घोलकर सिर में लगाने से गंजापन दूर हो जाता है।

62. **स्वास्थ्य लाभ** :– श्वेतार्क की जड़ को कूटपीस कर गाय के दूध के साथ सेवन करने से ओज–तेज में वृद्धि होती है तथा स्वास्थ्य लाभ होता है।

63. **शरीर रक्षा** :– श्वेतार्क के मूल का एक टुकड़ा बाँह में या कंठ में धारण करने से शरीर बाधा आदि समाप्त होती है व शरीर पर कवच चढ़ता है। श्री गणेश जी का कवच का जप और भी अधिक लाभ देगा। आकस्मिक आपदाएं और भूत–प्रेत, नजर, टोना–टोटका आदि का प्रभाव उस व्यक्ति को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।

64. **गंभीर रोग के नाश हेतु** :– दीर्घकालीन रोग हो अथवा रोग समझ में न आ रहा हो, शारीरिक कमजोरी व अशक्तता हो तो रविवार को पुष्य नक्षत्र के दिन आक एवं अरण्ड की जड़ लायें। गंगाजल से धोकर उस पर सिंदूर का लेपन करें तथा गूगल की धूप देवें। इसके बाद गणेश जी के मंत्र का जप 108 बार करें और रोगी पर सात बार उसार कर किसी सुनसान जगह में संध्याकाल में जमीन में गढ्ढा खोदकर दबा दें, रोग नष्ट होगा।

65. **संभोग** :– (1) श्वेतार्क के टुकड़े को धागे से कमर में बांधकर संभोग करने से संभोग अवधि बढ़ती है। (2) श्वेतार्क का दूध और शहद मिलाकर लेप बनायें। इस लेप में श्वेतार्क फल से प्राप्त रूई की बत्ती बनाकर तर कर लें। संभोग के समय यह दीपक जला दें। जब तक दीपक जलता रहेगा, पुरुष को शिथिलता का अनुभव नहीं होगा।

66. **फीलपाँव** :– (क) आक (मदार, अकवन) का पौधा जो रोगी के निवास से उत्तर की ओर उगा हो, उसकी जड़ रविवार के दिन लाकर लाल धागे के सहारे रोगी के पैर में बांधने से फीलपाँव दूर होता है। (ख) सोलह दाँत वाली पीली कौड़ी को छेद कर काले रंग के डोरे से फीलपाँव से ग्रसित भाग पर बांधने से रोग धीरे–धीरे नष्ट हो जाता है।

67. **दाँत दर्द के निवारणार्थः**— मौलश्री की छाल के काढ़े में पीपल, शहद और घी मिलाकर कुछ देर तक मुख में रखने पर दाँतों के दद्र में आराम मिलता है। छाल के काढ़े से कुल्ला करने से हिलते हुए दाँत जम जाते हैं। इसके वृक्ष के नीचे स्नान करना शुभ होता है। इसकी नर्म डाल या टहनी से दातुन करने से दाँत मजबूत होते हैं।
68. **शिरोपीड़ा** :— (1) मौलश्री के अर्क को शिरोपीड़ा की स्थिति में सिर पर लगाने से त्वरित लाभ होता है। (2) कनेर के कुछ पुष्पों को सिर पर मलें। इससे शिरोपीड़ा दूर होती है। (3) मेंहदी का तेल सर को ठंडा रखता है। बालों को काला करने व गिरने से बचाता है।
69. **फोड़े—फुंसी, घाव आदि पर** :— घाव को सुखाने अथवा फोड़े—फुंसी के उपचारार्थ मौलश्री के फल, फूल एवं छाल को सुखाकर उनके चूर्ण को घी में मिलाकर संबंधित स्थान पर लगाने से घाव, फोड़ा—फुंसी आदि ठीक होते हैं।
70. **आँव—दस्त दूर करने हेतु** :— मौलश्री के बीजों के तेल की 2 बूंदे बताशे पर लेकर सेवन करने से 3 दिनों में आँव—दस्त बंद होते हैं।
71. **दाँतों में तकलीफ** :— जिस व्यक्ति को प्रायः दाँतों में तकलीफ रहती है, उसे रविवार के दिन मौलश्री के तने में कील ठोक देनी चाहिए। ऐसा करने से शीघ्र लाभ होता है।
72. **दाँतों का हिलना रोकने हेतु** :— दाँतों का हिलना रोकने हेतु श्वेत कनेर की दातून की जाती है। दातून करनके गुनगुने पानी से कुल्ला करें। यह ध्यान रखें कि इसका रस पेट में न उतारें।
73. **अल्सर, कैंसर इत्यादि के उपचार में** :— शरीर में उत्पन्न अल्सर अथवा मैलिग्नेंट कैंसर की गाँठ को कनेर की सहायता से ठीक किया जा सकता है। इसके पुष्पों का अवलेह बनाकर पानी के साथ उसे संबंधित स्थान पर लगाया जाता है।
74. **कुष्ठ रोग के उपचार हेतु** :— कनेर की ताजी जड़ को सरसों के तेल में भली प्रकार से उबालें। फिर उसे ठंडा करके छान लें। इस तेल को प्रभावित भागों पर लगाने से कुष्ठ रोग से निवृत्ति होती है।
75. **सौन्दर्य वृद्धि हेतु** :— सौंदर्य वृद्धि हेतु कनेर के पुष्पों को मसलकर चेहरे पर मलें। कुछ समय पश्चात् चेहरे को गुनगुने पानी से धोयें। इससे चेहरा खिल उठता है।
76. **चेचक** :— चेचक होने पर तलवों पर मेंहदी का लेप करें।
77. **ज्वर समाप्त** :— मेंहदी की जड़ व बीज को ताबिज में भरकर कंठ पर धारण करने से ज्वर नष्ट होता है।
78. **गलन** :— पाँव की अंगुलियों में गलन लगे तो सरसों का तेल लगाकर रात को मेंहदी लगाएं, गलन दूर होगी।
79. **शारीरिक बलवर्द्धक** :— गोरखमुण्डी को पीस कर इसका चूर्ण दूध के साथ सेवन करने से बल वृद्धि होती है। इसके रस की मालिश करने से शरीर की पीड़ा मिटती है।
80. **बालों में निखार** :— गोरखमुण्डी का चूर्ण रात भर पानी में भिंगोकर उस जल के केश धोने से बालों में निखार आता है।
81. **वृद्धता अवरोधक** :— जौ व गोरखमुण्डी (मुण्डी) के चूर्ण को रोटी पर गाय का घी लगाकर खाने से बुढ़ापा देर से आता है।
82. **आरोग्य हेतु** :— रोगी व्यक्ति भोजन करते समय अपनी दाहिनी जाँघ के नीचे बहेड़ा (बरड़) की जड़ दबाकर भोजन करें। यह आरोग्य कारक माना जाता है।
83. **मस्तिष्क की सक्रियता** :— मस्तिष्क की सक्रियता बढ़ाने के लिए सुलेमानी लाल हकीक को धारण करना उपयुक्त रहता है। इसे दायें हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करें।
84. **पुराना सरदर्द** :— ग्वारपाठा के दूध को आटे में मिलाकर रोटी बनाकर घी में डुबोकर आधी रोटी खाएं।
85. **फोड़ा फोड़ने के लिए** :— ग्वारपाठा के पत्तों का गूदा गर्म करके हल्दी मिलाकर बांधें। इससे फोड़ा फूट जाएगा।
86. **कानदर्द** :— ग्वारपाठा के पत्तों का रस गुनगुना करके 2 बूंद टपकायें।

87. **मृत्युतुल्य कष्ट** :– यदि आपको काफी समय से रोग ने घेर रखा है तो अपने वजन के बराबर जौ लेकर उसे अपने ऊपर उवार कर बहते पानी में बहायें।
88. **दुर्बलता** :– रात को जौ भिंगोकर सुखाएं व कूटकर छिलका उतार कर बचे जौ की खीर खाने से दुर्बलता दूर होगी।
89. **दमा या गलना** :– जौ की राख में मिश्री मिलाकर गर्म पानी से लेने पर दमा व जौ की राख को तिल के तेल में मिलाकर लगाने से गलना दूर होगा।
90. **कमजोरी** :–
91. **मृत्यु समय कष्ट** :– मृत्यु समय पीड़ा हो तो जौ का आटा, काले तिल व सरसों का तेल मिलाकर एक मोटी रोटी सेक कर गुड़ व तेल से चुपड़कर व्यक्ति के ऊपर 7 बार उतार कर किसी भैंसे को खिला दें।
92. **पित्त रोग** :– मूल नक्षत्र में ताड़ की जड़ लाकर धारण करने से पित्त रोग खत्म हो जाता है।
93. **शरीर पीड़ा मिटाना** :– गोरखमुण्डी के हरे पौधे के रस की मालिश करने से शरीर की सारी पीड़ा मिट जाती है।
94. **दाँतों के रोग** :– सेंहुड़ की जड़ चबाने से दाँतों के रोगों से छुटकारा मिल जाता है। उसे खाना नहीं चाहिए, बल्कि चबाकर थूक देना चाहिए।
95. **आँत उतरने** :– आँत उतरने के लिए लाजवंती पौधे की जड़ को शनिवार को लावें। उसे कमर में बांध लें अथवा भिंडी की जड़ धागे के सहारे आँत के स्थान पर बांध लें। शंखाहूली की जड़ का प्रयोग करें। इस जड़ को शनिवार की प्रातः सूर्य को दूध का अर्ध्य देकर, जड़ को कमर में बांधने से कष्ट दूर हो जाता है।
96. **शिरोपीड़ा** :– काकजंघा पौधे की जड़ अथवा द्रोणपुष्पी की जड़ अथवा मजीठा पौधे की जड़ इनमें से किसी भी एक को कपड़े या धागे के सहारे माथे पर बांध लेने से शिरोपीड़ा दूर हो जाती है।
97. **आधाशीशी** :– रविवार या मंगलवार के दिन अधकपारी का बीज धागे के सहारे कान पर बांधे अथवा सफेद चिरमिटी की जड़ कान पर बांधें तथा उसे घिसकर सूंघें अथवा प्रातःकाल दक्षिण की ओर मुँह करके गुड़ का टुकड़ा दाँत से काटकर चौराहे पर फेंक दें। आधाशीशी का दद्र दूर हो जाएगा।
98. **धातु पुष्ट** :– रात्रि में मिट्टी के बर्तन में आम के पेड़ की छाल को रखकर उसमें पानी भर दें। उस बर्त्तन को वस्त्र से ढक दें। प्रातःकाल उस जल को छान कर उसमें दूध मिलायें और उसे पी जायें। इससे उसका बल बढ़ता है तथा धातु पुष्ट होता है।
99. **उदर रोग** :– यदि सदैव उदर रोग हो तो दूध में शक्कर डालें व विधानपूर्वक बरगद वृक्ष की जड़ लाकर व थोड़ी–सी उस जमीन की मिट्टी लेकर तीनों की पूजा करके तिलक लगायें व थोड़ी–सी मिट्टी पेट पर लगायें। इससे उदर रोग ठीक होगा।
100. **स्तनों का दूध उतरने** :– एक गिलास मट्ठा या दूध लेकर 21 बार इष्ट का नाम लेकर फूंक मारें और वह दूध अथवा मट्ठा उस नारी को पिला दें, जिसके स्तनों का दूध सूख गया हो। तीन रोज तक करने से उसके स्तनों सू भरपूर दूध उतरने लगेगा।
101. **सुन्न** :– एक स्थान पर अधिक देर बैठने या अन्य कारणवश शरीर का कोई भाग सुन्न हो जाए, तो उस भाग पर उंगली से 27 का अंक लिख दें। तुरंत ठीक हो जाएगा।
102. **डिप्रेशन (अवसाद) करने हेतु** :– पीपल की लकड़ी को चंदन की भाँति घिसकर रात्रि के समय मस्तक पर लगाने से डिप्रेशन समाप्त होता है।
103. **भूख मिटाने के लिए** :– सहदेवी के बीजों को छीलकर चावल बनाकर दूध में खीर बनाकर खाने से भूख नहीं लगती।
104. **जीवाणु नाशक** :– भैंस का गोबर जाने से जीवाणु मरते हैं।
105. **चिणक लाभ** :– जिस व्यक्ति को चिणक पड़ गयी हो, वह जिस और का जन्म पैरों की ओर से हो, उस औरत के पास मौन होकर जाए व वह औरत पीड़ित व्यक्ति को अपने हल्के हाथ से मुक्के मारे या सात बार वहाँ पैर से मारे। ऐसा तीन बार करे, इससे लाभ होता है।

106. **ज्वर दूर** :– प्रसूति के समय जो कपड़ा स्त्री ओढ़े हुए हो, वह यदि बादी से आने वाले ज्वर रोगी को ओढ़ाया जाय तो ज्वर दूर होता है।

107. **मिर्गी** :– जिस समय मिर्गी का रोगी जब दौरे में बेहोश हो जाए, उस समय रजस्वला स्त्री यदि उसे हाथ पकड़कर उठाये तो वह ठीक हो जाता है।

108. **पित्ती** :– जिस और के दोनों हाथ और पैरों में या एक हाथ–पैर में छः–छः अंगुलियाँ हों, उसके पास पित्ती का रोगी मौन होकर जाए। उस स्त्री द्वारा उस व्यक्ति के माथे पर हाथ फेरने से या थू–थू करने से उसकी पित्ती ठीक होती है।

109. **गुप्त रोग** :– हाथी की लीद के लेप से इंद्रिय रोग दूर होता है।

110. **वीर्य संबंधी रोग** :– तुलसी की जड़ को पीसकर पानी में रखकर खाने से वीर्य पुष्ट हो जाता है। स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

111. **हृदय रोग** :– नित्य तुलसी जी की पाँच पत्तियों का सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल कम हो जाता है।

112. **इंद्रिय दोष** :– (क) पारा, सुहागा, सूखे कंचुएँ, कबूतर की बीट की सफेदी – इन सबको समभाग लेकर कुकरोंध के रस में घोलकर चमेली के तेल में मिलाकर मालिश करें। इससे फूली हुई नसों के इंद्रिय दोषजनित अशक्तता दूर हो जाती है। (ख) चमेली के पत्तों का रस, कनेर, मैनसिल, सुहागा इन सबको मीठे तेल में पकाकर मालिश करें। अति लाभप्रद सिद्ध होगा।

113. **अण्डकोष वृद्धि** :– (क) आंत्र (अण्डकोष) वृद्धि हो जाने से भी रतिक्रीड़ा में उचित सफलता नहीं मिलती। इसके लिए दुर्गा देवी के मंत्रों का अनुष्ठान करें। (ख) दूध में अरण्ड का तेल डालकर 1 महीने तक पीने से वायु की आंत्रवृद्धि दूर हो जाती है। (ग) गुग्गुल व अरण्ड के तेल को गौमूत्र में मिलाकर पीने से पित्त की आंत्रवृद्धि दूर हो जाती है। (घ) महुआ, लाल चंदन, कमलगट्टा, रूम, कमल की जड़ सब सममात्रा में लें। दूध में बारीक पीसकर अण्डकोष पर लेप करें। इससे पित्त की आंत्रवृद्धि दाह व पीड़ा आदि दूर होती है। (ङ) सोंठ, काली मिर्च, पीपल, त्रिफला इन सबका काढ़ा बनाकर उसमें जवाखार, सेंधा नमक डाल कर पीयें। इससे कफ आंत्रवृद्धि दूर हो जाती है। (च) जुलाब लेने से भी रक्तकोप की आंत्रवृद्धि दूर हो जाती है। (छ) मिश्री व शहद पानी में मिलाकर पीने से भी रक्तकोप की आंत्रवृद्धि दूर हो जाती है। (ज) सिफाए तुलसी के पत्तों को हल्का गर्म लेप करने से मेद की आंत्रवृद्धि दूर हो जाती है। (झ) द

114. **पाँव में दर्द** :– जिस पाँव में दद्र हो उसके अंगूठे में सफेद रेशमी धागा बांधें, राहत मिलेगी। मूत्र रोग होने पर बायें पैर के अंगूठे में बांधें।

115. **कण्ठमाला रोग** :– सहदेवी की जड़ बच्चे को ताबीज में पहनाने से कंठमाला रोग दूर होगा।

116. **दस्त अधिक हो व अतिसार** :– सहदेई की जड़ के 7 टुकड़े काटकर माला बनाकर कमर में बांधें। जो लोग अतिसार से ग्रस्त हों, उन्हें सहदेवी के पौधे की जड़ के 7 टुकड़े काटकर लाल धागे से कमर में बांध लेना चाहिए। अतिसार रोग समाप्त होगा।

117. **अम्ल–पित्त** :– नमक या शक्कर अथवा गुड़ के साथ भांग का सेवन किया जाय तो शूल (पीड़ा) व अम्लपित्त का क्षय होता है।

118. **विभिन्न प्रकार के रोगों में विभिन्न प्रकार की मालाओं का प्रयोग** :–

रुद्राक्ष की माला :– ब्लडप्रेशर :– रुद्राक्ष की माला पहनने से ब्लडप्रेशर नहीं होता।

तांबे के सिक्के की माला :– हैजा :– तांबे की टिकड़ी की माला पहनने से हैजा नहीं होता।

चाँदी की माला :– क्रोध शांति और मानसिक शांति हेतु :– प्रायः चाँदी की माला का प्रयोग न के बराबर होता है। परंतु चाँदी के 108 मणियों की माला जपने या धारण करने से मन में शांति रहती है। इसका प्रयोग सात्विक कार्यों व पुष्टि कार्य में होता है। जिन्हें क्रोध अधिक आता है और जिनका मन शांत नहीं रहता है वे इसे विधिपूर्वक धारण करें तो क्रोध का शमन होता है और मानसिक रोग मिटता है। जिनका मन विचलित रहता है, कल्पनाएँ घिरी रहती हैं, इसे धारण करने के उनका मन नियंत्रण में रहता है। इसकी विधि यह है कि शुक्लपक्ष में सोमवार को गंगा जल व दूध में भिंगोकर देवी मंत्र या चंद्रमा के मंत्र का जप करके धारण करें।

पपीता का बीज :– प्लेग :– पपीते के बीज की माला पहनने से प्लेग नहीं होता।

कमल का बीज :– विभिन्न प्रकार के रोग :– कमल के बीजों की माला पहनने से रोग नहीं होता।

मूँगे की माला :– मूँगे की माला पहनने से रक्त वृद्धि व शुद्धि होती है।

प्याज की माला :– तिल्ली का रोग दूर करने के लिए छोटे प्याज की माला गले में पहननी चाहिए।

119. **बड़ी कटेरी** :– बड़ी कटेरी के सात टुकड़ों को सफेद धागे में बांधकर बच्चे के गले में पहना देने से सकुनी ग्रह की पीड़ा समाप्त हो जाती है।
120. **सतावर** :– सतावर के सात टुकड़ों में सूती धागे से अलग–अलग सात जगह गाँठे बांधकर माला बनायें तथा इसे शुभ मुहूर्त्त में सकुनी ग्रह से पीड़ित बच्चे के गले में पहना दें। ग्रह का दुष्प्रभाव पूर्णतः मिट जाएगा।
121. **जख्म** :– सफेद व लाल कौड़ी पीसकर जख्म पर लगाने से जख्म शीघ्र भरता है।
122. **नेत्र रोगों हेतु** :– कौड़ियों को शुद्धजल से धोकर पूजा करके उसे गुलाब जल में घिसकर नेत्रों पर लगाने से नजर तेज होती है व जाला हटता है।
123. **चर्म रोग** :– चर्म रोगों के निदान हेतु नौसादर को कौड़ी के साथ पिसकर (घिसकर) रोग पर लगाने से लाभ होगा।
124. **जलने पर** :– शरीर जलने पर या छालों आदि से बचाव हेतु जले हुए स्थान पर कौड़ी बांधने से राहत मिलती है।
125. **नंपुसकता हेतु** :– चमेली के तेल में कौड़ी का राख व असगंध डालकर लिंग पर मालिश करने पर कमजोरी दूर होती है। कहीं–कहीं वैद्य स्थिति अनुसार नंपुसकता या बांझपन में कौड़ी की भस्म की सलाह भी देते हैं।
126. **अजीर्ण** :– यदि भाँग को जल में पीसकर जल में ही छानकर सेवन किया जाय तो अजीर्ण रोग दूर होता है।
127. **वाक् चातुर्य** :– यदि भाँग को घी के साथ सेवन किया जाय तो वाक् चातुर्यता की प्राप्ति होती है।
128. **कफ दोष निवारण** :– शहद के साथ भाँग का सेवन करने के कफ दोष की निवृत्ति होती है। सेंधा नमक के साथ भाँग का सेवन किया जाय तो जठराग्नि प्रदीप्त होती है।
129. **उच्च रक्तचाप व क्रोध शांति** :– जिन व्यक्तियों को उच्च रक्तचाप रहता है, वे अगर स्फटिक की माला धारण करें तो रोगी को लाभ होता है।
130. **रोगनाशक** :– श्वेत गुंजा मूल को रवि पुष्य नक्षत्र में धारण करने से रोग नष्ट होता है।
131. **पुरुषत्व** :– भैंस के घी में गुंजा को चंदन की भाँति घिसकर मालिश करने से वीर्य स्तम्भन होता है। यह प्रयोग तभी करें, जब शिथिलता बढ़े। नित्य प्रयोग न करें।
132. **कामशक्ति** :– घी में सफेद गुंजा की जड़ को रगड़कर इन्द्रिय पर मलने से कामशक्ति बढ़ती है। ध्यान दें गुंजा की जड़ को मुलैठी भी कहते हैं।
133. **नेत्र लाभ** :– सफेद गुंजा की जड़ को घी में व गुलाब जल में घिसकर काजल लगाने से मोतियाबिंद, फूले जैसा रोग कट जाता है और नेत्र को लाभ होता है। लेकिन किसी अच्छे डॉक्टर या बैद्य की सलाह अवश्य लें।
134. **नींद न आने पर** :– नींद लाने के लिए सफेद घुंघुची (गुंजा) की जड़ को सिरहाने रखने से अच्छी नींद आती है।
135. **पेट के कीड़े** :– नीम के बीज को नींबौली कहते हैं। नींबौली को पीसकर नाभी के नीचे लेप करने से पेट के कीड़े नष्ट होते हैं।
136. **उच्च रक्तचाप नियंत्रित रखने हेतु** :– सुबह–सबेरे मीठे नीम की 8–10 पत्तियाँ रोजना कोरा चबाने पर रक्तचाप नियंत्रित रहता है।
137. **स्फूर्त्ति तथा उत्तेजना** :– मीठे नीम की पत्तियाँ शाम के समय चबाने से वह शरीर में विशिष्ट प्रकार की ऊर्जा का संचार करता है।
138. **दस्त में** :– करीपत्ता (मीठा नीम) की कुछ मात्रा जल में हल्के से उबालकर उस जल को पीने से त्वरित लाभ मिलता है।

139. **नेत्र रोगों में** :– नेत्रों की ज्योति बढ़ाने हेतु अथवा रतौंधी की समस्या होने पर इसकी पत्तियों को छाया में सुखाकर फिर पीसे हुए मीठे नीम की पत्तियों के चूर्ण की 2 ग्राम मात्रा नित्य जल से ग्रहण करने से परम लाभ होता है।
140. **शुक्राणु वर्द्धन हेतु** :– मीठा नीम के छाल के चूर्ण की 1 ग्राम मात्रा शहद के साथ एक बार सुबह लेने से पुरुष में शुक्राणुओं की गतिशीलता बढ़ती है व उसकी संख्या वृद्धि होती है।
141. **शक्ति बढ़ाने हेतु** :– करीपत्ते (मीठा नीम) के पौधे की छाल का चूर्ण 1 ग्राम अथवा इसकी जड़ का चूर्ण 1 ग्राम दूध में औंटकर, मिश्री मिलाकर पीने से बल में वृद्धि होती है।
142. **सर्वरोग विनाशक** :– रोज सुबह कोमल नीम की पत्तियाँ चबाने से किसी प्रकार के रोग अथवा विष का प्रभाव नहीं होगा। इसकी छाया में बैठकर अध्ययन करना शुभ होता है। पानी में नीम की पत्तियाँ उबालकर नहाने से रोगों का नाश होता है।
143. **नाखून के रोग** :– नाखूनों पर नित्य नींबू रगड़ें। रस सूख जाने के बाद पानी से धोएँ। इससे नाखनूों के रोग ठीक हो जाते हैं।
144. **पथरी** :– एक गिलास पानी में एक नींबू निचोड़कर सेंधा नमक मिलाकर सुबह–शाम दो बार नित्य एक महीना पीने से पथरी पिघलकर निकल जाती है।
145. **बाल गिरना, रूसी (डेन्ड्रफ)** :– एक नींबू के रस में तीन चम्मच चीनी, दो चम्मच पानी मिलाकर, घोलकर बालों की जड़ों में लगाकर एक घंटे बाद अच्छे से सिर धोने से रूसी दूर हो जाती है, बाल गिरना बंद हो जाता है। सिर से बाल गायब हो रहे हों, तो उस स्थान पर नींबू रगड़ने से बाल गायब होना बंद हो जाएंगे तथा फिर से बाल आने लगेंगे।
146. **बाल काले करना** :– एक नींबू का रस, दो चम्मच पानी, चार चम्मच पिसा हुआ आँवला मिला लें। इसे एक घंटा भींगने दें। फिर सिर पर लेप करें। एक घंटे बाद सिर धोयें। साबुन, शैम्पू इत्यादि बाल धोते समय नहीं लगायें। धोते समय पानी आँखों में नहीं जाए, इसका ध्यान रखें। यह प्रयोग हर चौथे दिन करें। कुछ महीनों में बाल काले हो जाएंगे।
147. **नेत्र ज्योतिवर्द्धक** :– एक गिलास पानी में एक नींबू नीचोड़कर प्रातः भूखे पेट पीएं। इससे नेत्रज्योति ठीक होगी व पेट साफ रहता है।
148. **अपच** :– नींबू पर काला नमक, काली मिर्च डालकर तीन बार नित्य चूसें। अपच व पेट के सामान्य रोग ठीक हो जाएंगे व भूख अच्छी लगेगी।
149. **छाले** :– नित्य नींबू एवं पानी में स्वाद के लिए चीनी या नमक डालकर प्रातः भूखे पेट पीएं। रात को सोते समय एक गिलास गर्म दूध में एक चम्मच घी डालकर पीऐं। लंबे समय तक प्रयोग करने से भविष्य में छाले होना बंद हो जाते हैं।
150. **अम्लता (एसिडिटी), खट्टी डकारें** :– दोपहर में भोजन से आधा घंटा पहले नींबू की मीठी शिकंजी दो महीने तक पीएं। खाना खाने के बाद न पीएं। यदि खट्टी डकारें आती हों, तो गर्म पानी में नींबू निचोड़कर पीएं।
151. **पेट दर्द** :– बार–बार नींबू का पानी पीते रहने से पेट दर्द, वायु गोले का दद्र ठीक हो जाता है।
152. **उल्टी, जी मिचलाना** :– दो छोटी इलायची पीसकर नींबू की फाँक में भरकर चूसने से उल्टी बंद हो जाती है। यात्रा में उल्टी हो तो नींबू चूसते रहें। जी मिचलाए, उल्टी की इच्छा हो तो नींबू की फाँक में काला नमक, काली मिर्च भरकर चूसें।
153. **नाभी टलना** :– नींबू काटकर बीज निकाल लें। इसमें भुना हुआ सुहागा एक चम्मच भरकर हल्का–सा गर्म करके चूसें। टली हुई नाभि अपने स्थान पर आ जाएंगी।
154. **बवासीर** :– बवासीर से रक्त आता हो तो नींबू की फाँक में सेंधा नमक भरकर चूसने से रक्तस्राव बंद हो जाता है।
155. **अनिद्रा** :– सोते समय नींबू, शहद, एक गिलास पानी पीने से गहरी नींद आती है।

156. **सूखी त्वचा** :– सूखी त्वचा पर हल्दी और नींबू का रस मिलाकर पेस्ट बना लें तथा त्वचा पर लेप करके आधे घंटे बाद धोएं। त्वचा का सूखापन दूर हो जाएगा।
157. **शरीर सौन्दर्यवर्द्धक** :– रात को सोते समय चेहरे पर नींबू रगड़कर सोयें व प्रातः धोएं। चेहरे के दाग–धब्बे साफ हो जाएंगे।
158. **स्त्री स्खलन** :– तांत्रिकों के अनुसार बिजौरा नींबू के रस को मूत्रेन्द्रिय पर लेप करके संभोग करने पर स्त्री तत्काल स्खलित हो जाती है।
159. **बाल बढ़ना** :– घोड़े की लीद की भस्म बनाकर तिल के तेल में मिलाकर लगाने से बाल जल्दी बढ़ते हैं।
160. **रक्त की कमी, टी.बी. व दुर्बलता** :– मक्के की रोटी खायें व मक्का के तेल से मालिश करने से रक्त की कमी, टी.बी. व दुर्बलता दूर होती है।
161. **पथरी** :– (क) मक्के के भुट्टे की राख पानी में डालकर छानकर पीने से पथरी का रोग दूर होता है। (ख) दारु हल्दी का चूर्ण दिन में तीन बार लेने से पथरी में लाभ होता है। (ग) काले घोड़े की नाल की अंगूठी को मध्यमा अंगुली में पहनने से पथरी नहीं होती है।
162. **हिचकी** :– (क) अगर हिचकी न रुके तो अचानक पानी के छींटे मुँह पर मारने से हिचकी शांत होती है।

    (ख) मूली के पत्ते खाने से हिचकी रुक जाती है।

163. **पीलिया** :– (क) पीलिया होने पर सिरहाने के पास मूली रखें। इसके पत्तों का काढ़ा बनाकर पीने से भी बहुत लाभ होता है। (ख) आक (अकवन/मदार) के पुष्प को पीलिया रोग होने पर पान में रखकर एक–दो कली खिलाने से आराम मिलता है।
164. **मलेरिया** :– दारु हल्दी का काढ़ा दिन में 2 बार पानी से लेने पर मलेरिया में लाभ होता है।
165. **मासिक रक्त स्राव** :– दारु हल्दी का चूर्ण दिन में तीन बार लेने से मासिक रक्त स्राव ठीक होता है।
166. **लू** :– कैरी (कच्चा आम) को गर्म राख में भूनक उसके पानी में चीनी व बर्फ मिलाकर लें। इससे लू नहीं लगेगी।
167. **शक्तिवर्द्धक** :– (क) मीठा आमरस दूध में चीनी डालकर पीने से मर्दानगी बढ़ती है। (ख) पके हुए अंबरी सेव में लौंग गाड़कर 8 दिन पड़ा रहने दें। शीशे के बर्त्तन में रखें व दिन में 3 बार पीसकर 20 दिनों तक दूध से खाएं।
168. **बीमारी दूर करने हेतु** :– दीर्घकालीन रोग हो, बार–बार डॉक्टरों के चक्कर लगते हों या शरीर अशक्त रहे तो पूर्ण रूप से पका हुआ सीताफल लेकर अंदर से खोखला कर लें व उसमें 7 लौंग, एक खोटा सिक्का डाल दें व अपने ऊपर 7 बार उवार कर मंगलवार को हनुमान मंदिर में चढ़ाएं व पीछे मुड़कर न देखें। घर आकर 5 बार हनुमान चालीसा पढ़ें। ऐसा सात मंगलवार तक संध्या में करें। अतिशीघ्र लाभ होगा।
169. **बुखार** :– यदि बुखार न उतर रहा हो, तो रोगी के ऊपर से सात बार सीताफल उसारकर चौराहे पर रख आयें। बुखार शीघ्र उतर जाएगा।
170. **स्वप्न दोष** :– (क) कंधारी अनार का छिलका पीसकर दो बार पानी के साथ खाएं व खटाई न खाएं। सोते समय पाँव धोकर सोएं। इससे स्वप्न दोष दूर होगा। (ख) सूअर का दाँत धारण करने से स्वप्नदोष नहीं होता व वीर्य स्तम्भन होता है। (ग) अपनी माता का नाम कागज पर लिखकर सिरहाने रखें व हाथ–पाँव धोकर पाँच बार अपने इष्टदेव का नाम लें व काले धतूरे की जड़ ताबीज में भरकर कमर में बांधने से स्वप्नदोष नहीं होता। नाम केवल प्याज के रस से लिखें।
171. **बवासीर** :– काले धतूरे की जड़ का टुकड़ा कमर में बांधने से किसी भी प्रकार की बवासीर ठीक हो जाती है।
172. **दिल की कमजोरी** :– सेव का मुरब्बा चाँदी का वर्क लगाकर 15 दिनों तक सुबह में सेवन करें। इससे दिल की कमजोरी दूर होगी।
173. **पेट के कीड़े** :– दो सेब में लौंग गाड़कर 10 मिनट बाद लौंग निकालकर 3 लौंग रोज खाएं।
174. **दाँत मजबूत करने के लिए** :– अनार के फूल सुखाकर बारीक पीसकर मंजन करने से दाँत मजबूत होंगे।

175. **मुँह में बदबू** :– अनार का छिलका पानी में उबालकर गर्म पानी से कुल्ले करने से मुँह की बदबू दूर होगी।
176. **कृमि नाशक** :– पलाश (ढाक) का चूर्ण पेट के सभी रोगों का दूर करता है। इसके पुष्पों की लुगदी बनाकर पेडू पर रखने से पथरी के कारण होने वाले दद्र से मुक्ति मिलती है।
177. **अंग वृद्धि** :– (क) भटकटैया का फल, भिलावा, अनार के फल का छिलका सबकी लुगदी बनाकर सरसों के तेल में पकायें। पकने के बाद इस तेल से जननांग की मालिश करें। (ख) बकरी का घी कामेन्द्रिय पर लगाने से लिंग बढ़ जाता है।
178. **पेशाब में जलन** :– आधा कप चावल के माँड़ में चीनी मिलाकर पीने से पेशाब में जलन व नियमित चावल खाने से यकृत विकार, उच्च रक्तचाप ठीक होगा।
179. **बार–बार पेशाब आना** :– अनार का छिलका पीसकर 4 माशा ताजे पानी के साथ दिन में दो बार 10 दिनों तक खाने से बार–बार पेशाब आने में राहत मिलेगी।
180. **दाँत निकलते समय परेशानी** :– कुत्ते का दाँत ताबीज में रखकर, बच्चे के गले में पहनाने से दाँत निकलते समय होने वाले कष्टों से बच्चा सुरक्षित रहता है।
181. **संकटों से दूर** :– काली बिल्ली का दाँत ताबीज में धारण करने से व्यक्ति सदा संकटों से दूर रहता है।
182. **सिर के रोग** :– सूअर के नाखून की अंगूठी पहनने से सिर के रोग नहीं होते।
183. **ज्वर** :– पारी ज्वर के रोगी के शरीर से सौली मछली का स्पर्श कराकर किसी चौराहे पर फेंक देने से ज्वर शांत होता है।
184. **रोग नहीं लगना** :– खरगोश का दाँत बालक को पहनाने से रोग नहीं लगते।
185. **बर्र का विष उतारने का टोटका** :– (क) बर्रे (बिरनी) द्वारा काटे गये स्थान पर घोड़े के अगले पैरों के नाखूनों को पानी में घीसकर लेप करने विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है तथा पीड़ा शांत हो जाती है। (ख) देशी घी में शहद मिलाकर व्यक्ति को पिला दें व 1 से 100 तक की गिनती गिनवायें। तुरंत लाभ होगा।
186. **गहरी नींद** :– गधे का दाँत सिरहाने में रखने से नींद गहरी आती है और अनिद्रा रोग दूर हो जाता है।
187. **मच्छर दूर करने के लिए** :– घोड़े की पूँछ का बाल कमरे में लटकाने से मच्छर भागते हैं।
188. **बाल हटाना** :– घोड़े का पसीना शरीर में जहाँ लगेगा या रगड़ खाए, वहाँ बाल नहीं उगेंगे। भूल कर भी इसे सिर में न लगने दें।
189. **ऊपरी हवाओं से सुरक्षा** :– हाथी की लीद को चाँदी के ताबीज में भर लें। वह ताबीज जिस बच्चे के गले में पहनाया जाएगा, वह ऊपरी हवाओं से सुरक्षित रहेगा।
190. **दस्त व गर्मी** :– चावलों के माँड़ में थोड़ा नमक मिलाकर थोड़–थोड़ा सा पीने से दस्त व दुगने मूंग की खिचड़ी घी में खाने से गर्मी ठीक होगी।
191. **भूख का अनुभव नहीं होना** :– कमल के बीजों को (कमलगट्टा) चावल के साथ बकरी के दूध में पीसकर शुद्ध देशी घी का हलवा या खीर बनाकर खायें। इसका सेवन करने से कई दिनों तक भूख का अनुभव नहीं होगा।
192. **बहुमूत्रता या पथरी** :– काले चने दूध में भिंगोकर सुबह खाएं तथा जौ व चने की रोटी खाएं। इससे बहुमूत्रता दूर होगी। चने और गेहूँ को पानी में उबालें। जब पानी आधा रह जाए तो वह पानी पीएं व बचे हुए चने और गेहूँ की रोटी बनाकार खायें। इससे पथरी नहीं होगी।
193. **कमजोरी, खून की कमी, कुष्ठरोग** :– रात को चने भिंगोकर सुबह उबाल कर चौथाई पानी रहने पर पीएं व अंकुरित चने खाएं। सोयाबीन का दूध पीएं, इससे कमजोरी ठीक होगी। अंकुरित चने खाने से खून की कमी व कुष्ठरोग ठीक होगा।
194. **वीर्य दुर्बलता** :– (क) भूने चने पीसकर घी में भूनें। गरी गोला, बादाम, छुहारे, किशमिश व मिश्री मिलाकर लड्डू बनाकर दिन में तीन बार दूध से लें। वीर्य दौर्बल्यता दूर होगी। (ख) ज्वार के आटे का प्रयोग करने से वीर्य की दुर्बलता व मूत्र विकार ठीक होता है।

195. **झाइयाँ व दाद** :– बेसन, दूध, दही को सरसों के तेल में मिलाकर चेहरे या अन्य जगहों पर मलने से झाइयाँ व बेसन, हल्दी और सरसों का तेल मिलाकर उबटन करने के बाद पानी से धोने से दाद ठीक होगा।
196. **पेट में जलन** :– भुने हुए ज्वार का खील पतासे के साथ खाने से पेट की जलन ठीक होती है।
197. **प्यास लगना व दुर्बलता** :– ज्वार की रोटी को छाछ में भिंगोकर खाने से ये दोनों दोष ठीक होते हैं।
198. **बहुमूत्र, मधुमेह व श्वेतप्रदर** :– हल्दी व तिल लेकर उसमें गुड़ मिलाकर सादे पानी से लें। इससे बहुमूत्र रोग ठीक होगा। हल्दी का चूर्ण पानी के साथ सुबह–शाम लें। इससे मधुमेह ठीक होगा। हल्दी को दस गुना पानी में उबाल कर ठंडा करके दिन भर में 2–3 बार जननांग धोएं। श्वेत प्रदर नहीं होगा।
199. **चोट वाला दर्द, खून की कमी, दुग्धविकार** :– पानी में हल्दी डालकर पीएं, हल्दी का चूर्ण दूध या पानी से लें। दुग्धपान कराने वाली महिला ताजे पानी में चुटकी भर हल्दी डाल कर पीएं।
200. **रोग नाशक (उन्माद, मिर्गी एवं पागलपन जैसे)** :– किसी शुभ दिवस पर पंसारी से काली हल्दी लेकर शुद्ध जल में भिंगे कपड़े से पोछकर लोबान या धूप की धूनी में शुद्ध कर लें और कपड़े में लपेट कर रख दें। आवश्यकता पड़ने पर इसका चूर्ण 1 माशा ताजे पानी के साथ सेवन करायें तथा एक छोटा टुकड़ा काटकर उसे धागे में पिरोकर रोगी के गले या भुजा में धारण करा दें। इस प्रयोग से उन्माद, मिर्गी एवं पागलपन जैसे रोगों में बहुत लाभ होता है।
201. **रात्रि में बिस्तर पर बच्चा पेशाब करे** :– राई के दाने पीस कर बच्चे को खिलाने से बच्चा रात्रि में बिस्तर पर पेशाब नहीं करता है।
202. **पेटदर्द व आफरा** :– पेट पर राई का लेप करें। इससे पेटदद्र दूर होगा। पानी में पीसकर नाभी के चारों ओर लेप करने से आफरा दूर होगा।
203. **दाँतदर्द, गठिया व बदहजमी** :– गर्म पानी में पिसी राई डालकर कुल्ला करने से दाँत का दद्र दूर होता है। गठिया या अन्य दद्र में राई के तेल की मालिश करें। खाने के बाद तीन ग्राम राई पीसकर पानी में डालकर पीने से बदहजमी नहीं होती।
204. **पेशाब में रुकावट, त्वचा रोग, मिर्गी** :– पेडू पर राई का लेप करें। पेशाब में रुकावट दूर होगी। दाद, खाज, खुजली, फोड़े व फुंसी में त्वचा पर राई का लेप करें, त्वचा रोग दूर होगा। मिर्गी के रोगी को राई पीसकर रोगी को सुंघाएं। इससे मिर्गी रोग में लाभ मिलेगा।
205. **पेशाब में जलन व नपुंसकता** :– बरगद का दूध बताशे में डालकर गाय के दूध के साथ पीने से पेशाब में जलन व नपुंसकता दूर होगी।
206. **पौरुष प्राप्ति** :– बरगद के वृक्ष के दूध को प्रातःकाल निकालकर एक बताशे में भरकर खाने पर अपार पौरुष प्राप्त होता है।
207. **दंत रोग** :– यदि प्रातःकाल बरगद के वृक्ष की पतली टहनी से दातून की जाए या इसकी जड़ को कूट–पीस कर चूर्ण बनाकर दाँतों पर मला जाए तो दंत रोग दूर होते हैं।
208. **नेत्र रोग** :– (क) शिरीष के फूलों से निर्मित काढ़े से आँख को धोने से नेत्र रोग दूर होता है। (ख) रक्त, पित्त तथा वात के कारण यदि आँख में पीड़ा हो रही हो तो किसी भी शिशु (बच्चे) की माँ के बायें स्तन के दूध की कुछ बूंदे आँखों में टपकवा लें। पीड़ा तत्काल दूर हो जाएगी।
209. **फोड़े–फुन्सियों में** :– कचनार की छाल जल के साथ फूल में मिलाकर त्वचा में लगाने से फोड़े–फुंसी नहीं होती।
210. **कब्ज व दस्त हेतु** :– अमलतास के फूलों का गुलकंद बनाकर खाने से कब्ज रोग दूर होता है। इसे अधिक मात्रा में नहीं लेना चाहिए। नहीं तो दस्त हो सकते हैं।
211. **मुँहासे व नेत्र ज्योति** :– मसूर की दाल को भिगोकर सुखाकर, पीसकर दूध से लें व सोते समय जायफल, काली मिर्च पीस कर चेहरे पर मलने से मुँहासे दूर होते हैं। तथा मसूर की दाल को घी में छौंककर खाने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।

212. **पसीना अधिक आए व नेत्र ज्योति बढ़ाने के लिए** :– हरे रंग के मूँग को भून कर उबटन की तरह मलने से पसीना सामान्य होता है। व नियमित खाने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।
213. **पेटरोग, कब्ज, बहुमूत्रता व दाँत साफ करने के लिए** :– नियमित मसूर की दाल का सेवन करने से पेटरोग, कब्ज व बहूमूत्रता दूर होती है। तथा मसूर की राख से मंजन करने से दाँत साफ होते हैं।
214. **दाद** :– हरे मूँग को पानी में भिंगोएं। पानी सोखने पर वह दाद पर मलें।
215. **पेट दर्द** :– लाल मिर्च गुड़ में मिलाकर खाएं।
216. **आँख दुखना** :– मिर्च पावडर में पानी मिलाकर जो आँख दुखे उस तरफ के पैर के अंगूठे पर लेप करें। आँख दुखना शांत होगा।
217. **अपच व पेट दर्द** :– इलायची, सौंफ व जीरा भूनकर दिन में दो बार खाने से भूख बढ़ती है। 2–3 इलायची पीसकर शहद से चाटने से पेट दद्र ठीक होगा।
218. **जी मिचलाना, ज्वर व बवासीर** :– इलायची मुँह में रखने से जी मिचलाना, 2–3 इलायची मुँह में चबाने से हिचकियाँ, इसका चूर्ण काली मिर्च के चूर्ण के साथ सेवन करने से ज्वर, तीन बार इलायची का चूर्ण पानी के साथ लेने से बवासीर ठीक होता है।
219. **उल्टी व छाले** :– इलायची पानी में उबालकर ठंडा करके मिश्री मिलाकर पीने से उल्टी व इलायची का चूर्ण शहद से छाले पर लेप करने से छाले ठीक होंगे।
220. **नेत्र ज्वर हो** :– एक कागज पर अपनी समस्या लिखें व उसके चार टुकड़े करके एक घर की दहलीज पर, दूसरा घर के बाहर, तीसरा नाले में व चौथा टुकड़ा अपने पास रखें। सांयकाल उनको एकत्र करके जलायें व राख नाली में बहायें।
221. **मस्से** :– सुबह शिवजी के ऊपर चढ़ाये गए जल को मस्सों पर लगायें। बैंगन व बुआरी चढ़ाने की प्रतीज्ञा लें।
222. **फोड़े** :– (क) यदि फोड़ा ठीक न हो रहा हो तो मंगलवार को सूर्योदय से पूर्व उठकर चौराहे की मिट्टी लाकर अपना नाम 7 बार लेकर फोड़े पर लगायें। (ख) शुक्रवार को कौए का पंख लाकर स्वच्छ पानी में भिंगोकर दूसरे दिन पानी को मंदी आँच पर उबालें। जब पानी आधा रह जाय तो स्वच्छ बर्त्तन में भर कर रखें। जब भी फोड़े–फुंसी हो उस जल को लगायें, लाभ होगा।
223. **बच्चा डरे व पेशाब करना** :– किसी चाँदी के बर्त्तन में श्मशान की मिट्टी रखकर बच्चे के हाथ से कहीं गड़वा दें। बच्चे डरना व पेशाब करना बंद कर देगा।
224. **त्वचा रोग अथवा फोड़े–फुंसियों के लिए** :– कचनार की छाल को घिस कर पेस्ट बना लें और संबंधित स्थान पर लगाने से त्वचा रोग ठीक हो जाता है।
225. **मृत चैतन्य** :– गुलाब के रस में (गुलाबजल) गुंजा मूल को घिसकर मृतक के नाड़ी संस्थान पर लगाने से चैतन्य होता है। यदि मृत संजीवन के मंत्रों का जप करें तो शीघ्र लाभ होगा।
226. **गठिया** :– (क) प्रातःकाल गठिया के रोगी को माधवी के फूल चबाने को दें। इससे राहत मिलती है तथा ये साँस के भी रोग को दूर करती है। (ख) गेहूँ–घास का रस पीने तथा सोयाबीन का दूध व रोटी खाने से गठिया रोग ठीक होता और याद्दाश्त भी बढ़ती है।
227. **लकवा व गठिया** :– उड़द व सोंठ पीसकर पानी में उबालें और तीन बार पीएं। इससे लकवा रोग ठीक होगा। दो बार उड़द की दाल का काढ़ा पीने से गठिया रोग ठीक होता है।
228. **जोड़ों का दर्द व शीघ्रपतन** :– लौंग के तेल की मालिश करने से जोड़ों का दद्र दूर होता है। लौंग का तेल लिंग पर मलने से शीघ्रपतन दूर होता है।
229. **पेट के अल्सर हेतु** :– जूही के फूलों का चूर्ण गुलकंद अम्लपित्त को नष्ट करके पेट के अल्सर व छालों को दूर करता है।
230. **दस्त व मुँहासे** :– जायफल को घिसकर उस पानी को पीएं व पानी का नाभी पर लेप करें। मुँहासे के लिए जायफल को दूध में घिसकर लेप करें।

231. **उल्टी, गैस बनना व अनिद्रा** :– उल्टी हो और प्यास लगे तो जायफल का टुकड़ा चूसें। गैस बनने पर जायफल को नींबू के रस में घिसकर चाटें। जायफल का टुकड़ा मुँह में रखकर चूसने या पानी या घी में घिसकर पालकों पर लगाएं, इससे अनिद्रा दूर होगी।
232. **पेट दर्द/दौरे पड़ना** :– आधा ग्राम जायफल चूर्ण पानी से लें। इससे पेटदर्द/दौरे पड़ना ठीक होता है।
233. **कमरदर्द व जोड़ों का दर्द** :– जायफल को पानी में घिसकर तिल के तेल में मिलाकर गर्म करके ठंडा कर लें और कमर की मालिश करें। कमर दद्र में राहत मिलेगी। जायफल को घिसकर वह पानी या जायफल का तेल जोड़ों पर लगाने से जोड़ों का दद्र ठीक होता है।
234. **स्त्री रोग के लिए** :– अशोक के वृक्ष को मदन वृक्ष भी कहते हैं। यह स्त्री रोगों में लाभदायक होता है।
235. **मोटापा कम करने के लिए** :– अंगूली में काला धागा बांधें व रांगे की अंगूठी धारण करें।
236. **प्रकाश संबंधी रोगों के लिए** :– जिन घरों में सूर्य के प्रकाश की उचित व्यवस्था पूर्ण रूप से नहीं मिल पाती है और इससे रोग उत्पन्न होने पर उन घरों में सूर्यमुखी का पौधा लगाना चाहिए। इससे सूर्य के प्रकाश का आकर्षण होगा।
237. **स्फूर्ति व दंत रोगों में** :– चमेली का तेल चर्म रोगों व दंत रोगों में लाभदायक व स्फूर्तिदायक होता है। इसके पत्ते चबाने से मुँह के छाले ठीक होते हैं। यह मानसिक प्रसन्नता भी देता है।
238. **शक्तिवर्धन हेतु** :– जिन व्यक्तियों को वात, कफ व पित्त संबंधी रोग हो अथवा शीथिलता हो, उन्हें दूध में दो पत्ती केसर डालकर सेवन करने से ओज, बल व शक्ति मिलती है।
239. **दंत पीड़ा** :– (क) लौंग का तेल लगाने से मसूड़े मजबूत होते हैं। मंजन में मिलाकर डालने से उसके गुण बढ़ते हैं। रूई में लौंग का तेल लगाकर दद्र वाले दाँत पर रखें। गुनगुने पानी में लौंग डालकर कुल्ला करें, दाँतदद्र समाप्त होगा। (ख) मसूड़ा फूले होत तीन माशा सोंठ एक बार पानी के साथ 4 दिनों तक खायें। दाँत दद्र दूर होगा। (ग) दाँतों में रोग हो या दाँत कमजोर हो, तो जितनी बार मल–मूत्र का त्याग करें, उतनी बार दाँतों की दोनों पंक्तियाँ मिलाकर जोर से दबायें। जब तक मल–मूत्र निकले, तब तक भींचे रहे। 2–5 दिन में दाँत मजबूत हो जाएंगे व दंत रोगों से मुक्ति मिलेगी। (घ) किसी छोटे बच्चे के दूध वाला दाँत जब गिरे तो उसे सुरक्षित रख लें। इस दाँत को ताबीज में भरकर पास रखने से या पहन लेने से दाँत का दद्र दूर हो जाएगा। अथवा सेंहुड़ की जड़ को दाँत के नीचे दबाना चाहिए। (ङ) अपामार्ग के पौधे को जलाकर भस्म को दाँतों में मलने से दाँत के रोग व कंठ विकार दूर होते हैं। (च) कीकर के जल से कुल्ला करने से दंत विकार दूर होते हैं।
240. **दाँत निकलने हेतु** :– जिन बच्चों के दाँत निकल रहे हों, उन्हें शतपुष्पा के पुष्प मिट्टी के बर्तन में पानी डालकर उबालकर ठंडा करें व बच्चों को पिलाने से दाँत निकलने संबंधी दोषों से मुक्ति मिलती है।
241. **फल पचाने** :– आम अधिक खा लिए हो तो चार जामुन खाकर थोड़ा नमक खाएं। तरबूज अधिक खा लिया हो तो काला नमक खाए।
242. **कमर दर्द** :– चौथाई कप पानी में आधा चम्मच लहसुन का रस और एक नींबू का रस मिलाकर दो बार नित्य लगाएं। यह पदार्थ कमर दर्द में लाभदायक है।
243. **एसीडिटी, हृदय दौर्बल्यता** :– खाने के बाद 2 लौंग खाएं। हरे आँवले के रस में लौंग डालकर शहद से लें। एसीडिटी में राहत मिलेगी। लौंग का चूर्ण तीन बार शहद से लेने पर हृदय की दुर्बलता समाप्त होती है।
244. **पक्षाघात (लकवा) रोकने** :– रविवार पुष्य नक्षत्र में काले घोड़े की नाल की अंगूठी धारण करने से पक्षाघात ठीक होता है व पुनः नहीं हाता।
245. **वायु दोष समाप्त** :– (1) एक गिलास पानी में लोहे का छल्ला डालकर पीने से वायु दोष समाप्त होता है। (2) रविवार के दिन नाव की कील और काले घोड़े की नाल प्राप्त करके उसका कड़ा बनवायें। यह कड़ा हाथ में धारण करने से वायुगोला का रोग दूर हो जाता है।
246. **हृदय रोग** :– जिन व्यक्तियों को हृदय रोग होता है, उन्हें सूरजमुखी (सूर्यमुखी) का तेल इस्तेमाल करने से लाभ मिलता है। इसमें विटामिन 'ए' तथा 'डी' की मात्रा प्रचुर रूप में रहती है।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

247. **अंग संकुचन** :– महिलाओं के प्रजननांगों में रोगवश शिथिलता आ जाती है। अतः नाल सहित कमल को पीसकर दूध से वटी सुपारी के समान बना लीजिए। उसे प्रजननांग में रखने से स्त्री के यौन रोग में लाभ होता है।
248. **अंग की कमजोरी** :– एक तोला लौंग, तीन माशा चमेली के तेल को जलाकर कपड़े में छानकर रात को लिंग पर मालिश करें व पान का पत्ता बांधें। नसें सख्त हो जाएंगी।
249. **कब्ज निवारण** :– (1) कमल के फूल का गुलकंद प्रयोग करने से कब्ज दूर हो जाता है। (2) कचनार के फूलों में रचक गुण होता है। इसलिए अत्यधिक कब्ज की स्थिति में अथवा दस्त साफ न हो पाने की दशा में इस वृक्ष का एक पुष्प लेकर उसके नीचे के हरे पत्तों को निकालकर शेष पुष्प चीनी के साथ ग्रहरण करने से लाभ होता है, दस्त साफ होता है। कब्ज दूर होता है। किंतु इसका प्रयोग लगातार न करें। बहुत कब्ज होने की स्थिति में ही करें।
250. **लीवर व चर्म रोग** :– लीवर में सूजन, पथरी व चर्मरोग हेतु वैद्य की सलाह से गेंदे के फूल का अर्क लगाना हितकारी होता है।
251. **कांतिमय चेहरा** :– (1) कमल के फूल की पंखुड़ियों को पीसकर उबटन करने से चेहरा कांतिमय हो जाता है। (2) हरसिंगार के फूल का लेप चेहरे पर लगाकर धोने से चेहरे की कांति बढ़ती है।
252. **चर्म रोग व अन्य रोग** :– (1) चर्म रोगों हेतु चम्पा संजीवनी है। इसके फूलों को पीसकर चर्मरोग या कुष्ठ रोगी के शरीर पर लगाने से लाभ मिलात है। यह ज्वर नाशक व पुरुषों में शक्ति उत्तेजना देता है। (2) कीकर का लेप बनाकर त्वचा पर लगाने से चर्म रोग दूर होते हैं व इसके अर्क से रक्तविकार दूर होता है। इसके जल को कुल्ला करने से दंत विकार दूर होते हैं।
253. **मासिक धर्म दूर करने व दुर्गन्ध नाशक** :– जिन स्त्रियों को मासिक धर्म की समस्या है, उन्हें बेला के फूल की कलियाँ चबाने से राहत मिलती है व यह सुगंधयुक्त पुष्प अपने पास रखनेसे पसीने से दुर्गध नहीं आती है।
254. **अनिद्रा हेतु** :– जिन व्यक्तियों को नींद नहीं आती हो उन्हें अपने घर के पास रात की रानी के पौधे का रोपण करना चाहिए। यह मादक व निद्रादायक है।
255. **ताजगी हेतु** :– विष्णुकांता के फूल, पत्ते व डंठल पीसकर पानी में मिलाकर छानकर शहद व मिश्री डालकर पीने से सुस्ती नहीं आती। यह विद्यार्थियों हेतु विशेष लाभदायक है।
256. **नपुंसकता, बांझपन व वीर्य धातु रोग** :– रात को गेहूँ भिगोकर सुबह पीसकर मिश्री या गुड़ के साथ खाने से नपुंसकता, बांझपन या वीर्य–धातु रोग दूर होगा।
257. **शारीरिक कमजोरी, शीघ्रपतन या नपुंसकता** :– (1) नाश्ते में उड़द की खीर खाकर दूध पीएं व उड़द की दाल का उपयोग करें। इससे शारीरिक कमजोरी, शीघ्रपतन या नपुंसकता दूर होगी। (2) प्रातःकाल दो छुआरे खाकर दूध पीने से यौन शक्ति में वृद्धि होती है। (3) निर्गुण्डी का चूर्ण घी में मिलाकर सेवन करने से शरीर पुष्ट होता है।
258. **रक्त शोधक** :– निर्गुण्डी का चूर्ण शहद में मिलाकर सेवन करने से रक्त शोधन होता है। त्वचा रोग दूर होता है व शरीर में अंदर व बाहर शुद्धता होती है।
259. **जलभय** :– निर्गुण्डी की जड़ का चूर्ण बकरी के दूध में नियमित सेवन करने से नाखून, बाल व दाँत परिवर्तन होते हैं। शुद्ध यौगिक प्रक्रिया से 21 दिनों तक सेवन करने से जल भय नहीं रहता।
260. **रोग नाशक व विष प्रभाव हेतु** :– हंसनी कौड़ी को जो श्वेत छोटी और हल्की होती है, हंसपदी में तांबे की मैल के साथ पीसकर इसमें भर दें। इस कौड़ी का ताबीज पहनने पर रोग नहीं होता और विष का प्रभाव भी नहीं पड़ता।
261. **गला खराब, खाँसी** :– पानी में गेहूँ का चोकर उबालें और उसमें शक्कर व दूध डालकर चाय की तरह पीएं या गेहूँ की चाय पीएं, गला ठीक होगा।
262. **मोच व हड्डी टूटना** :– गेहूँ का आटा व हल्दी को तेल में मिलाकर पट्टी बांधें, मोच ठीक होगी। गेहूँ के चोकर का हलवा गुड़ में मिलाकर खाने से हड्डी टूटने पर जल्दी ठीक होगी।

263. **त्वचा रोग या जलना** :– त्वचा रोग हेतु गेहूँ को भून कर जला कर उसकी राख सरसों के तेल में मिलाकर लेप करें व आटा लगाएं। या गेहूँ–घास का रस साफ कपड़े में तर करके पट्टी बांधने से जलने में राहत मिलती है।

264. **नकसीर** :– (1) उड़द को पानी में भिंगो कर माथे पर लेप करने से नकसीर (2) लौंग जलाकर पानी में डालकर नाक में डालें नकसीर बंद होगी। (3) गर्म पानी में हाथ पैर डुबायें या गाय का सूखा गोबर बारीक पीस कर सूंघने से नकसीर रुक जाएगी।

265. **गंजापन** :– उड़द को उबाल कर पीसकर सर पर लेप करने से गंजापन दूर होता है।

266. **अपच** :– गर्म पानी में लौंग डालकर ठंडा करके दो बार लें। अपच समाप्त होगा।

267. प्यास अधिक लगे, जी मिचलाए :– पानी में लौंग उबालकर गुनगुना करके पीए। ये हैजा में भी हितकर है। 4–5 लौंग मुँह में डाल कर रखें। जी मिचलाना बंद होगा।

268. **शरीर पुष्ट और शक्तिवर्द्धक** :– सावन में शिवलिंगी के बीज और विजया (भाँग) घोंटकर पीने से शरीर पुष्ट होता है।

269. विभिन्न महीनों में भाँग के विभिन्न प्रकार के प्रयोग व लाभ :–

(क) वैशाख के पूरे महीने भर यदि भाँग की पत्ती स्वल्प मात्रा में घटकों (सौंफ, बादाम, मुनक्का, काली मिर्च, इलायची, गुलाब, केसर और दूध) के साथ पीसकर एक गिलास पीए तो उसका रक्त और स्नायु संस्थान विष के दुष्प्रभाव से मुक्त रहता है। खाने–पीने वाली वस्तुओं की विषाक्तता इस प्रयोग से नष्ट हो जाती है।

(ख) जेठ के महीने भर प्रातः सूर्य के पूर्व ही उपरोक्त विधि से नित्य सेवन करें, तो शारीरिक कांति और सौन्दर्य की वृद्धि होती है।

(ग) आषाढ़ के महीने में विजया का सेवन केश कल्प कर देता है। इस प्रयोग में विजया को पेय के रूप में न लेकर, चित्रक के साथ चूर्ण रूप में प्रयोग करना चाहिए।

(घ) माघ के महीने में नागरमोथा की जड़ के चूर्ण में विजया चूर्ण मिलाकर सेवन करना चाहिए। इस प्रयोग से शरीर पुष्ट होकर बल और कांति की वृद्धि होती है।

(ङ) फाल्गुन के पूरे महीने में आँवले के चूर्ण के अथवा रस के साथ भाँग का सेवन दोनों को मिलाकर करने से शरीर का संपूर्ण नाड़ीजाल (स्नायु तंत्र) सतेज हो जाता है। वात और रक्त के समस्त अवरोध दूर हो जाते हैं। इस प्रकार व्यक्ति में अद्भुत स्फूर्त्ति आ जाती है। शरीर की सक्रियता और गतिशीलता बढ़ाने में यह प्रयोग चमत्कारी प्रभाव दिखाता है।

270. **दुर्बलता निवारण** :– दो केले खाकर दूध पीने से दुर्बलता दूर होती है।

271. **मोटापा कम करने हेतु** :– प्रातःकाल उठकर एक जल का लोटा लेकर इष्ट का नाम लें व प्रत्येक मंत्र के बाद धीरे–धीरे अंदर की तरफ साँस खींचे व तेजी से बाहर छोड़ें। इसकी एक माला जपने से आपको आश्चर्यजनक परिणाम मिलेगा।

272. **सुंदरता हेतु** :– पूर्व दिशा की ओर मुख करके ताम्र पात्र में जल रखकर थोड़ी कुमकुम व लाल पुष्प डालकर सात बार **'ॐ घृणीं सूर्याय नमः'** का जप करते हुए प्रदक्षिणा करें।

273. **कामयोग** :– यदि जन्म कुंडली में कामयोग हो अर्थात् मंगल+ शुक्र की युति होना व स्त्री का स्वास्थ्य खराब हो तो चांदी की चूड़ी पर लाल रंग की नक्काशी करके पत्नी के हाथ में पहनायें।

274. बच्चा बोल नहीं पाता :–

275. **वायु रोग (वात रोग)** :– खाना खाने के बाद सिर में जोर से कंघी करें व दोनों पैरों को पीछे मोड़कर 15 मिनट बैठे रहें। यह उपाय दनों समय करें, अवश्य लाभ होगा।

276. **मस्से दूर करना** :– (1) शरीर में जितने भी मस्से हों, उतनी गांठे पतली रस्सी में मस्सों को छुआ कर लगाएं व किसी गुप्त स्थान में गाड़ दें, मस्सों पर विचार न करें। जैसे–जैसे यह रस्सी गलेगी, मस्से नष्ट होंगे। (2) प्रातः काल बासी थूक लगाएं, चूना लगाए व पान के डाँड़ से उसे साफ करें। (3) बैंगन को काटकर रगड़ें। उसकी झाग लगाएं व शिव मंदिर में बैंगन व झाड़ू चढ़ाएं तथा भगवान शिव पर चढ़ाए गए जल को मस्से पर

लगाएं। (4) जितने मस्से हो, उतने साबुत उड़द लेकर दोनों तरफ किनारों पर आमने–सामने दो गाँठें बांधें। शनिवार को काले कपड़े के मध्य गाँठ बांधकर तकिये के नीचे रचाकर सोयें, प्रातःकाल उस कपड़े को बिछाकर तीन बार चलें व कपड़ा कुएँ में फेंकें। ज्यों–ज्यों उड़द नष्ट होगा, त्यों–त्यों मस्से ठीक होंगे।

277. **रजोधर्म के समय पेट में दर्द** :– रजोधर्म के समय जिस स्त्री को पेट में दद्र हो, यदि वह स्त्री मंगलवार या रविवार के दिन रात्रि में मूंज की रस्सी बांधकर सोए और प्रातः होते ही चौराहे पर फेंक दे तो रजोधर्म के कारण होने वाला दद्र व अन्य व्याधियाँ ठीक होती है।

278. **रात को नींद न आने पर** :– जिन लोगों को अनिद्रा की शिकायत रहती है, उन्हें अपना बिस्तर कमरे के उत्तरी क्षेत्र में रखना चाहिए तथा उसके दक्षिण भाग को काले रंग से बने चित्र से सजाना चाहिए व रात को कपूर और अगरबत्ती जलाकर सुगंधित वातावरण बनायें।

279. **अनिद्रा दूर करने का टोटका** :– नींद लेने के लिए कंकाच की जड़ को बारीक पीस कर मस्तिष्क पर लेप करने से अथवा सफेद घुंघुची की जड़ सिरहाने रख कर लेटने से गहरी नींद आ जाती है।

280. **कामशक्ति** :– (1) भाद्रपद व माघ मास के कृष्णपक्ष की चतुद्रशी को कटिहारी की जड़ उखाड़कर कमर में बांधकर रमण करें। (2) मछली का अंडा, बताशे और मुर्गी के अंडे की जर्दी के साथ गाय के घी में पकाकर खाने से कामशक्ति बढ़ती है।

281. **अपच–अजीर्ण** :– नाक का दाहिना स्वर चले, तभी खाना खायें। खने के बाद बायीं करवट लेटें, अजीर्ण व अपच नहीं होगी।

282. **बुखार** :– बुखार हो तो नाक का जो स्वर चल रहा है, उसी दिशा की करवट लेकर लेट जाए तो दूसरा स्वर चलने लगेगा तथा मन–ही–मन सफेद धवल वस्त्रधारी गायत्री माता का ध्यान करते हुए गायत्री मंत्र का जप करें। पलंग पर श्वेत चादर बिछायें व श्वेत वस्त्र पहनें। बुखार चला जाएगा।

283. **गला खराब, दुर्गन्ध हिचकी** :– लौंग को दीपक पर भूनकर मुख में रखें व 4–5 लौंग मुख में रखकर चबाने से दुर्गन्ध से राहत मिलेगी। 2–3 लौंग मुख में डालकर चूसे, हिचकी दूर हो जाएगी।

284. **तपेदिक व त्वचा रोग** :– लौंग का चूर्ण दिन में 3 बार लें, ज्वर, भय व खाँसी में राहत मिलेगी। लौंग पानी में पीसकर लेप करें या लौंग का तेल लगाने से त्वचा रोग समाप्त होगा।

285. **शीघ्रपतन** :– (1) चार–पाँच साल का रखा हुआ पुराना गुड़ तथा इमली का गूदा, सोंठ, मिर्च, पीपल बराबर मात्रा में पीसकर शहद में मिलाकर लिंग पर लेप करके पत्नी से रमण करने पर पत्नी शीघ्र ही स्खलित हो जाती है। (2) कमलगट्टे की गिरी को शहद में पीसकर नाभी पर लेप करने से वीर्य शीघ्र स्खलित नहीं होता। (3) सेंधा नमक, शहद, कबूतर की बीट इन सबको खरल कर कामेन्द्रिय पर लेप करने से स्त्री अनुकूल हो जाती है। (4) लौंग का तेल लिंग पर मलने से शीघ्रपतन दूर होगा। (5) शनिवार को गधा जहाँ लेटा हो, उस स्थान का पूर्वाभिमुख होकर धूल उठावें व कमर में बांधें। (6) छः माशे अदरक का रस, आठ माशे प्याज का रस, चार माशे शहद, तीन माशा घी – इन सब चीजों को मिलाकर दोनों समय सेवन करने से वीर्य बढ़ता है। (7) कौंच का चूर्ण गर्म दूध के साथ फाँक जाएं। इसे तीन वर्ष लगातार सेवन करने से नपुंसकता दूर होगी।

286. **वीर्य स्तम्भन** :– (1) छिपकली की पूँछ का हिस्सा सफेद धागे में कनिष्ठा में बांधने से वीर्यस्तम्भन होता है। (2) रविवार को घोड़े व खच्चर की पूंछ का बाल तोड़कर कौड़ी में छेद करके पिरोकर भुजा में पहनने से स्तम्भन होकर पूर्ण स्त्री सुख मिलता है। (3) धतूरा का बीज पीसकर नाभी पर लेप करने के बाद रमण करने से स्तम्भन रहता है। (4) अपामार्ग के पौधे को सोमवार की सांयकाल विधिवत् निमंत्रण दे आवें और मंगलवार को प्रातःकाल उखाड़ कर लावें। मैथुन के समय उसे कमर में बांध लेने से वीर्य स्तम्भित हो जता है। (5) अमलताश का गूदा, पारा और कपूर बराबर मात्रा में लेकर शहद में मिलाकर नाभी पर मैथुन करने से पहले लेप करें। शीघ्र क्षरित नहीं होंगे। (6) रविवार के दिन सतौना का बीज निकालें। इस बीज को मुख में रखकर मैथुन करें तो इससे वीर्य स्तम्भित होता है। (7) सफेद तालमखाने के बीज बरगद के दूध में पीसकर करंज के बीजों के बीच में रखकर मैथुन के समय मुख में रख लेने से वीर्य स्तम्भन होता है।

287. **मस्तिष्क के कोषाणु स्वस्थ** :– जंगली मछली के सिर को खाने से मस्तिष्क के कोषाणु स्वस्थ होते हैं।

288. **लिंग में दृढता** :– (1) बेल के पत्तों के रस में शहद मिलाकर लिंग पर लगाने से लिंग में दृढता और मजबूती आती है। (2) जायफल को भैंस के दूध में पीसकर लिंग पर लेप करें और ऊपर से पान बांध दें। रात का बंधा हुआ सुबह खोलकर गुनगुने जल से धो दें, चालीस दिनों तक ऐसा करें। (3) चमेली का असली तेल लिंग पर मलने से उसमें कड़ापन आ जाता है।
289. **जननांग संकुचन** :– (1) डंडी सहित कमल को दूध या पानी के साथ पीसकर लगाएं। (2) आँवले के वृक्ष की छाल पानी में चौबीस घंटे तक भिगोकर उसी पानी से रोजना प्रजननांग धोएं। (3) अनार की छाल का तेल जननांग में लगाने से योनि संकुचित हो जाती है।
290. **नपुंसकता** :– भटकटैया की जड़ तथा फल, पीपल और काली मिर्च और गोरोचन का चूर्ण बनायें तथा एक साथ मिलाकर लिंग पर लेप करने से नपुंसकता ठीक होती है।
291. **सौन्दर्य वृद्धि** :– गोरोचन का लेप शरीर में लगाने से सौन्दर्य वृद्धि के चमत्कारी परिणाम मिलते हैं।
292. **चिंता नाश हेतु** :– अशोक वृक्ष के तीन पत्ते लेकर प्रातः काल ही निराहार मुख में चबाने से शरीर स्वस्थ हो जाता है।

गिलोय – गिलोय के फायदे और गिलोय के औषधीय गुण

परिचय – प्राय सर्वत्र भारत में पायी जाने वाली एक बहुवर्षायु लता है| जिसे आप खेत, घर, बाग – बगीचे या सड़क के किनारे किसी पेड़ या दीवार पर चढ़ी हुई देख सकते है | गिलोय के पते पान के पतों की आकृति के होते है | आयुर्वेद में इसे अमृता कहा जाता है क्योकि इसके जो गुण है वो अमृत के समान उपयोगी है | मानव शरीर पर गिलोय का प्रयोग अमृत के समान फलदायी होता है | परम्परागत चिकित्सा पद्धति में गिलोय का इस्तेमाल शुरू से ही होता आया | भारत के आम नागरिको को भी इसके चिकित्सकीय गुणों का ज्ञान सदा से ही रहा है | गाँवों में प्राचीन समय से ही बुखार , कफज आदि रोगों में गिलोय का काढ़ा देने का प्रचलन रहा है | गिलोय का प्रमुख गुण होता है की यह जिस पेड़ पर चढ कर फैलती है उसके सारे गुण भी अपने में गृहण कर लेती है , नीम पर चढ़ी गिलोय सवाधिक उपयोगी मानी जाती है – जिसे नीम गिलोय भी कहते है , इसमें नीम के सारे गुण होते है साथ ही अपने गुणों के कारण यह अधिक लाभदायक हो जाती है|

गिलोय का कांड :- औषध उपयोग में गिलोय का कांड ही सर्वाधिक उपयोगी होता है | इसका तना मांसल होता है जिनपर लताये निचे की तरफ झूलती रहती है | गिलोय के तने का रंग धूसर , भूरा या सफ़ेद हो सकता है | तने की मोटाई अंगुली से अंगूठे जितनी होती है , लेकिन अगर बेल अधिक पुरानी है तो यह तना भुजा के आकार का भी हो सकता है | तने को काटने पर तने के अन्दर का भाग चक्राकार दिखाई पड़ता है |

गिलोय के औषधीय गुण धर्म :- गिलोय का रस तिक्त और कषाय रस का होता है | गुण में गिलोय गुरु और स्निग्ध होती है | यह शीत वीर्य होती है व पचने पर इसका विपाक मधुर होता है | गिलोय में स्वाभाव में चरपरी, कडवी, रसायन, पाक में मधुर, ग्राही, कसैली, हलकी, गरम, बलदायक, त्रिदोष शामक और ज्वर, आम तृषा, प्रमेह, खांसी, पांडू, कामला, कुष्ठ, वातरक्त, कृमि, वमन, श्वास, बवासीर, मूत्र कृच्छ, हृदय रोग एवं वात प्रकोप को दूर करने वाला है |

गिलोय के रोगप्रभाव :- गिलोय त्रिदोष शामक औषधि है | यह सभी प्रकार के ज्वर में सबसे उत्तम आयुर्वेदिक औषधि है | विषम ज्वर ,जीर्ण ज्वर, वायरल , छर्दी , अम्लपित, पीलिया, रक्ताल्पता आदि रोगों में भी बेहतर प्रभाव डालती है | रक्तविकार, यकृत , प्लीहा, सुजन , कुष्ठ, मेह, पुयमेह, श्वेत प्रदर और स्तन्य विकारो में लाभकारी होती है

गिलोय की मात्रा और सेवन विधि :- गिलोय का चूर्ण 1 से 3 ग्राम तक ले सकते है | इसके सत्व को 500 mg से 1 ग्राम तक लिया जा सकता है एवं क्वाथ को 5 से 10 ग्राम तक ले सकते है |

गिलोय के फायदे और औषधीय लाभ : रोगप्रतिरोधक क्षमता

गिलोय में एंटी ओक्सिडेंट गुण प्रचुर मात्रा में पाए जाते है| गिलोय के सेवन से शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता में विकास होता है , जिससे व्यक्ति जल्दी बीमार नहीं होता एवं लम्बे समय तक स्वस्थ रहता है | गिलोय के रस का नियमित सेवन करने से शरीर के गुर्दे और जिगर स्वस्थ रहता है | शरीर में मूत्र सम्बन्धी विकारो में भी गिलोय अच्छा परिणाम देती है | नियमित सेवन करने से शरीर बीमारियों से बच सकता है |

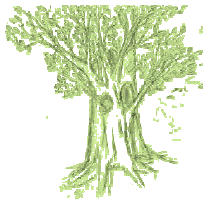

।। ॐ श्री गणेशाय नमः।।

सुलभ सामग्री दुर्लभ प्रयोग

रोग नाशक वनस्पतियाँ

यदि निम्नलिखित रोग हो तो सम्मुख अंकित वनस्पति के जड़ विधानपूर्वक शुभ मुहूर्त में धारण करें। यह नक्षत्रों के अंशों पर आधारित हैं :—

क्रम सं0	संबंधित रोग	वनस्पति
1	सिर में चोट, मस्तिष्क में अवचेतना, एनीमिया (खून की कमी), दौरे, मिरगी, हिंसात्मक प्रतिक्रिया, एक तरफ का सिर दुखना, चेहरे व सिर की कोशिका में रुक–रुक कर दद्र होना, पक्षाघात, लकवा, अनिद्रा, चेचक, मस्तिष्क की नाड़ी में सूजन।	चिरचिटे की जड़
2	अधिकतर सिर का अगला हिस्सा दुखना, सिर में चोट, अत्यधिक मैथुन की इच्छा उत्पन्न करने वाली बीमारी, सिफलिस, आँखों का घेरा, दृष्टि व चेहरे को प्रभावित करने वाली बीमारी, सिर में नजला, जुकाम, इन्द्रियों का मल, श्लेष्मा, गुर्दा प्रभावित, गलत आचरण के कारण खुशी जैसी बीमारी के कारण कमजोरी, आलस्य।	अगस्त के पेड़ की जड़
3	तेज बुखार, मलेरिया, फाइलेरिया, प्लेग, चेचक, चोट, जख्म, मस्तिष्क की नाड़ी में मूर्च्छा संबंधित रोग, दिमागी बुखार, नाक या चेहरे पर फुंसी, चोट, दुर्घटना, अग्नि।	कपास की जड़
4	मुहाँसे, भूरी आँख, आँख दुखना, गले की तकलीफ, घुटने में फोड़ा, गलद्वार का सूजन, नाक पर फोड़ा, कण्ठमाला, चक्कर, निद्रा भंग।	कपास की जड़
5	सर्दी, खाँसी, टांगों में दद्र, छाती में दर्द, गर्दन में दर्द, मिरगी, सूजन, मासिक धर्म संबंधी समस्या, व्यर्थ में रूदन।	चिरचिटे की जड़
6	मुँहासे, गले में चोट, कण्ठशूल, चोट, डिप्थीरिया, कमर में कमजोरी, नाक में परेशानी, कब्ज, मैथुन संबंधी पीड़ा, जल भय, मलेरिया, खून में खराबी, खुजली होना, जख्म, भुजा में फ्रेक्चर, कॉलर बोन में चोट, फीमर (जांघ की हड्डी) में दद्र, साइटिका, अधिक खाने से अजीर्ण, बुखार, कालर के पास व कंधों में दद्र, हृदय के चारों ओर की झिल्ली में परेशानी, भुजा उतरना।	जयंती घास की जड़
7	अस्थमा (दमा), सूखा कफ, डिप्थीरिया, कान में मवाद व परेशानी, गले में रक्तदोष, कण्ठमाला, अनिद्रा।	पीपल की जड़
8	प्लूरिसी, ब्रोंकाइटिस, फेंफड़ों की सूजन, गुर्दे की समस्या, हृदय के निकट की जलन व सूजन, आयोडिन की कमी के कारण सूजन, कान दद्र, फेफड़ों के ऊपरी भाग में समस्या।	अकवन के पौधे की जड़
9	जलोदर, बेरी–बेरी, पेट में गड़बड़, टी.बी., अनियमित भूख की इच्छा, खून में खराबी, निमोनिया, ब्रोंकाइटिस, फेफड़े की समस्या, अजीर्ण, पीलिया, स्वाद लोलुपता।	अकवन के पौधे की जड़
10	टी.बी., गैस्ट्रिक, अल्सर, गॉल स्टोन, उबकाई आना, जी मिचलाना, कैंसर, पीलिया, कफ, दाद, अजीर्ण, पायरिया, हिचकी आना, क्षय रोग, राजयक्ष्मा, रक्त संबंधित विकार, श्वास इन्द्री में फोड़ा।	कुश की जड़
11	विटामिन बी की कमी, पेट में ठण्डापन, जलोदर, डायफ्राम की गड़बड़ी से श्वास में तकलीफ, जोड़ों में दद्र, नासिका स्राव, टांगों में दद्र, कफ व किडनी समस्या, हिस्टीरिया, पीलिया, पित्त व स्नायु संबंधित रोग, अपचन, विषैली मधुमक्खी आदि का भय, सप्र भय	पटोल की जड़
12	अचानक किसी बात का धक्का लगना, हैजा, पीठ दद्र, चिड़चिड़ापन, किडनी संबंधी रोग, धड़कन, मस्तिष्क की नाड़ी व जहर से खतरा।	भृंगराज की जड़
13	प्यार में निराशा, ऐसे झटके जो दबाए न जा सकें, बच्चों को हानि, दिल प्रभावित, पीठ में घुमाव संबंधी दद्र, टांगों में दद्र, धमनियों व टखनों में सूजन, दिल का वाल्व, ब्लडप्रेशर व दिल संबंधित समस्या, पसली चलना, खांसी, नजला (साइनेस)।	कटैली की जड़
14	सिर व पीठ दर्द, प्लेग, हाइपरइमिया, ब्लडप्रेशर के कारण मूर्च्छा, खून के थक्के जमने के कारण पागलपन जैसी हरकत, मस्तिष्क की रक्त संबंधी परेशानी, धड़कन बढ़ना, पीठ दर्द, शरीर के	श्वेत अकवन की जड़

	भीतरी भाग में फोड़ा, पेट में गड़बड़, गर्दन व गले में सूजन	
15	विटामिन बी की कमी, वायु विकार, शरीर के भीतरी भागों में दद्र, भुजा व कंधे कमजोर होना, हैजा, श्वास में रुकावट, इन्द्रियों के मल संबंधी गर्मी, डायरिया, टायफाइड, स्नायु संबंधी परेशानी, हिस्टीरिया, भय होना, आँव के जीवाणु होना, पेट दद्र।	अकवन की जड़
16	अल्सर, क्रोध आना, हिचकियाँ, टांगों में दद्र, ड्राई ग्रिपिंग दद्र, जानवरों व रेंगने वाले जीवों से खतरा, किडनी व ब्लेडर को जोड़ने वाली नली में जलन, किडनी में रक्स्राव व परेशानी, मूल अधिक आना, लू लगना, दिमागी बुखार, सिरदद्र, तेज बीमारियाँ।	असगंध (अश्वगंधा) की जड़
17	मूत्रनली में अवरोध, मूत्र व त्वचा संबंधित परेशानी, मवाद, एक्जिमा, तेज बीमारी, कोढ़, वायु पीड़ा।	जावित्री की जड़
18	गुर्दे के पास फोड़ा, मवाद आना, त्वचा पर फफोले, डायबिटिज, इन्सुलिन की कमी, कोमा में जाना, चक्कर आना, दिमाग में रक्त का संचय होना, गर्भाशय संबंधी बीमारी, रेशेदार ट्यूमर, मूत्ररोग, मासिक धर्म अनियमित, फोड़ा फूटना, गुर्दे में पत्थर, गर्भाशय बढ़ना, जलोदर, मूत्राशय में परेशानी।	गुंजा मूल
19	मासिक धर्म में तेज दद्र व कम खून आना, आंकुचन, कब्ज, पाइल्स दद्र युक्त परंतु खून कम, कूल्हे के पास वाली हड्डी में फ्रेक्चर, गले में सूजन, तीव्र बुखार, सिरदद्र।	मदनमान या गुलाब की जड़
20	ल्यूकोरिया, पाइल्स में खून आना, फिश्चुला, भगंदर, फोड़ा, गुप्तांग में पीड़ा, भुजा व कंधे में दद्र, शरीर के भीतरी भाग (हृदय) में पीड़ा।	चिरचिटे की जड़
21	कूल्हे की बीमारी, मूर्च्छा, फेफड़ों में कैंसर, घुटनों के ऊपर सूजन, कूल्हे में गांठ, श्वास संबंधित व खून की खराबी की पीड़ा, कंपन, सिरदद्र।	कपास की जड़
22	गठिया, अंगों में लकवा, फेफड़ों व आँखों की बीमारी, कमर दद्र, गांठों में दद्र।	कपास की जड़
23	एक्जिमा, कोढ़, कार्डियक, थ्रोम्बोसिस, मूर्च्छा, त्वचा की बीमारी, पाचन में गड़बड़, पेट में गैस के कारण बेचैनी व दद्र, जी घबराना, दिल कंपित होना।	कपास की जड़
24	त्वचा की बीमारी, एक्जिमा, मूर्च्छा, टी.बी., प्लूरिसी, खराब पाचनशक्ति, फाइलेरिया, मवाद के रूप में निकलना, दस्त, बेचैनी।	चिरिचिटे की जड़
25	टांगों में चोट, सूखी खाँसी, टांगों में पंगुता, अंग विच्छेद होना, रक्तातिसार।	पीपल की जड़
26	नसों के शिराओं की सूजन, टांग टूटना, खून में जहर फैलना, हार्टफेल, कार्डियक थ्रोमोबाइसिस, उच्च रक्तचाप, खून में ज्यादा गर्मी, हृदय की धड़कन बढ़ना, मूर्च्छा, ज्वर।	पीपल की जड़
27	गठिया, दिल में तीव्र ज्वर, आमवात ज्वर, दाद, कोढ़, उच्च रक्तचाप, हृदय कांपना, फ्रेक्चर, जल भय, सन्निपात।	कमल की जड़
28	टखने में सूजन, निम्न रक्तचाप, दिल का फैलना, हृदय की अनियमितता, मिरगी, जलोदर, उल्टियाँ, सूजन, लिवर बढ़ना, हार्निया, पीलिया, कॉर्न्स, नलियों द्वारा धातु निकलना, आँतों का प्रभावित होना, पाँवों में पसीना, पेट में फोड़ा।	भृंगराज की जड़
29	गठिया का दद्र, कब्ज, हर्निया, पाँवों में फ्रेक्चर, टी.बी., जलोदर, पाँवों में सनसनी, खाना पचानी की असमर्थता, उदर वायु विकार, शूल।	पीपल की जड़
30	पाँवों में गांठें बढ़ना, कान में मवाद, दवा के प्रयोग से अक्सर आँतों में अल्सर, पाँवों में विकार, पेट संबंधित अनियमितता, दरारें पड़ना, वृक्क (किडनी) संबंधित समस्या, ऊँचा सुनना, बहरापन, पैर व शरीर में भारीपन, चित्त भ्रम, वातपीड़ा।	पीपल की जड़

विभिन्न राशियों के लिए लक्ष्मीदायक प्रयोग

मेष राशि :– जिन व्यक्तियों की मेष राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. पूजाघर में दीवारों को लाल रंग से रंगकर श्रीमंत्र का जप लाभदायक होगा।
2. धन बाधा के संबंध में गुलाबजल में पीला चंदन घीसकर कमल की डंडी से केले के वृक्ष से जुड़े पत्ते पर गुरु मंत्र लिखकर इसको पीले वस्त्र में लपेटकर रखें।
3. कर्ज मुक्ति हेतु श्वेतार्क गणपति को चोला चढ़ाकर, चाँदी का वर्क लगाकर तिजोरी में रखें।
4. रात्रि में लाल चंदन व केसर घिसकर श्वेत वस्त्र पर 'श्रीं' लिखकर गल्ले में बिछायें।
5. धनतेरस की शाम को मुख्य द्वार पर तेल का दीपक जलाकर दो काली गुंजा डालें।
6. कमलगट्टे की माला को लाल वस्त्र में बांधकर अपने पास रखें।

वृष राशि :– जिन व्यक्तियों की वृष राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. पीपल के पाँच पत्ते लेकर उन्हें पीले चंदन से रंगकर बहते पानी में छोड़ें।
2. कर्ज निवारण हेतु कमलगट्टे की माला लक्ष्मी को पहनाकर वह माला लाल वस्त्र में बांधकर गल्ले या धन स्थान में रखें।
3. दीपावली को गाय के घी से दो दीपक जलाकर एकांत स्थान पर उनकी बत्तियाँ आपस में मिलाकर रखें।
4. कमज पुष्प की पूजा करें तथा उसे अपने पास रखें।
5. पूजा कक्ष में श्वेत रंग करवाकर पूजा करें।

मिथुन राशि :– जिन व्यक्तियों की मिथुन राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. बरगद के पाँच फल लाकर लाल चंदन में रंगकर नए लाल वस्त्र में सिक्कों के साथ बांधकर दुकान में लटकायें।
2. एक जटा वाला नारियल लाल वस्त्र में बांधकर लक्ष्मीजी को चढ़ायें।
3. पीले चंदन की पाँच मणि लेकर केले के वृक्ष पर टांग दें।
4. कर्ज मुक्ति हेतु लक्ष्मी पूजन के साथ गणेश जी को हल्दी की माला पहनायें व बाद में उस माला को हरे वस्त्र में बांधकर अपने पास रखें।
5. पूजन कक्ष में हरा रंग करवायें।

कर्क राशि :– जिन व्यक्तियों की कर्क राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. पीपल के वृक्ष के समीप पंचमुखी तेल का दीपक जलायें।
2. कर्ज मुक्ति हेतु सफेद कपड़े को पीले चंदन व केसर से रंगकर अपने पास रखें।
3. विष्णु मंदिर में लहराती हुई पताका लगायें।
4. सोमवार के दिन एक मुट्ठी साबुत चावल गुरु मंत्र का जप करते हुए जल में छोड़ें।
5. पूजा कक्ष में श्वेत रंग करवायें।
6. दीपावली पूजन के बाद तांबे का कड़ा दायें हाथ में पहनें।

सिंह राशि :– जिन व्यक्तियों की सिंह राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. दाहिने हाथ पर छः बार मौली लपेटकर बांधें व प्रतिदिन उनका दर्शन करें व छः सप्ताह बाद उसे जल में छोड़ दें।
2. पूजाघर में लाल रंग करवायें व वटवृक्ष की जड़ रखें।
3. पैतृक संपत्ति हेतु बुधवार को हरे मूंग गीली मिट्टी में दबायें।
4. बुधवार को गाय को हरा चाला डालें व मनीप्लांट लगायें।
5. मुख्य द्वार पर घी का दीपक जलाएं व दीपक अगले दिन तक जलता रहे, इसका ध्यान रखें।

कन्या राशि :– जिन व्यक्तियों की कन्या राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. शत्रु परेशान कर रहा हो, तो शत्रु का नाम लेकर काली राई एकांत स्थान में गाड़ें।
2. घड़े को गेरु से रंगकर मौली बांधकर नारियल रखकर बहते जल में छोड़ें।
3. लाल वस्त्र में श्रीफल बांधकर गल्ले में रखें।
4. धनतेरस को कमलगट्टे की माला पूजा करके धनस्थान पर रखें।
5. पूजाघर में हल्का पीला या सफेद रंग करवायें।

तुला राशि :– जिन व्यक्तियों की तुला राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. जल्दी उठकर लक्ष्मी मंदिर में नारियल चढ़ायें। (नोट :– लक्ष्मी जी का मंदिर बहुत कम ही देखने को मिलता है। अतः ऐसी परिस्थिति में जहाँ लक्ष्मी–गणेश जी का मंदिर हो अथवा जहाँ महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती देवियों की प्रतिमा हो अथवा जहाँ माता दुर्गा सिंह पर प्रसन्न मुद्रा में कात्यायनी रूप में सवार हो और वह महिषासुर का वध नहीं कर रही हो ऐसी प्रतिमा अर्थात् जिस प्रतिमा में राक्षस न हो वहाँ भी यह प्रयोग किया जा सकता है।)
2. शुक्रवार को सात कन्याओं को खीर या सफेद मिठी वस्तु खिलायें।
3. वट वृक्ष के पत्ते पर घी व सिंदूर से लक्ष्मी मंत्र लिखकर अपने पास रखें।
4. पूजा घर में हल्का हरा रंग करवायें।
5. कमलगट्टे की माला लक्ष्मी जी को चढ़ाकर अपने पास रखें।

वृश्चिक राशि :– जिन व्यक्तियों की वृश्चिक राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. मंदिर में केले के दो पौधे लगाकर पूजा करें व उनके फल न खायें।
2. पीले चंदन और केसर को गुलाब जल में घिसकर गुरुवार को माथे पर तिलक करें।
3. कर्ज मुक्ति हेतु छः शनिवार को श्माशान के कुएँ का जल पीपल के वृक्ष पर चढ़ायें।
4. पूजा घर में हल्के रंग रखें।

धनु राशि :– जिन व्यक्तियों की धनु राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. पीपल के वृक्ष को मंदिर में लगायें। वृक्ष वृद्धि के साथ आपकी समृद्धि होगी।
2. पान के पत्ते पर रोली से **"श्रीं"** लिखें व किसी पशु को खिला देवें।
3. गूलर के 11 पत्ते मौली से बांधकर वटवृक्ष से बांधें।
4. आकस्मिक धन लाभ हेतु चंदन का वृक्ष घर में लगायें।
5. पूजाघर में आसमानी या गहरा रंग करवायें।

मकर राशि :– जिन व्यक्तियों की मकर राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. पारिवारिक परेशानी में शनिवार को सूखे हुए पीपल वृक्ष की लकड़ी की कील बनवाकर मुख्य द्वार पर लगायें।
2. आक की रूई का दीपक शाम को किसी तिराहे पर रखें।
3. श्रीफल को लाल वस्त्र में बांधकर तिजोरी में रखें।
4. भूमि पर शयन करें।
5. पूजाघर में हरा रंग करवायें।

कुम्भ राशि :– जिन व्यक्तियों की कुम्भ राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. नारियल के खोल में घी का अखण्ड दीपक जलायें।
2. मंदिर में दो केले के वृक्ष लगायें।
3. गुरुवार को वटवृक्ष की जड़ लेकर सूती धागे में लाल चंदन से रंगर बांधकर मुख्य द्वार पर बांधें।
4. शत्रु परेशान करे तो श्वेतार्क गणपति के सिंदूर चांदी का वर्क लगाकर धनस्थान पर रखें।
5. पूजाघर में सफेद हल्के रंग करवायें।

मीन राशि :– जिन व्यक्तियों की मीन राशि है, उनके लिए दीपावली, नवरात्र आदि या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में निम्न प्रयोग लक्ष्मीदायक होंगे :–

1. सात मंगलवार को श्मशान में स्थित हनुमान मंदिर में चोला चढ़ायें।
2. शत्रु परेशान करे तो कपूर का काजल बनाकर भूमि पर शत्रु का नाम लिखकर मिटायें।
3. घर में मनीप्लांट लगायें व तीर्थ का जल पूजाघर में रखें।
4. गुरुवार को पीले चंदन व केसर को गुलाबजल में घिसकर तिलक करें।
5. लक्ष्मी मंदिर में धूप–अगरबत्ती दान करें व पूजाघर में लाल अथवा सफेद रंग पुतवायें।

दो ग्रहों की अनिष्टकारी युति के उपाय

1. **गुरु और सूर्य** :– यदि कुण्डली में गुरु और सूर्य की युति के कारण आर्थिक कष्ट हो तो लाल केसर खाना चाहिए और सोना धारण करना चाहिए। हल्दी या पीला पुखराज या टोपाज अथवा सुनैला धारण करना चाहिए।
2. **सूर्य और शनि** :– (क) यदि सूर्य और शनि की युति के कारण स्त्री का या संतान का स्वास्थ्य बिगड़ा हो तो स्त्री या संतान के वजन के बराबर चरी (ज्वार आदि) का दान करें। यह दान किसी किसी काली भैंस या काली बकरी को खाने हेतु दिया जाय।

   (ख) शनि और सूर्य की युति होने पर सूर्य के बल के कारण मकान आदि अन्य शनि प्रदिष्ट वस्तुओं का नाश हो रहा हो सूर्य से संबंधित वस्तुओं, जैसे– गुड़, गेहूँ, लाल वस्त्र, तांबा आदि दान करने से लाभ होगा और यदि शनि के बलवान होने के कारण सूर्य की वस्तुओं जैसे व्यवसाय, राजसंबंध, नेत्र आदि की हानि हो रही हो, तो शनि से संबंधित वस्तुओं जैसे–लोहा, तेल, तिल, बादाम आदि का दान करने से लाभ होगा।
3. **सूर्य और राहु** :– यदि सूर्य और राहु इकट्ठे हों तो सूर्यग्रहण के समय कोयले, तेल और सरसों को नदी की धारा में बहा देने से लाभ होगा अथवा चाण्डाल को कोयला, अन्न, काला या नीला वस्त्र तथा तिल दान करने से लाभ होगा।
4. **सूर्य और शुक्र** :– यदि सूर्य और शुक्र एक साथ बैठे हों, तो पत्नी/पति के वजन के बराबर ज्वार पानी में बहायें या दान करें। गृहस्थ जीवन कष्टमय नजर आ रहा हो, जीना दूभर हो गया हो तो पति या पत्नी में से कोई एक गुड़ खाना छोड़ दें, लाभ होगा।

5. **सूर्य और केतु** :– यदि सूर्य और केतु इकट्ठे हों तो सूर्यग्रहण के समय तिल, लहसुनिया नीले कपड़े में बांधकर नदी की धारा में बहा दें अथवा दान करने से लाभ होगा।
6. **चन्द्र और राहु** :– यदि चन्द्र और राहु की युति हो तो चन्द्रग्रहण के समय कोयला, तिल और सरसों को नदी की धारा में बहाने से अथवा चाण्डाल को काली या नीली वस्तु दान करने से लाभ होगा।
7. **चन्द्र और केतु** :– (क) यदि चन्द्रमा और केतु एक साथ बैठे हों तो ध्यान रखें कि रात को भूलकर भी दूध न पीयें। शिक्षा में बाधा आ रही हो तो 3 केले 48 दिनों तक मंदिर में रखें व हरे वस्त्र, मूंग दान करें, लाभ होगा।
(ख) ऐसे स्थान पर जहाँ किसी अन्य व्यक्ति ने मूत्र किया हो वहाँ पर मूत्र भूलकर भी न करें, बल्कि उस स्थान से थोड़ा हटकर पेशाब करें। अन्यथा आप धोखे व रोगों के शिकार हो सकते हैं।
8. **चन्द्र और शनि** :– (क) यदि कुण्डली में चन्द्र और शनि की युति हो तो चन्द्रग्रहण के समय बादाम व नारियल नदी में बहाने से अथवा चाण्डाल को काली या नीली वस्तु दान करने से लाभ होगा।
(ख) लोहे की आलमारी में चाँदी की थाली में पानी भरकर रखें व किसी कुएँ में दूध डालें, लाभ होगा।
9. **मंगल और बुध** :– यदि मंगल और बुध की युति के कारण बहन के स्वास्थ्य तथा भाग्य आदि पर बुरा प्रभाव पड़ रहा हो तो मंगल से संबंधित वस्तुएँ जैसे–खाँड़, शहद, सौंफ आदि किसी सुराही में भरकर बाहर वीराने में कहीं दबा दें। इससे निश्चित लाभ होगा।
10. **मंगल और शुक्र** :– यदि मंगल और शुक्र इकट्ठे हों तो ध्यान रखें कि महिलाओं से अधिक निकटता न रखें। यदि स्त्री का स्वास्थ्य खराब हो तो चाँदी की चूड़ी पर लाल रंग की नक्काशी करके पत्नी के हाथ में पहनायें तथा साफ कपड़े पहनें व सफेद रुमाल रखें। यदि स्त्री की कुण्डली में यह योग हो और पति का स्वास्थ्य खराब हो तो पति को चांदी की अंगूठी लाल रंग से नक्काशी कर अनामिका अंगूली में पहनायें।
11. **मंगल और राहु** :– यदि मंगल और राहु एक साथ इकट्ठे हों तो रसोई में बैठकर खाना खाएँ।
12. **मंगल और शनि** :– यदि मंगल और शनि इकट्ठे हों तो किसी से भी मौखिक लेन–देन न करें, लिखित में करें और हनुमानजी के मंदिर में पान, लौंग व नारियल चढ़ायें। अगर ऐसा नीलम जिस पर लाल छींटे पड़े हों, जिसे खूनी नीलम भी कहा जाता है, उसे धारण करें। अथवा लाजवर्त्त भी पहन सकते हैं।
13. **गुरु और राहु** :– यदि गुरु और राहु एक साथ हों तो 43 दिनों तक नित्य जौ को दूध से धोकर जल में डालें व सोना पहनें।

महिलाओं के करने के लिए विशेष वास्तु नियम

1. झाड़ु को कभी पाँव न लगायें।
2. भोजन बनाने के उपरांत तवा, कढ़ाई या अन्य बर्तन चूल्हे पर न रखें।
3. दरवाजे को कभी भी पैर की ठोकर से न खोलें।
4. दहलीज पर बैठकर कभी भोजन न करें।
5. सुबह–शाम की रोटी बनाते समय अगर संभव हो तो सबसे पहले गाय की रोटी अवश्य बनायें।
6. रसोईघर में जूठे बर्त्तन कभी भी नहीं रखें और न वहाँ साफ करें।
7. रात्रि में जूठे बर्त्तन साफ करके ही रखें। इसे जूठा नहीं रखना चाहिए।
8. नमक को शौचालय के अतिरिक्त कभी भी खुला न रखें। इससे धन नाश होता है।
9. सप्ताह में एक बार अपने घर में नमक मिले पानी से पोछा अवश्य लगायें व एक अगरबत्ती जलायें। इससे नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है।
10. संध्या के पूजा के समय आने वाले किसी भी व्यक्ति का अपमान न करें। उसे सम्मान के साथ जलपान कराएं। यदि कोई स्त्री आए तो यह भाग्यवर्धक है।
11. घर में जितनी भी घड़ियाँ हों, उन्हें चालू रखें। बंद होने पर तुरंत ठीक करायें। इससे धन आगमन अच्छा होगा।
12. सफेद वस्तुओं का नियमित दान करें। इससे धन की वृद्धि होगी।
13. प्रातःकाल व सूर्योदय से पूर्व घर में झाड़ू लगाने से सुख–समृद्धि बढ़ती है एवं बरकत होती है।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

14. धन लाभ हेतु दो पीले पुष्प महालक्ष्मी को अर्पण करें।
15. सुहाग चिन्ह लगा कर रहें। माथे पर बिंदी, मांग में सिंदूर, कानों में कर्णफूल, हाथों में कंगन, पैरों में पैजनियाँ/पायल, पाँव की अंगुलियों में बिछुए, गले में मंगलसूत्र अवश्य पहनें।
16. अपने आभूषण, जेवर अपने घर के दक्षिण–पश्चिम कोने में रखने से निश्चित वृद्धि होगी।
17. घर की छत पर टूटी कुर्सियाँ, बंद घड़ियाँ, गत्ते के खाली डिब्बे, बोतल, मूर्त्तियाँ, या कबाड़ नहीं रखना चाहिए। घर में मकड़ी की जाली या काई न जमने दें।
18. घर में मिट्टी के खाली मटके नहीं रखने चाहिए। इसलिए उन मटकों में बादाम या छुहारे अथवा कोई मिठी चीजें डाल कर रखें।
19. घर की दीवारों पर, फर्श पर पेंसिल, चाक आदि के निशान नहीं रहने दें। इससे कर्ज चढ़ता है।
20. घर या कमरे में अटाला नकारात्मक ऊर्जा को बाधित करता है।
21. घर में बाधाओं से सुरक्षा हेतु हल्दी व चावल पीसकर, उसके घोल से या हल्दी से घर के प्रवेश द्वारा पर 'ॐ' बना दें।
22. कभी भूलकर भी क्रोध न करें। क्रोध आने पर पानी पीए व मधुर बोलें।
23. नित्य भगवान के व पानी रखने की जगह दीपक जलायें, ताजा पुष्प चढ़ायें।

❁卐❁卐❁

–: यह न करें :–

1. रात्रि में मीठा दही खाने से खून में कमी, पीलिया आदि रोग हो सकता है।
2. दूध व शहद के साथ दही खाना नुकसानदायक है।
3. मांसाहारी भोजन के साथ भी दही नहीं लेना चाहिए। इससे एलर्जी हो सकती है।
4. दही खाने के बाद खट्टे फल नहीं लेने चाहिए।
5. खट्टे फलों के साथ दूध का सेवन बहुत हानिकारक होता है।
6. मीठे फलों के साथ चीनी या मिठाई भी नहीं खानी चाहिए।
7. केला, पपीता, खीरा, तरबूज, आम खाने के बाद पानी भी नहीं पीना चाहिए। इनका सेवन भोजन से पूर्व कर सकते हैं।
8. स्टार्च और प्रोटीन युक्त भोजन भी एक साथ नहीं करना चाहिए। गेहूँ, चावल, आलू स्टार्चयुक्त हैं तो अंडा, मांस, आदि प्रोटीन युक्त हैं। इनमें अम्ल अधिक आता है। इससे कब्ज होने लगती है।
9. चावल खाने के पश्चात् पानी नहीं पीना चाहिए।
10. रात्रि को दूध भी खाने के कुछ घंटो पश्चात् व सोने से 1 घंटे पूर्व ही लेना चाहिए।
11. खिचड़ी स्वास्थ्य के लिए उत्तम है, परंतु इसके साथ खीर नहीं खानी चाहिए।
12. खीर खाने के बाद छाछ नहीं लेनी चाहिए।
13. इसी प्रकार रबड़ी, लस्सी, आइस्क्रीम आदि भी भोजन के तुरंत बाद नहीं लेनी चाहिए।
14. भगवान को कभी भी स्वयं के घर के घर से तोड़े हुए कनेर के पुष्प अर्पित न करें, क्योंकि इससे लाभ के बजाय हानि होती है।

❁卐❁卐❁

-: ग्रहों के सामान्य एवं लाल किताब के टोटके :-

ज्योतिष शास्त्र वेदों का नेत्र है। हमारे ऋषि–मुनियों ने अपनी कठोर तपस्या व साधना के द्वारा अनेक सूत्र निर्धारित किए हैं। इनसे ग्रहों की शक्तियों का मानव पर पड़ने वाले प्रभाव का पूर्वाभ्यास किया जा सकता है। मनुष्य के पूर्व जन्म में किए हुए कर्मों को शास्त्रों में भाग्य कहा गया है। प्रारब्ध कर्म, प्रारब्ध का फल ही घटनाचक्र है।

ग्रहों के दूषित व अनिष्ट प्रभाव को कम करने हेतु लाल किताब के उपाय निम्नलिखित हैं :–

सूर्य अनुकूलता के उपाय :– यदि आप सूर्य से पीड़ित हों, आपको सूर्य की दशा–अंर्तदशा चल रही हो, या सूर्य छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो या पाप ग्रहों से युत/दृष्ट हो, किसी भी प्रकार से सूर्य कमजोर हो तो निम्नांकित उपायों में से किए गए उपाय कारगर सिद्ध होंगे।

1. बंदरों को गुड़ खिलाने या गुड़, तांबा, गेहूँ, लाल वस्त्र या लाल वस्तु का दान करने से जातक का सूर्य तेज होता है।
2. भूरे (लाल) रंग की चीटियों के आगे सात अनाज का मिश्रण डालने से सूर्य का अशुभ फल कटता है।
3. सूर्य व शनि का टकराव दूर करने के लिए खाना पकाने के बाद चूल्हे या गैस की आग को दूध का छींटा मारकर बुझायें व अगले दिन सूर्य के दर्शन तक आँच न सुलगायें।
4. किसी काम से जाते समय चीनी खाकर पानी पीना शुभ है।
5. भोजन के पूर्व आचमन करें। भोजन हेतु थाली से सभी चीजें थोड़ी–थोड़ी लेकर अग्नि को समप्रित करें।
6. तांबे के सात टुकड़े, जिनकी साइज चार गुणा चार हो, लेकर जमीन में गाड़ें।
7. बगैर सींग की गाय को गेहूँ की रोटी व गुड़ खिलायें।
8. बेल की जड़ को ताबीज में डालकर गले में पहनें।
9. रविवार को छुईमुई या मंजिष्ठा वनस्पति नहाने के पानी में डालकर नहायें।
10. चतुर्थ भाव में सूर्य अनिष्टकारक हो तो अंधे, लूले को खाना खिलायें। नित्य हवन करें।
11. पिता के पाँव छूकर आशिर्वाद लें।
12. सप्तम भाव में अथवा तुला में स्थित सूर्य दाम्पत्य सुख, वाणिज्य–व्यापार आदि के क्षेत्र में बाधक होता है। रात्रि के समय आग को दूध से बुझायें तथा मुँह में मीठा शहद डालकर ऊपर से पानी पीयें।
13. यदि सूर्य दशम भाव में अथवा मकर राशि में शनि, राहु या केतु द्वारा पीड़ित हो तो राज्य संबंधी बाधा, हृदय रोग या आजीविका में बोधा दे तो बहते पानी में तांबे का सिक्का बहायें अथवा दान करें।
14. पंचम भाव में सूर्य अनिष्टकारक हो तो रविवार से प्रातःकाल सूर्य नमस्कार करके एक तांबे के बरतन में पानी लेकर उसमें शक्कर, गुड़ या शहद डालकर थोड़ा–थोड़ा करके दूसरे दिन तक पीयें। यह क्रिया 43 दिनों तक करें।
15. छठे भाव में सूर्य अनिष्टकारक हो तो बंदरों को गुड़–चने खिलायें। चीटियों को बाजरा या शक्कर डालें।
16. सप्तम भाव में सूर्य अनिष्टकारक हो तो नमक कम खायें। जिद्दी स्वभाव सुधारें। रात्रि के बाद अग्नि को दूध से शांत करें।
17. अष्टम भाव में सूर्य अनिष्टकारक हो तो सफेद रंग की गाय के अलावा अन्य रंग की गाय की सेवा करें।
18. नवम भाव में सूर्य अनिष्टकारक हो तो रसोई में पीतल के बरतन काम में लें।
19. एकादश भाव में सूर्य अनिष्टकारक हो तो शराब का सेवन न करें व मांस न खायें।
20. द्वादश भाव में सूर्य अनिष्टकारक हो तो आटा पीसने की चक्की घर में लगायें और घर में हाथ की चक्की से आटा पीसें।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

21. यदि दूसरे भाव में व आठवें भाव में सूर्य हो तो कोई वस्तु मुफ्त में न लें। भाई की पत्नी, माता, बहनों को कष्ट हो तो नारियल, बादाम व तेल धर्म स्थान में दें।
22. तीसरे भाव में सूर्य हो तो चांदी की माला नहीं खरीदें। रात को चीनी, चावल, दूध सिरहाने रखें और सुबह बांटें।

चंद्र अनुकूलता के उपाय :– यदि आप चंद्र से पीड़ित हैं, आपको चन्द्र की दशा–अंतर्दशा चल रही हो या चंद्र छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो या पाप ग्रहों से युत/दृष्ट हो, किसी भी प्रकार से चंद्र कमजोर हो, यदि चंद्रमा कुण्डली के किसी भाव में पीड़ित हो तो मातृ कष्ट, मानसिक कष्ट, कफ रोग, फेफड़े का रोग या धन का नाश होता है। एकादश में चंद्र व तीसरे भाव में केतु हो तो प्रसव के समय माता को कष्ट, जलप्रवास, दूर की यात्रा कष्टदायक होती है।

आठवें में चंद्र हो, लग्न में राहु जब संबंध करे, उस साल में बड़ा कष्ट, संतानहीनता, फेफड़ों, गुर्दे, मिर्गी तथा कैंसर के रोग होते हैं।

एकादश भाव में चंद्र+केतु हो या किसी भी भाव में चंद्र और केतु हो तो दादी के जीवित रहने तक पुत्र संतान नहीं होती या पुत्र/संतान अंधी, कष्टकारी या अल्पायु होती है। इस हेतु जातक की माँ, दूध से मुख व आँखें धोयें। सोमवार को व्रत रखें व नमक न खायें। रात्रि के प्रथम प्रहर में शिव जी के मंदिर में जाकर शिवलिंग पर पंचामृत चढ़ायें। बेलपत्र एवं सफेद पुष्प चढ़ायें। धूप–आरती करें, चंद्रमा को नमस्कार कर, मंत्र बोलकर शंकर जी से प्रार्थना करें। पहले 5 सोमवार को व्रत करें।

निम्नांकित उपायों में से किए गए उपाय कारगर सिद्ध होंगे :–

1. रविवार रात को सफेद बर्तन में दूध सिरहाने रखें। सोमवार को प्रातः जागने पर किसी से न बोलते हुए दूध से पीपल व बबूल पेड़ को सींचें।
2. लाल रंग का पत्थर या गुड़ मिट्टी में दबायें।
3. श्मशान के कुएँ का पानी हमेशा घर में रखें।
4. माता के पाँव छूकर आशीर्वाद लें। छोटों को रोज दूध पिलायें।
5. चांदी की चंद्र प्रतिमा बना कर घर में रखें और पूजा करें।
6. भैरव के मंदिर में दूध दान करें।
7. 21 लड्डू छोटे बच्चों को खिलायें या नदी में डालें।
8. खिरनी की जड़ ताबीज में धारण करें।
9. श्वेत शिवलिंग की पूजा से विशेष लाभ प्राप्त होता है।
10. छठे भाव के अशुभ चंद्र वाले को घर में नल या हैंडपम्प लगाने से बचना चाहिए।
11. आठवें में शनि, चंद्र हो या वृश्चिक का चंद्र हो तो घर के पास कुआँ हो तो उसे बंद करवायें।
12. यदि चंद्रमा लग्न में या मेष राशि में पापाक्रान्त हो अथवा पक्षबल हीन हो तो ऐसे जातक को दूध नहीं बेचना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को प्राकृति जल, चावल, चाँदी, दूध आदि चंद्रमा की वस्तुओं को ग्रहण करना चाहिए।
13. यदि चंद्रमा तृतीय भाव में अथवा मिथुन राशि में पापाक्रान्त हो अथवा पक्षबलहीन होकर अनिष्ट फल दे रहा हो तो सफेद रंग के कपड़े कुमारी लड़कियों को दान में दें।
14. चंद्रमा यदि चतुर्थ भाव में अथवा कर्क राशि में पापाक्रान्त होकर अथवा पक्षबल हीन होकर अनिष्ट कर रहा हो तो ऐसे जातकों को रात में दूध का प्रयोग नहीं करना चाहिए; अपितु उन्हें दूसरों को दूध निःशुल्क पिलाना चाहिए।
15. यदि चंद्रमा अष्टम भाव में अथवा वृश्चिक राशि में अनिष्ट कर रहा है तो श्मशान की सीमा के अंदर स्थित कुएँ का पानी अपने घर में रखें तथा मृतकों को कफन दान देने, श्मशान घाट पर जाने वालों को पेयजल तथा भोजनादि की मुफ्त में व्यवस्था करने तथा निर्धनों को श्राद्धादि कर्म में आर्थिक सहायता पहुँचाने से भी अनिष्ट दूर हो सकते हैं।

16. चंद्रमा यदि दशम भाव में अथवा मकर राशि में स्थित होकर अनिष्ट कर रहा हो तो रात्रि में दूध कभी नहीं पीना चाहिए, अन्यथा अनिष्ट में वृद्धि हो सकती है। ऐसे जातक को दूध तथा जल का दान करने व उसे शिवलिंग पर चढ़ाने से अनिष्ट दूर हो सकता है।
17. यदि चंद्रमा एकादश भाव में अथवा कुम्भ राशि में पापाक्रान्त या पक्षबलहीन होने के कारण अनिष्टकारी सिद्ध हो रहा है तो भैरवजी के मंदिर में या काले शिवलिंग पर दूध चढ़ायें। काले कुत्ते के बच्चे को दूध पिलायें।
18. चंद्रमा के कुम्भ राशि में अथवा एकादश भाव में होने पर स्त्री के प्रसव के समय जातक की माता वहाँ से अन्य स्थान को चली जाए तथा वह शिशु के जन्म के 42–43 दिनों के बाद ही उक्त बच्चे का मुख देखें।
19. नींद में बाधा :– चंद्रमा के कारण रात को नींद में बाधा आ रही हो तो सोने की चारपाई (पलंग) के चारों पायों में तांबे की कील गाड़ना शुभ रहता है।

मंगल की अनुकूलता के उपाय :– यदि आप मंगल से पीड़ित हैं, आपको मंगल की दशा–अंतर्दशा चल रही हो या मंगल छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो अथवा पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो या किसी भी प्रकार से मंगल कमजोर हो, पापाक्रान्त, अस्त या वक्री होने के कारण अनिष्ट फल दे रहा हो, चतुर्थ में मंगल हो तो माँ, सास बीमार होती है। घर में अशांति, वैवाहिक जीवन में बाधा उत्पन्न होती है।

निम्नांकित उपायों में से किए गए उपाय कारगर सिद्ध होंगे :–

1. तंदूर में मीठी रोटी पकाकर दान करें या बताशा नदी में प्रवाहित करें।
2. रोज कुएँ के पानी से अपने दाँत साफ करें।
3. मसूर की दाल, मीठा पकवान दान करें।
4. मंगल का व्रत करने से तथा हनुमानजी की मूर्ति पर मंगलवार को मीठा रोट, बताशा, लड्डू आदि चढ़ाने से भी कष्ट कम हो सकते हैं।
5. कुंवारी लड़कियों को भोजन कराकर आशिर्वाद लें।
6. बहुत अशुभ हो तो हाथी दाँत से बनी वस्तु धारण करें।
7. 12 दिनों तक गुड़ खाने से भी मंगल के दुष्प्रभाव में कमी आएगी।
8. यदि घर में अक्सर आग लगे तो घर की छत पर खांड की छोटी–सी बोरी भरकर श्मशान में दबायें।
9. गुड़ की रेवड़ियों को नदी में बहायें। गुड़ के पराठे गरीब को खिलायें।
10. जौ दूध से धोकर बहते पानी में डालें।
11. पत्नी की मृत्यु का भय हो तो एक बरतन में शहद रखकर बरतन श्मशान में दबायें।
12. अष्टम में मंगल होने से शत्रु परेशान करता है। अतः मीठे पराठे कुत्ते को खिलायें।
13. एकादश में मंगल व तीसरे में कोई ग्रह न हो तो पैतृक संपत्ति का नुकसान होता है। इससे बचाव हेतु घर में कुत्ता पालें।
14. मंगलवार को अनंतमूल की जड़ लाकर लाल धागे से बाजू पर बांधें।
15. ऋणमोचन हनुमान/मंगल स्तोत्र, हनुमान चालीसा, सुंदरकाण्ड में से किसी एक का पाठ करें।
16. पाँचवे में मंगल हो तो रात को सिरहाने पानी रखें व सुबह ऐसी जगह डालें जहाँ पानी का अपमान न हो।
17. यदि नवम भाव में अथवा धनुराशि में स्थित मंगल अनिष्टकारी फल दे रहा हो तो भाई की स्त्री को पालने और सेवा करने से कष्ट दूर होंगे।
18. यदि सप्तम भाव में या तुला राशि में स्थित मंगल अनिष्टकारी हो तो भाई के संतति की सेवा लाभप्रद रहेगी।
19. सातवें में मंगल हो तो साधारण छोटी–सी दीवार बनायें व गिरायें। बहन को मीठा खिलायें। घर में ढोल, चांदी की चीजें रखें, बरकत होगी।
20. आठवें में मंगल हो तो रोटी बनाने वाले तवे पर ठंडे पानी के छींटे लगाकर रोटी पकायें। घर के रोग नष्ट होंगे। तवे पर मीठी रोटी पकाकर कुत्ते को 40–45 दिनों तक खिलायें।
21. बारहवें में मंगल हो तो दूध व शहद मिलाकर दूसरों को पिलायें। मीठी रोटी का जातक स्वयं उपयोग करे।

22. मंगलवार को मौली बांधें। बंदरों व कुत्तों को मीठी रोटी खिलायें। जन्मदिन पर नमकीन चीजों का सेवन करें। छोटे भाई–बहनों व मित्रों को नाराज न करें।

बुध की अनुकूलता के उपाय :– यदि आप बुध से पीड़ित हैं, आपको बुध की दशा अंतरदशा चल रही हो या बुध छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो अथवा अथवा पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो, किसी भी प्रकार से बुध कमजोर हो या कुण्डली में बुध किसी कारणवश अनिष्ट फल दे रहा हो तो दुर्गाजी, विष्णु पूजन करें, दुर्गा सप्तशती या विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें। दुर्गा जी पर अंकुरित हरा मूँग व विष्णु जी की प्रतिमा कपर हरा केला व हरा फल चढ़ाने से कष्ट दूर होते हैं।

बुध + केतु लग्न को छोड़कर कहीं भी हो तो अनिष्टकारी होता है, 34 वें साल में कष्ट, आर्थिक कष्ट, विवाह विलम्ब हो तो नाक छिदवा लें।

फिटकरी से दाँत साफ करे, मंदिर में केसर चढ़ायें, पीले रंग का हलवा कन्याओं को खिलायें।

निम्नांकित उपायों में से किए गए उपाय कारगर सिद्ध होंगे :–

1. यदि किसी खास काम से जाते हों तो साथ में फूल रखें, अप्रत्याशित परिणाम मिलेगा।
2. जिसका बुध अशुभ है, उन्हें तोता नहीं पालना चाहिए।
3. यदि धन पर खराब प्रभाव हो तो पीतल के बर्तन में गंगाजल भरकर रखें। नाक में छेद करवाकर चांदी का छल्ला पहनें।
4. तांबे के पैसे में छेद करवाकर बहते पानी में बहायें।
5. कौड़ियों की राख बनाकर समुद्र या नदी में बहायें।
6. कुमारी कन्याओं की पूजा या सेवा करना भी लाभप्रद होगा।
7. बुध के कारण कोई रोग हो तो किसी धर्मस्थान में कद्दू या भतुए का दान करना उचित होगा।
8. तृतीय में बुध हो तो कर्तव्य या पुरुषार्थ में कमी आती है, अपमान होता है। मंगलवार की रात को मूँग की दाल पानी में भिंगोकर रखें, और बुधवार की सुबह पक्षियों को खिलायें। ऐसा 43 दिनों तक करें। हरे मूँग का दान करें।
9. तृतीय भाव में बुध हो व शत्रु ग्रह चंद्र या केतु या शुक्र छठे या सातवें भाव में हो तो पैतृक संपत्ति विवाद मामा, मौसी का स्वास्थ्य खराब व बीमारी होती है। मंजन के रूप में फिटकरी का प्रयोग करें।
10. 7 वें भाव में बुध अनिष्टकारी हो तो जातक की बहन को कष्ट होता है। हरे मूँग का दान करें।
11. बुध लग्न में या मेष राशि में स्थित होकर अनिष्ट फल दे तो बकरी का दान करना लाभप्रद रहेगा।

गुरु की अनुकूलता के उपाय :– यदि आप बृहस्पति से पीड़ित हैं, आपको बृहस्पति की दशा अंतरदशा चल रही हो या बृहस्पति छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो अथवा पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो, किसी भी प्रकार से बृहस्पति कमजोर हो तो पीताम्बर धारी भगवान विष्णु का पूजन, बृहस्पति व्रत का अनुष्ठान करें।

द्वादश भाव में बृहस्पति स्थित होने पर जातक पिता और दादा के जीवनकाल में सुखी रहता है। तथा उनकी मृत्यु के पश्चात् जातक को दाल, चना, केसर, सोना या हल्दी का धारण करना आवश्यक होगा।

निम्नांकित उपायों में से किए गए उपाय कारगर सिद्ध होंगे :–

1. शिक्षण संस्थान व निर्धन छात्रों को यथाशक्ति दान दें।
2. पीपल के वृक्ष की सेवा करें।
3. केसर, हल्दी, चना का दाल, सोना या पीतल दान करें।
4. किसी पुजारी को कपड़े दान करें।
5. आठ गुरुवार तक कच्चे सूत को हल्दी में रंगकर पीपल के पेड़ से बांधें।
6. हल्दी या केसर का तिलक लगाना शुभ है।
7. सोना धारण करना शुभ है।

8. भोजन में केसर लें, जीभ व नाभी पर केसर का तिलक लगायें।
9. स्त्री को उसके पति सामर्थ्यानुसार 2 सोने के टुकड़े दें और स्त्री इन टुकड़ां में से एक टुकड़ा पानी में बहायें और दूसरा अपने पास रखे। किसी भी हालत में सोने का टुकड़ा न बेचें।
10. अष्टम भाव में गुरु हेतु पीले रंग की वस्तु या चने की दाल, गुड़ दान करें। पीपल के पेड़ में पानी दें।
11. द्वादश भाव में गुरु धन देगा, परंतु संतान दुर्भागी होगी। केसर का तिलक हमेशा लगायें, साधु व पीपल की पूजा करें। नाक हमेशा साफ रखें। व्यापार में प्रगति होगी।
12. भांगरमूल ताबीज में रखें। गुरुवार को पानी में नागरमोथा डालकर स्नान करें।

शुक्र की अनुकूलता के उपाय :– यदि आप शुक्र से पीड़ित हैं, आपको शुक्र की दशा अंतरदशा चल रही हो या शुक्र छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो अथवा पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो, किसी भी प्रकार शुक्र कमजोर हो तो सबसे बड़ी पहचान है दायें या बायें हाथ का अंगूठा बिना किसी उचित कारण के दद्र करने लगता है। साधारण उपाय यह है कि मैले कपड़े मत पहनो। यदि कुण्डली में शुक्र किसी भी कारणवश अनिष्टकारी स्थिति में हो तो लक्ष्मीजी की पूजा करने से जनहित का कार्य करने से तथा दुःखी स्त्रियों या नारी–संस्थानों की मदद करने से भी अनिष्टकारी शुक्र के प्रभाव को क्षीण किया जा सकता है।

निम्नांकित उपायों में से किए गए उपाय कारगर सिद्ध होंगे :–

1. ब्राह्मणों को घी, गौ, दही, कपूर, श्वेत मोती, चंदन आदि का भी दान करने से लाभ प्राप्त होता है।
2. घर से निकलते समय चीनी खाकर पानी पीयें।
3. यदि पत्नी की तबियत खराब है तो लगातार 6 शुक्रवार सफेद पत्थर पर सफेद चंदन घिसकर बहते पानी में बहा दें।
4. दूध, ज्वारी का दान करें। भोजन से पूर्व थाली में सभी चीजें लेकर सफेद बैल या सफेद गाय को खिलायें।
5. चांदी, चावल एवं रंग–बिरंगे वस्त्र दान करें।
6. वाघारी की जड़ ताबीज में धारण करें।
7. लग्न में शुक्र अनिष्ट है एवं 7 व 10 वें भाव में कोई ग्रह न हो तो 25 वें साल में विवाह व विवाहोपरांत कष्ट, पत्नी वियोग होता है। गोमूत्र सेवन करें। पक्षियों को धान्य खिलायें।
8. अनिष्ट शुक्र द्वितीय भाव में हो व गुरु 8, 9, 10 वें भाव में हो तो वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण, चरित्र दुष्ट, व गुप्तरोग होंगे।
9. नवम भाव में अनिष्टकारी शुक्र को चांदी के चौकोर टुकड़े कड़वे नीम के नीचे गाड़ें। यदि शुक्र के साथ चंद्र या मंगल हो तो गृह निर्माण के समय छोटे–से मिट्टी पात्र में शहद भरकर यह नींव में गाड़ें।
10. 12 वें भाव में शुक्र पत्नी हेतु अनिष्टकारी है। नीले फूल संध्या समय जंगल में गाड़ें।
11. 12 वें भाव में शुक्र व 2, 6, 7, 12 वें भाव में राहु हो तो 25 वें वर्ष तक कष्टकारी होता है। काली भैंस या गाय पालें।

शनि की अनुकूलता के उपाय :–यदि आप शनि से पीड़ित हैं, आपको शनि की दशा अंतरदशा चल रही हो या शुक्र छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो या पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो, किसी भी प्रकार से शनि कमजोर हो या शनि जन्मकुण्डली में अनिष्टकारी हो तो निम्नांकित उपायों में से किए गए उपाय कारगर सिद्ध होंगे :–

1. मछलियों को आटे का चारा भोजन हेतु दिया जाय।
2. अपने भोजन में से कुछ भाग कौए को डालने से भी अनिष्ट फल दूर होता है।
3. तेल, काला तिल, लोहा, चमड़ा, पत्थर, मिट्टी आदि दान करें।
4. शिवजी व हनुमानजी की आराधना से भी शनि देव प्रसन्न होते हैं।
5. शनि अनिष्टप्रद हो तो काले शिवलिंग की पूजा से विशेष लाभ प्राप्त होता है। काले विष्णु व काले हनुमान जी की मूर्ति की पूजा करने से विशेष लाभ होता है।
6. शनि की शांति हेतु शनिवाद को हनुमानजी की मूर्ति पर सिंदूर और चमेली का तेल चढ़ायें।

7. सरसों के तेल से भरा बर्तन किसी तालाब या नदी के पानी में अंदर दबाएं।
8. बहते पानी में बादाम या नारियल बहा दें।
9. मकान में लोहे के फर्निचर का इस्तेमाल करें। खाने में काला नमक एवं काली मिर्च का प्रयोग करें। आँखों में काजल या सुरमा लगायें।
10. संपत्ति बाधा या गर्भपात हो तो घर की स्त्री भोजन की थाली से सारी चीजें निकालकर काले कुत्ते को दें।
11. सुरमा खरीदकर जमीन में गाड़ दें। सुरमा व बड़ की जड़ दूध में उबालकर तिलक करें। आर्थिक पीड़ा दूर होगी।
12. चौथे घर में शनि हो तो ऐसा जातक रात को दूध न पीयें। शनि अनिष्ट हो तो कुएँ में कच्चा दूध डालें। भैंस को घास, मजदूरों को भोजन व साँप को दूध दें।
13. 5 वें भाव में शनि हो तथा 10 वें भाव में कोई ग्रह नहीं हो, तो संतान सुख नहीं होता या संतान अल्पायु होती है। गुड़, तांबा, चावल, शहद, एक लाल नए कपड़े में बांधकर मकान में टांगे, शहद को शीशी में रखें।
14. 6 ठे भाव में शनि एवं गुरु हो तो पानी वाला नारियल नदी में डालें, 28 वर्ष के बाद विवाह करें, 48 वर्ष के पूर्व मकान न बनायें। संपत्ति बाधा हो तो काले सप्र को दूध पिलायें व पूजें।
15. छठे स्थान में शनि हो, दूसरे में कोई ग्रह न हो तो ब्याज, कारखाना, लोहा या तेल का धंधा करें। व्यवसाय आरंभ करने से पूर्व मिट्टी में राई का तेल डालकर मुँह बंद करें। कपड़े से इसे नदी में डालें। कृष्णपक्ष की मध्यरात्रि को व्यवसाय प्रारम्भ करें।
16. सातवें भाव में शनि हो तो शराब पीना छोड़ें।
17. 11 वें भाव में शनि हो एवं 7 वें भाव में शुक्र हो तो काम प्रारम्भ करने से पूर्व पानी का घड़ा दान करें।
18. शनिवार को उपवास करें, उपवास रात को तोड़ें। वाछोल वनस्पति की जड़ को ताबीज में धारण करें।
19. शनिवार को हनुमानजी को उड़द चढ़ायें व रूई की माला करें।
20. सफेद वस्त्र में काले तिल बांधकर पानी में बहायें। सोते समय दूध का बर्तन रखें। सुबह बिना किसी से बोले बरगद के पेड़ के नीचे जड़ में डाल दें।
21. सात तरह के मिक्स अनाज शनिवार के दिन पशुओं को खिलायें।
22. 8 किलो गाजर शनिवार के दिन गायों को खिलायें, 250 ग्राम काले अंगुर, एक नारियल, तिली का तेल, काले तिल तथा सवा मीटर काला कपड़ा शनिवार के दिन शनिदेव को अप्रण करें, लाभ मिलेगा।
23. शनिवार को 2 लाल फल, 5 ईमरती, 250 ग्राम गुड़, एक पान का बीड़ा व सवा मीटर लाल वस्त्र हनुमानजी को अप्रण करें। ऐसा 8 शनिवार तक करें, लाभ मिलेगा।
24. यदि शनि पंचम भाव में या सिंह राशि में हो तो मकान बनाते समय संतान पर कष्ट आ सकता है। यह कष्ट जातक के द्वारा अपना मकान बनाए जाने पर लागू होता है, न कि उसके पुत्र आदि द्वारा बनाए अथवा किसी खरीदे गए मकान पर लागू होता है। उपरोक्त ग्रह स्थिति में पुश्तैनी मकान के पश्चिम में शनि के शत्रु सूर्य की वस्तुएँ जैसे– गुड़, तांबा, भूरी भैंस, गुलमोहर, ऊड़हुल, पलाश आदि लाल फूल के पेड़ होने से अनिष्ट दूर हो सकता है।
25. शनि दशम भाव में हो तो वह चतुर्थ भाव को तब तक लाभ पहुँचाता रहेगा, जब तक मकान नहीं बन जाता। मकान बनते ही शनि चतुर्थ भाव की हानि पहुँचाना प्रारम्भ कर देता है।

राहु की अनुकूलता के उपाय :– यदि आप राहु से पीड़ित हैं, आपको राहु की दशा–अंतरदशा चल रही हो या राहु छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो या पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो, किसी भी प्रकार से राहु कमजोर हो तो राहु की शांति हेतु दुर्गा सप्तशती तथा हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। राहु अचानक संपत्ति या विपत्ति भी देता है। विद्युत स्पर्शाघात, छूत की बीमारी तथा कारावास दण्ड भी राहु देता है। अनिष्ट व्यर्थ भटकाता है व तेज बुखार चढ़ता है। यदि राहु कुण्डली में अनिष्टप्रद स्थिति में हो तो निम्नांकित उपायों में से किए गए उपाय कारगर सिद्ध होंगे :–

1. नारियल को दरिया में बहा देने से राहुकृत दोष तथा अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं।

2. जौ को धोकर बहते पानी या दरिया में बहा देने से भी राहुकृत दोष दूर हो जाते हैं।
3. कोयले को दरियामें बहा दें।
4. मेहतर को मूली, सरसों, कोयले या काली वस्तु दान देने से भी राहु जनित कष्ट दूर हो सकते हैं।
5. यदि राहु अष्टम भाव में हो या वृश्चिक राशि में हो तो खोटे सिक्के को दरिया में डाल देने से अथवा काले धन को परोपकार के कार्य में लगा देने से ही शांति होती है।
6. मन अशांत हो तो चांदी का चौकोर टुकड़ा हमेशा पास में रखें।
7. यदि राहु के कारण बीमार हो तो अपने वजन के बराबर जौ पानी में बहा दें। चांदी की डिब्बी में गंगाजल भरकर रखा जाय तो फायदा मिलेगा।
8. अतृप्त आत्माओं की तृप्ति के लिए रोज सरस्वती की मूर्ति के आगे नीला फूल चढ़ायें।
9. काले रंग का चश्मा पहनें।
10. जौ के कुछ दाने रात को सिरहाने रखें, सुबह पक्षियों को खिलायें।
11. कोर्ट कचहरी में मुकदमा हो या दंड की संभावना हो, नुकसान हो तो स्वयं के वजन के बराबर कोयले पानी में बहायें।
12. 5 वें भाव में राहु हो संतान व पत्नी सुख में बाधा हो तो इसके लिए विधिपूर्वक पुनः विवाह करें। पैतृक मकान के प्रवेश की चौखट पर चांदी का स्वास्तिक बनायें।
13. 12 वें भाव में राहु हो तो लांछन, व्यर्थ, आर्थिक तंगी होती है। रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
14. नारियल समुद्र में बहायें।
15. शरपुंखा की वनस्पति से स्नान करें।
16. चांदी की ठोस गोली पास में रखें।
17. हाथी दाँत अपने पास में रखें।
18. सिक्के की गोली या काँच की गोली, जो अंदर से काली हो रखें।
19. 8 खोटे सिक्के दरिया में डालें या प्रतिदिन 1 सिक्का 43 दिनों तक डालें।
20. स्वास्थ्य हेतु मीठे दूध से बड़ सींचें व जड़ की मिट्टी से तिलक करें।
21. कारोबार हेतु काला सुरमा जमीन में दबायें।
22. माथे पर तिलक के स्थान पर तेल का टीका शुभ होता है। दूध–दीी का तिलक लगाने से उत्तम फल मिलता है।
23. कुएँ में दूध गिरायें, आर्थिक संकट में शुभ होता है। रात को दूध न पीयें।
24. यदि राहु/केतु 10 वें भाव में हो तो मंगल की चीजें पैतृक मकान में जलायें। सौंफ, शहद, खांड मिलाकर मंगल के मंत्र से हवन करें।
25. नारियल, बादाम पानी में बहायें। जब दूसरे भाव में ग्रह न हो तो रात को व्यापार करें।
26. लोहे की बांसुरी खांड से भरकर बाहर जंगल में दबायें। पहले भाव में ग्रह न हो तो शहद से भरा बर्तन, मिट्टी का बर्तन जंगल में दबायें।
27. चांदी का चौकोर टुकड़ा रखें। शनि का भेद खुलेगा। पत्थर पर बैठकर दूध से स्नान करना शुभ रहेगा। स्नान करते समय पाँव का तलुआ कच्ची जमीन पर न रखें। नहाते समय पाँव के नीचे ईंट रखें।
28. अंधेरी कोठरी के दक्षिण–पूर्व कोने में बादाम दबायें।

केतु की अनुकूलता के उपाय :– यदि आप केतु से पीड़ित हैं, आपको केतु की दशा–अंतरदशा चल रही हो या केतु छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो या पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो, किसी भी प्रकार से केतु कमजोर हो तो –

1. केतु जब कुण्डली में अनिष्टकारी स्थिति में हो तो कुत्तों को खाना खिलाना लाभप्रद रहेगा।
2. तिल तथा कंबल का दान भी करना चाहिए।
3. केतु की शांति हेतु गणेश जी की पूजा तिल के लड्डूओं से करनी चाहिए।

4. यदि पुत्रों का व्यवहार ठीक नहीं हो तो धर्म स्थान/मंदिर में कंबल दान करने से केतु का अनिष्ट दूर हो जाता है।
5. यदि केतु के कारण पाँव में कष्ट हो तो शुद्ध रेशम का श्वेत धागा व श्वेत रेशमी वस्त्र धारण करना लाभप्रद होगा।
6. जब पुत्र पर आ बने तो कुत्ते को रोटी खिलाने से कल्याण होता है।

–: ग्रह बाधा दोष निवारण हेतु :–

1. **शनि की साढ़ेसाती निवारण के लिए** :– यदि आप शनि की साढ़ेसाती अथवा ढैय्ये से परेशान हैं तो किसी भी शनिवार को एक कटोरी तेल भरकर उसमें तांत्रोक्त नारियल डाल दें। उस तेल में अपना मुँह देखकर शनिश्चर का दान लेने वाले डाकोत को दान कर दें। ऐसा 11 शनिवार तक करें, शनि के दुष्प्रभाव में बहुत हद तक शांति प्राप्त होती है। (ख) यदि आपको शनि की साढ़े साती हो या शनि परेशान कर रहा हो तो काले वस्त्र में उड़द व काले तिल रखकर हनुमान जी के मंदिर में चढ़ायें। (ग) यदि किसी भी प्रकार से शनि बाधा हो तो दो जायफल कीकर के पेड़ पर चढ़ायें।
2. **लोहे का पाया दोष** :– लोहे के पाया में जन्में बच्चे को दोषकारक माना जाता है। इस दोष के निवारण के लिए बच्चे के माता–पिता किसी काँसे के बर्तन में सरसों का तेल व कुछ सिक्के डालकर शुक्लपक्ष के प्रथम शनिवार को स्वयं दोनों चेहरा देखकर किसी मंदिर में अथवा ब्राह्मण को दान करें तो इस दोष का निवारण होता है।
3. **शनि हेतु** :– (क) जिनको शनि की दशा चल रही है या कुण्डली में शनि नीच या शत्रु राशि में है, साढ़ेसाती चल रही हो, उन्हें लोहे के छल्ले को पहनना चाहिए। इसे शनिवार को सायंकाल के पश्चात गंगाजल व कच्चे दूध में धोकर धूप, अगरबत्ती व दीपक जला कर इसकी 'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः' मंत्र की एक माला जपने के पश्चात दाएं हाथ की मध्यमा (बीच वाली) अंगुली में धारण करना चाहिए। (ख) शनिवार के दिन 5 किलो गुड़, 2 किलो भुने हुए चने तथा 1 किलो केले बंदरों को खिलाएं। लगभग 8 शनिवार करने से शनि की बाधा दूर होगी।
4. **कालसर्प के दोष को दूर करने के लिए** :– जिन व्यक्तियों को राहु–केतु की दशा चल रही है या राहु–केतु कुण्डली में खराब स्थिति में हैं, अथवा कुण्डली में कालसप्र योग है, जो कर्ज में डूबे हुए हैं या कोर्ट–कचहरी के चक्कर में फंसे हुए हैं, उन्हें तांबे की सप्र वाली अंगूठी को बुधवार या शनिवार के दिन धारण करना चाहिए। इसे मध्यमा या कनिष्ठिका में धारण करना चाहिए। धारण करने से पूर्व पाँच इमरती लाल कपड़े पर रखकर राहु का मंत्र जप 108 बार करें। यदि यह प्रयोग ग्रहण काल में करें तो अति उत्तम है। मंत्र जप के पश्चात अंगुठी धारण करें एवं लाल कपड़े सहित इमरती को भैरव मंदिर में चढ़ा दें। यदि इसके साथ सप्रसूक्त का पाठ करें, तो शीघ्र लाभ होगा।
5. **दिशा शूल में यात्रा के लिए** :– दिशा शूल में यात्रा न करें, किंतु करनी अनिवार्य हो तो निम्नांकित उपाय करके यात्रा की जा सकती है :–
   (1) रविवार को यात्रा के समय घी चाटकर
   (2) सोमवार को यात्रा के समय दूध पीकर
   (3) मंगलवार को यात्रा के समय गुड़ खाकर
   (4) बुधवार को यात्रा के समय तिल खाकर
   (5) गुरुवार को यात्रा के समय दही खाकर
   (6) शुक्रवार को यात्रा के समय जौ का प्रसाद लेकर
   (7) शनिवार को यात्रा के समय उड़द का दान देकर यात्रा की जा सकती है।

6. **मंगल दोष के निवारण हेतु** :– जिस किसी भी लड़के या लड़की की कुण्डली में मंगल दोष है, वे विवाह पूर्व सवा मीटर लाल कपड़े में सवा किलो मसूर रखकर किसी युवा क्षत्रीय को मंगलवार को देने से दोष निवारण होता है।
7. **पंचक में मृत्यु** :– ऐसी मान्यता है कि यदि किसी की पंचक में मृत्यु हो जाए तो घर या मोहल्ले में पाँच अन्य लोग मरते हैं। इसके निवारणार्थ 5 कुश के पुतले मृतक के साथ जला दें।
8. **ग्रहों से रक्षा** :– दुष्ट ग्रहों से रक्षा हेतु अनार के वृक्ष का बांदा ज्येष्ठा नक्षत्र में धारण करना चाहिए।
9. **चाण्डाल योग** :– यदि कुण्डली में गुरु + राहु का चाण्डाल योग हो तो 43 दिनों तकि जौ को दूध में धोकर बहते पानी (नदी) में बहाएं।
10. **सूर्य व मंगल के अनिष्ट प्रभाव को दूर करना** :– यदि आपके सूर्य व मंगल नीच राशि या अनिष्टकारी होकर परेशान कर रहा हो तो लाल वस्त्र में गेहूँ, मसूर की दाल, गुलाब का पुष्प व तांबे का सिक्का रखकर हनुमानजी के मंदिर में चढ़ाएं।
11. **सूर्य पीड़ा निवारणार्थ** :– लाल कनेर की जड़ को रविवार एवं पुष्य नक्षत्र के योग में उखाड़कर पीड़ित व्यक्ति को अपने जेब में रखना चाहिए। सूर्य को नित्य जलाप्रण करने के साथ–साथ कनेर के पुष्प अप्रित करने से भी लाभ होता है।
12. **गुरु के दोष हरण हेतु** :– (क) यदि जन्म कुण्डली में गुरु अनिष्ट प्रभाव में हो तो नित्य देवताओं को गेंदे का पुष्प अप्रित करें। (ख) गुरु नीच राशि का होने पर प्रत्येक गुरुवार को पारस पीपल पर चने की दाल एवं हल्दी से पीले किए हुए चावल 11 गुरुवार को चढ़ायें। गुरु ग्रह जनित बाधायें दूर होती हैं।
13. **चंद्र के अनिष्ट प्रभाव को दूर करना** :– यदि आपके चंद्रमा नीच राशि या अनिष्टकारी होकर परेशान कर रहा हो, तो सफेद वस्त्र में चावल रखकर देवी के मंदिर में चढ़ायें।
14. **शुक्र के अनिष्ट प्रभाव को दूर करना** :– एक सफेद वस्त्र में नारियल गोला रखकर उसे ऊपर से एक चौथाई काट के मिश्री भर के देवी के मंदिर में चढ़ायें।
15. **बुध के अनिष्ट प्रभाव को दूर करना** :– यदि आपको बुध नीच राशि या अनिष्टकारी होकर परेशान कर रहा हो, तो हरे वस्त्र में मूंग, दूर्वा व हरी इलायची रखकर गणेश मंदिर में चढ़ायें।
16. **राहु के अनिष्ट प्रभाव को दूर करना** :– (क) यदि आपको राहू नीच राशि या अनिष्टकारी होकर परेशान कर रहा हो तो नीले वस्त्र में उड़द रखकर शनि मंदिर में चढ़ायें। (ख) यदि राहु की दशा अंतद्रशा हो या वह परेशान कर रहा हो तो खाने व पीने में थोड़ा–सा जूठा छोड़ें, खाना खा रहे हों तो एक टुकड़ा रहने दें, पानी पी रहे हों तो पानी रहने दें।

–: ऋण मुक्ति एवं सुख–समृद्धि प्राप्ति के उपाय :–

1. ऋण से मुक्ति के लिए शुक्लपक्ष के बुधवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व अपने मकान में छोटा–सा चांदी का हाथी रखें।
2. कर्ज उतरने का नाम न ले रहा हो तो 5 लाल गुलाब के खिले हुए फूल लेकर सवा मीटर सफेद कपड़ा बिछाकर गायत्री मंत्र पढ़ते हुए कपड़े पर बांधें व कपड़ा किसी पवित्र नदी में बहा दें।
3. रात को सोते समय पलंग के नीचे सिरहाने की तरफ जौ रखकर सुबह उठकर पक्षियों को या गरीबों को दें। इससे ऋण से मुक्ति मिलती है।
4. मंगलवार को कुछ दाने राई के लेकर हनुमानजी का ध्यान करें तथा ऋण मुक्ति की याचना करके अपने ऊपर उसार कर 7 मंगलवार चौराहे पर जाकर चारों दिशाओं में फेंक दें। तथा जब भी श्मशान या कब्रिस्तान से गुजरें तो कुछ सिक्के श्मशान या कब्रिस्तान की तरफ फेंक दें।
5. **कर्ज मुक्ति हेतु मोती शंख के प्रयोग** :– बुधवार को स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण कर इस शंख पर केसर से स्वास्तिक बनाएं व स्फटिक माला से लक्ष्मी मंत्र जपें तथा प्रत्येक मंत्र समाप्ति पर एक अखण्डित चावल इसमें डालें। नित्य एक माला जपें। 30 दिन बाद चावल सहित शंख सफेद वस्त्र में बांधकर व्यापार स्थल पर रखें। शीघ्र कर्ज मुक्त होकर समृद्धि होगी।
6. **ऋण मुक्ति हेतु स्फटिक माला के प्रयोग** :– जिनके लगातार ऋण बढ़ता जाता है वे ईशान कोण में जल का कलश रखकर यह माला जल में रखें व शुक्रवार को लक्ष्मी मंत्र का जप करें। अवश्य लाभ मिलेगा।
7. **संपूर्ण बाधा, क्लेश, रोग, भय, ऋण मुक्ति हेतु अमोघ उपाय** :– घर से रोग जाने का नाम न ले, चोरी का भय हो, कर्ज बढ़ता ही रहे, अशांति, भय हो तो हनुमानजी का यह प्रयोग अमोघ बाण की तरह समस्त समस्याओं का नाश कर घर में सुख–शांति, समृद्धि, संपन्नता एवं स्वास्थ्य लाता है। मंगलवार को घर से ईशान दिशा में स्थित करंज के पौधे की जड़ लावें तथा उसकी एक अंगूष्ठ के बराबर हनुमान प्रतिमा बनवाएं। शुद्ध गंगाजल से शुद्ध करके सिन्दूर लेपन करें तथा घर के दरवाजे पर इस प्रकार लगा दें कि उनका मुख घर के अंदर की ओर हो। यहाँ अशुद्धि नहीं करनी चाहिए तथा नित्य धूप–दीप करें एवं प्रति मंगलवार एवं शनिवार को गुड़–चने अथवा मोतीचूर के लड्डू का भोग लगाकर बच्चों में बांट दें। श्रद्धा एवं विश्वास के साथ उक्त प्रयोग करने पर चमत्कार आप स्वयं देखेंगे।
8. घर की दीवारों पर, फर्श पर, पेंसिल, चॉक आदि के निशान नहीं रहने दें, इससे ऋण बढ़ता है।
9. **कर्ज मुक्ति और वास्तु का ढालान** :– यदि कर्जा उतरने का नाम न ले रहा हो व बढ़ता ही जा रहा हो तो भूमि का ढालान पूर्व–उत्तर (ईशान) की ओर बढ़ा दें। यदि पहले से ही उस ओर है तो थोड़ा–सा और बढ़ा दें। दीवारों, फर्श आदि का झुकाव उस ओर करें, कर्जा तुरंत उतर जाएगा। लक्ष्मी वास हेतु भूमि का ढालान हमेशा उत्तर, उत्तर–पूर्व या पूर्व दिशा की ओर रखें। इसमें यदि उत्तर–पूर्व की ओर ढालान हो तो सबसु शुभ, फिर उत्तर की ओर का ढालान शुभ, फिर पूर्व की ओर का ढालान शुभ माना जाता है।
10. यदि आपका कर्ज नहीं उतर रहा है तो आप कर्ज की प्रथम किश्त शुक्ल पक्ष के प्रथम पक्ष के प्रथम मंगलवार से आरंभ करें।
11. बुधवार को किसी को भी कर्ज न दें एवं मंगलवार को कर्ज नहीं लें।
12. अगर आप निरंतर कर्ज में फँसते जा रहे हों, तो श्मशान के कुएँ का जल लाकर किसी पीपल के वृक्ष पर चढ़ाना चाहिए। यह 6 शनिवार किया जाय, तो आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होते हैं।
13. गुरुवार को सुहाग सामग्री किसी सुहागिन को देने से आर्थिक समृद्धि बढ़ती है।
14. आर्थिक समृद्धि हेतु पैसे गिनते समय थूक का प्रयोग न करें।

15. आर्थिक समृद्धि हेतु शुक्रवार की शाम को एक ताला खरीदें व खोलें नहीं। उस ताले को शयन कक्ष में रखें व शनिवार को ताला मंदिर में लेकर मंदिर में छोड़ें। जब पुजारी वह ताला खोलेगा, समृद्धि बनेगी।
16. प्रातः व संध्या काल में किसी को भी धन उधार न दें।
17. आर्थिक समृद्धि में बढ़ोत्तरी हेतु अमावस्या को लोबान जलाकर पूरे घर में घुमाएँ।
18. **ऋण की उगाही** :– ऋण की उगाही हेतु खच्चर का दाँत प्राप्त कर लें एवं जल में धोकर रख लें। जब कभी ऋण की उगाही के लिए जाएं तो इस दाँत को साथ लेकर जाएं।
19. **धन की वृद्धि** :– श्रीफल को लाल वस्त्र में रखकर कामिया सिंदूर, देशी कपूर, लौंग चढ़ाकर धूप–दीप देकर कुछ मुद्रा अप्रित करके लक्ष्मी मंत्र की सात मालाएँ जपकर अगर धन स्थान में अथवा दुकान के गल्ले में रखा जाए तो धन की बहुवृद्धि करता है।
20. **अन्न का अभाव न हो** :– अगर गोदाम में अथवा अन्न के भण्डार में श्रीफल को रखा जाय, तो वहाँ पर कभी भी अन्न का अभाव नहीं होता है, न ही किसी कारण हानि होती है।
21. **सुख–समृद्धि** :– मिट्टी के घड़े को लाल रंग से रंग कर उसके मुख पर मौली बांधकर तथा उसमें जटायुक्त नारियल रखकर बहते हुए जल में प्रवाहित कर देना चाहिए।
22. **धन प्राप्ति** :– दीपावली को प्रातः काल एक नारियल पत्थर से बांधकर नदी, तालाब में डुबोएं व प्रार्थना करें कि मैं शाम को आपको लक्ष्मी के साथ लने आऊँगा। सूर्यास्त बाद निकालकर लक्ष्मी पूजन के समय पूजा करके भण्डार गृह में रखें। फल को यदि बक्से में रख लिया जाय तो उसमें धन वृद्धि होने लगती है।
23. आर्थिक समृद्धि हेतु एक नारियल पर कामिया सिंदूर, मौली, अक्षत अर्पित कर पूजन करें, फिर उसे हनुमानजी के मंदिर में चढ़ा आयें।
24. धन वृद्धि हेतु बुधवार को हिजड़े को पैसे दें व कोई सिक्का उससे लेकर अपने पास रखें। मंदिर में मिले पैसे (वैष्णवी देवी के मंदिर से मिले पैसे) को पीले वस्त्र में बांधकर रखें।
25. **सुख–सुविधा एवं संपन्नता हेतु** :– दिवाली के दिन मार्ग में कोई सिक्का पड़ा मिले तो उसे उठा कर घर ले आएं। सात कुओं का पानी लाकर उस पर छिड़कें। तत्पश्चात् सिक्के को पंचोपचार से पूजन करें एवं धूप–दीप देकर एक श्वेत कपड़े में थोड़े से चावल, रोली, लाल पुष्प एवं पाँच लौंग के साथ सिक्के को रख दें। इन सब सामग्री को लॉकर या तिजोरी में रख दें। प्रत्येक शुक्रवार को धूप–दीप करें। घर में धीरे–धीरे सुख–सुविधा एवं संपन्नता बढ़ जाएगी।
26. यदि सड़क पर पैसे मिल जाएं तो उन्हें धोकर अपने इष्ट के चरणों में श्रीफल के साथ रखें तथा पूजन सामग्री के साथ इस पर हल्दी के छींटे मारें।
27. **सुख–समृद्धि के लिए** :– गुरु पुष्य को चांदी की छोटी–सी ढक्कन वाली डिबिया लें। इसमें ऊपर तक नागकेसर तथा शहद भरकर बंद कर लें। फिर इसे धनस्थान या तिजोरी में रख लें। दीपावली तक रहने दें, धन में वृद्धि होगी।
28. लक्ष्मी जी की कृपा प्राप्ति हेतु रुई के स्थान पर मौली की बत्ती जलाएं।
29. धन वृद्धि हेतु शनिवार को अभिजीत मुहूर्त में अपनी लंबाई से 5 गुणा मौली लेकर नारियल पर लपेटकर नदी में प्रवाहित करें।
30. धन लाभ हेतु छोटी दीपावली के सुबह में हाथी को गन्ना या कुछ और मीठी वस्तु अपने हाथ से खिलायें, धन लाभ होगा।
31. **कमल का पुष्प** :– यह जहाँ होगा, वहाँ लक्ष्मी अवश्य वास करती हैं। लक्ष्मी पूजन में कमल पुष्प चढाने से सौभाग्य व समृद्धि मिलती है। लक्ष्मी देवी की स्तुति या मंत्र जप कमलगट्टे की माला से किया जाय तो शीघ्र फलदायी होता है।
32. छोटी दीपावली को प्रातः काल स्नान करने के उपरांत सबसे पहले लक्ष्मी–विष्णु की प्रतिमा को कमलगट्टे की माला और पीले पुष्प अर्पित करें, धन लाभ होगा।

33. घर से बाहर निकलते समय दाहिना पाँव पहले बाहर निकालें। दो पीले पुष्प श्री महालक्ष्मी जी को अर्पित करें। ऐसा करने से धन लाभ होता है।
34. गुरु पुष्य नक्षत्र के दिन इमली के बांदा को अभिमंत्रित कर के घर में रखा जाय तो धन–संपदा में वृद्धि होती है।
35. घर में पीले वस्त्र में पीली सरसों बांधकर ईशान कोण में रखने से समृद्धि बढ़ती है।
36. **धन वर्द्धक तंत्र** :– गणेश चतुर्थी के दिन हल्दी की गांठ को पीले रुमाल में रखकर चावल, नारियल व सुपारी, मुद्रा को हल्दी में रंगकर पूजा करके रुमाल घर पर रखने से धन–संपदा व सुख–समृद्धि प्राप्त होती है।
37. **धन–संपति की वृद्धि** :– (क) कच्ची हल्दी की गांठ को पीले धागे में पिरो कर भगवान कृष्ण की पूजा और अनुष्ठान करके गुरुवार को धारण करने से (बुधवार की रात्रि में अनुष्ठान करें और गुरुवार के प्रातःकाल में बांधें) धन–संपत्ति और श्री की वृद्धि होती है।
(ख) हल्दी की माला पर मंत्र जप बहुत प्रभावशाली रहता है। पुखराज रत्न के रूप में हल्दी का टुकड़ा और हल्दी के ही रंग में रंगे हुए पीले वस्त्र धारण करना लाभकारी होता है।
38. **धन–धान्य से समृद्ध** :– गुरुपुष्य योग में अथवा गणेश चतुर्थी के दिन नहा–धोकर शुद्धतापूर्वक हल्दी की गाँठ लें, उसे पीले रुमाल में रखें। कुछ चावल के दाने, नारियल एक सुपारी, सिक्का लेकर हल्दी में रंगें व उसे धूप–दीप देकर रुमाल में बांधकर रखें, दैनिक धूप–दीप करें। यह प्रयोग धन–धान्य से समृद्ध बनाता है।
39. **समृद्धि प्राप्ति हेतु सरसों के प्रयोग** :– सफेद/पीले सरसों के दाने घर या दुकान के मुख्य द्वार पर के पास चांदी के पात्र में रखने से घर में दुकान में समृद्धि होगी।
40. **समृद्धि प्राप्ति हेतु बादाम तथा किशमिश के प्रयोग** :– घर में जेवर आदि रखने के स्थान पर जेवल के साथ पीले कपड़े में सात बादाम, सात छुहारे और सात किशमिश बांध कर रखें। इससे वहाँ बरकत रहेगी।
41. **समृद्धि प्राप्ति हेतु नारियल व मेवा के प्रयोग** :– रविवार को सूखा नारियल का गोला लेकर सूर्यास्त से पूर्व उसमें छेद करके बूरा, आटा व पाँच मेवे भरकर **'ॐ श्रीं श्रियै नमः'** का जप करते हुए दीपक जलाकर वह गोला पीपल के वृक्ष में गाड़ें। सात रविवार करने से लाभ मिलेगा।
42. **समृद्धि प्राप्ति हेतु छुहारे के प्रयोग** :– लाल रेशमी वस्त्र में 11 छुहारे बांधकर धन रखने के स्थान पर रखने से धन की वृद्धि होती है।
43. **समृद्धि प्राप्ति हेतु गोरोचन के प्रयोग** :– गुरु पुष्य नक्षत्र में गोरोचन का पूजन करके गल्ले में रखने से धनवृद्धि होती है।
44. **धनार्जन हेतु व कार्य सिद्धि** :– किसी शुभ दिन गणेशजी की पूजा प्रारम्भ करें और प्रतिदिन 108 दूर्वादल अप्रित करें। जब कभी धनार्जन के कार्य से कहीं जा रहे हों तो गणेश प्रतिमा पर अप्रित दुर्वादलों में से 5–7 दल प्रसाद स्वरूप लेकर जेब में रख लें। कार्य सिद्ध हो जाता है।
45. **अचानक धन लाभ** :– (क) अगर अचानक धन लाभ की स्थितियाँ बन रहीं हो, किंतु लाभ नहीं मिल रहा हो तो गोपी चंदन की नौ डलियाँ लेकर केले के वृक्ष पर पीले धागे से टांग देनी चाहिए। (ख) आकस्मिक धन लाभ हेतु 11 सफेद पुष्प लेकर प्रातःकाल चौराहे के मध्य पूर्व की ओर मुख करके रखें व शुक्रवार के दिन चौराहे पर मध्य में इत्र डालकर शीशी वहीं छोड़कर आएं। (ग) आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु शुभ समय में हल्दी की गांठ से निर्मित हरिद्रा गणपति को प्राप्त करके हल्दी की माला से हरिद्रा गणपति मंत्र जप करने से आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है। (घ) अचानक धन लाभ के लिए माता लक्ष्मी के मंदिर में सुगंधित धूपबत्ती व गुलाब की अगरबत्ती का दान करना चाहिए। अगर शुक्रवार के दिन यह प्रयोग किया जाय, तो शीघ्र सफल होता है। (ङ) अमावस्या के दिन पीली त्रिकोण आकृति की पताका विष्णु मंदिर में ऊँचाई वाले स्थान पर इस प्रकार लगाए कि वह लहराती रहें, इससे आपका भाग्य शीघ्र ही चमक उठेगा। झण्डा लगातार वहाँ लगा रहना चाहिए।
46. **अवरूद्ध धन मार्ग** :– अगर धन आने का मार्ग अवरूद्ध हो तो शुक्लपक्ष के बृहस्पतिवार से शुद्ध केसर का तिलक माथे पर लगाएं, आय के स्रोत खुल जाएंगे।
47. **धनदायक व कार्य सिद्धि** :– दीपावली की रात बहीखाता, तिजोरी, कलम, दावात की पूजन के लिए जाने से पहले शुद्ध केसर मिला मीठा दही खा लें, इसके पश्चात ही प्रस्थान करें, कार्य सिद्ध होगा।

48. **बरकत न हो** :– पैसा बराबर आए, साथ ही खर्चे भी बराबर लगे रहे, बरकत न हो तो दीपावली को शाम में किसी भी देवी के मंदिर में दो अलग–अलग स्थानों पर सवा सौ ग्राम रोली, सवा सौ ग्राम सिंदूर, सवा मीटर लाल कपड़ा, नारियल, छुहारा व 21 रुपये रखकर पूजन करें। पूजन के बाद एक स्थान की सामग्री मंदिर में ही अप्रित करें और दूसरे स्थान की सामग्री स्वयं लाकर लाल कपड़े में बांध कर अपने धन रखने के स्थान पर रखें और 21 दिनों तक लगातार धूप–दीप अर्पित करें।
49. **आर्थिक संपन्नता** :– दीपावली की पूजन के समय 125 ग्राम सूखे छुहारे, चांदी का सिक्का, कमलगट्टा से पूजन करें। अगले दिन उनको लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रखें। 51 दिनों तक लगातार एक रुपया किसी भी मंदिर में माँ लक्ष्मी के नाम से अप्रित करें।
50. **अनावश्यक व्यय** :– यदि बहुत मेहनत के बाद भी आर्थिक स्थिति में सुधार न हो, रोगों पर पैसा खर्च हो, लेनदारों का आना–जाना लगा रहता हो, बरकत नहीं हो तो शुक्लपक्ष के पहले शुक्रवार या दिपावली को स्फटिक का श्रीयंत्र लेकर पंचामृत से स्नान करा कर पूजा स्थान में रखें व रोली–मौली अप्रित करें एवं शुद्ध घी का दीपक जलाएं एवं श्रीसूक्त का एक पाठ करें तथा लाल गुलाब या कमल पुष्प तथा लाल चंदन के साथ लाल कपड़े में रखकर तिजोरी में रखें। प्रतिदिन पूजा के समय श्रीसूक्त का एक पाठ करें। थोड़े ही समय में लक्ष्मी प्रसन्न होगी। पारिवारिक कलह में न पड़ें, न ही किसी को नाराज करें।
51. **धन वृद्धि हेतु** :– नवरात्र में घर का मुखिया अष्टमी के दिन माता के मंदिर में लाल कपड़े में 11 रुपये एक नारियल पर मौली बांधकर पूजा करके धन रखने के स्थान पर रखें, आगमी नवरात्र पर बदलें।
52. **दरिद्रता निवारण हेतु** :– घोड़े के पैर के नाखून और तलवे की रक्षा हेतु लोहे की नाल घिस जाने पर स्वतः गिरे तो इसे शनिवार के दिन घर के बाहर छुपा दें, दूसरे दिन रविवार को इससे टुकड़ा काटकर उसमें थोड़ा–सा तांबा मिलाकर अंगूठी बनवायें एवं नगीने के स्थान पर रखकर देव प्रतिमा की भांति पूजन करें। शनिवार को व्रत रखें एवं शनि मंत्र का जप कर पीपल की जड़ से स्पर्श कर इसे धारण करें।
53. **समृद्धि प्राप्ति हेतु एकाक्षी नारियल के प्रयोग** :– स्थायी सुख–समृद्धि हेतु एकाक्षी नारियल को अपने पूजा के स्थान में स्थापित कर, प्रतिदिन एक माला **''ॐ श्रीं नमः''** मंत्र का जप करने से स्थायी संपत्ति की प्राप्ति होती है।
54. घी एवं दूध मिलाकर लोहे के बर्तन से पीपल की जड़ में पानी देने से घर में लंबे समय तक लक्ष्मी का वास होता है।
55. **ऋद्धि–सिद्धि की स्थापना के लिए** :– एक तांत्रोक्त नारियल को लेकर इसे एक चांदी के सिक्के पर रखकर मौली से बांध दें। नवरात्रि स्थापना के दिन आप इसकी साक्षात गणपति मानकर पूजन करें। निरंतर 9 दिनों तक इसका पूजन कर **''ॐ ग्लौं गं गणपतये नमः''** मंत्र की एक माला का जप करें। 9 वें दिन श्रद्धापूर्वक इसकी पूजा कर इसे किसी डिब्बी में बंद कर सुरक्षित स्थान पर रख दें। जब आपको इस प्रयोग का कुछ लाभ दिखाई पड़े तब उचित दक्षिणा के साथ गणेश मंदिर में अर्पित कर दें।
56. **धन समृद्धि प्राप्ति हेतु कौड़ियों के प्रयोग** :– (क) दीपावली के पूजन के समय 11 कौड़ियों को शुद्ध जल से धोकर पूजन करें, इसे धूप दिखायें व पुराने चांदी के सिक्के व रुपयों के साथ इसे रखें। इससे धन समृद्धि बढ़ती है। (ख) 11 कौड़ियों को केसर, हल्दी व पीले चंदन से रंगकर पीले कपड़े में बांधकर रखने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है। (ग) गल्ले या लॉकर में, पैसों की आलमारी में या जहाँ बहुमूल्य सामान रखते हैं, वहाँ पर कौड़ी को पूजा करके रखने से समृद्धि बढ़ती है।
57. स्फटिक की माला को यदि पूजा कर के मंत्र सिद्ध कर के धारण किया जाय, तो व्यक्ति कुछ ही दिनों में धन वृद्धि व समृद्धि पाता है।
58. शंख से बनी माला को पूजा स्थल में रखने से व इस पर मंत्र जपने से लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है। यह लक्ष्मी विष्णु दोनों को प्रिय है।

59. **पिरामिड के प्रयोग** :– आर्थिक संपन्नता एवं व्यापार वृद्धि हेतु शुभ मुहूर्त में पिरामिड लाकर लक्ष्मी के मंत्रों से अभिमंत्रित करके ईशान या उत्तर दिशा में रखने से धन की वृद्धि होती है।
60. प्रातःकाल उठकर झाड़ू लगाना चाहिए तथा घर के मुख्य द्वार पर जल चढ़ाने से धन आगमन होता है।
61. सुबह उठते ही अपनी दोनों हथेलियों को एक बार देखकर चेहरे पर तीन–चार बार फेरें। पलंग से उतरते समय जो स्वर चले, वह पाँव पहले रखें व फर्श पर पैर रखने से पूर्व धरती माँ से क्षमा मांगे।
62. **धन हानि** :– अगर बार–बार धन हानि हो रही हो तो काले तिल परिवार के सभी सदस्यों के सिर पर सात बार वार कर घर से उत्तर दिशा में फेंक दें, धन हानि बंद होगी।
63. धनागमन हेतु घर, दुकान में जितनी भी घड़ियाँ हों, उन्हें चालू रखें। बंद होने पर तुरंत ठीक कराए, धनागमन अच्छा होगा।
64. सफेद वस्तुओं का दान नियमित करते रहने से धन की वृद्धि होती है।
65. देवी लक्ष्मी के चित्र के समक्ष नौ बत्तियों का घी का दीपक जलाने से उस दिन धन का लाभ होता है।
66. प्रातः, एवं सायंकाल देवी महालक्ष्मी को हलवे का भोग चढ़ाने से तथा प्रसाद वितरित करने से धन लाभ होगा।
67. **धन संचय** :– अगर पर्याप्त धनार्जन के पश्चात् भी धन संचय नहीं हो रहा हो, तो प्रत्येक शनिवार काले कुत्ते को कड़वे तेल से चुपड़कर रोटी खिलायें। अगर आर्थिक परेशानियों से जूझ रहें हों तो मंदिर में केले के दो पौधे (नर–मादा) लगा दें।
68. धन लाभ हेतु सदैव भगवान गणेश को लड्डू का भोग लगाकर कोई भी मीठा फल किसी मंदिर में चढ़ा कर ही व्यापार स्थल पर जाएं, धन लाभ होगा।
69. यदि शुक्रवार को कोई पैसा आदि रास्ते में मिल जाए या कोई अधिक दे जाए तो उसे रख लेने से धन वृद्धि होती है।
70. रविवार को बिल्ली की जेर प्राप्त कर तिजोरी में रखने से धन का लाभ होता है, वृद्धि होती है।
71. यदि कहीं मोर नाचता दिखे तो उसके पैरों की मिट्टी उठाकर धूप–दीप करके अपने पास रखने से धन में वृद्धि होती है।
72. रवि पुष्य योग में कौए का दायाँ नाखून किसी ताबीज–सा तांबे की डिबीया में रखकर धारण करने से आर्थिक संकट का समाना नहीं करना पड़ता।
73. आर्थिक समृद्धि हेतु शनिवार को पीपल के वृक्ष में गुड़, जल, दूध चढ़ायें। सरसों के तेल का दीपक जलायें, नित्य पूजा करें। ऐसा करने से आर्थिक समृद्धि होगी।
74. **दरिद्रता नाश हेतु उपाय** :– पीपल के वृक्ष के नीचे शिवलिंग स्थापित करके " ॐ नमः शिवाय " मंत्र से विधि–विधान से पूजा करने से दरिद्रता का नाश होता है।
75. पारस पीपल का फल सिंदूर में सहेज कर रखने से धन वृद्धि होती है।
76. **धन संचय** :– अगर आप धन संचय नहीं कर पा रहे हैं तो आपको किसी भी शुभ दिन रेशमी रूमाल में हत्थाजोड़ी बांधकर अपने घर में रख देना चाहिए।
77. एक नवीन पीले कपड़े में नागकेसर को हल्दी, सुपारी, तांबे का सिक्का व चावल के साथ रखकर शिव के सम्मुख रखकर धूप–दीप से पूजा करके यदि लॉकर, गल्ले या दुकान में रखें तो समृद्धि होती है।
78. **धनाभाव दूर** :– घर में नागदमन का पौधा गमले में रविपुष्य के दिन लगाायें । विधि से इसकी जड़ धारण करें, धनाभाव दूर हो जाएगा।
79. गूलर की जड़ को कपड़े में लपेट कर चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर रखें। यह ताबीज पहनने से या पास रखने से साधक को कभी धनाभाव नहीं रहता। यह बहुत ही सरल और सहज प्रयोग है।
80. यदि बरगद के वृक्ष के नीचे वट बीज से उत्पन्न छोटा पौधा मिल जाए तो उसे शुभ मुहूर्त में लाकर पूजा करके अपने घर में लगायें। जैसे–जैसे वृक्ष बढ़ेगा वैसे–वैसे अपनी धन–संपदा बढ़ेगी।
81. सहदेवी के पौधे की जड़ को अभिमंत्रित करके लाल वस्त्र में लपेटकर धन रखने के स्थान पर रखने के धन में वृद्धि होती है।

82. बहेड़े के पत्ते एवं जड़ को अभिमंत्रित करके धन रखने के स्थान पर रखने से धन में वृद्धि होती है।
83. कुश को लाल कपड़े में लपेटकर रखना समृद्धिकारक माना जाता है। यह धनवर्द्धक होता है।
84. अशोक वृक्ष की जड़ को विधिवत् ग्रहण करने से धन में बरकत होती है। धन की कमी नहीं रहती व घर में धन का आगमन होता रहता है।
85. **दरिद्रता नाशक** :– अशोक के फूल को पीस कर शहद के साथ खाने से दरिद्रता नहीं रहती। देवी की पूजा करें तथा लक्ष्मी के मंत्र या स्तोत्र का जप करने से लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है।
86. **बेलपत्र द्वारा धन–धान्य में समृद्धि एवं आकस्मिक संकट** :– शुक्लपक्ष के सोमवार को पाँच पत्ती वाला बेलपत्र लेकर गंगाजल से शुद्ध कर लें तथा श्वेत चंदन से उस पर **''ॐ नमः शिवाय''** लिखें। तत्पश्चात् धूप–दीप देकर एक माला **''ॐ जूं सः''** का जपें। बेलपत्र को काँच के फ्रेम में जड़वा कर पूजा स्थल में रख लें। नित्य उसकी पूजा करें। घर–परिवार धन–धान्य से समृद्ध होगा एवं आकस्मिक संकट दूर होगा।
87. **ऊँट कटेला मूल द्वारा श्री वृद्धि** :– ऊँट कटेला मूल राजस्थान की एक कांटेदार वनस्पति होती है, जिसे ऊँट खाना पसंद करता है। इसे पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में ग्रहण कर अपने पर्स या गल्ले में रखने से श्रीवृद्धि होती है।
88. **अड़चन दूर व धन वृद्धि** :– शुक्लपक्ष के बुधवार को संध्याकाल में केले के पौधे पर जल चढ़ाकर हल्दी से तिलक लगावें एवं बृहस्पति का ध्यान कर गुरुवार को प्रातः थोड़ी जड़ ले जाने का संकल्प करें। गुरुवार प्रातः सूर्योदय के समय स्नान–ध्यान से निवृत्त होकर पुनः पौधे के समीप जाकर जल चढ़ावें एवं धूप–दीप करें तथा लकड़ी के टुकड़े से थोड़ी–सी जड़ खोद लें, उसे घर लाकर गंगाजल से शुद्ध करें। केसर मिश्रित जल में रखकर घी का दीपक जलाकर **'ॐ बृं बृहस्पतये नमः'** मंत्र की एक माला जपें। तत्पश्चात् जड़ को पीले कपड़े में लपेट कर तिजोरी या आलमारी में रखें एवं केसर मिश्रित जल को व्यवसाय स्थल या पूरे घर में छिड़क दें। यथेच्छ दान–पुण्य करें। प्रति गुरुवार करने से बार–बार आने वाली अड़चन दूर होगी, पैसा आएगा व बरकत होगी।
89. **सामान में बरकत** :– जब भी कोई घरेलू वस्तु बर्तन, कपड़ा आदि खरीदें तो उसे खरीदकर कच्ची हल्दी से स्पर्श कराकर काम में लेवें।
90. **रुके हुए धन की प्राप्ति** :– प्रतिदिन सूर्यदेव को जल का अर्ध्य दें। जल में लाल मिर्च के 21 बीज डाल कर अप्रण करें। रुके हुए धन की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करें। शुभ मुहूर्त में कनिष्ठिका अंगुली में शुक्लपक्ष के बुधवार को सवा तीन रत्ती का पन्ना चांदी की अंगूठी में जड़वा कर धारण करें।
91. **अप्रत्याशित परिणाम** :– किसी खास काम से जाते समय भगवान को फूल चढ़ायें व जाते समय अपनी जेब में रखकर काम पर जाएं। अप्रत्याशित परिणाम मिलेगा।
92. धन वृद्धि हेतु हत्थाजोड़ी को डिब्बी में रखकर पूजा करें व 11 रुपये चढ़ायें तथा **'ॐ चामुण्डादेवी धनं देहि'** मंत्र का जप करें।
93. धन लाभ हेतु प्रातः काल दीपक जलाकर उसमें दो लौंग डालें। उसके पश्चात् घर से प्रस्थान करें। भगवान गणपति को दूर्वा एवं लड्डू का भोग लगायें व भगवती लक्ष्मी के चित्र के सामने घी का दीपक जलाकर सरसों का तेल तथा काली उड़द का दान करें। नित्य प्रातः तुलसी के पौधों में जल अप्रित करें, धन लाभ होगा।
94. किसी भी देवी–देवता की पूजा–अर्चना में नित्य लौंग चढ़ाने से धन–संपत्ति में बरकत होती है।
95. दरिद्रता दूर करने हेतु दीपावली की रात या ग्रहण काल में एक लौंग, एक इलायची जलाकर भस्म बना लें। इस भस्म को देवी–देवताओं के चित्र एवं यंत्रों में लगायें।
96. नमक कभी भी शौचालय के अतिरिक्त खुला न रखें, इससे धन नष्ट होता है।
97. प्रतिदिन चींटियों को आटा व बूरा मिलाकर खिलाने से दरिद्रता दूर होती है।
98. व्यापार में बराबर घाटा हो रहा हो या व्यापार कम चल रहा हो तो शुक्लपक्ष से एक चुटकी आटा लेकर दुकान अथवा व्यापार स्थल के मुख्य द्वार के दोनों ओर थोड़ा–थोड़ा छिड़क दें व कहें कि जिसकी नजर हो उसी को लगे। यह क्रिया करते हुए कोई देखे नहीं, कोई टोके नहीं।

99. **व्यापार में उन्नति** :– पारस पीपल का एक हरा पत्ता गुरुवार को अपने गल्ले में रखें। इससे दुकान अथवा व्यापार में उन्नति होती है। दूसरे गुरुवार को पहला पत्ता उसी वृक्ष के तले डाल दें और दूसरा नया पत्ता ले आयें।
100. **व्यवसाय में आकस्मिक व्यवधान** :– शुक्लपक्ष के प्रथम बुधवार को पीपल के वृक्ष पर दीपक व अगरबत्ती जलाना चाहिए। इससे व्यवसाय में आकस्मिक व्यवधान समाप्त होकर लाभ होगा।
101. **व्यापार घाटे में चल रहा हो** :– व्यापार घाटे में चल रहा हो तो आक, धतुरा, चिरचिटा की जड़, दूर्वा, बड़ एवं पीपल की जड़, खेजड़ी पत्र तथा आम्रपत्र (आम का पत्ता) – ये सभी चीजें मिट्टी के पात्र में रखकर उनमें दूध डालें। चावल, चना, मूँग, गेहूँ, तिल, सरसों व छाछ – इन सब वस्तुओं को कुल्हड़ में डालें। इन सभी चीजों को शनिवार के दिन सायंकाल में पीपल की जड़ में गाड़ दें।
102. **व्यापार में वृद्धि** :– एक पीपल का पत्ता शनिवार को घर ले आयें। उसे गंगाजल से भली–भाँति धो लें। उस पर एक माला गायत्री मंत्र की जप लें। अब इसे अपने पर्स में, कैश बॉक्स में अथवा गद्दी के नीचे रख लें। इस पीपल के पत्ते को हर शनिवार को बदलें। व्यापार में वृद्धि, घर में सुख–शांति और बरकत होगी।
103. आर्थिक समृद्धि हेतु शुक्लपक्ष के गुरुवार से प्रारम्भ करके पीले चावलों में मीठा डालकर गरीबों में बांटें, इससे आर्थिक समृद्धि होगी।
104. सुख–समृद्धि हेतु शुक्लपक्ष के सोमवार के दिन एक मुट्ठी साबुत बासमती चावल श्री महालक्ष्मी का स्मरण करते हुए बहते जल में छोड़ना चाहिए। इससे सुख–समृद्धि होगी।
105. आर्थिक समृद्धि हेतु रात्रि को पश्चिम दिशा की ओर मुख करके आकाश की तरफ भाव–विभोर होकर मांगने की मुद्रा में हाथ उठाएं। दोनों हाथ ऊपर करके 7 बार ताली बजाएं।
106. प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व घर में झाड़ू लगाने से सुख–समृद्धि व बरकत होती है।
107. घर के मुखिया को कभी भी खाली हाथ घर नहीं आना चाहिए। अगर कुछ न ला सकें, तो कागज का एक टुकड़ा ही ले आएं।
108. **स्थाई लक्ष्मी वास हेतु** :– दीपावली की रात्रि में पूजन के समय 21 हकीक के पत्थरों की भी पूजन करें। पूजन के बाद उन्हें अपने निवास में कहीं भी गाड़ दें, तो आपके निवास में वर्ष भर माँ लक्ष्मी का स्थायी निवास बना रहेगा। पुनः अगले वर्ष दिपावली पर यह प्रयोग करें तथा पहले वाले हकीकों को निकाल कर नमक की 21 डलियों के साथ सफेद कपड़े में बांधकर पवित्र नदी या तालाब में प्रवाहित करें। यह कई रंगों में आती है। इसके अनेक प्रयोग हैं।
109. लक्ष्मी के आगमन हेतु हल्दी की गाँठ को पूजा करके गल्ले में रखें। इससे लक्ष्मी का आगमन होता है।
110. **लक्ष्मी कृपा हेतु गोमती चक्र के प्रयोग** :– यदि पाँच गोमती चक्र दीपावली के दिन पूजा घर में स्थापित करें और उन्हें लक्ष्मी मानकर पूजा–अर्चना करें तो उसके जीवन में निरंतर उन्नति बनी रहती है।
111. यदि प्रत्येक शनिवार को सफाईकर्मी को घर बुलाकर भोजन कराया जाय तो अनपेक्षित रूप से एवं विभिन्न स्रोतों के द्वारा लक्ष्मी का आगमन होता रहता है।
112. **निरंतर धन हानि** :– यदि व्यापार में निरंतर धन हानि हो रही हो तो रविवार को एक लोटे में दूध व जल भरकर सिरहाने रखें व सुबह उसे कीकर के वृक्ष में चढ़ावें, लाभ होगा।
113. दुर्भाग्य नाश के लिए तांत्रोक्त नारियल को किसी काले कपड़े में सिलकर घर के बाहर बांध दिया जाय, तो उस घर पर नजर एवं दुर्भाग्य का प्रभाव नहीं पड़ता।
114. **आय के साधन बढ़ाने हेतु** :– शुक्लपक्ष के शुक्रवार को कन्या से चावल, गेहूँ, चना, बाजरा एवं जौ को पिसवा कर उस आटे को गूँथ कर एक दीपक बनवा लें। इस दीपक में शुद्ध घी में पाँच बत्ती बनाकर लक्ष्मी माँ के सामने जला दें। दीपक में एक चांदी का चौकोर टुकड़ा या छोटा सिक्का रखकर एक माला महालक्ष्मी के मंत्र की करें। सिक्के को धोकर अपने पर्स में रख लें। घी पूरा जल जाने पर आटे के दीपक की गोली बनाकर मछलियों को खिला दें। नित्य सिक्के को धूप–दीप करें एवं लक्ष्मी के मंत्र की एक माला प्रतिदिन जपें। धीरे–धीरे आय के नये साधन खुल जाएंगे तथा स्थायित्व आने लगेगा।

115. **धनदायक ऊर्जा** :— दरवाजे के दोनों तरफ तुलसी लगे गमले रखें। दूसरे दरवाजे से आने वाली नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होकर शुभ ऊर्जा प्रवेश करेगी, वह तुलसी के गमलों से इधर—उधर टकराकर शुभ होकर ही घर के अंदर प्रवेश करेगी, जो धनदायक होगी।

116. **डूबे धन की प्राप्ति हेतु प्रयोग** :— (1) जिस पूर्णिमा को सोमवार हो, उस दिन नागकेशर के फूल लेकर शिवलिंग पर पाँच बेलपत्र के साथ चढ़ायें व चढ़ाने से पूर्व शिवलिंग को गंगाजल, कच्चे दूध, दही, घी व शक्कर से धोकर पवित्र करें। बिल्वपत्र व नागकेशर की संख्या बराबर हो। ये नित्य प्रति अगले पूर्णिमा तक चढ़ाते रहें व पूजा करके ही खाना खायें। अंतिम दिन चढ़ाए गए फूल बेलपत्रों में से एक पुष्प अपने साथ लाकर घर—दुकान आदि में रखें। (2) कपूर को जलाकर काजल बना लें। इस काजल से भोजपत्र पर शुक्रवार को उस व्यक्ति का नाम लिखें, जिसको धन दिया है तथा सात बार हाथ की थपकी देकर कहे कि मेरा पैसा शीघ्र वापस दे। उस भोजपत्र को भारी पत्थर से दबा दें। पैसा वापस मिलना शुरु हो जाएगा।

117. **सम्पत्ति में बरकत हेतु** :— गुरुवार को जलकुंभी पीले कपड़े में बांधकर केसर निर्मित जल के छींटे मारकर लटकायें। दुबारा न छुएं। धीरे—धीरे सम्पत्ति में बरकत होगी।

118. **धन लाभ हेतु प्रयोग** :— (1) चुटकी भर हींग अपने ऊपर से वारकर उत्तर दिशा में फेंक दें। प्रातःकाल तीन हरी इलायची को दायें हाथ में लेकर **"श्रीं "** बोलें, उसे खा लें, फिर बाहर जायें।

119. अशोक का वृक्ष जिस घर के द्वार पर लगता है, वहाँ धन—धान्य की कमी नहीं रहती। तभी शुभ अवसरों पर इसे बंदनवार की तरह लगाते हैं।

120. **व्यवसाय में बरकत होना** :— प्रत्येक शनिवार को एक पीपल का पत्ता लेकर उस पर स्वास्तिक बनाकर अपनी गद्दी के नीचे रखें। सात शनिवार तक ऐसा करें। फिर आठवें शनिवार को सभी पत्ते सुनसान जगह पर डाल दें। व्यवसाय में बरकत होनी शुरू हो जाती है।

121. **सफलता व धन लाभ** :— पीपल के वृक्ष की जड़ में तेल का दीपक जलायें, फिर घर वापस आ जाएं। पीछे मुड़ कर न देखें व प्रातः पीपल के वृक्ष में जल चढ़ायें तथा अपनी सफलता का की मनोकामना करें। शीघ्र सफलता प्राप्त होगी।

122. धन लाभ हेतु प्रातः एवं सायंकाल माता महालक्ष्मी को हलवे का भोग चढ़ाने से तथा प्रसाद वितरित करने से धन लाभ होता है।

123. **लाभ न मिलता हो** :— रविवार रात्रि को शयन करते समय एक लोटा जल सिरहाने के नीचे रखकर सो जाएं। प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर लोटे के जल को कीकर के वृक्ष पर चढ़ा दें। यह सात सोमवार करें, काफी लाभ मिलेगा।

124. **धन लाभ हेतु** :— (क) शुक्रवार की रात को सवा किलो चने भिंगो दें। उन्हें सरसों के तेल में बना लें। प्रथम भाग शनिवार को भैंसे को खिला दें, दूसरा भाग कुष्ठ रोगी को दें, तीसरा भाग अपने ऊपर से वार कर चौराहे पर रखकर आ जायें। यह प्रयोग सात दिन करें, धन लाभ होगा। (ख) शनिवार को सायंकाल में 2 उड़द के दाने लेकर उस पर दही व सिंदूर छिड़कें, उसे पीपल के पेड़ के नीचे रख कर आएं। ऐसा 21 दिनों तक करें व रखने के बाद पलट कर न देखें, इससे धन लाभ होगा। (ग) लक्ष्मी का वास कमल पर माना गया है। इन्हें कमलवासिनी भी कहा जाता है। लक्ष्मी पूजन के समय " श्रीं " अंकित कमलगट्टा को महालक्ष्मी के सामने चावल की ढेरी पर रखें। लक्ष्मी के साथ इसकी भी पूजा करें व उसे अपने पास रखें। इसे श्वेतार्क गणपति के साथ लाल वस्त्र में लपेटकर रख दिया जाय तो धन निरंतर बढ़ता है। साथ ही विभिन्न प्रकार की धन हानि की स्थिति में भी धन सुरक्षित रहता है।

125. **लक्ष्मी प्राप्ति हेतु अमोघ तंत्र** :— भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष भरणी नक्षत्र को चार जल से भरे हुए कलश सुनसान में रखें। दूसरे दिन उनमें जो खाली मिले, उसे घर लाएं, बाकी तीनों को जल से खाली कर वहीं छोड़ दें। घर लाए हुए कलश को एकांत स्थान या पूजागृह में रखकर धूप—दीप प्रतिदिन देवें।

–: लक्ष्मी कहाँ रहती है :–

भौतिक सुख–सुविधाओं के लिए सामर्थ्य से अधिक श्रम करना होता है, अधिक धनोपार्जन करना पड़ता है, तब वह उन सुख–सुविधाओं को भोग पाता है। लेकिन क्या अधिक श्रम करने के पश्चात् भी वह लक्ष्मी प्राप्ति में सफल हो सकता है?

हर स्थान पर लक्ष्मी नहीं रहती है। उसे प्राप्त करने के लिए उसके अनुकूल बनना पड़ता है। इस अनुकूलता का अर्थ है, धर्म परायणता, मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था और जीवन निर्माण के प्रति सतत जागरूकता। जो व्यक्ति इन बातों की उपेक्षा करते हैं, वे लक्ष्मी की कृपा प्राप्त नहीं कर सकते। लक्ष्मी का भक्त बनने के लिए मात्र सांसारिक होकर उसकी पूजा पर्याप्त नहीं है।

कुछ तथ्य स्पष्ट किया जा रहा है, जिनसे लक्ष्मी के अनुकूल अथवा प्रतिकूल बनने की परिस्थितियाँ स्पष्ट हो जाती हैं।

शास्त्रों में, ग्रंथों में उल्लेख है कि लक्ष्मी किन–किन स्थानों पर निवास करती है –

1. जो व्यक्ति मधुर बोलने वाला, अपने कार्य में तत्पर, क्रोधहीन, ईश्वर भक्त, एहसान मानने वाला, इन्द्रियों को नियंत्रण में रखने वाला तथा उदार हो उसके यहाँ लक्ष्मी निवास करती है।
2. सदाचारी, धर्मज्ञ, अपने माता–पिता की भक्ति भावना से सेवा करने वाले, नित्य पुण्य प्राप्त करने वाले, क्षमा रखने वाले, बुद्धिमान, दयावान तथा गुरु की सेवा करने वाले व्यक्तियों के घर में अवश्य ही लक्ष्मी निवास करती हैं।
3. जिसके घर में पशु–पक्षी निवास करते हों, जिसकी पत्नी सुंदर हो, जिसके घर में कलह नहीं होता हो, उसके घर में निश्चय ही लक्ष्मी रहती है।
4. जो अनाज का सम्मान करते हैं और घर में आए हुए अतिथि का घर वालों के समान ही स्वागत करते हैं, उनके घर में लक्ष्मी निश्चित रूप से रहती हैं।
5. जो व्यक्ति असत्य भाषण नहीं करता, अपने विचारों में डूबा हुआ नहीं रहता, जिसके जीवन में घमण्ड नहीं है, जो दूसरों के प्रति प्रेम प्रदर्शित करता है, जो दूसरों के दुःख में दुःखी होकर उसकी सहायता करता है और जो दूसरों के कष्ट को दूर करने में आनंद अनुभव करता है उसके घर में अवश्य ही लक्ष्मी निवास करती है।
6. जो नित्य स्नान करता है, सुरूचि पूर्ण स्वच्छ वस्त्र धारण करता है, शीघ्र भोजन करता है, बिना सूंघे पुष्प देवताओं पर चढ़ाता है, जो दूसरी स्त्रियों पर कुदृष्टि नहीं रखता, उसके घर में लक्ष्मी रहती है।
7. जो यथासंभव दान देता है, शुद्ध और पवित्र बना रहा है, गरीबों की सहायता करता है, उसके घर में अवश्य ही लक्ष्मी निवास करती है।
8. आँवले के वृक्ष के फल में, गोबर में, शंख में, कमल में और श्वेत वस्त्र में लक्ष्मी सदैव रहती हैं।
9. जिसके घर में नित्य उत्सव होता है, जो भगवान शिव की पूजा करता है, जो घर में देवताओं के सामने धूप एवं दीप प्रज्वलित करता है, जो अपने गुरु को ईश्वर के समान समझकर पूजा करता है, उसके घर में अवश्य ही लक्ष्मी निवास करती है।
10. जो स्त्री पति का सम्मान करती है, उसकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करती, घर में सबको भोजन कराकर फिर भोजन करती है, उस स्त्री के घर में सदैव लक्ष्मी का निवास रहता है।
11. प्रसन्न चित्त, मधुर बोलने वाली, सौभाग्यशालिनी, रूपवती सुंदर और सुरुचिपूर्ण वस्त्र धारण किए रहने वाली प्रियदर्शना और पतिव्रता स्त्री के घर में लक्ष्मी का निवास रहता है।
12. जो स्त्री सुंदर, हिरणी के समान सुंदर नेत्रों वाली, पतली कमर वाली, सुंदर केश श्रृंगार करने वाली, धीरे चलने वाली और सुशील हो, उसके घर में लक्ष्मी निवास करती है।

13. जिस पुरुष के दोनों पैर धोये हुए शुद्ध व चिकने होते हैं, जिसकी स्त्री सुंदर व रूपवती है, जो अत्यल्प भोजना करता है, जो पवित्र पर्व के दिनों में मैथुन का परित्याग करता है, उसके घर में निश्चित रूप से लक्ष्मी निवास करती है।
14. जो व्यक्ति अपवित्र नहीं रहता, मैले वस्त्र धारण नहीं करता, शरीर को दुर्गन्धयुक्त नहीं बनाता, चित्त में चिंता या दुःख नहीं रखता, उसके घर में निश्चय ही लक्ष्मी निवास करती है।
15. जो व्यक्ति सूर्योदय से पहले उठकर स्नान कर लेता है, जो सूर्यास्त से पहले स्नान कर पवित्र होता है, वह लक्ष्मी युक्त बना रहता है।
16. जो संयमी, स्थिरचित्त और मौन रहकर भोजन करता है, उसके घर में अवश्य ही लक्ष्मी बनी रहती है।
17. जो व्यक्ति गयाधाम में, कुरुक्षेत्र में, काशी में अथवा सागर संगम में स्नान करता है, वह निश्चय ही लक्ष्मी युक्त रहता है।
18. जो व्यक्ति एकादशी तिथि को भगवान विष्णु को आँवला फल भेंट करता है, जल में आँवला डालकर स्नान करता है, वह लक्ष्मी युक्त बना रहता है।
19. जो विरूद्ध आचरण नहीं करता, पराई स्त्री से संगम नहीं करता, दूसरों के धन में मन नहीं लगाता, किसी का अनिष्ट चिंतन नहीं करता वह लक्ष्मी का प्रिय बन जाता है।
20. जो ब्रह्म मुहूर्त्त में उठकर स्नानादि कर संध्या करता है, दिन में उत्तर की ओर तथा रात्रि में दक्षिण की ओर मुँह करके मल–मूत्र त्याग करता है, वह लक्ष्मीवान होता है।
21. जो कुटिल आचरण नहीं करता, पुनः अकारण बार–बार स्नान नहीं करता, सत्य और मधुर वाक्य बोलता है, उसके घर में लक्ष्मी रहती है।
22. जिन व्यक्तियों की देवता, साधु और ब्राह्मण में आस्था रहती है, लक्ष्मी उनके घर में सदा निवास करती है।
23. जिसके घर में कमलगट्टे की माला, एकाक्षी नारियल, दक्षिणावर्त्ती शंख, पारद शिवलिंग, श्वेतार्क गणपति, श्रीयंत्र स्थापित होते हैं, वहाँ लक्ष्मी सदैव स्थिर निवास करती है।
24. जिसके घर में सदा यज्ञ होता रहता है, जिसके घर में देवताओं की पूजा होती है, जिसके घर में सुबह–शाम आरती गायी जाती हो, जो देवता और गौ की पूजा करते हों, उनके घर से लक्ष्मी कभी भी नहीं जाती हे।
25. जिसके घर में मंत्र सिद्ध श्रीयंत्र, कनकधारा यंत्र, कुबेर यंत्र स्थापित हों, उनके घर में लक्ष्मी पीढ़ियों तक निवास करती है।
26. जो धर्म और नीति पर चलने वाले होते हैं, जो अपने माता–पिता का सम्मान करते हैं, जिनके घर में पुत्र किलकारियाँ भरते हैं, जो कन्याओं का सम्मान करते हैं, उनके घर में लक्ष्मी निवास करती हैं।
27. जो लक्ष्मी से संबंधित पूजा या आराधना करते हैं, जो लक्ष्मी से संबंधित अनुष्ठान करते हैं, उनके घर में लक्ष्मी का स्थिर वास होता है।
28. विष्णु पुराण में लक्ष्मी और केशव का संवाद विख्यात है। ब्रह्मा–नारद संवाद में भी लक्ष्मी के निवास स्थान के बारे में वर्णन आया है। इसी प्रकार श्रीकृष्ण की पटरानी रूक्मणी को लक्ष्मीजी ने बताया कि वे कहाँ–कहाँ, किस–किस स्थान पर और कैसे मनुष्यों के पास रहती हैं।

–: लक्ष्मी कहाँ नहीं रहती है :–

विभिन्न पुराणें और शास्त्रों में इस प्रकार के तथ्य वर्णित हैं कि किस प्रकार से लक्ष्मी का लोप हो जाता है और किन–किन कार्यों से लक्ष्मी अपना निवास नहीं बनाती।

1. जो व्यक्ति आलसी होते हैं, जो ईश्वर में विश्वास नहीं करते, जो आचार भ्रष्ट, चोर तथा कपटी होते हैं, उनके पास लक्ष्मी नहीं रहती।
2. जो व्यक्ति गुरु के प्रति अनादर व्यक्त करता है, जो गुरु के घर में चोरी करता है, जो गुरु पत्नी पर बुरी नजर रखता है, उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती और हमेशा के लिए चली जाती है।
3. जो व्यक्ति देवताओं पर बासी पुष्पों का प्रयोग करता है, मलीन और दुर्गन्धयुक्त बना रहता है, जो टूटे–फूटे या फटे हुए आसन पर बैठता है, ऐसे व्यक्तियों के घर लक्ष्मी नहीं रहती।
4. जो व्यक्ति ब्राह्मण को, अग्नि को, भस्म को, गुरु को या माता–पिता को पाँव से स्पर्श करता है या उन्हें पाँव लगाता है, उसके घर से लक्ष्मी हमेशा के लिए चली जाती है।
5. जो व्यक्ति एक पाँव से दूसरा पाँव रगड़ कर धोता है, जो गंदे स्थान पर सोता है, जो संध्या के समय स्त्री के साथ सहवास करता है, जो दिन में सोता है, उसके घर में लक्ष्मी कभी नहीं रहती।
6. जो व्यक्ति घर में आया हुआ या घर में बनाया हुआ मिष्ठान्न घर में रहने वालों को दिए बिना ही खा लेता है, जो घर की रसोई में भेद–भाव रखता है, उसको लक्ष्मी छोड़ देती है।
7. जो व्यक्ति अपने शरीर को बाजे की तरह बजाता है या टेबुल–कुर्सी को अंगुलियों से बजाता है, सिर या पैरों को गंदा रखता है उसका लक्ष्मी त्याग कर देती है।
8. जो व्यक्ति मैले कपड़े पहनता है, अंधेरे घर में रहता है, असुंदर वेश–भूषा या विचित्र वेशभूषा धारण करता है, रूखा–सूखा खाना खाता है, लक्ष्मी उसका त्याग कर देती है।
9. जो व्यक्ति अपने गले में पहनी हुई माला को दांतो से चबाता है या स्वयं तोड़ देता है, आलसी होता है या शरीर पर धूल जमाए रखता है, उसको लक्ष्मी छोड़ देती है।
10. जो व्यक्ति पराया धन हड़पता है, जो पर स्त्री गमन करता है, जो सूर्योदय के बाद सोया रहता है। जो नाखून, कोयला, कांटा या तिनके से पृथ्वी पर बेकार लिखता रहता है, उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती।
11. जो व्यक्ति देवताओं की पूजा नहीं करता, जिनके बाल बेतरतीब होते हैं, जो ब्राह्मणों की निंदा करते हैं, जो व्यर्थ में अपनी अंगुलियों को नचाते हैं, जो व्यर्थ भाषण करते हैं, जो नग्न स्त्री को देखते हैं, लक्ष्मी उनका परित्याग कर देती है।
12. जो व्यक्ति व्यर्थ ही हंसता रहता है, जो खाते–खाते हंसता है, जो चलते–चलते पानी पीता है, जो बीती हुई बात पर चिंता या दुःख प्रकट करता है, जो उपकारी के प्रति कृतज्ञता प्रकट नहीं करता, कृतघ्नता रखता है, ऐसे व्यक्तियों के पास लक्ष्मी नहीं टिकती है।
13. जब दो व्यक्ति बात कर रहे हों, तब बिना पूछे उनके पास चला जाता है और हस्तक्षेप करता है, एसे व्यक्तियों के पास भी लक्ष्मी नहीं रहती है।
14. जो व्यक्ति बुद्धिमान नहीं होते, धन प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करते, उनके घर में कभी लक्ष्मी नहीं रहती।
15. जो स्त्री गंदी रहती है, पाप कर्म में रत होती है, जो पर पुरुषों में मन लगाती है, जिनका स्वभाव दूषित होता है, जो बात–बात पर क्रोध करती है, जो अपने पति को दबाने के लिए रोष प्रदर्शन, छल या मिथ्या भाषण देती है, उस स्त्री के घर में लक्ष्मी नहीं रहती है।
16. जो स्त्री दयाहीन होती है, स्वभाव से निद्रयी होती है, दूसरों की चुगली करने में लगी रहती है, दूसरों को लड़ा–भिड़ा कर स्वयं को चतुर समझती है, ऐसे महिलाओं के घर में लक्ष्मी नहीं निवास करती है।

17. जो स्त्री अपने पति की प्रिय नहीं होती, उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती।
18. जो स्त्री अपने घर में पूजा का स्थान नहीं रखती, जो देवताओं के सामने आरती, धूप–दीप नहीं करती, जो आरती नहीं गाती, उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती।
19. जो स्त्री अपने गुरु के प्रति अनादर रखती है, उसके घर में लक्ष्मी एक क्षण के लिए भी नहीं रहती।
20. जिस व्यक्ति का कोई गुरु नहीं होता, उसके घर लक्ष्मी नहीं रहती।
21. जो स्त्री अधिक भोजन करने वली, भोजन पकाते समय ही खाने वाली, जूठा भोजन परोसने वाली होती है, ऐसी स्त्रियों के घर में लक्ष्मी नहीं रहती है।
22. जो स्त्री दिन में सोते रहती है। माता–पिता, सास–ससुर का आदर नहीं करती, उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती है।
23. जिसके मन में ममत्व नहीं होता, जो दूसरों के दुःख में दुःखी नहीं होती, उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती।
24. जो व्यक्ति पुरुषार्थहीन और अकर्मण्य होता है, उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती।
25. जो व्यक्ति अपने घर में शिव, विष्णु, गणपति और शालिग्राम शिला को स्थापित नहीं करता और इनकी नित्य पूजा नहीं करता, उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती है।
26. जो व्यक्ति लक्ष्मी से संबंधित स्तोत्र, मंत्र आदि का पाठ नहीं करता, अनावश्यक व्यय करता है या जो केवल भोग में ही सुख समझता है, उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती है।
27. जिसके घर में कलह होता है, जो अपनी पत्नी का बात–बात पर अपमान करता है, जो पत्नी को नौकर के समान समझता है, जो पत्नी के सुख–दुःख में सहायक नहीं होता, उसके घर में लक्ष्मी कभी भी स्थायी रूप से नहीं रहती है।

।। श्री लक्ष्मी स्तोत्रम् ।।

ॐ त्रैलोक्यपूजितेदेवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वमचला कृष्णे तथा भवमयिस्थिरा कमला चंचला लक्ष्मीश्चलाभूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः पद्मधारिणी द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मी समपूज्य यः पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेतस्य पुत्रदारादिभिः सह।।

।। दण्डक अनंगशेखर छन्दम् ।।

ॐ उमेश्वरेउमामयी, रमेश्वरेरमामयी, गिरीश्वरे प्रभामयी, क्षमामयी क्षमावताम्।
सुधाकरे सुधामयी, चराचरे विधामयी, क्रियासुसंविधामयी, स्वधामयीस्वधावताम्।।
जगत्सु चेतनामयी, मनसुः वासनामयी, कवीन्द्रभावनामयी, प्रभामयी प्रभावताम्।
धनेषु चंचलामयी, कलावतां कलामयीं, शरीरिणामिलामयी, शिलामयी सदावताम्।।

–: संतान प्राप्ति एवं गर्भधारण हेतु विशेष प्रयोग :–

1. संतान प्राप्ति हेतु अथवा बच्चे न हो या होते ही मर जाए तो किसी भी मंगलवार को मिट्टी की हंडिया में शहद भरकर श्मशान भूमि में दबाएं।
2. जिनमें संतान संबंधी समस्या हो वे कौड़ी रखकर गोपाल संतान स्तोत्र का पाठ करें व पुत्रेष्टी यज्ञ करवाकर पीले धागे में कमर में कौड़ी बांधें, इससे वांछित सफलता मिलती है।
3. पुत्रजीवा की माला को संतान प्राप्ति हेतु की जाने वाली साधना में प्रयुक्त किया जाता है।
4. संतान प्राप्ति हेतु योनि कुण्ड का निर्माण किया जाता है। योनि कुण्ड का एक सिरा अर्द्ध चन्द्राकार व दूसरा त्रिकोणाकार होता है। यह कुछ पान के पत्ते के समान दिखता है। इस हवन कुण्ड में हवन करने से सुंदर, स्वस्थ व तेजस्वी संतान प्राप्त होती है।
5. किसी बच्चे का पहला दाँत टूटने पर अन्य स्त्री कमर में काले धागे से बांध ले तो संतानवती होती है।
6. कई दम्पत्तियों में किसी भी प्रकार की शारीरिक कमी नहीं होती है, फिर भी उन्हें संतान नहीं होती। वे इसके लिए पीपल के एक पत्ते को लगभग 1 घंटे तक जल में रखें। बाद में पत्ते को फेंक दें तथा उस जल का सेवन 2–3 माह तक पति–पत्नी दोनों करें।
7. **संतान प्राप्ति हेतु गूलर के प्रयोग** :– (क) संतान न होती हो या होकर मर जाए, तो गूलर की जड़ अभिमंत्रित कर अपने पास रखें। (ख) गूलर की जड़ उपयुक्त विधि से लाकर पूजें और घर में कहीं सुरक्षित रखकर नित्य उसे धूप–दीप देते हुए संतान सुख की याचना करें। कृष्ण पूजा और मंत्र जप आवश्यक है। इस प्रयोग से संतान सुख अवश्य प्राप्त होता है।
8. **पुत्र प्राप्ति हेतु** :– संतानहीन स्त्री ऋतु धर्म से पूर्व अपने उदर की शुद्धि कर लेने के उपरांत गूलर के बांदा को बकरी के दूध के साथ पीसे व मासिक धर्म की शुद्धि क उपरांत पी लें, उसे पुत्र की प्राप्ति होगी।
9. नीली अपराजिता की जड़ को कुंवारी कन्या द्वारा बकरी के दूध में पिसवाकर मासिक के बाद तीन दिनों तक पीने से बन्ध्या भी गर्भवती होती है।
10. **प्रसव वेदना** :– यदि कोई स्त्री प्रसव वेदना से व्याकुल हो तो सहदेवी (सहदेई) के जड़ को लाल धागे में कमर में बांधने से वह पीड़ामुक्त हो जाती है।
11. **संतान लाभ** :– तंत्र सिद्ध सहदेवी का समूचा पौधा (पंचांग) सुखाकर, कूटकर चूर्ण बनाएं। इस चूर्ण को गो घृत के साथ मासिकधर्म के पाँच दिन पूर्व से पाँच दिन बाद तक नियमित रूप से सेवन करने वाली स्त्री को संतान लाभ होता है।
12. लाल अपामार्ग की जड़ को जलाकर बनाई गयी भस्म को गौदुग्ध से नियमित सेवन करने से संतान की प्राप्ति होती है।
13. गुंजा (सफेद रत्ती) के जड़ को ताबीज में भरकर कमर में धारण करके संपर्क करें तो संतान होती है। यदि संतान गोपाल मंत्र का जप करें तो शीघ्र लाभ होगा।
14. सफेद गुंजा की जड़ को शुभ तिथि में तंत्र विधि से लाकर यदि किसी सुवा नारी के कमर पर माता काली का आवाहन करके काले धागे में पिरोकर बांध दिया जाय, तो वह पुत्रवती होती है।
15. रविवार को पुष्य नक्षत्र में सफेद अकवन की जड़ बंध्या स्त्री के कमर में बांध देने से उसे संतान का सुख प्राप्त होता है।
16. **पुत्र प्राप्ति** :– (क) अश्वगंधा की जड़ को पुष्य नक्षत्र में उखाड़कर गाय के दूध के साथ पीसकर पीने व दूध का आहार, ऋतुकाल के उपरांत शुद्ध होने पर पीते रहने से स्त्री की पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा पूरी हो जाती है। (ख) पलाश वृक्ष के एक पत्ते को पुत्रवती स्त्री के दूध में पीसकर ऋतुस्नान के बाद गर्भवती स्त्री को खिलाने से अथवा कदम्ब के एक कोमल पत्ते व श्वेत पुष्पी कंटकारी मूल को लेकर बकरी के दूध में पीसकर ऋतुस्नान के

बाद संतानहीन स्त्री को सात दिन तक खिलाने से पुत्र प्राप्त होने की संभावना होती है। (ग) पुत्र प्राप्ति के लिए पाँच गोमती चक्र लेकर किसी नदी या तालाब में **'हिलि हिलि मिलि मिलि चिलि चिलि हुक'** पाँच बार बोलकर विसर्जित करें, पुत्र प्राप्ति की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। (घ) कबूतर की बीट व सुहागा लेकर, पीसकर शिश्न पर लेप करके सहवास करें, तो पुत्र होता है।

17. जिस स्त्री की पहली संतान लड़का हो, उस लड़के की नाल को निःसंतान स्त्री यदि खोलती है तो वह भी पुत्र रत्न से विभूषित होगी।
18. **गर्भ धारण नहीं होने के लिए** :– (क) कमल के बीजों (कमलगट्टा) का अर्क मासिक धर्म के बाद 15 दिनों तक पीया जाय तो गर्भधारण नहीं होगा तथा वक्षस्थल पुष्ट होता है। (ख) 2 माशा हल्दी माहवारी में पाँच दिन बाद ताजा पानी से खाएं, गर्भ नहीं ठहरेगा। संतान की इच्छुक महिलाओं को यह प्रयोग नहीं करना चाहिए।
19. **गर्भपात हेतु** :– (क) मंगलवार को एक काले कपड़े में नमक बांधकर हनुमानजी के पैरों से छुआ कर गर्भवती स्त्री की कमर में बांधने से गर्भपात नहीं होगा। (ख) यदि बार–बार गर्भ गिर रहा हो तो दो गोमती चक्र लाल कपड़े में बांधकर कमर में बांध दें, गर्भ गिरना बंद हो जाएगा।
20. **गर्भधारण हेतु** :– (क) मंगलवार को कुम्हार जिस धागे से बर्तन काटता है, वह डोरा लेकर पानी से धोकर डोरा हनुमान जी के पाँव में चढ़ाकर वह धागा गिलास में डालें व वह पानी पति–पत्नी पीयें व उस दिन संभोग करें। (ख) मन एकाग्र करके मन में भावना करें कि आपके संतान अवश्य होगी। पुरुष दायें पैर के अंगूठे से योनि स्पर्श करें, संतान सुख होगा। (ग) शिवलिंगी के बीज व लक्ष्मणा बूटी का बीज लेकर '' ॐ नमः शिवाय'' का जप करके सेवन करें। मासिक धर्म के 11 वें दिन संभोग करें तो गर्भधारण होता है। (घ) कोई स्त्री यदि रोहिणी नक्षत्र में सफेद घुघली (घुंघुची) का पौधा लाकर उसे रोपण करे। जब पौधा बड़ा हो जाय, तो वह स्त्री मासिक धर्म से शुद्ध होकर उस पौधे की तीन माशा जड़ को ताजे जल में घिसकर पी जाय तथा पति के साथ रति करे, तो वह निश्चय ही पहली बार में गर्भवती हो जाएगी।
21. **गर्भ संबंधी रोगों से मुक्ति व मान–सम्मान की प्राप्ति हेतु** :– छोटे बच्चे का दूध का दाँत यदि रविवार को टूटता है, तो उसे जमीन पर न गिरने दें। उसे गंगाजल से धोकर चांदी के ताबीज में रख लें तथा शुक्लपक्ष के सोमवार, बुधवार, शुक्रवार या गुरुवार को स्त्री अपने कमर में बांधें। इससे गर्भ संबंधी रोगों से मुक्ति मिलती है। यदि इसे पुरुष अपने पास रखता है, तो शत्रु पर विजय, मान–सम्मान आदि की प्राप्ति होती है।
22. **सरल प्रसव हेतु** :– (क) बच्चे का जन्म समय निकट हो तो एक बर्तन में दूध व एक पुड़िया चीनी डालकर औरत का हाथ लगवाकर रख दें। इससे शीघ्र प्रसव होगा। बाद में वह बर्तन सहित दूध मंदिर में रखें। (ख) किसी सफेद कागज पर केवल '' चक्रव्यूह '' लिखकर नारी को दिखा देने मात्र से उसे प्रसव हो जाता है। (ग) स्त्री के तलुवों के नीचे गिद्ध का पंख बांध देने से भी प्रसव समय पर हो जाता है। (घ) गर्भवती स्त्री को इंदु, सुधा व समुद्र– इन तीनों का नाम जोर देकर सुनाने से गर्भस्थल अपना मूल स्थान छोड़ देता है और बच्चा सुखपूर्वक हो जाता है।
23. **प्रसव वेदना** :– (क) यदि किसी नारी को प्रसव में अत्यधिक वेदना हो रही हो तो उस नारी का नामोच्चारण करते हुए ताड़ के वृक्ष के उत्तरी क्षेत्र का सिरा उखाड़कर घर ले आएं व उसे सूती लाल धागे में लपेटकर नारी की कमर में बांध दिया जाय तो प्रसव सरलतापूर्वक हो जाता है। प्रसवोपरांत उस धागे को किसी जलाशय में छोड़ आएं। (ख) गर्भवती स्त्री को प्रसव कष्ट अधिक हो, तो कमर में सफेद अपराजिता की टहनी लपेटने से प्रसव सुगम होता है।
24. **संतान की आयु वृद्धि** :– गर्भवती स्त्री अपनी भुजा पर लाल रंग का धागा बांधे, जो अधिक चमकदार न हो। जब बच्चा पैदा हो जाए तो वही धागा बच्चे की भुजा पर बांधें तथा माँ नया धागा बांधे व डेढ़ वर्ष तक बंधा रहने दें।
25. **बच्चा जीवित न रहे** :– जिनके बच्चे जनमते ही मरते हों, तो बालक के जन्म पर नमकीन बांटें, मिठाई नहीं।

26. **संतान बाधा या संतान रोगी** :– संतान न हो रही हो या रोगी हो तो भोजन का पहला हिस्सा गाय को खिलायें व अंत कुत्ते को खिलायें व पीपल के वृक्ष को सींचें।
27. **गर्भ में बच्चा टेढ़ा हो** :– यदि प्रसव काल में बच्चा अस्वाभाविक ढंग से टेढ़ा हो जाए अथवा गर्भाशय में अटक जाए तो ताजा शरपंखी की जड़ को लाकर गर्भवती स्त्री के सिर के केशों में बांध दें। प्रसव सहज तथा सुखपूर्वक होगा।
28. **गर्भपात रोकने के लिए** :– मंगलवार को लाल कपड़ा लेकर नमक बांधें, हनुमान जी के मंदिर में जाकर पोटली को हनुमान जी के पैर से स्पर्श कराकर गर्भवती के पेट से बांधें, गर्भपात नहीं होगा।
29. **गर्भपात से बचने के लिए** :– जब गर्भधारण हो गया हो, तो एक चांदी की बांसुरी बनाकर राधा–कृष्ण के मंदिर में पति–पत्नी दोनों गुरुवार के दिन चढ़ा आवें तो गर्भपात नहीं होता है।
30. **गर्भपात भय** :– गर्भधारण से पूर्व जौ का आटा, काले तिल व शक्कर की फाकी लेकर दूध पीने से गर्भपात भय नहीं होगा।
31. **बच्चा जन्मते ही मरते हो** :– बच्चे जीवित न रहते हो, तो बच्चे को पुराने कपड़े या मांगे हुए कपड़े पहनाएं।
32. **गर्भपात करने के लिए** :– ऊँटकटीरा के जड़ को पानी में पीसें और उसका लेप नाभी से पेडू तक लगाने से गर्भ गिर जाता है।
33. **गर्भ जाँच हेतु** :– गर्भ धारण करने के बाद कुछ समय पश्चात् गर्भाशय का पानी लेकर उसमें पीसी हुई हल्दी डालें। यदि उसका रंग नीला हो जाए तो पुत्री होती है।
34. **स्वस्थ संतान हेतु** :– सोमवार को गर्भवती स्त्री एक कपूर का टुकड़ा लेकर आधा जला दें व आधा शिव मंदिर में चढ़ाए। सुंदर व स्वस्थ संतान होगी।
35. **कन्या प्राप्ति हेतु** :– चावल के धोवन में नींबू की जड़ को बारीक पीसकर नारी को पिला देने के बाद रति करने से कन्या पैदा होती है।
36. **दुगध न्यूनता** :– दूध की कमी दूर करने के लिए दुग्ध पान कराने वाली महिला उड़द की दाल घी में मिलाकर सेवन करें, दुग्ध में बढ़ोत्तरी होगी।
37. **संतान कलह से मुक्ति एवं दुर्घटना से बचाव हेतु** :– चित्रार्क शनिवार को रक्त गुंजा मूल (लाल गुंजा की जड़) घर में रखने से दुर्घटना से बचाव एवं संतान कलह से मुक्ति मिलती है।
38. **गर्भ धारण हेतु** :– (क) पीपल, सोंठ, कालीमिर्च और नागकेशर इनको समभाग लेकर महीन पीस, छान कर 4 माशा लें और 6 माशे घी में मिलाकर 7 दिन तक प्रातः खाने से बांझ भी गर्भवती हो जाती है। (ख) नागकेशर और सुपारी का चूर्ण सेवन करने से भी गर्भ रह जाता है। (ग) पुत्रजीवा वृक्ष की जड़ दूध में पीसकर पीने से पुत्र दीर्घायु होता है। (घ) पुत्रजीवा वृक्ष की जड़ और देवदारू इन दोनों को दूध में पीसकर पीने से पुत्र अवश्य होता है। (ङ) 4 माशे नागकेशर, बछड़े वाली गाय के दूध के साथ 7 दिन तक पीने से बांझ के भी पुत्र होता है।
39. **गर्भावस्था में सावधानी** :– गर्भावस्था के प्रारम्भिक दिनों में स्त्री पपीते का सेवन न करें।
40. **पुत्र प्राप्ति हेतु** :– (क) सोमवार को शिवजी पर चढ़े हुए चावल लाए, पीसकर नियम से आने वाले सोमवार तक दूध से सेवन करें। (ख) यदि कोई दम्पत्ति पुत्र प्राप्ति की इच्छा रखता हो तो नवरात्रि के 9 दिनों तक 11 तांत्रोक्त नारियल लेकर उस पर **"ॐ श्रीं पुत्र लक्ष्म्यै नमः"** मंत्र की एक माला नित्य जप कर दुर्गानवमी को ही किसी तालाब में विसर्जित कर दें तो घर में अवश्य पुत्र उत्पन्न होगा तथा घर में सुख–शांति बनी रहेगी। (ग) पुत्र की कामना हो तो जिस दिन कन्या का नामकरण संस्कार हो, उस दिन कन्या के पैर छूकर पुत्र कामना की इच्छा व्यक्त करे व घर के सदस्य खीर व जलेबी खायें। (घ) किसी स्त्री के प्रथम पुत्र की नाल को सुखाकर यिद पुत्रहीन या बंध्या स्त्री ताबीज में भर कर बायीं भुजा या कमर में धारण करें तो उसे पुत्र की माता बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

–: उत्तम शिक्षा हेतु विशेष प्रयोग :–

1. **परीक्षा में सफलता हेतु** :– (क) ब्राह्मी गले में धारण करें। ऐसी जगह बैठकर न पढ़ें, जहाँ सीधी हवा आती हो (दरवाजे या खिड़की के पास)। हरा पर्दा लगायें। पुस्तक पढ़ने से पूर्व शांत होकर सिर पर लगायें। पुस्तकों को कुछ समय धूप में रखें, पूर्वाभिमुख रहे, परीक्षा में सफलता मिलेगी। (ख) रविवार से प्रारंभ करके ताम्र पात्र से भगवान सूर्य को जल चढ़ायें व सूर्यमंत्र का 21 बार जप करें। ऐसा नित्य करें व जल में रोली, शक्कर व गुलाब का पुष्प डालें। सूर्य पूजन कर लाल वस्तु का दान करें व नमक न खायें। (ग) शुभ मुहूर्त से गुरुवार को 5 मिठाई व 2 इलायची लेकर पीपल में चढ़ायें। ऐसा 7 गुरुवार तक करें तथा सरस्वती मंत्र का जप करें। (घ) गीले सिर सूर्योदय के समय गायत्री मंत्र जपें व प्रारम्भ में 3 बार 'ॐ' बोलें। हाथ ऐसे रखें जैसे तप रहे हों। अंत में 12 बार गायत्री मंत्र पढ़कर पुनः हाथ आपस में रगड़कर मुँह पर फिराएं। धीरे–धीरे बुद्धि का विकास होगा व याददाश्त बढ़ेगी। (ङ) मंगलवार व शनिवार को सुंदरकाण्ड का पाठ करें व शिव की पूजा करें। (च) जब तक परीक्षा हो बच्चे को नियमित एक–एक घंटे प्रति दिन के अंतराल से बढ़ाते हुए दही खिलायें। जैसे प्रथम दिन 9 बजे, दूसरे दिन 10 बजे फिर 11 बजे। इस प्रकार प्रत्येक दिन 1 घंटा बढ़ाते जायें व हल्दी की गांठ व केसर पूजा करके अपने पास रखें। (छ) परीक्षा प्रारंभ होने के 11 दिन पूर्व 7 उल्लू के पंख लाकर सफेद धागे में बांधकर पूजा करके अपने सोने के स्थान पर सिरहाने में रखें। यह 7 दिन तक करें व आठवें दिन–रात के 5 पंख परीक्षा कक्ष के बाहर गाड़ें व शेष पंख पूजा करके सफेद वस्त्र पहनकर दायीं जेब में रखकर परीक्षा दें।
2. **साक्षात्कार में सफलता हेतु** :– यदि साक्षात्कार में जाना हो तो रविवार को 12 गुलाब के पुष्प लेकर सफेद वस्त्र पर रखकर रोली से सफेद कागज पर सूर्य का मंत्र लिखें व मंत्र का जप करते हुए प्रत्येक मंत्र के साथ एक पुष्प लेकर कागज पर रखें। यह क्रिया बारह दिनों तक करें व बारह दिन के बाद इन पुष्पों को मिट्टी में दबायें व चालीस दिनों तक गायत्री मंत्र का जप करें। यह विधान सात बार करें। साक्षात्कार में सफलता व नौकरी में लाभ होगा।
3. **विद्या व स्मरण शक्ति** :– जो पढ़ाई में कमजोर हों तथा स्मरण शक्ति कम हो या फेल हो जाते हों, उन्हें एक सीप में गंगाजल, गाय का दूध भरकर सामने बैठकर पढ़ाई करना चाहिए, तत्पश्चात् आचमन करें। कमजोर विद्यार्थियों का विद्या बल बढ़कर स्मरण शक्ति तेज होगी। इससे परीक्षा एवं साक्षात्कार में सफलता मिलती है। इसकी प्रयोग विधि यह है कि विद्यार्थी पूर्व की ओर मुँह करके अध्ययन करें, सीप को सिर पर रखने से सकारात्मक ऊर्जा शरीर में प्रवेश करती है, जिससे दिमाग तेज होता है। सरस्वती मंत्र का जप दीपावली के दिन करने से यह सिद्धि प्राप्त होती है।
4. **ज्ञान व सम्मान** :– (क) पीली हल्दी को पूजा करके धारण करने से ज्ञान–सम्मान व बुद्धि की प्राप्ति होती है। (ख) बकरी के दूध में गुंजा की जड़ को घिसकर हथेली पर रगड़ें, इससे बुद्धि तीव्र होती है। यदि इसके साथ गायत्री मंत्र का जप करें तो अधिक लाभ होगा।
5. **एकाग्रता व स्मरण शक्ति वृद्धि** :– (क) बर्तन में चावल रखें व उस पर पिरामिड रखकर सरस्वती या गणपति मंत्र का जप करें और उन चावलों की खीर खायें। ऐसा करने से एकाग्रता बढ़ती है व स्मरण शक्ति की वृद्धि होती है। (ख) बच्चों में एकाग्रता हेतु एवं स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए नहाने के पानी में कभी–कभी दो चम्मच कच्चा दूध पानी में डालकर नहाना चाहिए। (ग) बच्चों के पढ़ने का कमरा ईशान में बनवाना चाहिए तथा कमरे के ईशान क्षेत्र में ग्लोब रखना चाहिए। क्योंकि ईशान में ग्लोब रखने से बच्चों का मन पढ़ाई में एकाग्र होगा।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

6. **बुद्धि तीव्रता हेतु** :– हाथी को थोड़े सूखे चने खिलायें। उसकी लीद में से चने निकलेंगे। जो दाने मिलें, उन्हें उसी हाथी के मूत्र से साफ करके रख लें। इन चनों को पीसकर रत्ती भर की गोली बनाये। 21 दिनों तक इसके सेवन से मानसिक रोग ठीक होते हैं व बुद्धि तीव्र होती है।
7. **बौद्धिक विकास के लिए**:– नागदमन की जड़ की पूजा करके सरस्वती का मंत्र जपने से बौद्धिक विकास होता है। नागदमन की जड़ धोकर धूप–दीप से पूजा करें, फिर '**ऐं ह्रीं नमः**' मंत्र की 11 माला का जप करके, यह जड़ किसी ताबीज के सहारे गले में पहन लें। यह प्रयोग बुद्धि का विकास करने में बहुत सक्षम होता है।
8. **पढ़ाई में मन न लगना** :– यदि किसी बालक का मन पढ़ाई से उचटता हो, तो पढ़ने की टेबल के ठीक सामने सरस्वती जी की तस्वीर रखें और पीले वस्त्र धारण करें।
9. **अध्ययन–अध्यापन** :– जो व्यक्ति अध्ययन–अध्यापन से संबंधित कारोबारों में लिप्त हैं, उन्हें अपने कमरे में शुभ मुहूर्त्त में पारस पीपल की जड़ अवश्यक लाकर रखनी चाहिए। इससे उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।
10. **याददाश्त बढ़ाने एवं बुद्धि प्राप्ति हेतु** :– पढ़ा–लिखा याद न रहता हो, बुद्धि कमजोर हो, तो चांदी की कटोरी में शुक्रवार को केसर से स्वास्तिक बनायें एवं गंगाजल भर दें तथा सरस्वती माँ के सामने घी का दीपक जलाकर '**ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः**' मंत्र की माला जपें। तथा उस जल में सात बार इसी मंत्र से फूंक मार कर नित्य पीएं। इससे बुद्धि तीव्र होकर परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।
11. **स्मरण शक्ति वृद्धि हेतु** :– (क) शनिवार को उड़द के दो दाने लेकर थोड़ा सिंदूर व दही डालकर पीपल के वृक्ष के नीचे 21 दिन तक रखें। (ख) शुक्रवार की रात को कौए के 7 पंखों को धोकर सफेद धागे में बांधे। अगले दिन धूप–दीप दिखाकर धागा हटायें व वह धागा दायें हाथ में धारण करें।
12. **वाक् शक्ति** :– (क) शंख की माला को धारण करने से हकलाने वालों की वाक् शक्ति बढ़ती है। (ख) अभिमंत्रित मुण्डी को सुखाकर पीसकर शहद के साथ दो बार लेने से याद्दाश्त तेज होकर वाक् शक्ति प्रबल होती है। (ग) मंत्र द्वारा यदि थूहर के बांदा को सिद्ध करके धारण किया जाय, तो वाक्शक्ति की सिद्धि होती है।
13. **याद्दाश्त कमजोर हो** :– (क) जिन बच्चों को याद नहीं रहता, उनको शनिवार से अगले शनिवार तक रात्रि बारह बजे शिखा मूल के 2–4 बाल काटकर रविवार को चौखट पर जलाकर एड़ी से मसलें। (ख) यदि याद नहीं होता है, तो रीछ (भालू) के 5 बाल लेकर ताबीज में बनाकर धारण करें।
14. **गूंगे, हकलाने वाले बालकों के लिए** :– जो बालक हकलाते हैं या गूंगे हैं या जिनका मन पढ़ाई में नहीं लगता, उनको रविवार को **'ॐ ऐं वायव्यै स्वाहा'** मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित कर जल पिलायें व इसकी एक माला अवश्य जपनी चाहिए। पीपल में पत्ते पर खीर रखकर चटायें।
15. **स्मरण शक्ति** :– चन्द्रग्रहण अथवा सूर्यग्रहण के दिन स्नान के पश्चात पूर्व दिशा की ओर उगे हुए सरपोखा या लोध पौधे की जड़ लाकर उसे ताबीज में धारण करने से स्मरण शक्ति बढ़ जाती है। माता सरस्वती का ध्यान करें।
16. **विद्या प्राप्ति** :– (क) यदि स्फटिक के माला से माता सरस्वती का कोई भी मंत्र वाग्बीज **'ॐ ऐं'** के साथ जपने व धारण करें तो विद्या बुद्धि में आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखते हैं। (ख) पुत्रजीवा की माला से जप करने से विद्या की प्राप्ति होती है। (ग) बिल्व के वृक्ष का बांदा नक्षत्र से पूर्व निमंत्रण के द्वारा विधिवत् मंत्र से अभिमंत्रित कर बाँह पर बांधा जाए, तो विद्या सिद्ध हो जाती है।
17. **कला की कद्र हेतु** :– आपमें कला हो व लोग आपकी कला की कद्र न करते हों, तो शुक्रवार को थोड़ी ज्वार, एक इत्र की शीशी, व सफेद पुष्प देवी के मंदिर में चढ़ायें और सफेद रुमाल व परफ्यूम किसी स्त्री को उपहार में दें।
18. **आत्मविश्वास हेतु** :– परीक्षा से पूर्व यदि वैजयंती माला धारण करें, तो आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। संकट के समय जोर से श्वास खींचकर छोड़ें व लें, फिर इस माला पर हाथ फिरायें। इससे आत्मविश्वास बढ़ेगा। ❁

—: विभिन्न प्रकार के धर्म एवं कर्मकाण्ड संबंधी प्रयोग :—

1. **साधना सिद्धि हेतु यंत्र निर्माण** :— भोजपत्र पर या अन्य प्रकार के यंत्र निर्माण में कपूर की स्याही विशेष लाभकारी होती है। काली स्याही हेतु कर्पूर की लौ से निर्मित स्याही ठीक होती है।
2. **मणिपुष्पक शंख** :— हनुमान एवं शिव भक्तों को पीली गाय के दूध में आचमन करने से इष्ट साधनायें शीघ्र सफल होती हैं। साधना करते समय साधक इस शंख से जल निकाल कर ही ग्रहण करें। यह सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है।
3. **हल्दी की माला** :— जिनको बगलामुखी या बृहस्पति की साधना सिद्ध करनी हो, वे इस हल्दी की माला से मंत्र जप करें, इससे सिद्धि प्राप्त होती है।
4. **व्याघ्र चर्म** :— बाघ के चमड़े पर आसन लगाकर साधना करने पर शीघ्र सिद्धि मिलती है।
5. **ऊन का कंबल** :— भेड़ की ऊन के कंबल पर बैठकर साधना करने से सफलता मिलती है।
6. **पीपल का पेड़** :— यक्षिणी या तामसिक साधना में पीपल के पेड़ की जड़ के पास बैठकर साधना करने से शीघ्र सिद्धि मिलती है। केवल जल चढ़ाने को भी श्रेष्ठ माना जाता है। पीपल वृक्ष की पूजा करने वाले को लाभ अवश्य मिलता है।
7. **गूलर का पेड़** :— (क) गूलर की लकड़ी दत्तात्रेय साधना सिद्ध करने के लिए प्रयुक्त होती है। (ख) साधना की शीघ्र सिद्धि हेतु :— सांसारिक वैभव और सौख्य सामग्री की उपलब्धि के लिए गूलर के बांदा को रोहिणी नक्षत्र में विधिवत् मंत्र से अभिमंत्रित कर घर में स्थापित करना चाहिए। मृगशिरा नक्षत्र में सिंघोट का बांदा पान में रखकर खाने से देवता की साधना की जाए, तो बहुत शीघ्र सिद्ध हो जाती है।
8. **अशोक का पेड़** :— इस पेड़ के नीचे बैठ कर शक्ति साधना करने से शीघ्र सफलता मिलती है।
9. **महुए का बांदा** :— महुए का बांदा विशाखा नक्षत्र में सिद्ध कर लिया जाए तो साधना की शक्ति में वृद्धि करता है।
10. **पितृदोष व देवी—देवताओं के दोष** :— सवा मीटर लाल वस्त्र में एक सूखा जटा वाला नारियल तथा एक चांदी का सिक्का रखें तथा वस्त्र को बांधकर घर में 24 बार घुमाकर पूजा स्थान में रख, नियमित अगरबत्ती जलायें। एक घी का दीपक व एक तेल का दीपक जलायें। देवी—देवता के दोष दूर होकर घर में मांगलिक कार्य प्रारंभ होंगे।
11. **पितृदोष** :— बनते—बनते कार्य बिगड़ें, संतान की प्रगति रुक जाए, अनावश्यक पारिवारिक कलह हो, बात—बात पर गुस्सा, तनाव, रोगों से पीछा न छूटे, घर के वृक्ष अचानक सूख जाए या जल जाए तो किसी का किया हुआ अभिचार कर्म या पितृ दोष होता है। इसकी शांति हेतु अमावस्या को सवा मीटर सफेद कपड़े में 250 ग्राम साबुत चावल, एक सूखा नारियल व 11 रुपये बांधकर घर में 21 बार घुमाकर किसी भी स्थान पर घर में ही रख दें, ताकि किसी के हाथ न लगे। एक गिलास में शुद्ध जल, एक गुलाब का पुष्प, एक इत्र का फोहा व एक सफेद बर्फी अलग आले में रखें। पितरों से प्रार्थना करें कि हे पितृ देव! आप क्या चाहते हो, हमें स्वप्न में बतायें। ऐसा करने से शीघ्र ही पितृ देवता प्रसन्न होकर इच्छा प्रकट करेंगे व घर में मांगलिक कार्य करवा देंगे।
12. **पितरों की प्रसन्नता व घर में सुख—शांति** :— (क) पितरों की प्रसन्नता व घर में सुख—शांति हेतु अमावस्या को पितरों को चावलों का भोग लगाएं। इससे पितर प्रसन्न होते हैं, व घर में सुख—शांति बनी रहती है। (ख) प्रत्येक अमावस्या को कीकर (बबूल) के वृक्ष पर अंधेरा होने पर भोजन रखने से पितर प्रसन्न होते हैं। वे आपका धन सुरक्षित करेंगे और आपकी रक्षा भी करेंगे।
13. **पितृदोष** :— पितृदोष से पीड़ित व्यक्ति को पारस पीपल पर श्राद्ध पक्ष में जल अप्रित करने से पितृदोष जनित बाधाएं दूर होती हैं।
14. **पितृ प्रसन्नता** :— अमावस्या को खीर बनाकर रोटी पर रखकर जल से तर्पण करके गाय को खिलायें।

15. **बल व ओज वृद्धि** :– (क) हनुमानजी के माथे पर लगा सिंदूर का टीका लगाने से नजर बाधा दूर होकर ओज में वृद्धि होती है। (ख) कमल के पुष्प के अंदर हरे रंग के कच्चे दाने छीलकर खाने से ओज व बल में वृद्धि होती है। (ग) नागकेशर, चमेली के पुष्प, कूट, अगर, तगर, कुमकुम व घी का लेप बनाकर मस्तक पर तिलक धारण करने से ओज बढ़ता है।
16. **तेजस्विता** :– भांग को यदि दूध के साथ सेवन किया जाय, तो तेजस्विता आती है व नेत्र रोग दूर होते हैं।
17. **देवी दोष व साधना** :– देवी दोष हेतु सवा मीटर लाल वस्त्र, एक सूखा नारियल, एक चांदी का सिक्का वस्त्र में बांधकर घर में 21 बार घुमाकर पूजा स्थल में रखें और नियमित अगरबत्ती जलायें।
18. **देवी भक्ति व वरदान प्राप्ति** :– (क) लाल कनेर के पुष्प माता चण्डी को चढ़ाने से आदि शक्ति जगदम्बा प्रसन्न होती हैं। (ख) गणपति को लाल कनेर के पुष्प चढ़ाने से वांछित फल प्राप्त होता है। (ग) देवी के उपासक को चाहिए कि प्रतिदिन अशोक के वृक्ष को जल से सींचे व मंत्र जप करते रहें। कम से कम 11 मंत्र इसके सम्मुख नित्य जपें। इससे विशेष लाभ होता है और ओज व तेज में वृद्धि होती है।
19. **इच्छित कामना शीघ्र पूर्ण होने हेतु** :– गुड़हल (उड़हुल) के 109 फूलों की माला लाल धागे में पिरोकर बना लें। अब इसे शेर पर सवार माता दुर्गा की प्रतिमा के गले में पहना दें। हाथ जोड़कर अपनी कामना माता के सामने प्रस्तुत करें। इच्छित कामना शीघ्र ही पूर्ण होगी।
20. **पूजा में सिद्धि हेतु** :– सिंदूर हनुमानजी को अतिप्रिय होता है। मंगलवार को शुद्ध घी में मिलाकर चढ़ाने से पूजा सिद्ध होती है। देवी भक्ति हेतु सिंदूर को चमेली के तेल में लगाना श्रेष्ठ होता है।
21. **ज्ञान प्राप्ति व शुभता** :– पूजा करते समय पीले वस्त्र धारण करें व घर में पूजा के स्थान पर जल के लोटे को पीले कपड़े पर रखें व उसमें सोने की कोई चीज डालें। सुबह व शाम को उस जल को पीएं व उस जल को छिड़कें। सोने की चीज पुनः निकालकर अगले दिन वही क्रिया करें। इससे घर में शुभता बढ़ेगी।
22. **सरस्वती कृपा** :– (क) रविवार को भगवान सूर्य की पूजा करें व बिना नमक का भोजन करें तथा लाल वस्तु का दान करें। (ख) मोर के पंखों को पुस्तकों में रखें व '**ऐं**' शब्द का उच्चारण करें। इससे माता सरस्वती की कृपा होगी।
23. **दिव्य दृष्टि** :– श्वेत गुंजा की जड़ को शहद के साथ रगड़कर काजल लगाने से दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है।
24. **तामसी बल प्राप्त करने हेतु** :– भैंस का दूध, घी और मूत्र पीने या सेवन करने से तामसी वृत्तियाँ बढ़ती हैं और तामसी बल प्राप्त होता है।
25. **शक्ति अर्जन** :– जब भी स्नान करें, तब जल में अपनी अनामिका उंगली से त्रिभुज बनाएं, बीच में 'ह्रीं' लिखें। इस त्रिभुज के बीच में डुबकी लगाकर स्नान करें। इससे दैविक शक्तियों की प्राप्ति होती है।
26. **सात्विक साधना** :– सभी सात्विक साधनाओं में कपूर को प्रभाव से सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है। इसे मृतात्मा के आहवान हेतु भी विशेष प्रभावशाली माना गया है। तांत्रिक सामग्री सिद्ध होने हेतु, जैसे–श्रीफल, गोमती चक्र, हाथाजोड़ी, शंख, एकाक्षी नारियल आदि इन सभी की पूजा कपूर के बिना अधूरी होगी।
27. **धार्मिक अनुष्ठान** :– जब भी कोई धार्मिक या मांगलिक कार्य होता है, उसमें कौड़ी रखने से मांगलिक कार्य निर्विघ्न पूरा होता है। 11 कौड़ियाँ सदैव पूजा स्थल में रखें, इससे शुभता बढ़ती है।
28. **सौभाग्य की वृद्धि** :– (क) नाभि पर कमल का पत्ता और दायीं भुजा पर श्वेतार्क मूल को रवि पुष्य के दिन धारण करने से सौभाग्य की वृद्धि होती है। गणेश स्तवन करना उचित लाभ देता है। (ख) दायीं भुजा पर श्वेतार्क के जड़ को बांधने से सौभाग्य की वृद्धि होती है। यदि गणेश जी का सौभाग्य वर्द्धक स्तोत्र का जप किया जाय तो विशेष लाभ होता है।
29. **मोक्ष हेतु** :– जब भी स्नान करें तब जल में अपनी से त्रिभुज बनाकर '**ॐ**' लिखें। त्रिभुज की बीच में डुबकी लगाकर स्नान करें।
30. **सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि** :– संपूर्ण कामनाओं की सिद्धि के लिए कमलगट्टे की माला से जप करने से सभी कामनाएं सिद्ध होती हैं।

31. **मृतसंजीवनी** :– सफेद गुंजा की जड़ को गुलाब के रस में घिसकर किसी मरते हुए व्यक्ति की नाड़ी में लेप किया जाय, तो उससे कुछ समय का जीवन प्राप्त हो जाएगा।
32. **प्रायश्चित्त** :– यदि किसी बात को लेकर अपराधबोध हो रहा हो, तो गंगाजल को पीने की वस्तु से छुआकर भगवान के सम्मुख या एकांत में अपना अपराध बतायें तथा पहले व बाद में अपने ऊपर जल के छींटे मारें। शांति महसूस होगी।
33. **शांति प्राप्ति हेतु** :– कचनार के पुष्प भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय हैं। अतः जो व्यक्ति इसके पुष्पों को विष्णु भगवान को अप्रित करता है, उसे शांति व सुकून मिलता है।
34. **शांति कर्म** :– प्रातःकाल नाश्ते से पूर्व घर में झाड़ू अवश्य लगायें तथा यह कार्य ईशान कोण से आरंभ करें। संध्या के समय घर में झाड़ू–पोछा का कार्य न करें।
35. **कार्य सिद्धि** :– (क) चंदन, कुमकुम, कूट, तगर, लौंग, नेत्रबाला, देवदारू इन सब सामग्री को लेकर शहद में मिलाकर धूप दें। इसे विधिपूर्वक प्रयोग करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं। (ख) घर से निकलते समय थोड़ी सी शक्कर खाकर पानी पीकर जाए व थोड़ी सी शक्कर घर के बाहर बिखेरने से कार्य सिद्ध होता है। (ग) किसी भी कार्य के लिए जाते समय एक बेदाग नींबू गाय के गोबर में दबा दें। उस पर थोड़ा सा कामिया सिंदूर छिड़क दें। अब अपना कार्य बोलकर चले जाएं, कार्य बन जाएगा। (घ) यदि किसी विशेष कार्य से जाना हो, तो चार लौंग जलाकर उसकी भस्मी से तिलक करके जाने से कार्य सिद्ध होता है। (ङ) बुधवार को पाँच इलायची गणेश जी को चढ़ाकर अपने पास रखें। जब तक यह इलायची रहेगी कार्य शुभ रहेंगे। यदि यह खो जाए या टूट जाए तो दूसरी रख लें। (च) यदि आप किसी विशेष कार्य के लिए जैसे नौकरी, इन्टरव्यू, शादी–विवाह आदि के कार्य के लिए जा रहे हैं तो तांत्रोक्त नारियल पर कुंकुम से तिलक कर साक्षात् ऋद्धि–सिद्धि विनायक मानकर अपने साथ ले जाएं। कार्य सिद्ध होने पर उचित दक्षिणा के साथ गणेश मंदिर में अप्रित कर दें। (छ) घर से किसी भी कार्य के लिए निकलते समय पहले विपरीत दिशा में चार पग जाएं। इसे बाद सीधे रास्ते पर कार्य पर चले जाएं। कार्य अवश्य होगा। (ज) पीपल के पाँच पत्तों पर पनीर, दूध से बना कोई भी मिष्टान जैसे पेड़ा या बर्फी दीपावली की रात को उसी पीपल के पेड़ के नीचे रख दें। कार्य बनने लगेंगे।

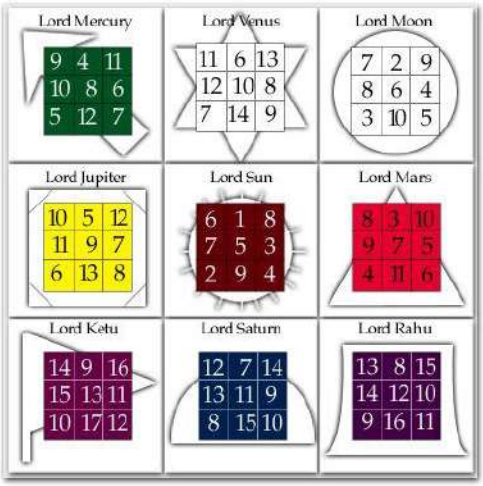

–: आकर्षण एवं वशीकरण संबंधी प्रयोग :–

1. **वशीकरण :–**

(1) काकजंघा, तगर, केसर आदि मैनसिल– इन सबको एक साथ पीसकर स्त्री के मस्तक पर और पुरुष के पाँव के नीचे डालने से वे वशीभूत होते हैं।

(2) तगर, कूट, हरताल और केसर इन सबको समभाग में लेकर अनामिका अंगुली के रक्त में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले वशीभूत होते हैं।

(3) पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में अनार तोड़ लाएं। उस अनार को धूप देकर अपनी दायीं भुजा में बांधकर जाने से प्रत्येक व्यक्ति वशीभूत होगा।

(4) स्त्री जिन दिनों रजस्वला हो, उन दिनों पाँच अखण्डित लौंग लेकर उन्हें अपनी भग में भिगोयें। तत्पश्चात् उन लौंगों को पीसकर जिस पुरुष के मस्तक पर डालें, वह उसके वश में रहता है।

(5) बुधवार को पेड़ के नीचे एक लौंग दबायें। 7 दिनों तक नियमित 24 घंटे में एक बार उस पर मूत्र करें व आठवें दिन लौंग को निकालकर एक चूर्ण बनाकर इच्छित व्यक्ति को खिलायें।

(6) दो साबुत फूलदार लौंग पर जीभ का मैल लगाकर पान में खिलायें, वशीकरण होगा।

(7) रविवार को 4 लौंग को शरीर में कहीं पर 24 घंटे रखें, बाद में उसके 2 टुकड़े कर के वापस जोड़े शेष लौंग में रखें व इच्छित व्यक्ति को खिलायें, वशीभूत रहेगा।

(8) हल्दी, गोमूत्र, घी, सरसों और पान के रस को एकत्र पीसकर, शरीर पर लगाने से स्त्रियाँ वशीभूत होती हैं।

(9) काली हल्दी में कनिष्ठिका अंगुली का रक्त लगाकर तिलक करने से वशीकरण सिद्धि मिलती है।

(10) रवि पुष्य नक्षत्र में गोरोचन का तिलक माथे पर लगाने से जगत वशीकरण होता है।

(11) मृगी नामक कौड़ी लें, जिसकी पीठ, मुख आदि पीला होता है। मृग के मूत्र में सनी मिट्टी लेकर उसे पारे के साथ बराबर भाग में घोंटें। इसे कौड़ी में भर दें। यह क्रिया मृगशिरा नक्षत्र में करें। यह कौड़ी ताबीज के रूप में धारण करने से कामशक्ति विस्मित कर देने वाले भाव से बढ़ती हैं और वशीकरण होता है।

(12) मूंगा तथा हीरा की माला पुष्टि एवं वशीकरण के प्रयोग में लाभप्रद रहती है।

(13) जिसको वश में करना है वह जब घर आए, उसके पाँव को जो जूता/चप्पल उल्टा हो उसे उठाकर उसके बराबर आटा तोलकर उस आटे की रोटी बनाकर उसे खिलायें। उसका वशीकरण होगा।

(14) जब स्नान करें तब जल में अपनी अंगूली से त्रिभुज बनाकर '**क्रीं**' लिखें व त्रिभुज के बीच में डुबकी लगाकर स्नान करें।

(15) पति मैथुन के समय अपना वीर्य अपने हाथ में लेकर पत्नी के पाँव के तलवे में लगा दें व पत्नी मैथुन के बाद पति के लिंग को बायें पाँव से स्पर्श करें, तो पति–पत्नी जीवन भर एक–दूसरे के वशीभूत रहेंगें।

(16) अपने दोनों हाथों व पैरों के नाखून को जलाकर अपना वीर्य मिलाकर उस भस्मी का तिलक करें। लोग आपके वश में रहेंगे।

(17) नदी के झाड़, वृक्ष की जड़ लाकर उसमें कूड़े की छान मिलावें तथा चूर्ण कर लें। फिर इन दोनों के बराबर श्मशान की राख मिलाकर, जिसके ऊपर डाला जाएगा, वह वश में हो जाएगा।

(18) घोड़े के मूत्र से सिक्त मिट्टी लेकर उसमें चने बो दें। जब पौधा निकले तो प्रतिदिन बराबर की मात्रा में प्रातःकाल का स्वमूत्र व जल मिलाकर सींचें। इस चने में जब फलियाँ पक जायें तो इन चनों को रख लें। एक चना चूर्ण कर या जल में फुलकार जिसे खिलायेंगे, वह आपके वशीभूत होगा।

(19) शनिवार को तुलसी के बीज लेकर पीस लें। इनको सहदेई के रस में अच्छी तरह घोट लें तथा कामदेव का ध्यान करके एक हजार बार मंत्र जप लें एवं तिलक लगाकर जायें। जिससे भी कार्य व्यवहार होता है, वह आपकी अवज्ञा नहीं करता है।

(20) शनिवार को सुनसान जगह कौए के पंख को धूप–दीप करके चूरा बनायें। जिसे वश में करना हो, उसके नहाने के पानी में डाल दें।

(21) हत्थाजोड़ी को ताबिज में भरकर दाहिनी भुजा में धारण करने से वशीकरण होता है। (22) रविपुष्य योग में या किसी शुभ मुहूर्त्त में नागकेशर, चमेली के फूल, कूट, तगर, कुमकुम एवं गाय का घी इन सभी को लेकर खरल में घोटकर तिलक करें, तो सभी वशीभूत होते हैं।

(23) रविवार को हस्त या पुष्य नक्षत्र में नीले अपराजिता का फूल लायें। ग्रहण पर इसकी मूल लेकर कृष्णपक्ष में अष्टमी या चतुद्रशी को जब शनिवार या रविवार पड़े, उस दिन शिव मंदिर में सफेद वस्त्र पहनकर गोली बनाकर सुखयें। जब प्रयोग करना हो, घिसकर माथे पर लगायें। संपूर्ण भीड़ के वशीकरण हेतु मुँह में गोली रखें।

(24) सहदेवी का चूर्ण इच्छित व्यक्ति को पान में खिलाने से वह वशीभूत होता है।

(25) श्वेत गुंजा की जड़ को तांत्रिक विधि से लाकर घिसकर चंदन करने से सभी का वशीकरण होता है।

(26) लक्ष्मणा पौधे की जड़ को वशीकरण हेतु जल में पीसकर भी काम में लाया जाता है। यह गर्भाधान व कामशक्ति में गाय के दूध के साथ विशेष लाभप्रद कही गयी है।

(27) कनेर का पुष्प व गोघृत दोनों को मिलाकर वशीकरण यंत्र रखें व आकर्षण मंत्र का जप करें। इससे जिस स्त्री का नाम लेकर 108 बार हवन किया जाय और यह क्रम प्रतिदिन चलता रहे तो वह स्त्री सात दिनों के भीतर साधक के वश में होती है।

(28) वशीकरण हेतु श्वेतार्क का भी प्रयोग किया जाता है। इसका दो प्रयोग है। पहला बकरी के दूध में घिसकर तिलक करने से वशीकरण होता है। दूसरा वीर्य के साथ इसका चूर्ण मिलाकर तिलक करने से वशीकरण होता है। पहला प्रयोग सात्विक है, दूसरा तामसिक। पहले प्रयोग से सांसारिक मनुष्यों का मोहन होता है। दूसरे प्रयोग से इतर योनियों जैसे, पिशाचिनी, शाकिनी, डाकिनी, प्रेतनी, किन्नरी, परी इत्यादि का मोहना होता है।

(29) बिरोजे का जड़ और काला धतूरा का बीज जो प्याज के साथ महीन पीसकर जिसे सुंघाया जाय, वह वश में हो जाता है।

(30) कश्मीरी केसर, तगर, कूट, हरताल –इन सबको बराबर मात्रा में लेकर कनिष्ठिका अंगुली के रक्त के साथ तिलक करने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

(31) श्वेत विष्णुकांत की जड़ तथा श्वेत गुड़ इन दोनों को पीसकर नाक के अग्र भाग में तिलक लगाने से वशीकरण होता है।

(32) रुद्रजटा, तगर, मेढ़सिंगी का पंचांग और अपने शरीर का मैल – इन सबको एक मात्रा में लेकर मंगलवार के दिन टेढ़ा करके तिलक लगाने से सामनेवाला व्यक्ति वशीभूत होता है।

(33) काली विष्णुकांता की जड़ पान के साथ जिस स्त्री को देंगे, वह स्त्री अवश्य ही वश में हो जाती है। "**ॐ हूं स्वाहा**" मंत्र से इसको सिद्ध करनी चाहिए।

(34) विशाखा नक्षत्र में और मंगलवार के दिन दारुहल्दी की जड़ लाकर उसे हाथ में बांधकर स्त्रियों को अपने वश में कर सकते हैं।

(35) छाती, पैर, आँख और नाक का मैल इनको सुपारी में किंचित मात्र भी खिलाने से खाने वाला वश में हो जाता है।

(36) नीलकमल की जड़ को शहद के साथ तिलक लगाने से व पान के साथ देने से भी उत्तम वशीकरण हो जाता है।

(37) शनिवार को 7 फूलदार लौंग लेकर जिसे वश में करना है, उसका नाम लेकर हर रविवार एक लौंग आग में भस्म करें। ऐसा सात रविवार तक करें।

2. आकर्षण एवं मोहन :–

(1) काले कमल, भौंरे के दोनों पंख, पुष्कर मूल, तगर, श्वेत काकजंघा इन सबका चूर्ण करके जिसके सिर पर डालें, वह आकर्षित होता है।

(2) आकर्षण के प्रयोगों में हाथी के दाँत की माला से जप किया जाना श्रेष्ठ रहता है।

(3) धतूरे के पंचांग का चूर्ण कर उसे भैंस के रक्त में मिलाकर संध्या के समय अपने शरीर पर उसका धूआँ देने से ओज शक्ति बढ़ती है तथा प्रेम जागृत होता है।

(4) गुरुवार के दिन मूल नक्षत्र में केले की जड़ लाकर सिंदूर में मिलाकर पीसकर तिलक करने से उत्तम आकर्षण होगा।

(5) वैजयन्ति माला को धारण करने से शत्रु भी मित्रवत् व्यवहार करते हैं। सम्मान में वृद्धि होती है। इसके साथ श्रीकृष्ण का ध्यान भी करें।

(6) स्फटिक की माला शुक्र से संबंधित दुष्परिणामों को कम करती है। यदि शुक्रवार के दिन कामदेव के मंत्रों से जप करके इसे धारण करें तो इससे कामकला में वृद्धि होती है व स्त्रियाँ आकर्षित होती हैं।

(7) आश्लेषा नक्षत्र में देवदारू की लकड़ी लाकर बकरे के मूत्र में भिंगोकर, कूट–पीसकर सूखा लें। जिसका आकर्षण करना हो, उसके मस्तक पर इस चूर्ण को डालने से अभिलाषा पूर्ण हो जाती है।

(8) सहदेवी के पौधे का चूर्ण श्रपान में अभीष्ट व्यक्ति को खिलाने से वह वशीभूत हो जाता है।

(9) काकड़ा, सिंगी, वच, कूट और चंदन को कूटकर अपने शरीर और वस्त्रों पर धूप देने देखने वालाा व्यक्ति मोहित हो जाता है।

3. **पति वशीकरण** :–

(1) मालती के फूलों को सरसों के तेल में डालकर पका लें। उस तेल को गुप्तांग में लगाकर मैथुन करने से पति को वश में कर सकती हैं।

(2) यदि पति किसी अन्य स्त्री के वश में हो, तो दो इलायची अपने शरीर पर ऐसे स्थान पर रखें, जहाँ पर पसीना आए व उसे सुखाकर पति को खिलायें।

(3) गुरुवार या शुक्रवार को रात के 12 बजे पति के चोटी स्थान से बाल काटकर रखें। पति सुधर जाएगा, यदि न सुधरे तो उन बालों को जलाकर पाँवों से रगड़े।

(4) यदि किसी परायी स्त्री के कारण गृह क्लेश हो रहा हो तो रविवार के दिन घर में गूगल जलायें व अपने सिर के बाल भस्म कर पति को खिला दें।

(5) सफेद सरसों, तुलसी, धतूरा (अगर काला धतूरा हो तो श्रेष्ठ), औंगा और तिल का तेल इन सबको एकत्र कर खूब महीन पीसकर जो स्त्री अपने शरीर पर लेप करती है, उसका पति उसके वश में हो जाता है।

4. सम्मोहन :–

(1) आप अपने दोनों आँखों के मध्य एक लाल बिंदी लगाकर उसे देखने का प्रयास करें। यदि वह कुछ समय बाद आपको दिखने लगे तो अपाकी आँखों में एक सम्मोहन शक्ति जागृत हो जाएगी।

(2) मोर की कलगी सिर पर धारण करें या रेशमी वस्त्र में लपेटकर जेब में रखने से सम्मोहन शक्ति बढ़ती है।

(3) गूलर वृक्ष की अभिमंत्रित जड़ को चंदन की भाँति घिस कर माथे पर तिलक लगाने से सम्मोहन शक्ति बढ़ती है।

(4) श्वेत अपामार्ग की अभिमंत्रित जड़ का तिलक लगाने से सम्मोहन प्राप्त होता है।

(5) श्वेत ओंगा पौधे की जड़ को माथे पर तिलक कर लेने से किसी और के द्वारा किया हुआ किसी भी प्रकार का सम्मोहन समाप्त हो जाता है।

5. **आत्मविश्वास** :– बैजयंति माला को परीक्षा से पूर्व धारण कर लेने पर आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। संकट के समय जोर से श्वास खींचकर छोड़ें व लें, फिर इस माला पर हाथ फिरायें तो आत्म विश्वास बढ़ता है।

6. **सभा वशीकरण** :– गोरोचन को साथ में रखकर सभा में भाषण देने पर आपके वक्तव्य की प्रशंसा होगी। बुधवार को केसर, मैनशिल और गोरोचन को गंगाजल में पीस कर उक्त तिलक लगाकर जायें। श्रोता आपके भाषण से वशीभूत हो जाएंगे।

7. **मनमुटाव दूर करने के लिए** :– पहाड़ी इलाकों में प्राप्त होने वाली काली हल्दी से तिलक करने मात्र से सम्मुख व्यक्ति को नतमस्तक बनाकर, स्त्री–पुरुष में हुए मनमुटाव को दूर करती है। इसकी जड़ में कपूर की खुशबू होती है। यह गोलाकार, पतली व चिकनी होती है। इसे कपूर भी कहते हैं।

8. **कार्य अनुकूल करने** :– लाल चंदन की स्याही बनाकर लौंग से संबंधित व्यक्ति का नाम लिखकर सूखने दे व सूखने पर उसे खा लें।
9. **समर्थन हेतु** :– हत्थाजोड़ी में इतना सम्मोहन होता है कि कहीं भी जाएं, वहाँ लोग आपका समर्थन करेंगे। इसमें देवी चामुण्डा के मंत्र अधिक सार्थक होते हैं।

–: शत्रुओं के नाश एवं वशीकरण संबंधी विभिन्न प्रकार के प्रयोग :–

1. **शत्रु वशीकरण** :–

(1) कोई दुश्मन अनावश्यक परेशान करे, तो भोजपत्र के ऊपर लाल चंदन से शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबो देने से शत्रु वशीभूत हो जाता है।

(2) मंगलवार के दिन दोपहर में पहले श्माशान जाएं। अपने दोनों हाथ पीछे की ओर करके एक लकड़ी को लायें व ग्यारह दिनों तक पूजन करें। तत्पश्चात् उस लकड़ी के सात टुकड़े करें। इसमें एक टुकड़े को शत्रु के घर गाड़ दें तथा शेष टुकड़ों को बहा दें। इस तरह करने से शत्रु पूरी तरह से वश में आ जाता है।

2. **शत्रु सर्वनाश** :– उल्लू के पाँव की हड्डी को शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु का सर्वनाश हो जाएगा।
3. **विघ्न व शत्रु परेशान करे** :– आपके बनते–बनते कार्य बिगड़ जाते हैं, कार्यों में विघ्न आता है, शत्रु परेशान करते हैं, तो पूजा में काम आने वाली छोटी सुपारी लेकर उसे कामिया सिंदूर में रंग दें और इसके पश्चात् उसे '**ॐ पं पशुपतये नमः**' कहते हुए गणेश जी को अप्रण कर दें।
4. **शत्रु के नाश के लिए** :–

(1) 38 दाने साबुत काले उड़द और 40 दाने चावल मिलाकर शत्रु का नाम लेकर किसी गड्ढे में दबा दें और ऊपर से कागजी नींबू निचोड़ दें। इससे शत्रु का सर्वनाश होगा।

(2) प्रातःकाल हनुमान जी को सात लड्डूओं का भोग लगायें और पाँच लौंग पूजा स्थान में देशी कपूर के साथ जलायें। फिर भस्म से तिलक करके बाहर जायें। यह आपके शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।

(3) जब शत्रु ज्यादा परेशान करे तो शत्रु का नाम लेकर दो जायफल कपूर से जलाकर उसकी राख नाले में बहायें।

(4) यदि शत्रु बढ़ गये हों तो तीन गोमती चक्र लेकर उस पर शत्रु का नाम लिखकर उन तीनों गोमती चक्रों को जमीन में गाड़ दें तो शत्रु परास्त होते हैं।

(5) अगर शत्रु कार्य में विघ्न डाले तो प्रातः उठते ही तीन बार उस व्यक्ति का नाम लेकर अपशब्द कहें व भोजपत्र पर काली स्याही से उसका नाम लिखकर श्मशान स्थित पीपल के वृक्ष की जड़ में दबायें।

(6) शत्रु का नाम लेकर तेल का दीपक जलाकर यदि कमलगट्टे की माला से जप करें, तो शत्रु का नाश होता है। तेल सरसों का जलाना ज्यादा उचित रहता है।

(7) अगर शत्रु बहुत ज्यादा परेशान करे तो रविवार अथवा शनिवार को शत्रु का वह जूता या चप्पल जो उल्टा पड़ा हो, उसे सुनसान में उगे नीम की डाली लाकर जूते पर उस डाली से 7 बार प्रहार करें तथा जूते को पानी में डालकर गर्म करें। एक ही जूते या चप्पल को 7 रविवार या शनिवार करने से शत्रु कमजोर पड़ जाएगा।

(8) अगर कोई व्यक्ति आपको परेशान करे, तो समूह या उनमें से जिस किसी व्यक्ति का जूता अलग पड़ा हो, उसे लेकर पानी में डूबों दें। जब तक वह डूबा रहेगा, उन लोगों का आपस में झगड़ा हो जाएगा।

(9) यदि कोई शत्रु अनावश्यक परेशान करे, तो उसकी फोटो लेकर गड्ढे में दबायें तथा उस पर मल–मूत्र करें व थूकें।

(10) घोड़े की पूंछ की बाल लेकर उसे अभिमंत्रित करके जिस व्यक्ति के नाम से अंगारे पर जलायेंगे, वह सभी प्रकार से नष्ट होगा।

(11) यदि शत्रु अधिक परेशान करे, तो उसका मल व बिच्छू एक बर्तन में ढंक कर गड्ढा खोद कर दबायें। यह जब तक दबा रहेगा, शत्रु परेशान रहेगा।

(12) लाल कनेर की डाल को गुरुवार के दिन पुष्यनक्षत्र पड़ने पर सबेरे तोड़ लें। इसके 7 टुकड़े करें। प्रत्येक टुकड़े पर शत्रु का नाम लिखकर इन टुकड़ों को सुखा दें। सूख जाने पर इन्हें कपूर की अग्नि से जला दें। शत्रु का नाश होगा।

(13) कचनार के पत्ते पर कुंकुम से शत्रु का नाम लिखकर उसे सुखा लें। फिर उस शुष्क पत्ते को जला दें। इससे शत्रु का बल कम होता है।

(14) पीपल के पत्ते पर लाल चंदन से अपनी समस्या व शत्रु का नाम लिखकर उस वृक्ष के नीचे रख देने से शत्रु परास्त होता है और समस्याओं से शीघ्र ही छुटकारा मिलता है। यह काम शनिवार के दिन करना चाहिए।

5. **शत्रु नाश के लिए एक विशेष प्रयोग** :– यदि आपका कोई शत्रु है और आप उससे अपना पिंड छुड़ाना चाहते हैं, तो यह प्रयोग भी उसमें सहायक हो सकता है। तीन तांत्रोक्त नारियल लेकर उसे काजल से काला कर दें। अब तेल और सिंदूर को मिलाकर गाढ़ा लेप बना लें अथवा किसी हनुमान मंदिर से ले आयें। इस लेप से तीनों नारियल पर अपने शत्रु के नाम का पहला अक्षर लिखें। अब तीनों नारियल पर पूजा का रंगीन धागा, जिसे मौली, कलावा या नाड़ाछड़ी कहते हैं, उस पर पूरा लपेट दें, जिससे नीचे का कालापन न दिखने पाए। होलिका हवन से पूर्व इस मंत्र को (ॐ नमो भगवते शत्रुणां बुद्धि स्तम्भनं कुरु–कुरु स्वाहा) एक माला जप कर एक–एक नारियल को हाथ में लेते जाएं और एक बार मंत्र को पढ़ कर जलती हुई होली में फेंकते जाएं। इससे आप शत्रुओं की पीड़ा से मुक्त होंगे। जो स्त्रियाँ सौतन आदि से परेशान हैं, वे भी यह प्रयोग कर सकती हैं।

6. **मुकदमे में विजय** :– (1) यदि कोई कचहरी जाते समय घर के बाहर गोमती चक्र रखकर उस पर दाहिना पाँव रखकर जायें तो उस दिन कोर्ट–कचहरी में सफलता प्राप्त होती है। (2) यदि कोर्ट–कचहरी में मुकदमा चल रहा हो, दंड की संभावना हो तो अपने वजन के बराबर कोयले पानी में बहायें।

7. **शत्रुता करवाने के लिए** :– भैंस और घोड़े का गोबर लेकर गोमूत्र से लेप बनाकर जिनमें शत्रुता करवानी हो, उनका नाम लिख दें। शीघ्र ही उन दोनों में शत्रुता हो जाएगी।

8. **शत्रु समप्रण** :– सहदेवी और अपामार्ग के रस को लोहे के पात्र में रखकर अच्छी तरह घोंटकर उसका तिलक लगाकर शत्रु के सामने जाने से शत्रु आत्म समप्रित हो जाता है।

9. **प्रतिद्वन्द्वी को भगाने के लिए** :– रविवार को गुंजा लेकर, जो कुंवारी कन्या रजस्वला हो, उसके रक्त में गुंजा भिगोकर सुखा लें। उसे पीसकर चूर्ण बनायें, दुश्मन के घर, दुकान या मुख्य द्वार पर छिड़कें, वह भाग जाएगा।

10. **उच्चाटन** :– (3) मंगलवार को रात्रि में श्मशान में चिता का कोयला काले कपड़े में लेकर आयें व लाल धागे में लपेटकर जिसके घर में फेंकेगें, उसका उच्चाटन होगा।

11. **मारण** :– सप्र की हड्डी का चूर्ण किसी के सर पर डालने से वह मर जाता है।

12. **शत्रु का मरण तुल्य कष्ट** :– शत्रु की विष्ठा तथा बिच्छू एक हंडिया में बंद कर ऊपर से मिट्टी लगाकर पृथ्वी में गाड़ दें तो शत्रु का मलावरोध के कारण मृत्यु तुल्य कष्ट पाने लगता है। भूमि खोद कर हांडी खोल देने से पुनः ठीक हो जाता है।

13. **शत्रुता भूलना** :– उल्लू की सूखी विष्ठा पान में रखकर शत्रु को शनिवार के दिन खिला दी जाय तो वह शत्रुता भूल जाएगा।

14. **शत्रु से बचाव** :– कंघी करने के बाद कंघी में बाल लगे न रहने दें, बल्कि तुरंत निकाल कर फेंक दें। अन्यथा आपका शत्रु इसका दुरुपयोग कर सकता है।

15. **धोखा या कलंक से बचाव** :– (1) आपकी गलती न होते हुए भी कलंक लगे तो सफेद रुमाल में थोड़े से कोयले रखकर निर्जन स्थान पर रख आए। घर आकर हाथ–पाँव धोएं। (2) यदि अनावश्यक कलंक या अपयश मिल रहा हो तो दो मूली धर्मस्थान में या मंदिर में चढ़ायें।
16. **दुष्ट व्यक्ति से पीछा छुड़ाना** :– कभी–कभी किसी व्यक्ति का परिवार में विशेष हस्तक्षेप होता है। चाह कर भी उस पर रोक नहीं लगा पाते हैं। ऐसे व्यक्ति से पीछा छुड़ाने हेतु सफेद सूती कपड़े को गंगाजल से धोकर कपूर जलाकर बने हुए काजल से दुष्ट व्यक्ति का नाम तर्जनी उंगली से लिखें व जितने नाम के अक्षर हों, उतनी बार थूकें व पैर से रगड़ें। उसे शौचालय में फेंके। दुष्ट व्यक्ति से शीघ्र ही पीछा छूटेगा।
17. **शत्रु पर विजय** :– (1) पुष्य नक्षत्र में लाई गयी चमेली की जड़ को ताबीज में धारण करने से शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। (2) केवड़ा की जड़ को कान पर धारण करने से शत्रु का भय नहीं रहता है।
18. **शत्रु बाधा** :– यदि शत्रु परेशान कर रहा हो, तो पीड़ित व्यक्ति को शनिवार को काले कपड़े में लोहे का छल्ला, काली उड़द, नीले पुष्प रखकर काले धागे से बांधकर शाम को चौराहे पर रखें व शमी वृक्ष की लकड़ी से मध्य में घेरा बनाकर उसके आँख के काजल से शत्रु का नाम लिखें व वह पोटली उस पर रख दें व आते समय वह लकड़ी पीछे की ओर फेंक दें।
19. **शत्रु के घर कलह करवाना** :– श्वेत अपामार्ग व वरड़ की जड़ जिसके घर में रखेंगे, वहाँ क्लेश होगा।
20. **शत्रु को सरदद्र करवाना** :– यदि कोई शत्रु अनावश्यक रूप से परेशान करे, तो चील के पाँच पंख शत्रु के सिर से स्पर्श कराकर कीकर की जड़ में दबायें। 5 दिनों में शत्रु सिरदद्र से परेशान होगा।
21. **शत्रु को रोग देना** :– (1) चील के पाँच पंखों को लेकर कड़वे तेल में भिंगोकर लाल धागे से 5 गाँठ बांधकर कुएँ के जल से स्वच्छ कर सुखाकर जलायें व राख में घी डालकर गोली बनाकर शत्रु के पलंग पर डालें। इससे शत्रु को विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाएंगे। (2) चील का पंख रविवार को नए मटके में डालकर सरसों का तेल डालकर अंधेरे स्थान पर रखें, रविवार को उन्हें जलायें व लाल कपड़े में रखकर चार चक्कर लगायें व कपड़ा उस स्थान पर दबायें।

–: घर एवं परिवार संबंधी प्रयोग :–

1. **पैतृक संपत्ति विवाद** :– पैतृक संपत्ति विवाद चल रहा हो या अड़चने आ रही हों तो 21 सफेद व चितकबरी कौड़ियाँ लेकर उनको पीसकर सोमवार को इस चूर्ण को संपत्ति के मालिक के दरवाजे पर 43 दिनों तक छिड़कें, शीघ्र निपटारा होगा।
2. **गृह निर्माण व भय मुक्ति** :– भवन की नींव भरते समय शहद से भरा बर्तन नींव में दबाने से आजीवन खतरों से मुक्त रहता है।
3. **भवन में बार–बार मरम्मत या आग लगे** :– यदि भवन बहुत पुराना हो, बार–बार इसमें मरम्मत होती हो या आग लगने की घटनाएं घटती हों, तो पैतृक भवन की किसी अंधेरी कोठरी में गुड़, ताबा, सौंफ, खाँड़ एवं शहद रखें। ऐसा करने से विपत्तियों से बचा जा सकता है।
4. **जमीन या मकान न बिकता हो** :– यदि आप कोई संपत्ति जैसे जमीन या मकान बेचना चाहते हों और काफी प्रयास के बाद भी उचित दाम पर बिक पाता हो, तो मंगलवार को सात रंग के धागे लाएं तथा जमीन को उस धागे से नाप लें। मंगल यंत्र की पहले पंचोपचार से पूजा करें तथा यह धागा उस यंत्र पर लपेट कर यंत्र को घर के बाहर ईशाण कोण में दबा दें। मकान या जमीन शीघ्र ही विक्रय हो जाएगी। कार्य हो जाने के बाद उस यंत्र एवं धागे को जलाशय में प्रवाहित कर दें।

5. **भूमि–भवन सुख का अभाव हो** :– काफी प्रयास के बाद भी घर–मकान न बन पाता हो तो शुक्लपक्ष के मंगलवार को सवा किलो मसूर की दाल, तांबे का एक सिक्का लें, उस पर चमेली के तेल में सिंदूर मिलाकर लगा लें। दाल व सिक्के को लाल रंग के कपड़े में बांध दें व पूजा स्थल में रख दें तथा नित्य धूप दें। जहाँ भी जमीन या भवन की बात करने जाएं, भगवान के सामने दो अगरबत्ती जलाकर पोटली से पाँच–सात दाल के दाने ले जाएं एवं संबंधित जमीन या भवन में बिखेर आएं। हर मंगलवार पोटली खोलकर धूप–दीप अवश्य दें तथा वाराह भगवान का ध्यान करें।
6. **घर में शांति** :– यदि गोमती चक्र को लाल सिंदूर की डिब्बी में भरकर घर में रखें तो घर में सुख–शांति बनी रहती है।
7. **गृह कलह से शांति के लिए** :– यदि आप घर में रोज–रोज के लड़ाई–झगड़े से परेशान रहते हैं तो यह उपाय करके देखें। 9 तांत्रोक्त नारियल लें और उन पर काला धागा लपेट लें। सारा दिन उसे पूजा स्थान में रहने दें। सायंकाल आप उसे धागे सहित जला दें। नवरात्रि के पूरे 9 दिनों तक निरंतर यह प्रयोग करें। विश्वास मानें दसवें दिन से आपके घर में अमन–चैन का वातावरण दिखाई देगा।
8. **भवन की रक्षा हेतु** :– कई बार मकान अपने–आप ढह जाता है या दरारें आ जाती हैं। इसकी रोकथाम हेतु व तांत्रिक अभिकर्मों की समाप्ति हेतु नए मकान की चौखट पर काले धागे से कौड़ियाँ बांधने से बचाव होता है।
9. **नींव भरते समय** :– मकान बनवाना शुरु करते हैं और कार्य में बाधा पड़ जाती है तो इसके निवारणार्थ भवन निर्माण करते समय नींव में अन्य सामग्री के साथ 11 कौड़ियाँ भी रखनी चाहिए, जिससे कार्य निर्विघ्न पूरा होता है।
10. **घर में समृद्धि हेतु** :– एक तांबे के कलश में स्फटिक व कौड़ी डालकर श्रीफल रखकर भवन के ईशान कोण में रखने से समृद्धि व शुभता होती है।
11. **गृह रक्षा** :– शुभ मुहूर्त्त में लाकर लगाया गया श्वेतार्क का पौधा घर में रहने से अनेक आधि–व्याधियों का नाश कर रक्षा करता है। इस पौधे को घर में उत्तर दिशा में रखने से वशीकरण व धन वृद्धि, श्री समृद्धि का प्रभाव होता है। घर से दक्षिण दिशा में रखने से रोग नाश, शत्रु पराभव, मानसिक कष्ट तथा शोक संताप निवारण और अन्य बाधाओं की शांति होती है। पूर्व दिशा में रखने से राज सम्मान, उन्नति व मित्रता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता प्रदान करता है। घर से पश्चिम दिशा में विरोधियों को परास्त करने और शत्रुओं को नीचा दिखाने के लिए कार्यकारी होता है। यह श्वेतार्क का पौधा रविपुष्य योग में घर के दरवाजे पर लगा दें। जब तक यह पौधा लगा रहेगा, घर में किसी भी आधि–व्याधि, नजर, जादू–टोना, तंत्र–मंत्र के दुष्प्रभाव और अवांछित तत्व व बुरी आत्माओं, दुर्भाग्य और दुष्ट ग्रहों की वृद्धि का प्रभाव नहीं पड़ेगा।
12. भवन निर्माण शुरू कराने से पूर्व कारीगरों को मिठाई खिलाना शुभ रहता है।
13. **समस्या निवारण** :– (1) चंदन के वृक्ष की जड़ में गुरुपुष्य नक्षत्र से पूर्व अर्थात् बुधवार की शाम को थोड़े से पीले चावल चढ़ाएं, जल चढ़ायें तथा वहाँ दो अगरबत्ती जलाकर हाथ जोड़कर उसे आमंत्रित करें। दूसरे दिन सवेरे उठकर बिना किसी औजार की सहायता से उसकी थोड़ी सी जड़ ले आवें। इस जड़ को घर के मुख्य द्वार पर लटकाने से अनावश्यक समस्याएँ उत्पन्न नहीं होती हैं। (2) वैजयन्ति माला से से जप करके धारण करने से शत्रुओं पर विजय मिलती है, कष्टों से मुक्ति होती है, मानसिक शांति मिलती है व मन एकाग्र होता है।
14. **गृह क्लेश** :– (1) जिनके घरों में अक्सर बिना बात कोई कलह होते रहती है, वे सोमवार, गुरुवार, शुक्रवार या रविवार को एक मुट्ठी गुड़, एक मुट्ठी नमक, एक मुट्ठी गेहूँ, दो तांबे के सिक्के, सफेद कपड़े में बांधकर घर में रखें। (2) घर में क्लेश हो तो शनिवार को कबूतर की बीट करा धुआँ घर में करें। गृह क्लेश शांत होगा। (3) असाध्य रोग व गृह कलह को मिटाने के लिए काले धतूरे के पंचांग अथवा इसकी भभूत को घर में रखें। (4) घर में होने वाले निरंतर क्लेश बंद करने एवं सुख–शांति के लिए गेहूँ शनिवार को पिसवाएँ तथा उसमें 100 ग्राम काले चने मिला देने चाहिए।

15. **अकारण झगड़े व कलह** :– घर में बिना वजह झगड़े, रोग, आरोप–प्रत्यारोप होते हैं तो रात को सोते समय पलंग के नीचे पानी का बर्तन रखें। प्रातः काल ऐसे स्थान पर डालें, जहाँ पानी का अपमान न हो। रसोई में बैठकर खाना खायें।
16. **वास्तुदोष निवारक व समृद्धि कारक** :– घर में पोंछा लगाने के पानी में एक चुटकी नमक डालकर पोछा लगाने से नकारात्मक ऊर्जा खत्म होती है। क्लेश नष्ट होकर धन वृद्धि होती है।
17. **घर के लिए कल्याणकारी उपाय** :– श्वेत अपामार्ग को अपने पास रखने से घर में समृद्धि होती है।
18. **गृह प्रवेश में दोष निवारण** :– गृह प्रवेश से पूर्व तुलसी का पौधा, देवता का चित्र, पानी का कलश, गौमूत्र लेकर नवीन घर में प्रवेश करें तो घर में सुख, शांति व सम्पन्नता आती है।
19. **पारिवारिक शांति** :– (1) स्फटिक माला का प्रयोग – यदि घर में स्त्री प्रसन्न है, तो क्लेश स्वतः ही समाप्त हो जाएंगे। यदि शुक्रवार को गायत्री मंत्र या रति–कामदेव मंत्र का जप करके स्फटिक माला धारण करें तो पारिवारिक शांति बनी रहती है। (2) शंख माला के प्रयोग – इसे धारण करने से मन शांत रहता है व व्यर्थ विवाद नहीं होते हैं, अतः पारिवारिक शांति बनी रहती है। (3) परिवार में सुख–शांति और समृद्धि के लिए प्रतिदिन प्रथम रोटी के चार बराबर भाग करें। इसमें एक गौ को, दूसरा काले कुत्ते को, तीसरा कौए को और चौथा चौराहे पर रख दें। (4) पारिवारिक सुख के लिए पूजा स्थान पर दुर्गा यंत्र स्थापित करके मंत्र जाप करने से धन की प्राप्ति, पारिवारिक सुख तथा मनोकामना की पूर्त्ति होती है। 'श्री यंत्र' तथा नवरत्न की अंगूठी पहनने से दुःख समाप्त होते हैं और सभी मनोकामनाओं की पूर्त्ति होती है। धन का अभाव दूर होता है।
20. **नींव भरने की सामग्री** :– नींव भरते समय इन सामग्रियों को डालने से भवन निर्माण निर्विघ्न पूरा होगा। तुलसी की 35 पत्तियाँ, लोहे की चार कीलें, चाँदी के साँप का जोड़ा, जनेऊ, पान के 11 पत्ते, मिट्टी के 11 दीपक, कुछ सिक्के, आटे की पंजीरी, कोई भी मौसमी फल, मोतीचूर के लड्डू, गुड़, हल्दी की 5 गाँठें, रोली, चावल, फूल, पाँच छोटे चौकोर पत्थर, पाँच छोटे–छोटे औजार, शहद, राम मंत्र लिखित पुस्तिका (हस्तलिखित), पंचरत्न। तांबे के कलश में उपरोक्त सभी वस्तुओं को लाल वस्त्र में बांध कर प्राण प्रतिष्ठित 'श्रीयंत्र' भी नींव में रखें। अन्य सामग्री आपकी प्रचलित परम्परा या विद्वान पंडित की सहायता से रखें।
21. **नये घर में खुशहाली** :– चांदी के नाग–नागिन, चांदी का पतरा, 5 छोटी सुपारी, 7 हल्दी की साफ गाँठ लेकर तांबी की लुटिया में पानी डालकर सब चीजें रखें। उसे बंद कर दें व मुख्य द्वार के पश्चिम में दबायें। नए मकान में खुशहाली होगी।
22. **सम्पत्तिवर्द्धक** :– (1) गहने (सोना, चांदी), धन रखने के लिए उत्तर दिशा श्रेष्ठ है। अतः इस दिशा की ओर वाली आलमारी पर लाल रंग का पेंट करवायें तथा लाल धागे में विषम संख्या 1, 3, 5, 7, 9, या 11 में सिक्के बांध कर रखें। (2) खच्चर का दाँत रखने से संपत्ति बढ़ती है। (3) सम्पत्ति में बरकत हेतु गुरुवार को जलकुम्भी पीले कपड़े में बांध कर केसर निर्मित्त जल के छींटे मारकर लटकायें, दुबारा न छुएं। धीरे–धीरे सम्पत्ति में बरकत होगी।
23. **घर की बाधाओं से सुरक्षा** :– (1) हल्दी एवं चावल को पीसकर, उसके घोल से घर के प्रवेश द्वार पर 'ॐ' बना दें, घर समस्त बाधाओं से सुरक्षित रहेगा। चावल नहीं मिलाकर केवल हल्दी के घोल से लिखें तो भी यही फल प्राप्त होगा। (2) हल्दी की गाँठ को धो–पोछकर, लोबान धूप से शुद्ध करके धन रखने के स्थान पर रखेंगे तो वहाँ लक्ष्मी जी की कृपा अवश्य रहेगी। साथ ही जहाँ रखना हो, उस स्थान को धूप–दीप से शुद्ध कर लेना चाहिए।
24. **बचत हेतु** :– मंगलवार को लाल चंदन, लाल गुलाब के फूल व रोली लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी में धन रखने के स्थान पर रखें। 6 माह बाद दुबारा करें।
25. **बरकत न हो तो** :– घर में पैसा खूब आता हो, परंतु टिकता न हो, समझ में न आए कि कि पैसा जाता कहाँ है तो जब भी गेहूँ पिसवाने जाए उससे पहले 11 पत्ते तुलसी, 2 पत्ती केसर, थोड़े से गेहूँ मंदिर में रात को रख देवें व सुबह उसको सारे गेहूँ में मिलाकर पिसवा लें, बरकत बढ़ेगी।

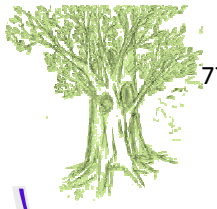

सुलभ सामग्री दुर्लभ प्रयोग

-: छोटे बच्चों संबंधी समस्यायें एवं उनके प्रयोग :-

1. **बच्चे का चमकना** :– सोते समय बच्चा चमकता हो तो आटे का दीपक बनाकर 4 रुई की बत्तियाँ जलाकर, पानी में कुमकुम डालकर बच्चे पर सात बार उतार कर चौराहे पर रखें व दीपक के चारों ओर पानी से गोल घेरा बनायें।
2. **बच्चे का दाँत निकलते समय** :– (1) जिन बच्चों के दाँत निकल रहे हों, शतपुष्पा के पुष्प मिट्टी के बर्तन में पानी डालकर उबालकर ठंडा करें व बच्चों को पिलाने से दाँत निकलने संबंधी दोषों से मुक्ति मिलती है।
(2) बच्चों को टोटके से बचाव व दाँत सरलता से निकलने हेतु :– हाथ–पैर में लोहे या तांबे का छल्ला पहनाने, गले में चंद्रमा या सूरज बनाकर पहनाने से या राठे के दल को छेद कर पहनाने से नजर, टोना–टोटका आदि अनेक व्याधियों का प्रभाव बच्चे पर नहीं पड़ता तथा दाँत सरलता से निकलते हैं। (3) सीपियों की माला रविवार या मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बांधने से या सिन्दुवार (निर्गणी) की जड़ को मंगलवार के दिन गले में बांधने से दाँत सरलता से निकलते हैं, कोई कष्ट नहीं होता। (4) रुद्राक्ष की तरह रीठा के 108 दानों की माला बच्चों को पहनाने से बच्चों के दाँत जल्दी व आसानी से निकल आयेंगे।
3. **बच्चा पानी नहीं पीता** :– कभी–कभी बच्चा पानी नहीं पीता व उल्टी करता है तो एक लोटा पानी लेकर बच्चे पर से सात बार या इक्कीस बार उवार कर दरवाजे के बाहर दायें–बायें तरफ डाल दें, उससे बच्चा पानी पीने लग जाएगा।
4. **बच्चों के नजर दोष निवारण हेतु** :– अक्सर छोटे बच्चों को नजर बाधा लग जाती है। ऐसी स्थिति में उनके पाँव या गले में काले धागे में कौड़ी बांधने से नजर दोष दूर होता है।
5. **बच्चा दूध न पीए** :– (1) एक सकोरे में कच्चा दूध लें और बच्चे के सिर पर से 7 बार उतारकर काले कुत्ते को पिलायें। बच्चा स्वयं दूध पीने लगेगा। (2) बाँझ स्त्री को शनिवार को घर पर बुलाए, बच्चे के सिर पर हाथ फिराने को कहें, गोद में मत लेने दें। उसके जाने के बाद उस जगह पर झाड़ू लगाएं।
6. **बच्चा हमेशा बीमार रहे** :– मंगलवार को अष्टधातु का कड़ा बनवाएं। उसे गंगाजल से धोकर थोड़ा–सा सिंदूर लगाएं। उसे लेकर हनुमान चालीसा पढ़ें व यह कड़ा बच्चे के हाथ में पहनाएं।
7. **बच्चा दाँत पीसता हो** :– बच्चे के दाँत निकल चुके हों व अनजाने में ही दाँत पीसता हो तो सोमवार को लाल डोरे में रुद्राक्ष डालकर उसके गले में डालें।
8. **रात को पेशाब करे** :– बच्चा बार–बार पेशाब करता हो तो मंगलवार को गुलाब की अगरबत्ती जलाकर राख अखंडित भोजपत्र पर रखकर गंगाजल से लेप बनायें। एक दिन छोड़कर शिशु की नाभी व पेट पर लगायें।
9. **दुर्व्यसन में पड़े बच्चे** :– बच्चा बिगड़ गया हो तो उड़द की दाल के कच्चे पापड़ पर साबुत काले उड़द, गुड़, सरसों के तेल का दीपक, दो लोहे की कीलें, लोटे में थोड़े काले तिल डालकर जल, सिंदूर व लाल गुलाल सजाकर शनिवार की शाम को पीपल के पेड़ के नीचे रखें व लुटिया का जल पीपल पर सात शनिवार चढ़ायें।
10. **बच्चे का डरना** :– रात को सोते समय बच्चा डरे तो उसके सिरहाने फिटकरी का टुकड़ा रख दें। बच्चे का डरना बंद होगा। अगर सोते वक्त बच्चे को बुरे स्वप्न आते हों तो किसी भी मंगलवार या रविवार के दिन फिटकरी का एक टुकड़ा बच्चे के सिरहाने रख दें। रात में सोते समय बच्चे को बुरे स्वप्न नहीं दिखाई देंगे तथा बच्चा चमकेगा भी नहीं।
11. **बच्चे के अध्यधिक रोने तथा नींद न आने पर** :– किसी भी गुरुवार के दिन एक फिटकरी का टुकड़ा सफेद रंग के कपड़े के टुकड़े में बांधकर बच्चे के गले में काले धागे में बांध दें तो बच्चा चैन की नींद सोएगा।
12. **बच्चे मरते हों** :– बच्चे जन्म लेकर मरते हों तो जन्म लेने से 5 वर्षों तक बच्चे को पुराने कपड़े पहनाएं, बाल न कटवायें व जन्म वाले नाम से न पुकारें।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

13. **बच्चों का रात में सोते समय रोना, डरना व चिहुँक उठना** :– बच्चे के गले में एक या तीन दाने रुद्राक्ष के पहिना दें। साथ ही रुद्राक्ष को पानी में घिसकर वह पानी बच्चे को पिलायें और छाती पर सोते समय उसका लेप भी करें। इस प्रयोग से बच्चों का रात में सोते समय रोना, डरना, चिहुँक उठना, अस्वाभाविक रूप में हाथ–पैर पटकना, यह सारी व्याधियाँ दूर हो जाती हैं।
14. **बच्चा हकलाए** :– पूर्णिमा की रात खीर बनाकर पीपल के पत्ते को धोकर उस पर खीर रखकर ढंक दें व प्रातः काल उसे बच्चे को चटवायें। चम्मच से न खिलायें, न ही हाथ से खिलायें। ऐसा पूर्णचंद्र में भी नित्य करें।
15. **वाक् पटुता व वाणी दोष दूर करने हेतु** :– बच्चा बोल नहीं पाता अथवा अटक–अटक कर बोलता है या बोलते समय झिझकता है अथवा गायन में रुचि होने पर भी आवाज सही न होने के कारण उसकी प्रतिभा कुंठित हो रही हो, ऐसे लोगों को शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन माता सरस्वती की तस्वीर के आगे स्वयं श्वेत वस्त्र धारण करें व देवी का श्वेत पुष्पों से पूजन कर धूप–दीप करें तथा वचा (एक औषधि) एक कटोरी में रखकर देवी के सम्मुख रखें एवं स्फटिक की माला से माता सरस्वती के मंत्र 108 बार जपें तथा उक्त वचा में से छोटा–सा टुकड़ा सुपारी की तरह चूस कर चबा लें। ऐसा नित्य करें, थोड़े ही दिनों में वाणी दोष दूर होकर स्वर मधुर हो जाएगा तथा बुद्धि प्रखर हो जाएगी। बच्चे के लिए करें तो वचा उसे चूसने के लिए दें।
16. **बच्चे की उन्नति** :– घर की सीमा में पश्चिम दिशा की तरफ पारस पीपल लगाने से बच्चे उन्नति करते हैं।
17. **बच्चे का डरना व पेशाब करना** :– किसी चांदी के बर्तन में श्मशान की मिट्टी रखकर बच्चे के हाथ से कहीं गड़वा दें। बच्चा डरना व पेशाब करना बंद कर देगा।

–: सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए प्रयोग :–

1. **संबंध सुधारना** :– यदि कोई प्रियजन आकर्षित नहीं होता है तो उसके लिए आप लाल चंदन घिस कर दाहिने हाथ की तर्जनी से उसका नाम पीपल के पत्ते पर लिखें व जितने अक्षर हों, उतनी गोलियाँ बनाकर उसके घर के बाहर फेंके।
2. **दाम्पत्य कलह निवारण हेतु** :– (1) रात को सोते समय पति अपने सिरहाने सिंदूर व पत्नी कपूर रखें। प्रातःकाल पत्नी कपूर जला दें व पति सिंदूर को घर में कहीं गिरा दें। (2) घर में अथवा पति–पत्नी में अत्यधिक कलह रहता है तो शुक्रवार के दिन शुद्ध जल में थोड़ी शक्कर मिलाएं तथा प्रातःकाल भगवान शिव को अप्रण कर दें तथा इत्र में सात अगरबत्ती व देशी घी का दीपक जलाएं, लाभ मिलेगा। (3) दाम्पत्य कलह निवारण हेतु ससुराल से चांदी की कोई चेन/अगूंठी दिलवाकर धारण करवायें। (4) पति–पत्नी में आपसी तनाव समाप्त करने के लिए महिला गुरुवार के दिन सूर्योदय पूर्व कच्चे दूध में हल्दी मिलाकर पीपल को सींचें तथा सवा मुट्ठी मूँग, चावल, कुमकुम तथा गुड़ वृक्ष पर चढ़ायें व पाँच अगरबत्ती जलायें। (5) पति–पत्नी में अधिक कलह रहता है तो रात को सवा पाव ज्वार सिरहाने रखें। प्रातःकाल दोनों अपने हाथों से कबूतरों को डालें व हाथ–पाँव धोकर थोड़ा–सा घी ऐसे स्थान पर जहाँ अखण्ड ज्योति जलती हो, वहाँ डालें। धीरे–धीरे कलह समाप्त होगा। (6) पति–पत्नी में कलह होता रहता है तो वे सोमवार, गुरुवार, शुक्रवार या रविवार को एक मुट्ठी गुड़, एक मुट्ठी नमक, एक मुट्ठी गेहूँ, दो चांदी का सिक्का, सफेद कपड़े में बांधकर घर में रखें। जब क्रोध आए तो गायत्री मंत्र बोलकर जल पीयें। (नोट – गृह क्लेश में तांबे का व पति–पत्नी के क्लेश में चांदी का सिक्का रखें।) (7) पति– पत्नी में मतभेद हो तो तीन गोमती चक्र लेकर घर के दक्षिण में '**हलूं बलजाद**' कहकर फेंक दें। मतभेद समाप्त हो जाएगा। (8) बुधवार को दिन में कुछ घंटे मौन रखें। शुक्रवार को इत्र खरीदें व घर पर रखें, सफेद मिठाई जीवनसाथी को खिलायें। (9) पति–पत्नी में अनबन रहती हो तो अशोक के 7 पत्ते मंदिर में

रखकर पूजा करें। मुरझाये तो पुराने पत्तों के स्थान पर नये पत्ते रखें। पुराने पत्ते पीपल में डालें। इससे दाम्पत्य कलह समाप्त होगा।

3. **सुखी दाम्पत्य जीवन हेतु** :– (1) पति–पत्नी में अलगाव हो या निरंतर विवाद रहे तो पति–पत्नी के नाम के जितने अक्षर हो उतनी गुलाब की हरी पत्तियाँ लेकर एक–एक अक्षर लिखते जायें और गुलाब की एक–एक पंखुड़ी रखें। सभी को पीस लें। जितने अक्षर हों, उतनी गोली प्रतिदिन दरवाजे पर डालें, शीघ्र लाभ होगा। (2) सुखी दाम्पत्य हेतु महिलाएं गुरुवार के दिन सूर्योदय से पूर्व कच्चे दूध में हल्दी मिलाकर पीपल के वृक्ष को सीचें तथा थोड़ा मूँग, चावल, कुमकुम और गुड़ भी पीपल के वृक्ष पर चढ़ायें तथा 5 अगरबत्ती जलाएं। नियमित रूप से ऐसा करें। पति–पत्नी में तनाव समाप्त होकर प्रेम बना रहेगा।

4. **सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए वास्तु टिप्स** :–
(1) सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए नृत्य की विभिन्न मुद्राएँ, प्राकृतिक दृश्य, पक्षियों के जोड़े, प्रफुल्लित मानवाकृति लगाएं।
(2) उदास मानवाकृतियाँ, युद्ध के दृश्य, शिकार के दृश्य नहीं लगाने चाहिए।
(3) घर में सजावटी हथियारों की नोक पूर्व दिशा की तरफ नहीं होनी चाहिए।
(4) घर में सभी सदस्यों का हँसता हुआ सामूहिक फोटो घर में लगायें।
(5) उक्त प्रतीक चिन्ह सही दिशा में लगाने चाहिए, जो शक्ति ऊर्जा, प्रसन्नता व प्रेरणा प्रदान करते हैं।

5. **पत्नी जिद्दी हो** :– यदि स्त्री हो तो एक सवा मीटर लाल कपड़े में सवा पाव मसूर, सात गुलाब पुष्प, लाल मिठाई, सवा किलो गुड़, एक अनार हनुमानजी के मंदिर में रखवायें व लाल रंग के वस्त्र कम पहनें। मंगलवार को रोटी पर गुड़ रखकर गाय को खिलायें।

6. **सौभाग्य संपन्नता** :– (1) माता गौरी–पार्वती की प्रतिमा पर चढ़ाए गये सिंदूर को पार्वतीजी का प्रसाद मानकर धारण करने वाली महिलाएँ सौभाग्य संपन्न होती हैं। (2) सीप में कुमकुम रखकर माँग भरना सौभाग्यशाली होता है। (3) पति के सौभाग्य हेतु सौभाग्य सामग्री में कौड़ी रखकर देने से सौभाग्य वृद्धि होती है। (4) विवाहोपरांत कौड़ियों की पूजा करके वधु को देते हैं, जिनसे विशेष अवसर पर वधु सिंदूर रखकर माँग भरती हैं। (5) सावन के महीने में जब पहली बरसात हो तब परनाले से बहते पानी से स्नान करने से दुर्भाग्य दूर होता है और सौभाग्य वृद्धि होती है। (6) संक्रान्ति या शुभ अवसरों पर सुहागन स्त्रियों को 16 सौभाग्य सामग्री रखकर सौभाग्य स्तोत्र का पाठ करने से सौभाग्य बढ़ता है।

7. **अकारण झगड़े** :– (1) यदि घर में अकारण झगड़ा होता रहता है या अशांति हो तो घर में निश्चय ही कोई टूटा हुआ बर्त्तन, शीशी, चक्की का पाट, खूंटी आदि रखी हुई है। इसे तुरंत प्रभाव से घर से बाहर कर दें व जामुन मंदिर में चढ़ाएं।

8. **पति विदेश में हो और कोई खबर न हो** :– शुक्लपक्ष के प्रथम सोमवार को एक चौकी पर सफेद कपड़ा बिछाकर राम–सीता या राम पंचायत की तस्वीर रखकर गुलाब के पुष्प चढ़ाकर, घी का दीपक, धूप–बत्ती (जिसमें सिंक न हो) व दो जुड़वा केले भगवान की तस्वीर के समक्ष '**ॐ जानकी वल्लभाय स्वाहा**' का जप करके पाँच बार हनुमान चालीसा पढ़ें और इसके बाद प्रसाद का वितरण करें।

9. **पति का प्यार पाने हेतु** :– गुरुवार के दिन पीले वस्त्र पहनकर एक हल्दी की गाँठ रखकर '**ॐ रत्यै कामदेवाय नमः**' का जप करें व एक समय बेसन से बनी चीज खायें।

10. **अनावश्यक क्रोध आना** :– मंगलवार को गाय को गुड़ खिलायें, क्रोध कम होगा।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

-: विभिन्न प्रकार के जानवरों तथा विष एवं नशा संबंधी प्रयोग :-

1. **मच्छर भगाने हेतु** :– (1) यदि मलेरिया का प्रकोप चल रहा हो तो घर के आसपास नाले आदि के पास गेंदा लगायें। इसकी गंध से मच्छर भाग जाएंगे। (2) बिस्तर पर लौंग का तेल छिड़कने से मच्छर भगते हैं। (3) घोड़े की पूँछ का बाल लटकाने से मच्छर भागते हैं।
2. **मच्छर का विष** :– काले घोड़े की दुम के बाल द्वार पर लटका लेने से मच्छर आदि कमरे में प्रवेश नहीं करते हैं। यदि मच्छर कहीं काट ले काटे गए स्थान पर तुरंत प्याज का अर्क लगा दें।
3. **खटमल भगाना** :– गंधक की धूनी से खटमल मरते हैं।
4. **चूहे परेशान करे** :– ऊँट के दायें पैर का नाखून रखने से चूहे नहीं आते।
5. **कुत्ता नहीं काटता** :– पागल कुत्ते का दाँत पास में रखने से पागल कुत्ता नहीं काटता।
6. **दीमक भगाना** :– हींग को पानी में घोलकर दीमक के स्थान पर डालें। इससे दीमक नहीं आते।
7. **पिस्सू भगाना** :– पीतल के बर्त्तन में पानी भरकर एक बूंद सरसों का तेल व एक बूंद मिट्टी का तेल डालकर पलंग के नीचे रखें।
8. **कीड़े भगाना** :– जहाँ कीड़े–मकोड़े अधिक निकले, वहीं अपने बायें पैर का जूता/उल्टा रख दें। वे वापस अपने बिल में चले जाएंगे।
9. **कीड़े झाड़ने हेतु** :– अपामार्ग के फल का चूर्ण का भस्म लेने से मस्तक के कीड़े, कफ आदि गिर जाते हैं या निकल जाते हैं।
10. **पक्षी पकड़ना** :– हींग को जल में घोलें व इसमें गेहूँ को फुलाएं। इस गेहूँ को छिड़क दें। जो पक्षी खाएगा, वह बेहोश हो जाएगा।
11. **बिच्छू पैदा करना** :– गधे का मूत्र, भैंस का गोबर दोनों को मिलाकर कपड़े से ढक दें। इसमें 24 घंटे में बिच्छू जन्म लेंगे। यह प्रयोग पहले शत्रु को परेशान करने हेतु किया जाता था।
12. **पक्षी भगाना** :– बाज का नाखून पेड़ पर लटकाने से पक्षी भाग जाते हैं।
13. **कीटाणु नाशक** :– (1) कीटाणु या दुर्गन्ध फैल रही हो तो कपूर का चूर्ण डालने से लाभ मिलता है। प्लेग फैलने पर यदि व्यक्ति अपने पास कपूर रखे तो प्लेग के प्रभाव से बचा जा सकता है। (2) मीठा नीम, जिसे सामान्यतः करीपत्ता भी कहा जाता है, इसके बीजों का तेल उत्तम कीटाणुनाशक होता है। (3) ग्रहण काल से पूर्व ग्रहण के सूतक समय में कुश को अन्न–जल इत्यादि में डालने से ग्रहण के दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है।
14. **सर्पदंश** :– (1) आषाढ़ शुक्लपक्ष की पंचमी के दिन जो अपनी कमर में सिरस की जड़ बांधता है तथा चावल का पानी पीता है, उसे सर्पदंश का भय नहीं रहता है। (2) श्वेत पुनर्नवा को चावल के पानी के साथ शुभ मुहूर्त्त में जो पीता है, उसे सर्प काटने का भय नहीं होता। (3) रविपुष्य योग में ऊँटकटीरा की माला बनाकर धारण करने से कभी भी सर्पदंश का भय नहीं रहता। (4) सप्रदंश होने पर कनेर की पत्तियों को पीसकर लगाने से तुरंत लाभ होता है। शास्त्रों के अनुसार इसकी पत्तियों से नागराज के विष का असर भी खत्म हो जाता है।
15. **सर्पदंश की पहचान** :– सर्पदंश से पीड़ित व्यक्ति को लाल मिर्च खाने से कड़वी नहीं लगती।
16. **सर्प भय नाशक** :– (1) आस्तिक मुनि को बार–बार नमन करने सर्प भय नहीं रहता। (2) मोर पंख को घर में रख देने से सर्प कभी भी घर में प्रवेश नहीं करता है। मोर पालने से सर्प भय नहीं होगा।
17. **सर्प का विष उतारना** :– बायें हाथ की अनामिका अंगुली द्वारा कान के मैल का लेप करने तथा स्वस्थ मनुष्य का मूत्र सींच देने से सर्प का विष नष्ट हो जाता है।
18. **सर्प भगाना** :– हींग को पानी में घोलकर छींटने से साँप भाग जाते हैं।

19. **बिच्छू काटना** :– बिच्छू काटने के स्थान पर (जख्म पर) लाल मिर्च व सरसों को तेल मिलाकर लगाए या बिच्छू काटने पर पानी में पीसकर जख्म पर लगाए।
20. **साँप या बिच्छू का भय समाप्त** :– विभिन्न प्रकार के शंखों में एक नीलकण्ठ शंख होता है। किसी को साँप या बिच्छू डंक मारे तो इसमें जल भरकर पिलाने से जहर उतर जाता है। शंख में गर्म पानी डालकर जहरीले जानवर के काटे हुए स्थान को साफ करना चाहिए। इस शंख को घर पर स्थापित करने से साँप–बिच्छू व अन्य जहरीले जानवर प्रवेश नहीं करते हैं। इनसे कोई खतरा नहीं रहता है व घर में सुख–शांति बनी रहती है।
21. **फसलों की सुरक्षा** :– सफेद सरसों व बालू एक साथ मिलाकर खेत में चारों ओर डाल देने से टिड्डी, कीड़े, मच्छर तथा चूहों आदि से फसलों की रक्षा होती है।
22. **पशु चिकित्सा** :– (1) जब किसी गाय या भैंस को व्याधि हो, कीड़ा लगा हो तो नीला कपड़ा लेकर रविवार या बुधवार के दिन तुलसी की शाखा लेकर उसे मोड़कर कपड़े में बांध लें और उसको सींग में बांध दें। तीन दिन में कीड़े मर जाएंगे और सात दिन बाद घाव भी सुख जाएगा। तब दवाई को सींगा से हटा लें और एक नारियल भगवान शंकर के नाम से फोड़ दें। (2) कदम्ब की टहनी गौशाला में रखने से गायों को रोग नहीं होते।
23. **पशु आपदा हेतु** :– जहाँ पशु प्राकृतिक आपदावश मरते हैं, वहाँ उन पशुओं के गले या पाँव में कौड़ी बांधनी चाहिए। इससे आपदा से रक्षा होती है।
24. **विषैले जंतुओं का भय** :– हीरा अथवा फिरोजा पहनने वाले को विषैले जंगली जंतुओं का कोई भय नहीं रहता।
25. **पशु भय** :– रविपुष्य योग में प्राप्त सफेद मदार की जड़ लाकर दाहिनी भुजा पर बांधने से वन्य पशुओं का भय नहीं रहता है।
26. **बिच्छू का विष उतारने का टोटका** :– (1) अष्टधातु की अंगूठी थोड़ा सा गर्म करके दंश वाले स्थान पर लगा दें। इससे विष का वेग खत्म होता है। साथ ही पीड़ा भी समाप्त हो जाती है। (2) कड़ुवे नीम के पत्ते या कसौंदी के पत्तों अथवा जड़ को भली–भांति चबाकर बिच्छू द्वारा काटे गए व्यक्ति के कान में फूंक मार दें, विष उतर जाएगा तथा ठंडक व्याप्त होगी। (3) बिच्छू द्वारा काटे गए व्यक्ति से 27 से 1 तक उल्टी गिनती गिनवाने मात्र से ही विष का प्रभाव कम हो जाता है। (4) नीली अपराजिता की जड़ को घिसकर बिच्छू द्वारा काटे हुए स्थान पर लगाने से विष दूर हो जाता है। (5) जहाँ बिच्छू काटे वहीं ऊपर से नीचे श्वेत अपराजिता की जड़ रगड़ें। उसी तरफ बायें हाथ में इसकी जड़ दबा दें। शीघ्र सुधार होगा। (6) श्वेत अपामार्ग की लकड़ी सुखाकर शरीर पर फेरें, पत्तियों को पीसकर लेप करने से बिच्छू का विष उतरता है।
27. **मक्खी का विष उतारने का टोटका** :– गाय के मूत्र में साँप की बाँबी की काली मिट्टी घोलकर दंश वाले स्थान पर लेप करने से जहरीली मक्खी के विष का असर खत्म हो जाएगा।
28. **विष का प्रभाव** :– (1) नीम के पत्तों पर रोगी को सुला देने से तीव्र विष का प्रभाव शांत हो जाता है। (2) सूर्य के मेष राशि में आ जाने पर कड़ुवे नीम की कोपलें मसूर के साथ खाने से एक वर्ष तक किसी भी प्रकार के विष का असर शरीर पर नहीं पड़ता है। (3) यदि अंकोल की छड़ी हाथ में हो तो विष का प्रभाव शरीर पर नहीं होता है। (4) शुभ दिन व शुभ मुहूर्त्त में बाँस ककोड़ा को सफेद सूत के धागे में बांधकर दाहिने हाथ में धारण करने से सभी प्रकार के विषों का प्रभाव समाप्त होता है। (5) अपामार्ग (चिरचिटा) की जड़ को पीसकर 1 तोला की मात्रा में गाय के घी के साथ सेवन करने से विषों का प्रभाव दूर होता है।
29. **विष निवारक** :– विष के प्रभाव से कोई व्यक्ति अचेत हो तो सफेद गुंजा (रत्ती) की जड़ साफ में चंदन की भांति घिसकर, धोकर वह पानी पिलायें। इस सफेद रत्ती की जड़ को कूट कर पानी में रखें और वह पानी ऐसे व्यक्ति को पिलायें, जिस पर किसी जीव–जंतु का काटा या विष चढ़ा हो तो वह उतर जाता है। यह क्रिया आवश्यकतानुसार एक से पाँच बार करना चाहिए।
30. **करेले का कड़वापन** :– करेले साफ कर इमली के पानी का तीन बार छौंक करने से कड़वापन दूर होगा।
31. **नीम की कड़वाहट** :– अजवायन चबाकर नीम का पत्ता खाने से मीठा लगेगा।

32. **चूहे के काटने पर** :– (1) कनेर की छाल का चूर्ण अथवा इसकी लकड़ी का चूर्ण संबंधित स्थान पर लगाया जाता है। लकड़ी का चूर्ण बनाने हेतु इसकी कुछ डंडियों को सुखा लिया जाता है और फिर उसे पीसा जाता है। इसकी लकड़ी का चूर्ण एक वर्ष तक प्रभावी बना रहता है। (2) कचनार की जड़ को पीसकर चूहे के काटने के स्थान पर लगाने से मूषक का विष प्रभावहीन हो जाता है।
33. **भांग का नशा** :– चावल की धोवन व अरहर की दाल का नमकीन पानी पीने से भांग का नशा दूर होता है।
34. **शराब छुड़ाने हेतु** :– (1) शुक्लपक्ष के शनिवार को संध्याकाल में संबंधित व्यसन पीड़ित व्यक्ति के हाथ से 11 हल्दी की गाँठ लेकर मौली का डोरा लपेट दें एवं उस व्यक्ति पर से सात बार उवार कर बावड़ी में डाल दें। ऐसा लगातार 7 दिनों तक करें। (2) जिसकी शराब छुड़ानी हो, उसकी जूठी शराब शीशी में डालकर शनिवार को उजाड़ जगह में दोपहर को गड्ढा खोदकर दबा दें तथा भैरवजी के मंदिर में जाकर यह प्रार्थना करें कि वह शराब छोड़ दे एवं सात शनिवार तक भैरवजी को तेल के पुओं का भोग लगाकर पुए जरुरतमंदों को बाँट दें। शराब की आदत धीरे–धीरे छूट जाएगी। (3) सात रविवार को एक कंगन भैरव मंदिर में चढ़ायें व सातवें रविवार को एक बोतल शराब की चढ़ायें।
35. **शराब का नशा दूर करना** :– मूली व फिटकरी को पानी में मिलाकर शराबी को पिलाने से एक मिनट में शराब का नशा दूर होता है।

-: विभिन्न पदार्थों व प्रयोजनों हेतु शिवलिंग :-

1. कस्तूरी व चंदन से बना शिवलिंग शिव कृपा, शांति, जीवन व सफलता देता है।
2. फूलों से बनाया गया शिवलिंग भूमि व मकान का लाभ देता है।
3. जौ–गेहूँ–चावल तीनों का आटा समान मात्रा में मिलाकर जो शिवलिंग बनाया जाता है, उसकी पूजा स्वास्थ्य, धन और संतान सुख देती है।
4. मिश्री–मिर्च–पीपल के चूर्ण में नमक मिलाकर जो शिवलिंग बनाया जाता है, उसका प्रयोग वशीकरण, सिद्धि साधना में किया जाता है।
5. भीगे तिल को पीसकर बनाया गया शिवलिंग अभिलाषा पूर्ण करता है।
6. यज्ञ कुण्ड से ली गई भस्म से जो शिवलिंग बनता है, उसका पूजन अभीष्ट देने वाला होता है।
7. किसी से प्रेम बढ़ाने के लिए गुड़ की डली से बनाए शिवलिंग का पूजन करना चाहिए।
8. सुख–शांति की प्राप्ति के लिए खांड(शक्कर) की चाशनी से बने शिवलिंग की पूजा करनी चाहिए।
9. बाँस के अंकुर को शिवलिंग के समान काटकर पूजा करने से वंशवृद्धि होती है।
10. दही को कपड़े में बांधकर निचोड़ देने के पश्चात् जो शिवलिंग बनता है, उसका पूजन धनलाभ और सुख–समृद्धि देने वाला होता है।
11. गुड़ में अन्न चिपकाकर शिवलिंग बनाकर पूजर करने से कृषि उत्पादन अधिक होता है।
12. किसी भी फल को शिवलिंग के समान रखकर उसकी पूजा करने से फल वाटिका में अधिक फल आते हैं।
13. आँवले को पीसकर बनाया गया शिवलिंग मुक्ति प्रदाता होता है।
14. नवनीत को अथवा वृक्षों के पत्तों को पीसकर बनाया गया शिवलिंग स्त्री के लिए सौभाग्यदाता होता है।
15. दूर्वा को शिवलिंगकार गूंथकर उसकी पूजा करने से अकाल मृत्यु का भय दूर होता है।
16. कपूर से बने शिवलिंग का पूजन भक्ति और मुक्ति देता है।
17. नीलम रत्न से बने शिवलिंग का पूजन सिद्धि देता है।
18. मोती के शिवलिंग का पूजन स्त्री के भाग्य की वृद्धि करता है।

19. चाँदी का शिवलिंग धन–धान्य बढ़ाता है।
20. स्वर्ण निर्मित शिवलिंग समृद्धि में वृद्धि करता है। यह मुक्तिप्रद भी होता है।
21. पीतल का शिवलिंग दरद्रिता का निवारण करता है।
22. लहसुनिया रत्न का शिवलिंग शत्रुओं का नाशक व विजयदाता होता है। इसी प्रकार स्फटिक तथा अन्य रत्नों का शिवलिंग मनुष्यों को अभीष्ट कामनाएं प्रदान करती हैं।
23. पारद से बने शिवलिंग की शास्त्रों में बहुत प्रशंसा है। इसे ज्योतिर्लिंग में भी श्रेष्ठ माना गया है। इसका पूजन सर्व कामप्रद, मोक्षप्रद, शिवस्वरूप बनाने वाली है। यह समस्त पापों का नाश करके जीवों को संसार के संपूर्ण सुख एवं मोक्ष देता हे।
24. नर्मदेश्वर शिवलिंग का भी ऐसा ही फल कहा गया है। ऐसा लिंग जो खुरदुरा, चिपटा, केवल एक ओर गोल दूसरी ओर चिपटा, जिसका सिर खुरदुरा हो, जिसमें कई छेद हो, जिसका सिर बहुत नुकीला हो या टेढ़ा हो, उसे पूजा के लिए नहीं लिया जाना चाहिए।
25. बहुत बड़ा, बहुत पतला, बहुत छोटा, जिस पर धारियाँ पड़ीं हो, ऐसा लिंग भी पूजा के लिए उपयुक्त नहीं होता है। अत्यन्त काला भौंरे के समान शिवलिंग ही पूजा के लिए सर्वश्रेष्ठ होता है।
26. बादल के समान श्याम रंग का, शहद के समान वर्ण का या श्वेत रंग का भी शिवलिंग पूजा के लिए उपयुक्त है।
27. कमलगट्टे के बराबर शिवलिंग या जामुन के फल के बराबर शिवलिंग गृहस्थ को घर में रखकर पूजा के लिए श्रेष्ठ माना गया है।
28. पीले, श्वेत, नीले, संतरे के समान रंग वाला शिवलिंग भी श्रेष्ठ माना जाता है। किंतु जिसमें अनेक रंग हो, उसे नहीं लिया जाना चाहिए।
29. जौ, गेहूँ व चावल से निर्मित शिवलिंग पुत्र लाभ व धन–समृद्धि देता है।
30. हरताल, त्रिकूट व लवण (नमक) से निर्मित शिवलिंग वशीकरण हेतु प्रयुक्त होता है।
31. स्वच्छ कपिल वर्ण के गाय के गोबर से निर्मित शिवलिंग ऐश्वर्य हेतु प्रयुक्त होता है।
32. पीतल व काँसे से निर्मित शिवलिंग मुक्ति हेतु प्रयुक्त होता है।
33. सीसे से निर्मित शिवलिंग शत्रु नाश हेतु प्रयुक्त होता है।
34. अष्टधातु से निर्मित शिवलिंग कष्टनाशक होता है।
35. स्फटिक से निर्मित शिवलिंग सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है।
36. तिल पिष्टोत्थ से निर्मित शिवलिंग अभिलाषा सिद्धि हेतु प्रयुक्त होता है।
37. केशों से निर्मित शिवलिंग सर्वशत्रु नाशक होता है।
38. सीताखण्डमय से निर्मित शिवलिंग आरोग्य लाभ हेतु प्रयुक्त होता है।
39. दूध–दही (दधिदुग्धो) निर्मित शिवलिंग कीर्त्ति, लक्ष्मी व सुख हेतु प्रयुक्त होता है।

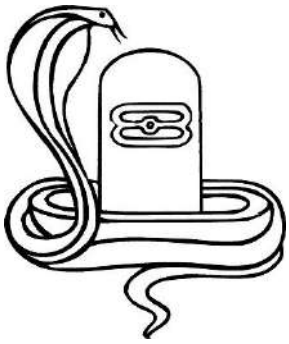

-: व्यापार,नौकरी व आजीविका के लिए प्रयोग :-

1. **व्यापार उन्नति** :– (1) मंगलवार को 11 पीपल के पत्ते लेकर लाल चंदन से प्रत्येक पत्ते पर राम–राम चार बार लिखें व हनुमान मंदिर में चढ़ाएं। यह कार्य शुद्धता व नियमितता से करें व गुप्त रखें। (2) कपूर व रोली को मिलाकर जलायें। दीवाली के दिन उस राख को गल्ले में रखें, व्यापार बढ़ेगा। (3) बुधवार को थोड़े से हरे मूंग को हरे वस्त्र में रखकर गणेशजी को अप्रित करें व व्यापार स्थल पर जाते समय थोड़ से मूंग अपने पास रखें, इससे आजीविका में वृद्धि होगी। (4) यदि व्यवसाय में मन नहीं लगाता हो तो मंगलवार को सवा मुट्ठी मूंग सिरहाने रखकर सुबह पक्षियों को डालें। (5) शनिवार के दिन सिन्दूर, चांदी का वर्क, पाँच मोतीचूर के लड्डू, चमेली का तेल व एक पान का बीड़ा (पान को पाँच लौंग लगायें) व नियमित रूप से शनिवार के दिन हनुमानजी को अप्रण करें तथा वर्ष में दो बार नवरात्र या मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़वायें, व्यवसाय में लाभ होगा। (6) व्यापार वृद्धि के लिए दो गोमती चक्र लेकर उन्हें बांधकर ऊपर चौखट पर लटका दें और ग्राहक उसके नीचे से निकले तो निश्चय ही व्यापार में वृद्धि होती है। (7) व्यापार में लाभ हेतु व्यापार स्थल पर आठ सुनहरी तथा एक काली मछली यदि फिश एक्वेरियम में रखी जाए तो व्यापार अच्छा चलता है। (8) जिस वृक्ष पर चमगादड़ रहता है, उस पेड़ को शनिवार के दिन न्योता देकर आएं, फिर रविवार को सूर्योदय से पूर्व उसकी एक डाल तोड़कर लाएं। इस डाल को गद्दी के नीचे दबा दें। (9) व्यापार में उन्नति न हो पा रही हो तो श्यामा तुलसी के चारों ओर उगी हुई खरपतवार को गुरुवार के दिन पीले वस्त्र में बांधकर व्यापार स्थल पर रखें। (10) व्यापार वृद्धि हेतु श्वेत लक्ष्मणा को गुरु पुष्य नक्षत्र में ग्रहण करें। पुत्र, बुद्धि एवं व्यापार वृद्धि हेतु उपयोगी है।
2. **व्यापार वृद्धि व स्थिरता** :– कच्चे सूत को केसर में रंग कर व्यापारिक स्थल पर बांधें, व्यापार बढ़ेगा। नौकरीपेशा अपनी दराज में रखें, तो उन्नति होगी।
3. **कार्य की असफलता** :– जिनके अधिकतर कार्य असफल होते हों तो प्रातःकाल सूर्य को नमन करके कच्चा सूत लेकर गणपति का मंत्र जप करते हुए 7 गांठ बांधें व अपनी जेब में रखकर कार्य पर जाएं, सुधार होगा।
4. **व्यापारिक यात्रा में जाने से पूर्व** :– व्यापारिक यात्रा में जाने से पूर्व किसी भी गुप्त स्थान पर 11 रुपये रखकर चले जाएं। आने पर किसी जरूरतमंद को खाना खिलाएं। रुपये गणेशजी के समक्ष भी रख सकते हैं।
5. **यश–प्रतिष्ठा हेतु** :– प्रातःकाल तांबे के लोटे में कुमकुम व दो दाने शक्कर डालकर सूर्य को अर्घ्य देने से कार्यों में यश–प्रतिष्ठा मिलती है।
6. **व्यापार सिद्धि** :– शुक्लपक्ष में प्रतिदिन सायंकाल को जहाँ चन्द्रमा की चांदनी हो, धूप–दीप व श्वेत पदार्थ का नैवेद्य अप्रित करें व दीपक रखें। यह साधना कर्मचारी वर्ग, व्यवसायी वर्ग हेतु लाभप्रद है।
7. **व्यवसाय व नौकरी में सहयोग व उन्नति हेतु** :– व्यवसाय में तरक्की या बाजार में पहचान बनाने या नौकरी में नियमित तरक्की पाने व बार–बार होने वाले तबादले से बचने हेतु, कार्य प्रारंभ करने से पूर्व 21 बार '**ॐ शं शनैश्चराय नमः**' का जप करें तथा शनिवार के दिन 2 लाल फल, 250 ग्राम गुड़, एक लाल वस्त्र, 5 मोतीचूर के लड्डू, सिंदूर, चांदी का वर्क तथा पान (बीड़ा) हनुमानजी के समक्ष अप्रण करें। कम–से–कम आठ शनिवार लाभ मिलेगा व अपने साथी व्यवसायियों, मातहत व सहयोगी कर्मचारियों का सहयोग प्रशंसा प्राप्त होगी।
8. **व्यापार में लाभ** :– फैक्ट्री या कारखाने की भूमि पूजन या उद्घाटन के समय चांदी का सप्र पूर्व दिशा में गाड़ देने से धंधा अच्छा चलता है।
9. **निर्यातकों के लिए** :– सोमवार को चांदी में मोती जड़वाकर गंगाजल से धोकर गाय के दूध में डालें। शक्कर, तुलसी का पत्ता, सफेद फूल डालें। शुद्ध होकर धारण करें।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

10. **व्यापार स्थल को नजर से बचाने के लिए** :– मंगलवार या शनिवार को सात साबुत हरी मिर्ची डंठल सहित लेवें, एक नींबू में पिरोवें व व्यापार स्थल पर टांगे, नजर नहीं लगेगी।
11. **काम न मिलने पर** :– एक बड़ा पीला नींबू लेकर उसके 4 बराबर टुकड़े करें। शाम को चौराहे पर चारो दिशाओं में फेकें। 7 दिन तक नियमित रूप से करें, काम की तलाश समाप्त होगी।
12. **नौकरी या साक्षात्कार हेतु** :– यदि कोई नौकरी की परीक्षा या साक्षात्कार देने अथवा कार्य ग्रहण करने जा रहे हें तो सवा मुट्ठी साबुत मूंग लेकर कुछ दाने उस पर छिड़कें व उसके जाने के बाद झाड़ू लगाकर बाहर फेंक दें।
13. **व्यवसाय में वृद्धि हेतु** :– यदि व्यवसाय में वृद्धि न हो तो एक पीला नींबू काटकर व्यवसाय स्थल पर रखें। इसके साथ एक मुट्ठी काली मिर्च और एक मुट्ठी पीली सरसों रखें व अगले दिन जब दुकान खोलें तो उसे किसी दूर वीराने में जमीन में गाड़ें।
14. **कारखाने में लाभ** :– उद्योग या कारखाने में लाभ नहीं हो रहा हो तो शुभ मुहूर्त्त में कारखाने के स्थल पर पीली मिट्टी डलवायें तथा नैर्ऋत्य कोण को ऊँचा कर दें। धीरे–धीरे लाभ शुरू होगा।
15. **भूमि दोष** :– यदि भूमि चयन में दोष हो अर्थात् मिट्टी का रंग अनुकूल न हो तो चार फुट चारों ओर से गड्ढे खोदकर पीली मिट्टी भरवा दें, भूमि दोष शांत होगा।
16. **आजीविका वृद्धि** :– शुक्रवार को गरीबों में गुड़–चने का प्रसाद देने व मंगलवार को लाल मुँह के बंदरों को चने देने से आजीविका के साधन में वृद्धि व लाभ होता है।
17. **कारोबार में लगातार हानि** :– यदि कारोबार में लगातार हानि हो रही हो तो सुरमा जमीन में दबाएं, धीरे–धीरे लाभ होना शुरू हो जाएगा।
18. **धन वृद्धि** :– यदि कहीं मोर नाचता दिखे तो उसके पैरों की मिट्टी उठाकर धूप–दीप करके अपने पास रखें।
19. **आर्थिक संकट** :– रविपुष्य योग में कौए का दायाँ नाखून किसी ताबीज सा तांबे की डिबिया में रखकर धारण करने से आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ता है।
20. **स्थायी रोजगार** :– नारियल के छिलके जलाकर राख में उसी नारियल का पानी मिलाकर लुगदी बनाएं व 7 पुड़िया बनायें। 4 पुड़िया घर के चार कोनों में रखें, 1 पुड़िया छत पर, 1 पुड़िया पीपल की जड़ में रखें व 1 पुड़िया जेब में रखें। किसी की भी छाया न पड़ने दें अर्थात् अन्य को पता न चले। 7 दिन बाद सभी को एकत्र करें, जहाँ आजीविका कमानी है, उसके द्वार पर किसी कोने में छुपाएं।
21. **स्थायी भागीदारी** :– मंगल व शनिवार को भागीदारी न करें। शनिवार को कानूनी कार्यवाही कर सकते हैं, भागीदारी निर्णय न करें। भागीदारी के कागज पर थोड़ा हल्दी का छींटा लगाएं।
22. **बंधा व्यापार खोलने हेतु** :– रविपुष्य नक्षत्र में श्वेत अपामार्ग ग्रहण कर उसे अपने पास रखने से कभी धन की कमी नहीं आती एवं किया हुआ तंत्र प्रयोग भी निष्फल हो जाता है।
23. **दीर्घकालीन योजना हेतु** :– शनिवार को दो जायफल हनुमान जी के मंदिर में चढ़ायें व पुनः उठा लें। अगले शनिवार को इसका घी में हवन करें व इसकी राख अपने पास रखकर नित्य थोड़ी–थोड़ी जुबान पर रखें व तिलक लगायें। अगले शनिवार पुनः इसी प्रकार करें। ऐसा सोलह शनिवार करने से दीर्घाकलीन योजना सफल होती है।
24. **ग्राहकी कम होने पर** :– शुक्लपक्ष के शुक्रवार को एक मुट्ठी राई लेकर सात शुक्रवार श्रीसूक्त का नित्य पाठ करें। पाठ पूरा होने पर राई पर सात बार रोज फूंक मारें तथा मन–ही–मन ग्राहक बढ़ोत्तरी की प्रार्थना करें। सातवें शुक्रवार को धूप–बत्ती कर राई को दुकान पर उसार कर दुकान की ओर आने वाले मार्ग पर थोड़ी–थोड़ी बिखेर दें, ग्राहकी बढ़ जाएगी।
25. **साझेदारी बनाए रखने हेतु** :– दीपावली को कच्चा सूत लेकर लक्ष्मी के सम्मुख रखें व रोली के छींटे मारकर व्यापार स्थल पर रख उस कच्चे सूत को टांगें, आपकी साझेदारी बनी रहेगी।
26. **फैक्ट्री कार्य निर्माण** :– फैक्ट्री कार्य निर्माण को शीघ्र प्रगति के लिए फैक्ट्री परिसर में पुष्य नक्षत्र वाले दिन अनार का पौधा लागने से कार्य जोर–शोर से प्रारंभ होता है।

27. **बेरोजगारी दूर करने हेतु** :– (1) रोजगार प्राप्ति की समस्या हो तो इसके लिए एक बड़ा बेदाग नींबू लेकर चौराहे पर प्रातः काल चार टुकड़े काटकर चारो दिशाओं में फेंकें। (2) 300 ग्राम काले उड़द का आटा लेकर बिना छाने एक रोटी धीमी आँच पर सेंक लें। इसके चौथाई भाग को तोड़कर काले रंग के कपड़े में बांध लें तथा शेष पौन रोटी को 101 छोटी गोलियाँ बनाकर एक–एक करके मछलियों को खिला दें। कपड़े में बंधी रोटी को मछलियों को दिखाते हुए एक साथ पानी में बहा दें। यह प्रयोग 43 दिनों तक नित्य करें। इससे बेरोजगारी दूर हो जाएगी। इससे साधन अवश्य हाथ लगेगा।
28. **धन–सम्पदा की वृद्धि** :– साधना, आध्यात्मिक प्रयोग, तंत्र–मंत्रादि की साधना आदि के लिए पुष्य नक्षत्र सर्वश्रेष्ठ होता है। यदि इस दिन अभिमंत्रित कर इमली का बांदा घर में रखा जाए तो धन–संपदा में वृद्धि होती है।
29. **बंद उद्योग हेतु** :– व्यापार का उद्देश्य धन लाभ होता है। बंद पड़े उद्योग को चालू करने हेतु शंख माला का प्रयोग करने से नजर बाधा दूर होकर लक्ष्मी व गणपति प्रसन्न रहते हैं। इसके लिए किसी भी शुक्लपक्ष में सोमवार या शुक्रवार के दिन प्रातःकाल स्नान करके लक्ष्मी व गणपति के मंत्रों का जप करें। दाये हाथ में जल, सुपारी, पुष्प आदि लेकर संकल्प करें। फिर कलश स्थापना करें व प्रार्थना करें। धूप,दीप अगरबत्ती जलायें तथा गुरु पूजन व गणेश पूजन करें।
30. **त्वरित लाभ हेतु** :– हनुमानजी के ऊपर एक हजार लाल पुष्प अप्रित करके समस्त दुष्ट ग्रहों तथा समस्त शत्रुओं से छुटकारा पाया जा सकता है। इसके साथ ही 'संकटमोचक यंत्र' धारण करें व संकटमोचक स्तोत्र का पाठ करने से त्वरित लाभ होता है।
31. **चमत्कारिक परिणाम** :– पीपल की सेवा करने वाले व्यक्ति किसी न किसी चमत्कारिक ढंग से अवश्य लाभान्वित होते हैं।
32. **सर्वकार्य सिद्धि व सफलता हेतु** :– (1) रविवार पुष्य नक्षत्र के दिन तुलसी की पूर्व में प्राप्त की गयी जड़ को गंगाजल एवं धूप–दीप से पूजा करके दाहिने हाथ में बांध लें तो सब कार्यों में सफलता की उम्मीद बढ़ जाती है तथा अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहता है। (2) अशोक वृक्ष का एक पत्ता सर पर धारण करने से सफलता प्राप्त होती है। सिर पर रखकर आदर देकर अपने पास रखें। अशोक के बीज को को तांबे के ताबीज में भरकर कंठ/गले में धारण करने कसे सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं।
33. **नये कार्य/व्यवसाय हेतु** :– (1) पुराना व्यवसाय चल रहा तो व नया व्यवसाय और करना चाहें तो शनिवार को पुराने कार्यालय से कोई भी लोहे की वस्तु नई दुकान में रखें। रखने से पूर्व उस स्थान पर थोड़े काले साबुत उड़द डालें, पुराने के साथ–साथ नया व्यवसाय भी चलेगा। (2) नया कार्य आरंभ करने से पूर्व प्रस्थान करते समय घर की कोई महिला एक मुट्ठी काले उड़द उस व्यक्ति के ऊपर से उतार कर धरती पर छोड़ दें, तो कार्य सिद्ध होता है।
34. **घाटे में व्यापार चलना** :– भरपूर मेहनत के बाद भी व्यापार में बरकत न हो, ग्राहक कम हो, माल न बिके, लगातार घाटा चल रहा हो रविवार को एक मुट्ठी काले उड़द लेकर '**श्रीं**' मंत्र का जप करते हुए व्यवसाय स्थल पर 7 बार उवार कर दुकान में बिखेर दें। अगले दिन मोरपंख के झाड़ू से एकत्र करके चौराहे पर डालें। ऐसा सात रविवार तक करें। ग्राहकों में वृद्धि, व्यवसाय में लाभ, व्यापार में उन्नति होगी।
35. **व्यापार स्थल** :– शनिवार को एक कार्बन पेपर लेकर उसमें आग लगाकर दुकान में सिरे से चारों ओर शुरु करके पूरे क्षेत्र में अंदर की तरफ घुमाएं व 4 कौड़ियों को साथ रखकर कार्बन को बाहर फेंके व कौड़ी घुमाकर चारो दिशाओं में फेंकें, हितकारी होगा।
36. **सरकारी नौकरी (राज कृपा)** :– नौकरी प्राप्ति में बाधा अथवा असफलता हो या पदोन्नति में रुकावट या राज्य अधिकारियों से अनबन हो तो जब चंद्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र में हो उसके पहले दिन सूर्यास्त को जामुन के वृक्ष पर जल चढ़ाकर धूप–बत्ती करें व अगले दिन प्रातःकाल थोड़ी सी जड़ ज्येष्ठा नक्षत्र में लेकर अपने पास रखने से सरकारी तंत्रों/कार्यों में लाभ मिलता है। यह राज्यकृपा प्राप्ति का उत्तम उपाय हैं।

37. **नौकरी में उन्नति** :– मीठे चावल पकाकर एक सप्ताह तक कौवों को खिलाएं। जब कौवे इकट्ठे हो जाएं तो वह चावल मुट्ठी में भरकर उन पर फेंकें। जब कौवे खाने को झपटे तो उनमें लड़ने से बाल झड़ेंगे, उन्हें इकट्ठा करें। जब काफी बाल इकट्ठे हो जाएं तो शहद व मोम मिलाकर धागा बनाकर अपने पास रखें। पत्र लिखते समय या अधिकारी से मिलते समय वह धागा हाथ में बांधकर ईश्वर स्मरण करें, नौकरी में उन्नति होगी।
38. **नौकरी या साक्षात्कार हेतु** :– यदि कोई नौकरी की परीक्षा या साक्षात्कार देने अथवा कार्य ग्रहण करने जा रहे हैं तो सवा मुट्ठी साबुत मूंग लेकर कुछ दाने उस पर छिड़कें व उसके जाने के बाद झाड़ू लगाकर बाहर फेंक दें।
39. **स्थानान्तरण** :– लाल मिर्ची के 21 बीज लेकर 21 दिनों तक सूर्य को चढ़ाने से अपनी मनचाही जगह स्थानान्तरण होता है।
40. **रुका हुआ कारोबार पुनः चलाने हेतु** :– व्यावसायिक स्थल पर शुक्लपक्ष के शुक्रवार को शूकर (सुअर) का दाँत लें एवं गंगाजल से शुद्ध कर भगवान वाराह का ध्यान करें तथा दुकान या स्थल पर 7 बार उवारें एवं उसको दीवार पर इस प्रकार टांकें कि वह बाहर से दिखे। रुका हुआ कारोबार पुनः चलने लगेगा।
41. **कर्मचारियों को रोकने** :– शनिवार को कारखाने जाते समय मार्ग में पड़ी कील उठाएँ व उसे भैंस के मूत्र से धोकर व उसके पश्चात गंगाजल से धोकर जहाँ कर्मचारी काम करते हैं, वहाँ ठोकें। कर्मचारी भागेंगे नहीं।
42. **बिक्री वृद्धि हेतु** :– शुक्लपक्ष के गुरुवार को व्यापार स्थल पर गंगाजल से धोकर हल्दी से साथिया बनाकर चने की दाल व गुड़ रखें। तत्पश्चात् स्वास्तिक बनाएं।
43. **अच्छी ग्राहक** :– व्यावसायिक परिसर के मुख्य द्वार के सामने या अंदर लॉबी में एक पानी का फव्वारा लगा दिया जाय तो ग्राहकी अच्छी रहती है।
44. **उच्चाधिकारी का भय समाप्त** :– आश्लेषा नक्षत्र में आँवले के वृक्ष की जड़ लाकरक हाथ में बांधने से चोर, बाघ अथवा उच्चाधिकारी का भय समाप्त हो जाता है।
45. **मुकदमे में जीत हासिल करने के लिए** :– सोते वक्त दक्षिण की ओर सिरहाना रखें। शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से बजरंग बाण का पाठ शुरू करें। मंगलवार का व्रत रखें तथा एक तांबे की अंगूठी अनामिका में धारण करें। मुकदमे से संबंधित सभी कागजात पूजा स्थान पर ईश्वर के सिंहासन अथवा धार्मिक पुस्तकों के नीचे रखें।
46. **पदोन्नति हेतु** :– प्रमोशन नहीं हो रहा तो एक गोमती चक्र लेकर शिव मंदिर में शिवलिंग पर चढ़ा दें। निश्चय ही प्रमोशन के रास्ते खुल जाते हैं।
47. **महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता** :– अगर आपको किसी महत्वपूर्ण काम के लिए जाना हो, तब आप एक कागजी नींबू लें। उसमें चारो कोनों में साबुत लौंग गाड़ दें। यह नींबू आप अपनी जेब में रखकर चले जाएं व साथ ही नासिका का जो स्वर चले, वही पैर पहले घर से बाहर निकालें। उस दिन कार्य में सफलता प्राप्त होगी।
48. **परेशानियाँ दूर करने हेतु** :– बुधवार के दिन प्रातःकाल अपने काम पर जाने से पहले एक नींबू लेकर उसके दो बराबर भाग करें। घर से निकलने के बाद जो भी पहला मोड़ आए, उस समय यक टुकड़ा आगे और दूसरा पीछे फेंककर चले जाएं। उस दिन सारे काम बनेंगे। परेशानियाँ स्वयं ही दूर हो जाएंगी।
49. **धन वृद्धि** :– यदि बरगद वृक्ष के नीचे वट बीज से उत्पन्न छोटा पौधा मिल जाए तो उसे शुभ मुहूर्त्त में लाकर पूजा करके अपने घर में लगायें। जैसे–जैसे वृक्ष बढ़ेगा, वैसे–वैसे आपकी धन–संपदा बढ़ेगी।
50. **अन्न का संकट** :– बरगद का पत्ता आश्लेषा नक्षत्र वाले दिन तोड़ कर घर में लाकर रखने से घर में अन्न का संकट कभी नहीं आएगा।
51. **अचानक चलता हुआ व्यवसाय बंद हो** :– शनिवार को कार्बन पेपर लेकर उसमें आग लगाकर व्यवसाय स्थल के एक कोने से शुरू कर पूरे क्षेत्र में अंदर दीवारों पर चारों तरफ घुमायें एवं बाहर फेंक दें।
52. **राजकीय विपत्ति** :– यदि सरकारी तंत्र द्वारा परेशान किए जा रहे हों अथवा राजकीय विपत्ति से परेशान हों तो दुकान आदि में सूर्य यंत्र की स्थापना एवं सूर्य मंत्र की साधना करने से परेशानियों से छुटकारा मिलेगा।

53. **आजीविका साधन वृद्धि** :– **(1)** मंगलवार को बंदरों को चने खिलायें, इससे आजीविका साधन में वृद्धि होगी। (2) बुधवार को बेसन के लड्डू स्वयं पर से 7 बार उवारें व गुरुवार को प्रातःकाल पीली गाय को खिलायें। (3) जब रविवार को पंचमी तिथि हो तो चील का पंख लेकर गूगल की धूनी देकर जलायें व भस्म को लाल कागज या कपड़े में रखकर पुड़िया बनाकर जेब में रखकर काम ढूंढने जाएं।
54. **राज्यकार्य हेतु** :– राज्य में सम्मान प्राप्ति हेतु दो गोमती चक्र किसी ब्राह्मण को दान में दे दें तो राज्य में अटके हुए कार्य पूरे हो जाते हैं।
55. **भाग्योदय** :– भाग्योदय के लिए तीन गोमती चक्र का चूर्ण बनाकर घर के बाहर बिखेर दें तो दुर्भाग्य समाप्त होता है।
56. **व्यापारिक पूछताछ** :– टेलीफोन आग्नेय कोण में या अपनी दाईं ओर रखने से व्यापारिक पूछताछ बहुत आती है।
57. **अनिच्छा से कार्य करना पड़े** :– मजबूरी में अनिच्छा से कार्य करना पड़ता हो तो 2 लौंग, 1 कपूर, गायत्री मंत्र से 3 बार अभिमंत्रित करके पूर्व की ओर मुख करके जलाएं व भस्मी जीभ पर रखें, मजबूरी समाप्त होगी।
58. **कार्य अनिच्छा** :– (1) सक्षम होने पर भी कार्येच्छा न हो तो गुरुवार को केले की जड़ आमंत्रित कर लाएं व पीले कपड़े में बांधकर गुरु मंत्र 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः' का जप करें। कार्य करने की इच्छा जागृत होगी। (2) ऐसा लगे कि बीमारी के कारण चाहकर भी काम न कर सकें, तो पुष्य नक्षत्र में सहदेवी की जड़ लाकर रखें।
59. **कार्यकुशलता के बावजदू दिल चुराए** :– रविवार को एक शराब की बोतल लें और उसे भैरव पर अप्रण करके, बोतल 7 बार पीड़ित व्यक्ति पर उतार कर किसी को दान देवें या चौराहे पर पीपल के पेड़ के नीचे रखें। दिल चुराना छोड़ देगा।
60. **लेखाबही** :– व्यापार संबंधी लेखाबही, रोकड़, डायरी, ऑर्डर बुक पर केसर या हल्दी से छींटा देना चाहिए।
61. **नौकरी में शीघ्र सफलता** :– नौकरी में आवेदन पत्र करते समय कौवे का रक्त लगाकर हस्ताक्षर करने से नौकरी में शीघ्र सफलता मिलती है।

–: ८४ प्रकार के रत्नों और उपरत्नों की जानकारियाँ :–

1. **माणिक्य (Ruby)** :– माणिक्य सूर्य का रत्न है। यह एक बहुमूल्य रत्न है। प्रायः माणिक्य रंग में यह गुलाबी व लाल होता है। औषधीय रूप से माणिक्य में वात, पित्त, कफ जनित रोगों को शांत करने की शक्ति होती है। माणिक्य क्षय रोग, बदन दद्र, उदर शूल, पक्षाघात, चक्षु रोग, हार्निया, कब्ज आदि रोग को दूर करता है। इसके अलावा माणिक्य रक्तवर्द्धक, वायुनाशक और उदर रोग में लाभकारी होता है। माणिक्य नेत्र ज्योति को बढ़ाने वाला है तथा अग्नि, कफ, वायु तथा पित्त दोष का शमन करता है। माणिक्य की भस्म के सेवन से आयु की वृद्धि होती है। माणिक्य की भस्म शरीर से उत्पन्न होने वाली उष्णता और जलन को दूर करती है। पौराणिक मान्यता है कि माणिक्य घाव और विष प्रभाव आदि से सुरक्षा में उपयुक्त है।
2. **हीरा (Diamond)** :– हीरा शुक्र का रत्न है। हीरा एक बहुमूल्य रत्न है। यह सफेद, हल्का पीला, हल्का लाल, गुलाबी तथा हल्के काले रंग का होता है। पौराणिक मान्यता है कि औषधीय रूप से हीरा धारण करने से विषैले जीव–जंतुओं का भय नहीं रहता। वृद्ध व्यक्ति के हीरा धारण करने से उनके बल एवं साहस में वृद्धि होती है। वंश वृद्धि हेतु हीरा धारण करना अत्यंत लाभदायक होता है। हीरा धारण करना शुक्र जनित रोगों में अत्यंत लाभदायक माना जाता है।

3. **पन्ना (Emerald)** :– पन्ना बुध ग्रह का रत्न है। इसका रंग हरा होता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार औषधीय रूप से पन्ना धारण करने से शारीरीक बल एवं सौन्दर्य में वृद्धि होती है। पन्ना बुखार, सन्निपात, उल्टी, विष, बवासीर, दमा, मिर्गी, पागलपन, आंत्रशोथ इत्यादि रोगों में अति लाभदायक है। पथरी, मूत्र रोग आदि में पन्ना की भस्म लाभदायक होती है।
4. **नीलम (Blue Saphire)** :– नीलम शनि का रत्न है। इसका रंग नीला, बैंगनी एवं हल्के आसमानी रंग का होता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार औषधीय रूप से शनि रत्न नीलम धारण करने से नेत्र रोग, दिमाग की गर्मी, पागलपन, ज्वर, अजीर्ण, उपदंश, खाँसी, हिचकी, मुँह से खून आना, उल्टी आदि रोगों में लाभ प्राप्त होता है।
5. **लहसुनिया (Cat's Eye)** :– यह केतु का रत्न है। लहसुनिया दो प्रकार के होते हैं। क्वार्टज लहसुनिया और क्रायसोबेरील लहसुनिया। इसका रंग प्रायः सुनहरा, लाल, पीला, काला, सफेद, हरा, धूम्रवर्ण का होता है। जिस लहसुनिये में बिल्ली की आँख जैसा सूत दिखलाई पड़ता हो, वह रत्न श्रेष्ठ होता है। प्रायः उत्तम सूत वाले क्रायसोबेरील लहसुनिया अधिक मूल्यवान होते हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार औषधीय रूप से वैदूर्य रत्न धारण करने से यह वायुगोला तथा पित्त जन्य रोगों का नाशक होता है। नेत्र रोग, मधुमेह, उपदंश में लाभदायक होता है। लहसुनिया धारण करने से पाण्डुरोग में शरीर का पीलापन शीघ्र कम होने लगता है। पाचन शक्ति को बढ़ाने में भी वैदूर्य रत्न लाभकारी है।
6. **मोती (Pearl)** :– मोती चंद्रमा का रत्न है। मोती सफेद, काला, नीला, पीला, बैगनी, हल्का गुलाबी तथा सतरंगी इत्यादि रंगों के होते हैं। ज्योतिषिय मान्यता के अनुसार जिन लोगों का मन अशांत रहता है और जिनको अधिक क्रोध आता है, उन्हें मोती धारण करने से विशेष लाभ प्राप्त होते हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार औषधीय रूप से मोती विभिन्न रोगों को नाश करने में भी सहायक होता है। ज्वर में मोती धारण करना लाभप्रद रहता है। मोती मिर्गी, उन्माद, पथरी, आंत्रशोथ, अल्सर एवं पेट आदि के रोगों में लाभदायी होता है। यह हृदयगति को नियंत्रण करने में सहायक होता है।
7. **मूंगा (Coral)** :– यह मंगल का रत्न है। मूंगा मुख्यतः लाल, सिंदूरी, गेरूआ, सफेद, काला आदि मिलते–जुलते रंगों में पाया जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार औषधीय रूप से पीलिया, मिर्गी व हृदय रोग में भी मूंगे की भस्म का सेवन लाभकारी रहता है। बवासीर में मूंगा अत्यंत लाभदायक होता है। जानकारों के मतानुसार यदि पुराना बवासीर हो तो लगभग एक मास हर दिन रात्रि में मूंगे को पानी में रात भर डूबा कर रख दें। उस पानी को सुबह पीने से बवासीर जड़ से समाप्त हो जाता है। मूंगे की भस्म का सेवन शारीरिक बल में वृद्धि करता है। उदर संबंधी रोगों में भी इसका सेवन लाभदायक होता है। मूंगे को रात में जल में डूबा कर रखने से सुबह इस जल को आँखों में लगाने से नेत्र ज्योति तेज होती है।
8. **पुखराज (Yellow Sapphire)** :– यह देवगुरु बृहस्पति का रत्न है। पुखराज रत्न को विद्वान ग्रंथकारों ने सभी रत्नों का राजा माना है। पुखराज पीले, सफेद, गुलाबी, हरा, केसरिया और नीले रंगों का होता है। ऐसी मान्यता है कि फूलों के जितने कुदरती रंग होते हैं, पुखराज भी उतने ही रंगों में पाया जाता है। पीले रंग का पुखरात सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार औषधीय रूप से पुखराज पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खाँसी, दंत रोग, अल्सर, सन्निपात, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त ज्वरादि आदि कई प्रकार के रोगों के ईलाज के लिए प्रयोग किया जाता रहा है। गुरु ग्रह को जीवनदाता माना गया है। गुरु वसा एवं ग्रंथियों से सीधा संबंध रखता है। इस लिए गला रोग, सीने का दद्र, श्वास रोग, वायु विकार, टीबी, हृदय रोग में पुखराज धारण करने से लाभप्रद होता है। पीले रंग का पुखराज मोटापे को नियंत्रित करने के लिए उत्तम रत्न है एवं जिस व्यक्ति का स्वास्थ्य दुर्बल रहता हो, उन्हें अपनी सेहत में सुधार के लिए पुखराज धारण करना भी लाभप्रद होता है। पुखराज धारण करने से रक्तचाप नियंत्रित रहता है।
9. **गोमेद (Gomed)** :– यह राहु का रत्न है। गोमेद का रंग शहर जैसा होता है। शास्त्रोक्त मत से गोमेद का रंग गाय के मूत्र के समान होने से इसे गोमेद कहा जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार औषधीय रूप से गोमेद धारण करने से हृदय, चर्म, नेत्र, तिल्ली, बवासीर, पाण्डुरोग, नकसीर, ज्वर, पैरों का दद्र एवं मानसिक

रोगों का शमन होता है। गोमेद धारण करने से भ्रम जनित रोगों का नाश होता है। गोमेद धारण करने से अभक्ष्य खाद्य पदार्थों के सेवन, नशा, बुरी आदत, परस्त्री/पुरुषों में आसक्ति कम होती है। गोमेद धारण करने से पाचन शक्ति में सुधार होता है।

10. **फिरोजा (Firoza/Turquoise)** :– यह नीलम का उपरत्न है। फिरोजा आसमानी रंग का कुछ हरापन लिए होता है। निशापुरी/ईरानी फिरोजा श्रेष्ठ होता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार औषधीय रूप से फिरोजा संक्रमण, ऊँचा रक्तचाप, अस्थमा, दाँत और मुँह की समस्या एवं सूर्य के विकिरण से रक्षा करता है। शराब की लत छुड़ाने के लिए क्रिस्टल चिकित्सकों द्वारा फिरोजा की सिफारिश की जाती है।
11. **लालड़ी Lalri)** :– यह लाल गुलाबी, कत्थई रंग का होता है। यह सूर्य का रत्न माणिक्य का उपरत्न है।
12. **जबरजद्द (Zabarjadd or Peridot** :– यह तोते जैसे हल्के/गहरे हरे रंग का होता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार औषधीय रूप से मिर्गी में लाभप्रद होता है। यह बुध का रत्न पन्ना का उपरत्न है।
13. **ओपल** या उपल **(Opal)** :– ओपल प्रायः सभी रंगों में प्राप्त होता है। इस पर सब रंगों का असर पड़ता है। ओपल को शुक्र का उपरत्न कहा जाता है। कुछ पौराणिक जानकारों ने ओपल को चंद्र का उपरत्न भी माना है। यह एक नरम पत्थर है।
14. **तुरमुली (Tourmaline** :– तुरमुली विभिन्न रंगों में प्राप्त होते हैं। यह एक नरम पत्थर है। तुरमुली शुक्र का उपरत्न है। लेकिन इसके विभिन्न रंगों के अनुसार शुक्र के साथ अन्य ग्रहों के संयोजन में धारण करने की सलाह दी जाती है। हरा = शुक्र + बुध, पीला = शुक्र + बृहस्पति, नीला = शुक्र + शनि, ब्राउन (कत्थई) = शुक्र + राहु,
गुलाबी = शुक्र + सूर्य या मंगल, सफेद = शुक्र + चंद्रमा
15. **नरम या नर्म (Naram or Spinel Ruby)** :– यह सूर्य का रत्न माणिक्य का उपरत्न है। यह रत्न लाल जद्रपन तथा श्यामलता लिए हुए होता है।
16. **सुनहला या सुनैला (Sunehla or Golden Topaz)** :– यह गुरु का रत्न पुखराज का उपरत्न है। सुनहला प्रायः सुनहरा, हल्का/गहरा पीला होता है। यह पुखराज का उपरत्न है।
17. **कटैला या कटहला (Katela or Amethyst)** :– यह शनि रत्न नीलम का उपरत्न है। यह बैंगनी रंग का या नीले रंग का होता है। कम मूल्य के अधिकतर कटैला दुरंगे होते हैं। एक रंग का कटैला उत्तम माना जाता है।
18. **संगसितारा या सितारा (Gold Stone/ Sitara)** :– यह ज्यादातर गेरुआ रंग या भूरे रंग का होता है। तथा इसके चारों तरफ स्वर्ण/ रजत कणों के समान चमकीले छींटें होते हैं, जिससे यह खूब चमकता है। मानसिक हताशा और निराशा को दूर करने में यह सहायक माना जाता है।
19. **स्फटिक Crystal or Rock Crystal)** :– स्फटिक रत्न प्रायः पारदर्शी व रंगहीन चमकीला होता है। लेकिन यह हल्के पीले, गुलाबी, मटमैले आदि रंगों में भी पाया जाता है। स्फटिक शुक्र का उपरत्न माना जाता है।
20. **गोदंती (Moon Stone)** :– गौदंता/गौदंती गाय के दाँत के समान श्वेत रंग का लेकिन थोड़ा जद्रपन लिए होता है। इसमें सूत भी पड़ते हैं। यह केतु का उपरत्न है। यह चमकहीन शुष्क, नरम रत्न है, जो शीघ्र खराब होता है।
21. **तामड़ा (Tamra or Garnet)** :– यह लाल, गुलाबी रंग में काले रंग की लाली लिए होता है। यह सूर्य का रत्न माणिक्य का उपरत्न है। तामड़ा चमकहीन अर्धपारदर्शी या अपारदर्शी शुष्क, नरम रत्न है, जो शीघ्र खराब होता है।
22. **संगेमरियम/माहेमरियम (Jasper)** :– यह दोरंगा रत्न होता है। इसमें पीली मिट्टी, गहरे रंग की विशेष प्रकार की रेखाएं बनी होती हैं। प्रायः मरियम बवासीर/पाइल्स के रोगी हेतु लाभप्रद माना गया है। संगेमरियम शांति के लिए भी धारण किया जाता है। अन्य मान्यताओं के अनुसार यदि गर्भवती महिला धारण करे, तो प्रसव के समय दर्द कम होता है।

23. **सिंदुरिया/सिंदूरी (Sinduriya)** :– यह गुलाबी रंग का कुछ सफेदी लिए होता है। यह मंगल के रत्न मूंगे का उपरत्न है।
24. **काला नीली/काका नीली (Lolite/Kakanili)** :– नीला व काला मिश्रित वर्ण का मुलायम, हल्का, पानीदार, पारदर्शी रत्न है। यह शनि का रत्न नीलम का उपरत्न है।
25. **धुनेला/धुनहला (Smoky Quartz)** :– धुएं के समान रंग का यह रत्न पारदर्शी, नर्म और चमकीला होता है। यह शनि का रत्न नीलम का उपरत्न है।
26. **बेरूज या बैरूज (Beruj or Aquamanine)** :– इसका रंग हल्का हरा, पीला, नीला, आसमानी आदि रंगों का होता है। यह शनि का रत्न नीलम का उपरत्न है।
27. **मरगज (Margajeor Jade)** :– यह बुध के रत्न पन्ने का उपरत्न है। यह प्रायः हरे रंग का होता है। लेकिन नीला, श्वेत आदि रंगों में भी पाया जाता है। मरगज में रंगों के गाढ़े/हल्के छींटे होते हैं। यह नर्म फीकी चमक वाला रत्न है।
28. **बांसी/वांशी** :– यह बुध के रत्न पन्ने का उपरत्न है। बांसी हल्के हरे रंग का चमकीला नरम पत्थर होता है।
29. **पितौनिया (Pitoniya/Bloodstone)** :– यह बुध का रत्न पन्ने का उपरत्न है। यह हरे रंग का पत्थर होता है। इसकी सतह पर लाल रंग के छींटे होते हैं।
30. **मकनातीस (Magnetic or Load stone)** :– प्रायः मकनातीस काले रंग का चमकदार पत्थर होता है। इसे चुम्बक भी कहते हैं। यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। मकनातीस ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में विशेष लाभ देता है। मकनातीस लोहे को अपनी तरफ खींचता है एवं चुम्बक की तरह कार्य करता है।
31. **लूधया (Ludhya)** :– यह सूर्य के रत्न माणिक्य का उपरत्न है। मजीठ के समान लाल रंग का होता है।
32. **रोमनी (Romni)** :– यह सूर्य का रत्न माणिक्य तथा मंगल के रत्न मूंगे का उपरत्न है। यह गहरे लाल रंग का श्यामवर्णीय होता है।
33. **दुर्वेनजफ** :– कच्चे धान के समान होता है।
34. **सुलेमानी (Onyx)** :– सुलेमानी प्रायः काले रंग का पत्थर होता है। कुछ सुलेमानी पर सफेद रंग की धारियाँ होती हैं। सुलेमानी को शनि के रत्न नीलम का उपरत्न माना जाता है।
35. **आलेमानी (Onyx)** :– आलेमानी भी सुलेमानी की जाति का रत्न है। इसका रंग हल्का भूरा होता है, जिस पर भूरे रंग की धारियाँ होती हैं।
36. **जजेमानी (Onyx)** :– जजेमानी भी सुलेमानी की जाति का होता है। इसका रंग भूरा या हल्का पीला होता है। इस पर हल्के रंग की धारियाँ दिखलाई पड़ती हैं।
37. **सावोर (Savoru)** :– यह बुध के रत्न पन्ने का उपरत्न है। यह हरे रंग का होता है। इस पर भूरे रंग की धारियाँ दिखलाई पड़ती हैं।
38. **तुरसावा (Tursava)** :– यह सूर्य के रत्न माणिक्य का उपरत्न है। इसके गुलाबी रंग की धारियाँ या छींटे होते हैं। यह बहुत चमकीला किंतु नरम पत्थर होता है।
39. **आबरी (Saphire)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह काले रंग का पत्थर होता है। प्रायः आबरी की सतह पर काला एवं पीला रंग अब्रवाला होता है। कम मूल्य का यह पत्थर संगमरमर जैसा प्रतीत होता है।
40. **लाजवर्त (Lapis Lazuli)** :– यह शनि के रत्न नीलम करा उपरत्न है। यह नीले रंग का नरम पत्थर होता है। लाजवर्त की सतह पर कुदरती रूप से चमकीले रजत और सुवर्ण रंग के छींटे होते है। यह शनि का उपरत्न है। सुवर्ण रंग की छींटे वाले लाजवर्त उत्तम माने जाते हैं।
41. **कूदरत (Kudrat)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह काले रंग का नरम पत्थर होता है। इसकी सतह पर सफेद और पीले रंग के छींटे होते हैं।
42. **अहवा (Ahwa)** :– यह सूर्य का रत्न माणिक्य का उपरत्न है। इसका रंग गुलाबी होता है। इस पर छोटे–बड़े मिश्रित रंग के छींटे होते हैं।

43. **चित्ती (Chitti)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह काले रंग का होता है। इस पर सफेद या सुनहरी धारियाँ होती हैं।
44. **संगसन (Ehite Jade)** :– यह सफेद व हल्का अंगूरी रंग का होता है।
45. **लारू (Laru)** :– यह मकराने/मार्बल पत्थर की श्रेणी का उपरत्न है।
46. **दाना फिरंग (Kidney Stone)** :– यह बुध के रत्न पन्ने का उपरत्न है। इसका रंग हल्का/गहरा हरा होता है। इस पर गुर्दे के समान आकृति बनी होती है। पौराणिक मान्यता के अनुसार किडनी/गुर्दे से संबंधित रोगों में यह लाभ देता है।
47. **मार्बल (Marbel)** :– यह मंगल के रत्न मूंगे का उपरत्न है। यह विभिन्न रंगों में पाया जाता है। लेकिन मुख्यतः इस का रंग बांस जैसे रंग का, लाल तथा सफेद होता है।
48. **कसौटी (Black Stone)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह काले रंग का पत्थर होता है, जो सोने की परीक्षा के लिए उपयोग में आता है।
49. **दारचना (Darchana)** :– यह पत्थरदार चलीने के समान दिखलाई पड़ता है। कत्थई रंग पर नीले, पीले और धूमिल छींटे होते हैं।
50. **हकीक** या कलबहार (Haquek) :– यह जल से प्राप्त होता है। कलबहार का रंग कुछ पीलापन लिए हुए तथा हकीक का रंग कुछ हरापन लिए होता है।
51. **हालन (Halan)** :– यह चन्द्रमा के रत्न मोती का उपरत्न है। यह सफेद/गुलाबी रंगा का होता है। जब हालन को हिलाते हैं तो इसका रंग हिलता नजर आता है।
52. **सीजरी/सजरी/शजर (Seçn)** :– यह चन्द्रमा के रत्न मोती का उपरत्न है। यह विभिन्न रंगों का होता है। इस पर वृक्ष की आकृति नजर आती है। स्वामी ग्रहों के रंगानुसार यह यह हकीक धारण करने की सलाह दी जाती है।
53. **मुबेनजफ (Peari Stone)** :– यह चंद्रमा के रत्न मोती का उपरत्न हैं इसमें बाल के समान रंगदार रेखा होती है। और इसका रंग सफेद होता है।
54. **अंबर** या कहरवा **(Amber)** :– यह सूर्य के रत्न माणिक्य का उपरत्न है। यह लाल या हल्का पीले रंग का होता है।
55. **झरना (Jharna)** :– यह चंद्रमा के रत्न मोती का उपरत्न है। यह मटमैले रंग का होता है। इसे पानी में देने पर यह झड जाता है।
56. **संगबसरी (Sangbasri)** :– यह शनि का उपरत्न है। यह आँखों के लिए सुरमा बनाने के उपयोग में आता है।
57. **दातला/कांसला (Yellow Stone)** :– यह चंद्रमा का रत्न मोती का उपरत्न है। पीलापन लिए पुराने शंख के समान रंग वाला होता है। दातला दंत रोगों में उपयोगी है।
58. **मखड़ा (Black Spider)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह हल्का काला और मकड़ी के जाला की तरह प्रतीत होता है।
59. **संगीया (Sangia)** :– यह चंद्रमा के रत्न मोती का उपरत्न है। रंग में शंख के समान होता है।
60. **गूदड़ी (Gudri)** :– यह सूर्य का रत्न माणिक्य का उपरत्न हैं यह कई तरह की, कई रंगों का होता है। लेकिन पीले रंग की अधिकता होती है। इसके फकीर लोग पहनते हैं।
61. **कांसला/कामला (Green Stone)** :– यह बुध का रत्न पन्ना का उपरत्न है। इसका रंग हल्का हरा तथा कुछ सफेदी लिए होता है।
62. **सिफरी (Sifri)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग आसमानी एवं कुछ हरापन लिए होता है।
63. **हरीद (Hareed)** :– यह राहु के रत्न गोमेद का उपरत्न है। इसका रंग काला तथा भूरापन लिए होता है। हरीद वजन में भारी होता है।

64. **हवास (Hawas)** :– यह बुध का रत्न पन्ना का उपरत्न है। हवास का रंग हरा व कुछ सुनहरी आभायुक्त होता है।
65. **सींगली (Smoky Ruby)** :– यह सूर्य का रत्न माणिक्य का उपरत्न है। यह लाल रंग का कुछ श्याम आभा युक्त होता है।
66. **ठेड़ी/देड़ी (Blacfk Stone)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। यह काले रंग का एक चिकना पत्थर है।
67. **हकीक/अकीक (Haqeek or Agate)** :– यह विभिन्न रंगों में उपलब्ध होता है। हिन्दु सम्प्रदाय में इसे लक्ष्मीकारक हकीक के रूप में धारण एवं पूजन किया जाता है। मुस्लिम संप्रदाय के लोग भाग्यशाली रत्नों के तौर पर इसे पहनते हैं। स्वामी ग्रहों के रंगों के अनुसार यह हकीक धारण करने की सलाह दी जाती है।
68. **गौरी (White Stone)** :– यह विभिन्न रंगों में उपलब्ध होता है। लेकिन इस पर विभिन्न रंगों की धारियाँ होती हैं।
69. **सीया** (Seya Black) :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला होता है।
70. **सोमाक/सीमाक (Somak/Seemak)** :– यह सूर्य का रत्न माणिक्य का उपरत्न है। सोमाक लाल रंग का हल्का पीलापन लिए होता है। इस पर गुलाबी रंग के छींटे होते हैं।
71. **मूसा (Moosa)** :– यह चंद्रमा के रत्न मोती का उपरत्न है। इसका रंग सफेद मटमैला होता है।
72. **पनघन (Panghan)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग थोड़ा कालापन लिए एवं कुछ हरा होता है।
73. **अमलीया (Amliya)** :– यह सूर्य का रत्न माणिक्य का उपरत्न है। इसका रंग थोड़ा कालापन लिए कुछ गुलाबी होता है।
74. **डूर (Black Heassonite)** :– यह राहु के रत्न गोमेद का उपरत्न है। यह कत्थे के रंग का होता है।
75. **लिलियर ;स्पसलमत वत ठसंबा चीपतमद्ध** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला एवं ऊपर सफेद छींटे होते हैं।
76. **खारा (Khara)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला एवं कुछ हरापन भी लिए होता है।
77. **पारा जहर/**येजहर (Mercury) :– यह बुध के रत्न पन्ना का उपरत्न है। इसका रंग हल्का सफेद होता है। मान्यता है कि पारा जहर को घाव पर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।
78. **सीर खड़ी/सेलखड़ी (Gypsum)** :– साधारण भाषा में इसे सेलखड़ी भी कहते हैं। इसका रंग मिट्टी के समान होता है।
79. **जहर मोहरा (Jahar Mohra)** :– यह बुध के रत्न पन्ना का उपरत्न है। इसका रंग हरा होता है, लेकिन कुछ सफेदी युक्त होता है। मान्यता है कि जहर मोहरा के बर्त्तन में विष भी अपना कुप्रभाव खो देता है। यह पन्ने का उपरत्न है। ऐसा मिथक है कि जहरमोहरा धारण करने वाले को सप्र काटने का भय नहीं होता है।
80. **रवात (Ravaat)** :– यह सूर्य का रत्न माणिक्य का उपरत्न है। यह दो रंगों में उपलब्ध होता है, लाल एवं पीला। मान्यता है कि इस रत्न को धारण करने से रात्रि ज्वर में लाभप्रद होता है।
81. **सोहन मक्खी (Sihan Makkhi)** :– इसका रंग सफेद मिट्टी जैसा होता है। यह मूत्र रोग में लाभकारी है। इसे औषध रत्न भी कहते हैं।
82. **हजरते ऊद (Hajrate Uda)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला होता है। यह औषधि बनाने में काम आता है।
83. **सुरमा (Surma)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला होता है। इसे आँखों में लगाया जाता है।
84. **पारस (Paras)** :– यह शनि के रत्न नीलम का उपरत्न है। इसका रंग काला होता है। पौराणिक मान्यता है कि इसके छूने मात्र से लोहा भी सोना बन जाता है। ❁卐❁卐❁

-: फेंगशुई और वास्तु दोष से संबंधित जानकारियाँ :-

1. **घंटियाँ : ईशान कोण में दोष** :– ईशान कोण में कहीं दोष आ जाए तो व्यक्ति आर्थिक निर्धनता से पीड़ित होगा, कन्या संतति अधिक, व्यवसाय में वांछित परिणाम प्राप्त नहीं होना इसके लक्षण हैं। भवन में ईशान कोण में ध्वनि या मधुर झनकार करने वाली घंटियों का प्रयोग करने से सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होती है। तथा मन व शरीर स्वस्थ होकर सुख वृद्धि होगी। शिवजी की आराधना करें व ईशाण कोण साफ रखें।
2. **वास्तु दोष** :– **(1)** घंटियों का प्रयोग वास्तु में स्थित विभिन्न प्रकार की ऊर्जा को पवित्र करके, शुभ ऊर्जा को घर के भीतर लाने व अशुभ ऊर्जा को घर से बाहर निकालने के लिए किया जाता है। घर में दोष हो तो वहाँ विंडचाइम का प्रयोग बहुत लाभदायक रहता है। व्यापार के अवसर बढ़ते हैं। इनकी आवाज मधुर हो तथा इसे भवन में ऐसे स्थान पर लटकाया जाय, जहाँ से इसकी आवाज संपूर्ण भवन में सुनाई दे। हवा चलने पर, दरवाजे को खोलने या बंद करने पर या फिर किसी के आते–जाते समय ये घंटियाँ जितनी अधिक बार बजेंगी, उतना ही अधिक सौभाग्य वहाँ रहने वालों को देती रहेंगी। (2) घर में ईशान कोण में तांबे का कलश रखें। इसमें एक मौली में मोती पिरोकर इसके गले में बांधें। स्नान के पश्चात् इसको स्वच्छ जल से भरे व नित्य इस जल को तुलसी में चढ़ायें। घर के सभी वास्तु दोष स्वतः दूर हो जाएंगे।
3. **मुख्य द्वार में दोष** :– ऐसा होने पर घर में चोरी या अग्नि का भय रहता है। संतान को अचानक हानियाँ, विपत्तियाँ, बीमारी व शारीरिक कष्ट होते हैं। मुख्य द्वार व खिड़कियों में घंटियों की झालर लगाने से नकारात्मक ऊर्जा का ह्रास होकर घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव होगा, जिससे धन वृद्धि होगी।
4. **द्वार वेध** :– भवन के समक्ष कोई द्वार वेध है तो यह दोषपूर्ण है। इसके निवारणार्थ दरवाजे पर घंटी लगायें। इसकी ध्वनि के कारण दोष का शमन होगा।
5. **सीढ़ियाँ** :– यदि सीढ़ियाँ भवन के मध्य अथवा मुख्य दरवाजे के सामने हो तो दोषकारक है। इसके निवारणार्थ द्वार व सीढ़ी के मध्य घंटी व सीढ़ी के चबूतरे पर दप्रण लगा दें।
6. **उत्तर दिशा में दोष** :– उत्तर दिशा में दोष है तो घर में क्लेश होंगे तथा बरकत नहीं होती। आर्थिक तंगी, भूमि–भवन और सामाजिक प्रतिष्ठा संबंधी परेशानियाँ होती हैं। बुध यंत्र स्थापित करें। घर की घंटी तोते की आवाज वाली रखें।
7. **टीवी की एंटीना : पूर्व दिशा में दोष** :– यदि पूर्व दिशा में दोष है तो राज्य से संबंधित परेशानी होगी। वह व्यक्ति राज्य भय के कारण मानसिक पीड़ा का अनुभव करता है। संतान की समस्या से ग्रस्त, तंगी व अनावश्यक व्यय, लंबी बीमारी, अग्नि या अदालतों के चक्कर लगाने पड़ते हैं या बीमारी परेशान करती है। इसके लिए दक्षिण–पश्चिम की ओर टीवी का एंटीना या लोहे का पाईप लगा दें। 9 गमलों में बेल पत्र का पौधा लगायें। पूर्व दरवाजे पर तोरण लगायें।
8. **लाल बल्ब : अग्नि कोण दिशा में दोष** :– अग्नि कोण दिशा में दोष आ जाए, तो पुत्र–संतान में कमी या व्यय अधिक होती है। व्यक्ति के चारित्रिक दोष, मधुमेह की बीमारी, संतान कष्ट व कहीं–कहीं चोरी होती है। स्त्री को सदैव कोई–न–कोई रोग रहता है व अनावश्यक कलह होती है। इसके निवारणार्थ इस कोण पर लाल बल्ब हमेशा जलायें।
9. **लोहे की छड़ : दक्षिण दिशा में दोष** :– दक्षिण दिशा में दोष है तो व्यक्ति मकान, राजकीय मुकदमे, व्यवसाय, नौकरी में हानि या अदालती कार्यवाही हेतु, परिवार में भाइयों के कारण विवाद व कलह, शोक तथा धनहानि होती है। यदि दक्षिण दीवार भारी न हो व उत्तर या पूर्व की दीवार ऊँची है तो दक्षिण या पश्चिम की दीवार में लोहे की छड़ लगा दें। दक्षिणावर्त्ती सूंड़ वाले गणपति स्थापित कर मंगल यंत्र लगायें।

10. **चंद्र यंत्र : नैर्ऋत्य कोण में दोष :–** नैर्ऋत्य कोण में दोष है तो व्यक्ति संतति कष्ट, धनहीनता, शत्रु, ऊपरी हवा, रहस्यमयी रोगों एवं इनसे मुक्ति हेतु तंत्र, मंत्र, झाड़–फूंक करने से भी लाभ नहीं मिल पाता। आय कम, व्यय अधिक होता है। वह घरेलू परिस्थितिवश परेशान रहता है तथा गृह स्वामी को कष्ट मुकदमेबाजी आदि रहते हैं। इसके निवारण के लिए चंद्र यंत्र स्थापित करें।
11. **चंद्र यंत्र : वायव्य दिशा में दोष :–** वायव्य दिशा में दोष है तो व्यक्ति को व्यय अधिक, मतिभ्रम बीमारी, लड़ाई–झगड़े, खाने–पीने का शौक, निर्धनता, मन में भ्रम, अकारण यात्रा, रोग व हानि होती है। इसके निवारणार्थ चंद्र यंत्र स्थापित करें।
12. **तुलसी : पश्चिम दिशा में दोष :–** पश्चिम दिशा में दोष हो तो व्यक्ति को राज्यभय, धन हानि, पुत्र, धन व बल में कमी, दीर्घकालीन बीमारी, खर्च की अधिकता, एकाकीपन के कारण गलत शौक से कष्ट होते हैं। इसके निवारणार्थ शनिवार को खेजड़ी के वृक्ष को सींचें। 9 गमलों में काली (श्याम) तुलसी का पौधा लगायें।
13. **लता (बेल) : दिशा दोष व भवन का कोई कोणा तीखा :–** द्वार दोष के लिए भवन के दोनों ओर पौधे रखें। यदि भवन का कोई कोना तीखा है तो उस पर लता (बेल) इत्यादि लगा दें, जिससे कोना न दीखें।
14. **पौधे, दिशा व लाभ :–** (1) घर से उत्तर दिशा में स्थित पौधे से वशीकरण व धन वृद्धि, श्री–समृद्धि का प्रभाव निहित होता है। (2) घर से पूर्व दिशा में पौधा होने से राज सम्मान, उन्नति व मित्रता, कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता प्रदान करता है। (3) घर से दक्षिण दिशा में पौधा होना रोग नाश, शत्रु पराभव, मानसिक कष्ट तथा शोक–संताप निवारण और अन्य बाधाओं का शमन होता है। (4) घर से पश्चिम दिशा में पौधा होना विरोधियों को परास्त करने और शत्रुओं को नीचा दिखाने हेतु उचित होता है।
15. **गमला : (क) शयन :–** सोते समय पैर मुख्य द्वार की ओर नहीं होने चाहिए। यह दोषपूर्ण है। यदि इसमें सुधार करना संभव नहीं हो, तो पलंग व द्वार के मध्य एक गमला रख दें। इससे अशुभफल कम होकर शुभफल होगा। **(ख) रसोई :–** रसोई घर में गैर व पानी का सिंक होना दोष कारक है। इसके निवारणार्थ इन दोनों के मध्य छोटा पौधा गमले में रख दें।
16. **दहलीज : सीढ़ियाँ :–** यदि घर के मुख्य द्वार के सामने सीढ़ियाँ हैं, तो यह दोषपूर्ण है। इसके निवारणार्थ मुख्य द्वार के साथ वाले फर्श पर दो इंच दहलीज बनवायें। इससे अशुभफल में कमी होगी।
17. **शीशा : मुख्य द्वार :–** सीढ़ी के ऊपर मुख्य द्वार नहीं होना चाहिए, यह दोषपूर्ण है। इसके निवारणार्थ मुख्य द्वार के ऊपर खोखला शीशा लगा दें। इससे अशुभता कम होकर शुभफल कारक होगा व घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव होगा।
18. **हरा रंग : (क) दिशा दोष :–** आवास अथवा व्यापार स्थल पर बीम होने पर बीम के दोनों ओर वास्तुदोष नाशक हरे रंग के गणपति की स्थापना करें। **(ख) वास्तु और व्यापार :–** व्यापार की सफलता हेतु व्यवसाय स्थल पर सफेद या हरी वस्तु रखना हितकर है, जिससे लाभ बढ़ता है। **(ग) खिड़की :–** यदि कमरों की खिड़कियाँ दक्षिण–पश्चिम की ओर बन गयी हैं, तो यह अशुभ है। यदि बंद करना संभव न हो तो उन पर गहरे हरे रंग का पर्दा डाल दें।
19. **लाल रंग : (क) आग्नेय कोण में द्वार :–** यदि आग्नेयकोण में द्वार है तो यह दोषपूर्ण है। इससे चोर व शत्रु का भय रहता है। इसके निवारणार्थ अधिकतर दरवाजे को बंद रखें व गहरे लाल रंग से पेंट करवा दें। इससे अशुभफल में कमी होगी। **(ख) दिशा दोष :–** आवास स्थल पर लाल रंग के पर्दे, झालर इत्यादि का प्रयोग करने से नकरात्मक ऊर्जा का शमन तथा सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। **(ग) पानी का सेप्टिक टैंक :–** यदि घर के दक्षिण–पश्चिम में पानी का टैंक या हैण्डपंप है, तो यह असफलता, आर्थिक हानि, स्वास्थ्य हानि दिखाता है। इसके निवारणार्थ टंकी, सेफ्टी टैंक के ढक्कन पर लाल रंग का पेंट कर दें।
20. **काला रंग : उत्तर दिशा में मुख्य द्वार :–** उत्तर दिशा में मुख्य द्वार नहीं होना चाहिए, यह दोषपूर्ण हैं इसके निवारणार्थ गेट पर काला रंग करायें।
21. **हरी घास : मुख्य द्वार प्रवेश द्वार से छोटा :–** घर का मुख्य द्वार प्रवेश द्वार से छोटा होना चाहिए। यदि नहीं हो तो मुख्य प्रवेश द्वार पर 11 गोल घेरे बनाकर हरी घास लगा दें।

22. **तांबे का बर्त्तन : (क) स्वास्थ्य** :–घर में मुख्य द्वार पर तांबे का पात्र लगाने से घर में सभी सदस्य स्वस्थ रहते हैं। यदि पुत्र बीमार रहता है तो भवन की नींव में दूध और शहद दबायें। **(ख) गैस चूल्हा** :– गैस चूल्हा यदि स्लैब पर रखा गया हो उसके नीचे तांबे के बर्तन में पानी भर कर रख दें व सुबह–शाम इसे बदलते रहें।

23. **दप्रण : (क) गैस चूल्हा द्वार के सामने हो** :– यदि गैस चूल्हा द्वार के सामने हो, तो दोष कारक है। इसके निवारणार्थ द्वार के सामने वाली दीवार पर दप्रण लगा दें। **(ख) शयन कक्ष** :– शयन कक्ष में दप्रण इस प्रकार नहीं होना चाहिए, जिससे सोने वाले का प्रतिबिम्ब दिखें। यदि पलंग शयन कक्ष के द्वार के बगल में रखा हो, तो द्वार के सामने वाली दीवार पर शीशा लगा दें। ताकि प्रवेश करने वाले का मुँह देखा जा सके। **(ग) कोण कटा हुआ हो** :– यदि भूखण्ड का कोई भी कोना कटा हुआ है, तो यह उस कोण से संबंधित शुभ प्रभाव को कम करता है। इसके लिए जो कोना कटा हुआ है, उस कोण के सामने एक दप्रण इस प्रकार लगा दें कि उस कोण का प्रतिबिम्ब उस दप्रण पर पड़े, तो दोष में कमी आ जाएगी। कटाव में हानिकारक प्रभाव समाप्त होंगे। **(घ) द्वार वेध से बचने के लिए** :– द्वार के बाहर दप्रण का प्रयोग करें तथा दप्रण को इस तरह रखें कि उसमें जिस वस्तु के कारण द्वार वेध हो रहा है, वह दिखे।

24. **बांसुरी : (क) बीम दोष** :– इसके बचाव हेतु दो बाँसुरी लाल कपड़े में लपेट कर त्रिकोण आकृति में बीम में दोनों ओर लटका दें। बांसुरी का मुख नीचे की ओर हो। कई विद्वानों के अनुसार इसे तलवार की तरह भी लटकाया जा सकता है, क्योंकि बांसुरी को कृष्ण प्रिय, शुभ, शांति, स्थायित्व व मधुरता का प्रतीक माना जाता है। इसके छिद्र उन्नति व सकारात्मक गुणों के कारक माने जाते हैं। इससे अशुभफल कम होकर शुभफल होगा व घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव होगा। **(ख) ऊर्जादायक** :– फेंगशुई में बांसुरी की मधुर धुन को बेहद शुभ व ऊर्जादायक माना जाता है। यह मकान में रहने वालों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। बांसुरी की कैसेट या अन्य शुभ धुनों वाली सीडी सुबह–सुबह बजायें। गायत्री मंत्र आदि का भी प्रयोग किया जा सकता है।

25. **अनावश्यक सामान : कुआँ गलत जगह बना हुआ हो** :– यदि कुआँ गलत जगह बना हुआ है, तो यह दोषपूर्ण है। यदि कुआँ बंद कराना संभव नहीं है तो उस पर मोटी स्लैब डाल दें व ईशाण कोण के एक ओर एक वर्ग फुट खुला रखें। इस दिशा में जेनरेटर या अन्य अनावश्यक सामान रख दें, जिससे दिशा भारी हो जाएगी व दोष दूर होगा।

26. **क्रिस्टल बॉल : (क) बरामदा** :– लंबे बरामदों व गलियारों में क्रिस्टल बॉल का उपयोग करना वास्तु की दृष्टि से शुभ माना जाता है। (ख) भवन में आंतरिक दोष :– क्रिस्टल बॉल को यदि भगवान बुद्ध की मूर्त्ति के सामने लगाया जाय तो इसमें विशेष प्रकार की शक्ति का संचार होता है। इससे भवन की आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार के वास्तुदोष का शमन होता है। इससे सूर्य का प्रकाश आध्यात्मिक शक्ति में बदल जाता है, क्योंकि क्रिस्टल बॉल को सकारात्मक शक्ति का प्रतीक माना गया है। ये काँच में समतल कटे गोलाकार आकृति के पिण्ड हैं, जो प्रकाश को चारों ओर परावर्तित करके फैलाते हैं। इसे आवास अथवा व्यापार स्थल पर स्थापित करने से ऊर्जा का प्रवाह चारों ओर फैलता है। (ग) खिड़कियों में दोष :– यदि भवन में मुख्य द्वार, पीछे का द्वार, अन्य कोई द्वार अथवा खिड़कियाँ एक लाइन में हो, तो यह दोषपूर्ण है। इसके निवारणार्थ उनके बीच क्रिस्टल बॉल लटकाना शुभफल देगा। (घ) सूर्य की पर्याप्त रोशनी न हो :– यदि भवन के किसी कक्ष में सूर्य की पर्याप्त रोशनी न पहुंचे, प्रकाश व्यवस्था कम हो या कक्ष संकरा हो, तो उसमें क्रिस्टल बॉल लटकानी चाहिए।

27. **गुब्बारा : कारखाना** :– यदि भवन के सामने कारखाना या फैक्ट्री हो, तो यह अनेक रोगों को जन्म देकर घसर तक को बरबाद कर देता है। भवन के किनारे एक बड़ा–सा गुब्बारा लगा दें, इससे दोष समाप्त होगा।

28. **अनार : (क) फैक्ट्री निर्माण की प्रगति** – फैक्ट्री निर्माण कार्य के कार्य की शीघ्र प्रगति के लिए फैक्ट्री परिसर में पुष्य नक्षत्र वाले दिन अनार का पौध लगाने से कार्य जोर–शोर से प्रारंभ होता है। (ख) मकान सही न बन रहा हो :– काफी प्रयास के पश्चात् भी मकान सही न बन रहा हो, तो पुष्य नक्षत्र में अनार का पेड़ लगायें।

29. **फिश एक्वेरियम : (क) सकारात्मक प्रभाव** :– पानी को धन व मछली को जीवन का प्रतीक माना जाता है। यदि उत्तर–पश्चिम या दक्षिण–पूर्व में रखें तो यह धन व व्यवसाय में लाभ प्रदान करता है। नकारात्मक ऊर्जा को पास नहीं रहने देता और सकारात्मक ऊर्जा को अधिक–से–अधिक आकर्षित करता है। (ख) धन आगमन :– जब मछली पानी में इधर–उधर घूमती है तो पानी में तरंगे उठती हैं। ये तरंगें घर में धन के आगमन के प्रभाव को तेज करती हैं। इसमें बुलबुलों की मात्रा बढ़ा दें।
30. **डंडा : नीचा मकान** :– यदि आपका मकान अन्य मकानों से नीचा है तो अनेकानेक दोष उत्पन्न होते हैं। इसके निवारणार्थ मकान के ऊपर बाँस या बड़ा डंडा लगा दें। इससे मकान नीचा होने का दोष समाप्त होगा।
31. **मोमबत्ती : सम्पूर्ण वास्तु दोष शमन** :– काँच के कटोरे को धूप में रखकर उसमें ताजे फूल डालकर तथा कटोरे के बीच में मोमबत्ती जलायें और लोहे व काँच की छड़ें डाल दें। इससे वास्तु दोष समाप्त होगा।
26. **पिरामिड : (क) दक्षिण–पश्चिम दोष** :– यदि दक्षिण–पश्चिम कोना कटा हुआ है तो यह दोषपूर्ण है। इससे अनावश्यक व्यय होता है। इसके निदान हेतु 9 ऊर्जायुक्त पिरामिड लगाकर दो फीट की दीवार बनायें। दक्षिण–पश्चिम का दोष समाप्त होगा। **(ख) नींव भरते समय** :– नींव भरते समय इन सामग्रियों को डालने से भवन निर्माण निर्विघ्न पूरा होगा। तुलसी की 35 पत्तियाँ, लोहे की चार कीलें, चाँदी के साँप का जोड़ा, जनेऊ, पान के 11 पत्ते, मिट्टी के 11 दीपक, कुछ सिक्के, आटे की पंजीरी, कोई भी मौसमी फल, मोतीचूर के लड्डू, गुड़, हल्दी की 5 गाँठें, रोली, चावल, फूल, पाँच छोटे चौकोर पत्थर, पाँच छोटे–छोटे औजार, शहद, राम मंत्र लिखित पुस्तिका (हस्तलिखित), पंचरत्न। तांबे के कलश में उपरोक्त सभी वस्तुओं को लाल वस्त्र में बांध कर प्राण प्रतिष्ठित 'श्रीयंत्र' भी नींव में रखें। अन्य सामग्री आपकी प्रचलित परम्परा या विद्वान पंडित की सहायता से रखें।
27. **सुपारी : नये घर में खुशहाली** :– चांदी के नाग–नागिन, चांदी का पतरा, 5 छोटी सुपारी, 7 हल्दी की साफ गाँठ लेकर तांबी की लुटिया में पानी डालकर सब चीजें रखें। उसे बंद कर दें व मुख्य द्वार के पश्चिम में दबायें। नए मकान में खुशहाली होगी।
28. **रूमाल : (क) सरदद्र, आधाशीशी** :– पलंग के गद्दे के नीचे, उत्तर–पश्चिमी कोने में एक सफेद रूमाल, जिसके किनारे ग्रे (सलेटी) रंग के हों, अर्द्ध चन्द्र की 6 आकृति बनाकर दबा कर रखने से लाभ होगा।
(ख) मिर्गी :– मिर्गी या अन्य दौरे तथा अनिद्रा रोगी के पलंग के गद्दे के नीचे उत्तर–पश्चिम दिशा में सफेद रंग का रूमाल रखें। इससे मिर्गी के रोग में राहत मिलेगी।
29. **सरदर्द माइग्रेन (आधे सिर का दर्द)** :– सोते समय तीन सप्ताह पश्चिम की ओर तथा तीन सप्ताह दक्षिण की ओर सिर करके सोयें, देखें कि किस दिशा में सोने से अधिक आराम मिला। फिर उसी दिशा में सिर करके सोयें। सोते समय पैरों के नीचे तकिया लगाकर पैर थोड़े ऊँचे करके सोयें।
30. **कुत्ता : गठिया, जोड़ों का दद्र, वात रोग, कमर दद्र, साइटिका** :– यदि संभव हो तो घर में एक काला कुत्ता पालें और उसके बांधन व खाने की व्यवस्था भूखण्ड के उत्तर–पश्चिम दिशा में करें अथवा कुत्ते या खरगोश के चित्र को ही कमरे के उत्तर–पश्चिम कोने में टांग देना चाहिए।
31. **फूल : (क) मधुमेह** :– भूखण्ड और कमरों के उत्तर–पश्चिम दिशा में नीले रंग के फूलों का गमला अथवा गुलदस्ता रखना हितकर है। इससे मधुमेह रोग में राहत मिलेगी। यदि मधुमेह रोगी न हो तो ऐसा करने से इसके होने की संभावना कम होगी। (ख) असाध्य रोग :– असाध्य रोग जैसे कैंसर, मधुमेह, किडनी के फेल हो जाने की स्थिति में भूखण्ड के दक्षिण–पश्चिम को भारी करें व इस कोने में कोई गड्ढा हो तो उसे भर दें। उत्तर–पश्चिम दिशा को खाली नहीं रखें। बारह बजे के बाद की सूर्य की किरणों को घर में आने से रोकें, मोटा पर्दा लगायें। भवन के सभी दरवाजों के कब्जों में तेल डालें, ताकी आवाज न आये। इससे असाध्य रोग नहीं होंगे। (ग) सरदद्र, माइग्रेन (आधे सिर का दद्र) :– शयनकक्ष के उत्तर–पश्चिमी कोने में 6 नकली सफेद फूल धातु के गुलदस्ते में लगायें। सरदद्र नहीं होगा।
32. **स्टेनलेस स्टील के बर्त्तन : मिर्गी** :– मिर्गी या अन्य किसी प्रकार के दौरे तथा अनिद्रा में किसी भी स्टेनलेस स्टील के बर्त्तन रोगी को उपहार में नहीं लेना चाहिए। अगर पहले ले लिए हैं तो तुरंत बाहर फेंक देने चाहिए।

33. **मंगलकारी कौड़ी तोरण : आर्थिक उपहार एवं सुख समृद्धि हेतु :–** यह तोरण कौड़ी, शंख, सीप एवं समुद्र से उत्पन्न वस्तुओं से बनाया जाता है। इसे भवन आदि के मुख्य द्वार पर टांगना चाहिए। इससे दोष समाप्त होकर आर्थिक समृद्धि होगी।

34. **भगवान की तस्वीर :–** भगवान की तस्वीर हमारी आस्था व विश्वास को बल देने, आत्मविश्वास को जगाने हेतु प्रतीक चिन्ह होती है। पृथक–पृथक देवी–देवताओं को सर्व कार्य के अतिरिक्त विशेष कार्य हेतु जाना जाता है। यदि इनको उपयुक्त दिशा में रखें तो विशेष लाभ होगा।

35. **भगवान की तस्वीर रखने की दिशा :– (1)** ब्रह्मा, विष्णु, शिव व सूर्य की तस्वीर पश्चिम या दक्षिण दिशा की ओर लगायें, ताकि इनका मुख पूर्व या उत्तर दिशा में हो, इससे लाभ होगा। (2) गणेश, दुर्गा, काली की तस्वीर उत्तर दिशा में लगायें, ताकि इनका मुख दक्षिण दिशा में हो, तो लाभ होगा। (3) हनुमान जी की तस्वीर उत्तर, ईशान या आग्नेय दिशा में लगायें, ताकि इनका मुख दक्षिण, वायव्य या नैर्ऋत्य में हो तो लाभ होगा। वैसे जगन्माता का मुख किसी भी दिशा में हो सकता है। (4) बैठक में काली, दुर्गा या हनुमान जी की तस्वीर लगाने से दुष्ट आत्माओं का प्रभाव नहीं पड़ता तथा मन शान्त रहता है।

नोट :– पूजा गृह में भगवान की तस्वीरों के साथ मृत आत्माओं (पितर) की तस्वीरों को नहीं लगाना चाहिए। मृत आत्माओं की तस्वीरों को दक्षिण दिशा की दीवारों पर लगायें, क्योंकि ये देवतुल्य हैं, देवता नहीं हैं। भगवान की तस्वीरों को एक–दूसरों के सामने नहीं लगाना चाहिए। भगवान की तस्वीरों को द्वार के पास या कीवार्डो पर नहीं लगाना चाहिए।

प्रयोजन :– पूजा करने वाले का मुख (दिशा) का प्रयोजन से घनिष्ठ संबंध हैं। (1) ज्ञान की इच्छा रखने वाले का मुख उत्तर दिशा में रखना चाहिए। (2) धन की इच्छा रखने वालों को अपना मुख पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए। (3) स्वास्थ्य या आरोग्य के लिए मुख पश्चिम दिशा में रखना चाहिए। (4) मारण, उच्चाटन व विद्वेषण हेतु अपना मुख दक्षिण दिशा में रखें।

पूजा गृह में पूजा करते समय अपना मुख भगवान के बिल्कुल सामने न रखकर थोड़ा इधर–उधर हटकर बैठें। ईश्वर के सौम्य स्वरूप की तस्वीर लगाना परिवार के लिए शुभ होता है।

घर में श्री यंत्र, लक्ष्मी यंत्र, गणेश यंत्र व कुबेर यंत्र की पूजा–अर्चना अवश्य करनी चाहिए। पूजा गृह में भगवान का स्थान किसी कोने में नहीं होना चाहिए। तस्वीर के सामने घंटा या घंटी न रखें। अगर घंटी है तो उन्हें बजाना चाहिए, चाहे कुछ मिनट ही बजायें।

36. **समृद्धि के लिए :–**

स्फटिक का मेढक, जिसके मुख में स्वर्ण मुद्रा हो, घर में रखना चाहिए।

हिरण के मुख को दीवार पर लटकायें अथवा उसकी मूर्त्ति ड्राइंगरूम में रखें।

घर में मनीप्लांट लगायें व सुंदर फूलों का संयोजन वाला गुलदस्ता रखें।

उगते सूर्य का चित्र लगाना समृद्धि का प्रतीक है।

37. दीर्घायु के लिए :–

चीड़ का वृक्ष आँगन में लगायें अथवा उसकी तस्वीर लगायें।

सारस पक्षी के जोड़े का चित्र लगायें।

कछुए व सारस की काँच की मूर्त्तियाँ लगाना दीर्घायु का प्रतीक समझा जाता है।

38. सत्ता एवं ऊर्जा के लिए :–

भवन के बाहर सिंह की आकृति का तस्वीर लगायें।

ड्रेगन, चिमेरा व फीनिक्स नामक प्राणियों की आकृति व मूर्त्तियाँ, सत्ता व ऊर्जा का प्रतीक हैं। इनसे बुरी शक्तियाँ दूर होती हैं। किंतु इन्हें शयनकक्ष में न लगायें अन्यथा विवाद होता है और बुरे स्वप्न आते हैं।

39. शांति के लिए :–

आध्यात्मिक शांति के लिए घरों में ऐसी तस्वीरें लगायें, जिनमें झरने, लहरें, बादल, हरियाली, बादलों में से झांकता हुआ सूर्य, पक्षियों की क्रीड़ा मुद्रा हो।

विंड चाइम भी मधुर स्वर से अध्यात्मिक शांति उत्पन्न करती है।

40. सफलता के लिए :–

घर के ड्राईंग रूम में लाफिंग बुद्धा की तस्वीर को भी सफलता का सूचन माना जाता है।
तैरती हुई मछली की आकृति या उसकी तस्वीर शुभ होती है।
शिष्यों को उपदेश देते बुद्ध अथवा शिष्यों के साथ नाव में या नाव कंधे पर उठाए जाते हुए बुद्ध की तस्वीर।
दौड़ते हुए घोड़ों की आकृति, उपदेश देते हुए कृष्ण व अर्जुन का चित्र लगायें।
खिला हुआ कमल आदि शुभ एवं मांगलिक चिन्ह सफलता के सूचक हैं।

41. दाम्पत्य सुख के लिए :–

सुखी दाम्पत्य के लिए नृत्य की विभिन्न मुद्राएं, प्राकृतिक दृश्य, पक्षियों के जोड़े, प्रफुल्लित मानवाकृति लगाए।
उदास मानवाकृतियाँ, युद्ध के दृश्य, शिकार के दृश्य नहीं लगाने चाहिए।
घर में सजावटी हथियारों की नोक पूर्व दिशा की तरफ नहीं होनी चाहिए।
घर में सभी सदस्यों का हंसता हुआ सामूहिक फोटो घर में लगायें।
उक्त प्रतीक चिन्ह सही दिशा में लगाने चाहिए, जो शक्ति, ऊर्जा, प्रसन्नता व प्रेरणा प्रदान करते हैं।

42. म्यूजिकल घड़ी :– घर व आफिस में म्यूजिकल घड़ी लगाकर वातावरण को मधुर व शुभ बनाया जा सकता है। इन्हें दरवाजे के ऊपर, सामने व दाईं व बाईं ओर न लगायें। समय के साथ चलने वाली घड़ियाँ शुभ मानी गयी हैं, जबकि बंद व खराब घड़ियाँ नकरात्मक ऊर्जा का प्रतीक हैं। सामान्य से धीमी या पीछी चलती हैं, वे उन्नति व प्रगति में बाधा बनती हैं। अतः यह जरूरी है कि सभी घड़ियाँ या तो समय से चलें या समय से दो मिनट तेज।

43. सिक्कों से समृद्धि :– तीन चीनी सिक्कों को आर्थिक संपन्नता का प्रतीक माना जाता है। इन सिक्कों के बीच में एक चौकोर छिद्र होता है, जिसके एक ओर चार व दूसरी ओर दो लिपि प्रतीक बने होते हैं। एक लाल रिबनल में ये एक साथ इस प्रकार बंधे होते हैं कि समान प्रतीकों वाला इनका एक सिरा एक ओर ही रहता है। सिक्के के जिस सिरे पर चार लिपि–प्रतीक बने होते हैं, उसे यांग अर्थात् सकारात्मक व जिस पर दो लिपि–प्रतीक बने होते हैं, उसे बिन या नकारात्मक ऊर्जा वाला सिरा कहा जाता है। इन सिक्कों को तिजोरी में रखने से आर्थिक समृद्धि मिलती है। इन्हें पर्स, दुकान के गल्ले, तिजोरी, बैंक लॉकर आदि में भी रखा जा सकता है।

44. रत्नों का पेंड़ :– विभिन्न रत्नों का पेड़, व्यवसाय में समृद्धि, शांति व इच्छा सिद्धि का प्रतीक है। इसके रखने से नजर बाधा दोष दूर होता है व घर, परिवार व व्यवसाय में समृद्धि बढ़ती है।

45. अमेथिस्ट कुत्ता :– कटैला (अमेथिस्ट) से निर्मित कुत्ता दुर्घटना का विरोध एवं अशुभता से रक्षा करता है। इसको अपनी जेब में अथवा वाहन में रखने से सुरक्षा होती है।

46. फेंगशुई लैम्प :– इसको घर में रखने से संपन्नता, गतिशीलता बनी रहती है। व्यवसाय स्थल पर रखने से व्यवसाय में शुभता बढ़ती है।

47. क्रिस्टल पिरामिड :– इसको शुभ व सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। ये नकारात्मक ऊर्जा को कम करती है।

48. अष्टकोण दप्रण :– इसको प्रत्येक दोष हेतु पृथक्–पृथक तरीके से इस्तेमाल किया जाता है। इसे जहाँ रखते हैं, उसके आस–पास का जो इसके प्रतिबिम्ब में दिखता है, उसका दोष खत्म होता है।

49. पोटलीवाला बुद्धा : व्यापार वृद्धि :– भारत में इसे लांफिंग बुद्धा या हंसते हुए बुद्ध, हैप्पी मैन या पोटली वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है। व्यापार बढ़ाने के लिए इनकी धातु की प्रतिमा भवन के उत्तर–पश्चिमी भाग में लगा सकते हैं। इसे ऐसे रखें कि यह भवन के भीतर बैठकर द्वार के बाहर की ओर देखते हुए हो।

50. मेंडेरियन डक्स : प्रेम में मजबूती के लिए :– फेंगशुई में वास्तु या घर के दक्षिण–पश्चिमी कोने को आपसी संबंध, प्रेम और रोमांस का क्षेत्र माना गया है। इस कोने को ऊर्जान्वित रखने से दाम्पत्य संबंधों में प्रगाढ़ता आती है और आपसी प्रेम बना रहता है। अविवाहित युवक–युवतियों के शयन कक्ष के दक्षिण–पश्चिम में यदि मेंडेरियन उक्स के जोड़े या उनकी तस्वीर रखी जाय तो उनका विवाह शीघ्र हो जाता है।

51. चमत्कारी सिक्के : आय के साधन बनना :– जहाँ पर मुस्कुराते चेहरे, प्रसन्नता, समृद्धशाली आदि के प्रतीक चिन्ह होते हैं, वहाँ पर सजीव एवं सकारात्मक ऊर्जा शक्ति का निर्माण होता है। तीन चीनी सिक्के आर्थिक संपन्नता के प्रतीक होते हैं व हमारी आय के साधनों को मजबूत करते हैं।

52. स्वास्तिक : वास्तु दोष :– भवन निर्माण के दौरान वास्तु दोष रह जाते हैं। इन्हें मिटाने में ओम, स्वास्तिक आदि शुभ चिन्हों का उपयोग वास्तुदोष में राहत प्रदान करता है। भवन के मुख्य द्वार के ऊपर सिंदूर से नौ अंगुल लंबा और नौ अंगुल चौड़ा स्वास्तिक बनायें।

53. अन्य कुछ प्रमुख वास्तु टिप्स :–

(i) आप अपने घर को इस प्रकार सजायें, जिससे वास्तु दोष स्वतः ही दूर हो जाएंगे।

(ii) घर के बाहर या अंदर आशीर्वाद मुद्रा में लाफिंग बुद्धा लगायें। उनका मुख बाहर की तरफ हो।

(iii) घर (ड्राइंग रूम) में लाफिंग बुद्धा तथा मेढ़क, जिसके मुँह में सिक्का हो, उसे घर के अंदर इस तरह रखें कि इन दोनों का मुँह घर के अंदर की तरफ हो।

(iv) बीम के नीचे विंडचाइम लगाकर बीम के दोष को कम कर सकते हैं।

(v) उत्तम भाग्य के लिए दरवाजे, खिड़कियों पर फेंगशुई के अनुसार रंगीन व सुंदर पर्दे लगायें तथा दीवारों व छतों पर हल्के व मनलुभावने रंगों का प्रयोग करें।

(vi) दरवाजे व खिड़कियाँ सम संख्या में हों और सीढ़ियाँ विषम संख्या में हों।

(vii) घर में गणेश जी की मूर्त्ति एक–से–अधिक हो तो कोई फर्क नहीं पड़ता, परंतु पूजा एक ही गणेश जी की करना ठीक रहता है।

(viii) स्फटिक असली हो, तो प्रभाव में वृद्धि होगी।

(ix) दक्षिण दिशा में घोड़े रखना सर्वोत्तम है।

(x) असली स्फटिक बॉल, श्रीयंत्र, पिरामिड तथा कटिंग बॉल को आप कहीं पर भी रख सकते हैं।

(xi) श्री यंत्र को केवल मंदिर में रखें तो अच्छा है।

54. लुक, फुक व साऊ : दीर्घजीवी व निरोगी :– लुक, फुक व साऊ तीन चीनी साधुओं की प्रतिमाएँ हैं, जो सभी को दीर्घजीवी, निरोगी, सुख–समृद्धशाली बनाते हैं व खुशहाली में भी वृद्धि करते हैं।

55. क्रिस्टल का कछुआ : दीर्घायु, शत्रु से बचने व स्वस्थ शरीर :– निरोग रहने के लिए क्रिस्टल का कछुआ, किसी कमरे में उत्तर दिशा में इस प्रकार रखें कि उसका मुख सदैव पूर्व की ओर रहे। कछुआ पृथ्वी पर सबसे लंबे समय तक जीने वाला निरोगी प्राणी है, जो चलते समय कभी नहीं गिरता। शत्रु से बचने के लिए उसके पास कवच है। उपरोक्त गुणों की वजह से कछुआ स्वस्थ शरीर व दीर्घायु प्रदान करता है।

56. ड्रैगन : शारीरिक सुदृढ़ता व शक्ति :– कछुओं के साथ–साथ ड्रैगन भी शारीरिक सुदृढता व शक्ति का प्रतीक है, जो निरोगी काया, गति व स्फूर्त्ति दाता है। इन्हें घर के उत्तर या पूर्व में रखें। यह ध्यान रखें कि यह जमीन से 4 या 6 फीट की ऊँचाई पर हो। उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए स्फटिक की माला व ब्रेसलेट धारण करें। स्फटिक की शुभ कारक तरंगे पूर्ण शरीर को आत्मिक शक्ति व बौद्धिक विकास में मदद करती हैं।

57. तीन टांगों वाला मेढक : धन व संपन्नता :– तीन टांगों वाले मेढक को धन व संपन्नता का प्रतीक माना जाता है। इसे घर के मुख्य द्वार के निकट ऐसी जगह रखें जहाँ इस पर किसी की नजर न पड़े। इसे छिपाकर रखा जा सकता है। इसका मुँह घर के अंदर की ओर रखें। यह खर्च में कमी कर धन की वृद्धि भी कराता है। घर से निकलते समय मेढक का मुँह बाहर की ओर कर दें तथा मुँह से सिक्कों को निकाल कर अपने साथ ले जाएं। घर वापस आने पर उन्हें मेंढ़क के मुँह में डालकर, उसका मुँह अंदर की ओर कर दें। उसका मुँह मुख्य द्वार की बजाय धन रखने के स्थान की ओर ही होना चाहिए।

58. रोग और वास्तु :–

(i) सर्दी–जुकाम :– यदि मकान के ब्रह्मस्थल में दोष है व आप अक्सर इसमें समय गुजारते हैं तो आपको सर्दी–जुकाम रहेगा।

(ii) डायबिटीज :– यदि भवन के अग्नि और ईशानकोण में दोष है व आप अक्सर इसमें समय गुजारते हैं तो आपको डायबिटीज की संभावना हो सकती है व यदि पूर्व से ही डायबिटीज है तो वह नियंत्रण में नहीं रह पाती है।

(iii) हीन–भावना :– यदि आपके भवन में वायव्य व नैर्ऋत्य कोण में दोष है तो आपके बच्चों में या आपमें हीन भावना आ सकती है। कृपया इनका निदान करें।

(iv) उच्च रक्तचाप :– यदि भवन के उत्तर–पश्चिम या दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र में दोष है तो आपको उच्च रक्तचाप हो सकता है। अतः इनका दोष दूर करें।

(v) कष्ट :– यदि आपका मकान मार्ग या गली के अंत में है तो वह कष्टमय सिद्ध होगा।

(vi) रोग :– यदि आपके भवन पर किसी वृक्ष, मंदिर आदि की छाया पड़ती है तो वह रोग उत्पन्न करेगा।

(vii) आयुक्षय :– यदि नैर्ऋत्य कोण में कुआँ आदि है तो वह आयु क्षय करता है।

–: सुलेमानी हकीक के बारे में जानकारी :–

सुलेमानी हकीक दुनिया का ऐसा अनोखा पत्थर है जिसे जितनी श्रद्धा से हिन्दू धारण करता है उतनी ही श्रद्धा से मुस्लिम भी धारण करते हैं। इसका कारण साफ है कि यह एक चमत्कारिक उपाय है जिसे धारण करना बहुत आसान है।

आइए जानते हैं इसके गुण:

1: हर तरह के काला जादू और बुरी नजर के प्रभाव से बचाता है और अगरकिसी को ऐसा लगता हो कि उस पर किसी की बुरी नजर है तो ऐसी अवस्था में उसे हकीक तुरंत धारण कर लेना चाहिए।

2: नौकरी या व्यवसाय में अगर परेशानी आ रही हो तो भी इस रत्न को धारण करना बहुत उचित रहता है। यह विपत्ती और परेशानियों में आपको संभाले रखने का काम करता है।

3: आपमें आकर्षण को बढ़ाता है इसलिए अगर आप किसी को अपना बनाना चाहते हैं या चाहते हैं कि सामने वाला बस आपकी तारीफ के कसीदे पड़ता रहे तो इस चमत्कारिक पत्थर को धारण करने में बिल्कुल भी देरी न करें।

4: सभी रत्नों में सिर्फ यही ऐसा पत्थर है जो हर तरह के किए कराए का काट है। इसलिए अगर ऐसा लगता हो कि किसी की बुरी नजर के कारण आपका घर में अशांति है और व्यापार में लगातार घाटा हो रहा है तो इसे अवश्य धारण करें।

5: इस पत्थर को धारण करने से शत्रुओं का समूल नाश हो जाता है। यह सेहत के लिए भी किसी रामबाण जैसा है।

6: अगर आप राहू केतु और शनि के दुष्प्रभावों से पीड़ित हैं तोसिर्फ सुलेमानी हकीक को धारण किजीए यह इन तीनों ग्रहों के अच्छे फल को देगा।

हकीक धारण करने की विधि:

यह रत्न शनिवार के दिन चांदी की अंगूठी में बीच अंगुली में धारण करते हैं। या इसे चांदी मेंलॉकेट में गले में भी धारण किया जा सकता है। इसे कोई भी व्यक्ति पहन सकता है।

-: विभिन्न प्रकार के सामान्य समस्यों के उपाय :-

1. **घर से भागे व्यक्ति को पुनः बुलाने हेतु** :– (1) घर से भागे व्यक्ति का पहना हुआ वस्त्र लेकर मंगलवार को उस पर लाल चंदन से नाम लिखें एवं आदेश दें कि वह घर पुनः आ जाए। उस वस्त्र पर वजन रख दें। अर्थात् किसी भारी पत्थर इत्यादि से दबा दें। वह शीघ्र घर आने को बेचैन हो जाएगा। (2) यदि कोई घर छोड़ कर चला गया हो, मार्ग की धूल व तालाब किनारे की मिट्टी लेकर वटवृक्ष के पत्ते पर उसका नाम लिखें व पत्ते पर कोड़े से प्रहार करें। (3) घर से गये व्यक्ति का फोटो टेपरिकॉर्डर के सामने लगाए व गायत्री मंत्र का कैसेट चलायें। 43 दिनों तक लगातार ऐसा करने से घर से गया व्यक्ति वापस चला आएगा।
2. **खोए व्यक्ति की वापसी** :– चमकीले हरे धागे की रील, हरा कागज, साबुत हल्दी, पीपल का टुकड़ा– यह सब मिलाकर घर का मुखिया अगर कुएं में बिना टोके डाल दे, तो गया व्यक्ति वापस आ जाता है।
3. **चोरी गयी वस्तु का पता लगे** :– भरणी नक्षत्र में पान का पत्ता लाकर उसे कत्थे व सुपारी से बीड़ा बनाकर चोरी वाले स्थान पर रख देने से चोरी गयी वस्तु का सुराग लग जाएगा।
4. **कार्य सफलता** :– हल्दी की एक गांठ, छोटी सुपारी, फूल, गुड़ की डलियाँ, गुरुवार को एक पीले कपड़े में बांधें। छोटे–छोटे 7 बच्चों को बच्चों को पीली बर्फी देकर विदा करें व पोटली घर में रखें।
5. **भंडारगृह में बरकत** :– (1) काले चावलों को माँ अन्नपूर्णा की ऊर्जा शक्ति का प्रतीक माना जाता है। इसे अन्न भंडार में रखने से अन्न की कोई कमी नहीं रहती है। (2) जिस घर में कोई बड़े सामारोह का भोजन बन रहा हो, उस भंडार घर में कोयला तथा घर के मंदिर में बने हुए सभी भोज्य पदार्थ को थाली में रखने से भोजन की कमी नहीं होती है।
6. **समागम दोष दूर करना** :– यदि कौए का समागम देख लें तो दोष होता है। इसके लिए शिव मंदिर में सफेद नमक से कौए की आकृति बनाकर आयें व पीछे मुड़ कर न देखें।
7. **विजयी होना** :– (1) स्पर्धा में जीतना हो तो मंगलवार को गाय के घी में शक्कर मिलाकर रोटी पर लगाकर कौए को रोटी दें। स्पर्धा में जाते समय कौए की पीठ का एक पंख शर्ट की दायीं जेब में रखें।
8. **विवाद में विजय** :– रविवार को चमगादड़ के पंख को जलाकर उसकी भस्म को ताबीज में भरकर दायीं भुजा में बांधकर कोर्ट जाने से विजय मिलती है। (2) नागदमन की जड़ लाकर विधि–विधान से पूजा करके धारण करने से सर्वत्र प्रतियोगिता, युद्ध, प्रतिस्पर्धा आदि में विजय मिलती है। यह साधक की पूरी रक्षा करता है।
9. **सट्टे, जुआ या नशे की लत** :– कोई व्यक्ति सट्टे, जुआ या नशे की लत में पड़ा हो, तो घर में मनी प्लांट न लगाएं। शनिवार को सफेद कपड़े में कोयले रखकर निर्जन स्थान पर रखें। तोता न पालें, पीतल के खाली बर्त्तन उल्टे करके न रखें।
10. **जुए में विजय हेतु** :– कहावत है कि यदि शुभ मुहूर्त्त में कौड़ी को तेल में डालें व जब जुआ खेलने जाएं तो उसे अपने साथ रखें, विजयी होंगे।
11. **शुभ समाचार** :– श्री महालक्ष्मी का ध्यान करते मस्तक पर शुद्ध केसर का तिलक लगाएं, दिन में लाभ के समाचार मिलेंगे। घर से बाहर शुद्ध केसर से स्वास्तिक का निर्माण कर उस पर पीले पुष्प, अक्षत चढ़ायें।
12. **शुभता हेतु** :– गुरुवार को दो पत्ती केसर घिसकर उसका तिलक करने से मन में प्रसन्नता व शुभता बढ़ती है।
13. **अधिक गन्ना खा लेना** :– गन्ना अधिक खाने पर ऊपर से बेर खाने से गन्ना नुकसान नहीं करेगा।
14. **अधिक केला खा लेना** :– केले अधिक खा लिए हों तो 2 छोटी इलायची खायें।
15. **चोरी या अग्नि से रक्षा हेतु** :– घर या व्यापार स्थल में चोरी या अग्नि का भय होने पर शुक्लपक्ष के मंगलवार को तांबे में उत्कीर्ण मंगल यंत्र लाकर पंचामृत से शुद्ध करके पूजा स्थल पर लाल कपड़े के आसन पर रख कर घी का दीपक जलाएं व लाल रंग के ऊनी आसन पर बैठ कर मंगल के मंत्र की 11 माला जपें।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

मंत्र जप के बाद दुकान या फैक्ट्री में दक्षिण दिशा में रखें तथा नित्य धूप–दीप से पूजन करने से चोरी या अग्नि से बचाव होता है।

16. **चोरों व बाघ से रक्षा हेतु** :– श्वेत अपराजिता को श्वेत बकरी के मूत्र में घिसकर गोली बनाकर अपने पास रखने से मार्ग में चोरों और बाघ से रक्षा होती है।
17. **चोर का भय नहीं** :– शुक्लपक्ष में पुष्य नक्षत्र में गुंजा की मूल (जड़) लाकर मस्तक अथवा शैय्या पर रखने मात्र से चोर का भय नहीं रहता है।
18. **सिगरेट, बीड़ी, तंबाकू छोड़ना** :– नींबू चूसें या नींबू का पानी पीएं। जीभ पर बार–बार नींबू के रस की पाँच बूंदें डालें और स्वाद खट्टा बनायें रखें। धूम्रपान, बीड़ी, सिगरेट, जर्दा एवं तंबाकू खाने की आदत छूट जाएगी।
19. **समाज में प्रतिष्ठित होने के लिए** :– (1) समाज में प्रतिष्ठित होने के लिए जामुन के बांदा को स्वाति नक्षत्र में शरीर में कहीं भी धारण करना चाहिए। यह जातक के शुभ प्रभाव में वृद्धि करता है। (2) सहदेवी के पौधे को पीसकर माथे पर तिलक करने से सामाजिक सम्मान बढ़ता है।
20. **बुरा स्वप्न नाशक** :– यदि बुरे–बुरे स्वप्न आते हों, कोई आपको परेशान करता है, तो भालू के पाँच बाल लेकर कंठ में धारण करें।
21. **शोक नाशक** :– अशोक के पेड़ को शोक नाशक भी कहते हैं। इसे घर में लगाने से व धारण करने से व्यक्ति को आसमयिक अकाल शोक नहीं होता। यह अँगना प्रिय कहलाता है।
22. **गम दूर करने हेतु** :– दरियाई नारियल प्रायः पंसारी की दुकानों पर मिलता है। इसे ताबीज में भरकर पूजा करके रखने से सभी गम दूर होकर सुख मिलता है।
23. **दुर्भाग्य टालना** :– पतंग लेकर उस पर अपनी समस्या लिखें व बोलें। फिर उसे उड़ाकर डोर तोड़ दें। तोड़ते समय विचार करें कि आपका दुर्भाग्य दूर हो रहा है, उसे दूर होते देखते रहें। इससे दुर्भाग्य दूर होता है।
24. **जेब खाली न रहे** :– रविवार को पुष्य नक्षत्र में कौवे के दाहिने पाँव का नाखून लेकर ताबीज बनाकर धारण करने से जेब कभी खाली नहीं रहती।
25. **अनिष्ट निवारण** :– किसी भी पुरुष की जाती हुई अर्थी के नीचे से एक बार निकलें और कहें–हमारा ताप, दुःख, रोग, शोक साथ ले जाना। इसके बाद अर्थी के विपरीत दिशा में चलें जायें।
26. **अग्नि का प्रभाव नहीं व आग लगाना** :– (1) मेढक की चर्बी शरीर पर मलकर अग्नि में उतरने पर अग्नि का प्रभाव नहीं होता। (2) ऊँट की विष्ठा को जलाकर इस राख को शहद में डालकर रखिए। जब इसका एक छोटा अंश कहीं रखेंगे तो हवा लगते ही इसमें आग जल उठेगी। यह प्रयोग मदारी करतब दिखाने में करते थे।
27. **ठंडा पसीना व दौरे लाने** :– हत्थाजोड़ी को पीसकर चूर्ण बनाकर किसी व्यक्ति को खिलाने से ठंडा पसीना आता है, दौरे पड़ने लगते हैं, व्यक्ति उबासियाँ लेने लगता है।
28. **पारा जमने** :– शुद्ध पारा लाकर हत्थाजोड़ी का चूर्ण खरल में डालें तो पारा मर जाता है। इस गीले पारे को मनचाही शक्ल दें। गलगल में ही पारा सूख जाएगा।
29. **कार्य अनिच्छा** :– ऐसा लगे कि बीमारी के कारण चाहकर भी काम न कर सके तो पुष्य नक्षत्र में सहदेवी का जड़ लाकर रखें।
30. **कुंठा नाश** :– मन में कुंठाएँ रहती हैं। किसी भी कार्य में मन नहीं लगता तो मंगलवार से वैजयन्ति माला से जप करके इसे धारण करें।
31. **यात्रा** :– (1) कभी भी किसी भी दिन यात्रा पर जा रहे हों, वह सफर घूमने के लिए हो या फिर व्यापार के लिए, आप एक पानी वाला नारियल लेकर उस पर यात्रा में सफलता की प्रार्थना करें व इष्ट के मंत्र का जप करके उस नारियल को तोड़ दें। उसके पानी को अपने ऊपर और चारों तरफ छिड़क दें। यात्रा कुशलता व सफलता देने वाली होगी। (2) यदि लंबी यात्रा पर जा रहे हों, यात्रा में नदी पार करनी हो, तो सिक्का डालें। यह संतान हेतु भी शुभ रहेगा। (3) यात्रा पर जाने से खतरा महसूस हो तो एक नींबू में 4 आलपिन चुभोकर

द्वार के पास रखकर प्रस्थान करें। (4) यात्रा पर जाने से पूर्व दही व गुड़ खाकर जाएं। इससे यात्रा शुभ होती है।

32. **शस्त्राघात से रक्षा** :– सुदर्शन की जड़ या अपामार्ग की जड़ अथवा सफेद घुघुची की जड़ को भुजा पर धारण करने से शस्त्राघात से रक्षा होती है।
33. **सफलता प्राप्ति** :– अखंडित भोजपत्र पर लाल चंदन से मोर के पंख की कलम द्वारा 15 का यंत्र लिखें व अपने पास रखें।
34. **सूर्य के दर्शन** :– बिजौरा नींबू के बीज के तेल में मध्याह्न के समय तांबे के पात्र पर लगाकर सूर्य की ओर रखकर पात्र में देखें तो सूर्य के रथ का दर्शन होगा।
35. **वाहन रक्षा हेतु** :– नए खरीदे हुए वाहन पर काले धागे/लाल धागे से कौड़ी बांधी जाए तो बुरी नजर से बचाव व दुर्घटना से बचाव होता है।
36. **भाग्योदय व साक्षात्कार** :– भाग्योदय व साक्षात्कार में सफलता प्राप्ती हेतु काली गुंजा की जड़ को रवि या गुरु पुष्य नक्षत्र में ग्रहण कर अभिमंत्रित करके अपने पास रखें। यह भाग्यकारक होने से सफलता दिलाएगी।
37. **विपत्ति नाश के लिए** :– होली के दिन ही प्रातः सात फीट काला धागा लेकर तांत्रोक्त नारियल के ऊपर पूरा लपेट लें। किसी लाल कपड़े में लपेट कर घर के सभी सदस्यों के ऊपर 7 बार वार कर (सात बार घुमा कर) जलती हुई होली में फेंक दें। इससे घर के सभी सदस्यों के ऊपर किसी भी प्रकार की विपदा या विपत्ति होगी तो उसका नाश हो जाएगा। यह ग्रामिण तांत्रिक प्रयोग है, जो आज भी अधिकांश ग्रामीण स्त्रियों द्वारा किया जाता है। वे गोबर में इसे छुपाकर किसी आकार में बनाकर सुखा लेती थीं और होली के दिन इसमें फेंक देती थीं।
38. **भयंकर विपत्ति के नाश हेतु** :– मार्गशीर्ष (अगहन) माह की पूर्णिमा को प्रातःकाल अपामार्ग की जड़ लाकर उसकी पंचोपचार से पूजा कर भुजा में धारण करने से बड़ी–से–बड़ी विपत्ति भी दूर हो जाएगी।
39. **दब्बूपन दूर होना व नेतृत्व क्षमता** :– जिनको अपने हक की बात कहने में भी हिचकिचाहट हो, जो बोलने में झिझकते हों, जिनमें आत्मविश्वास की कमी हो, वे हल्दी की माला को विधि–विधान पूर्वक धारण करें तो उनकी यह समस्या दूर होगी।
40. **पराक्रम** :– व्याघ्र का नख ताबीज में भर कर धारण करने से पराक्रम तेज होता है और भोग साधन बढ़ते हैं।
41. **स्वर शोधक** :– निर्गुण्डी मूल को सुखाकर पीस कर गुनगुने पानी से इसकी गोली का सेवन किया जाय तो वाणी दोष समाप्त होकर स्वर मधुर होता है।
42. **मानसिक तनाव** :– विधानपूर्वक निर्गुण्डी की जड़ को लाकर कवच के रूप में धारण करने से या घर में रखने से दरिद्रता दूर होती है। विवाद समाप्त होते हैं और मानसिक तनाव दूर होता है।
43. **बेचैनी दूर करने के लिए** :– किसी भी कारण से बहुत बेचैनी, टेंशन अनुभव कर रहे हों तो एक गिलास पानी लेकर 21 बार **'ॐ हंसः हंसः'** मंत्र पढ़कर वह पानी पी लें। धीरे–धीरे टेंशन मुक्त हो जायेंगे।
44. **काम निकलवाना** :– उल्लू के पंख लाकर गूगल की धूप देकर सिंदूर से पूजा कर पूर्णिमा के दिन जेब में रखकर, जिससे काम निकलवाना हो उसके समक्ष जाएं।
45. **मनोवांछित परिणाम** :– मोनालिसा की माला से मंत्र जपने या धारण करने से रुके कार्य पूर्ण होते हैं व मनोवांछित परिणाम प्राप्त होते हैं।

-: विभिन्न प्रकार के शंख एवं उनके प्रयोग :-

शंख एक प्रकार का समुद्री जीव है, जो सर्वमान्य है तथा सर्व वर्णों में पूजनीय व पवित्र माना गया है। चार रंगों में मिलने वाले शंख को वर्ण व्यवस्थानुसार बाँटा गया है। शुभश्वेत शंख ब्राह्मणों, लालिमा लिए (रक्त वर्णीय) क्षत्रिय, पीत वर्ण वैश्य व श्याम वर्णीय के शंख शूद्रों हेतु प्रयोजनीय है। शंख विजय, ओज, सुख–समृद्धि, शौर्य, चेतना, स्फूर्त्ति का प्रतीक माना जाता है। जादू–टोना, नजर जैसा अभिचार कृत्यों का दुष्प्रभाव इससे शांत हो जाता है।

लक्ष्मी सहोदर, विष्णु प्रिय, निर्धनता निवारण के लिए यह सर्वश्रेष्ठ है। देवी–देवताओं में प्रसन्नता या युद्ध की घोषणा हेतु इसका प्रयोग करते थे। महाभारत में इसका प्रभाव वैज्ञानिक रूपेण स्वीकार भी किया गया है। खंडित या दागवाला, बैडौल, बेढंगा शंख व सम संख्या का शंख त्याज्य माना गया है।

1. **गौमुखी शंख** :– गाय के मुख जैसी आकृति का होने से इस शंख को गोमुखी शंख के नाम से जाना जाता है। **'ॐ गोमुखी शंखाय मम् सर्व कार्य सिद्धि कुरु–कुरु नमः'** – इस मंत्र का 108 बार जप करें। इससे यह सिद्ध, प्राण– प्रतिष्ठित व जागृत होगा। फिर शंख में गाय का दूध भरकर आचमन करें। व भवन या व्यवसाय स्थल पर जल छिड़कें। अपनी परेशानियों या मनोकामनाओं को आप स्वयं गोमुखी शंख के मुँह में कहें एवं कान पर शंख को लगाकर आँखें बंद करके मौन धारण करें। इससे असाध्य रोगों का शमन व कीटाणुओं का नाश होता है।

2. **गणेश शंख** :– भगवान गणपति जैसी रूपाकृति का होने से इस शंख को गणेश शंख कहते हैं। यह सफेद व पीली आभा लिए होता है। **''ॐ गणेश शंखाय मम् सर्व कार्य सिद्धि कुरु–कुरु नमः''** को 108 बार जपें। इससे यह सिद्ध एवं प्राण–प्रतिष्ठित व जागृत होगा। फिर जल भरकर आचमन व पूजा व अपने भवन या व्यवसाय स्थल पर जल छिड़कें और स्थापित करें। जहाँ इसकी स्थापना होती है, उस स्थान पर आर्थिक समस्या नहीं आती है, ऋद्धि–सिद्धि का भंडार भरा रहता है। कर्ज मुक्ति व वास्तु दोष समाप्त होता है। व्यवसाय में वृद्धि व समृद्धि रहती है।

3. **दक्षिणावर्त्ती शंख** :– शंख दो तरफ मुख वाला होता है, एक वामवर्त्ती दूसरा दक्षिणावर्त्ती। जिस शंख के मुख से पेट की ओर चलने पर भंवर का घुमाव दायीं ओर पड़ता है, वह दक्षिणावर्त्ती शंख कहलाता है। यह दुर्लभ शंख दाहिने तरफ खुला होने से दक्षिणावर्त्ती शंख कहलाता है। यह समुद्र में पैदा होने वाली अनमोल निधि है। जिस घर में ये विराजमान होकर पूजित होता है, वह घर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक प्रतिष्ठा, राज्य सेवा, व्यापारमें ख्याति प्राप्त करता है। ये साक्षात् भगवान विष्णु का रूप है। इससे विपुल लक्ष्मी प्राप्त होती है। तांत्रिक अभिकर्म से रक्षा होती है। रोग–दोष मुक्त होता है। इस शंख को **''ॐ दक्षिणावर्त्ती शंखाय मम् सर्व कार्य सिद्धि कुरु–कुरु नमः''** का 108 बार जप करने से सिद्ध व प्राण–प्रतिष्ठित कर शंख में गाय का दूध भरकर आचमन करें और अपने व्यवसाय स्थल पर स्थापित करें। दरिद्रता व व्यवधानों के निवारण के लिए दक्षिणावर्त्ती शंख प्रभावकारी माना गया है। स्थल पर स्थापना करने, आचमन व जल छिड़कने से दुःख, कर्ज, दरिद्रता और कष्टों का नाश होता है। लक्ष्मी का वास होने, धन की प्राप्ति करने के लिए अपने घर में दक्षिणावर्त्ती शंख की स्थापना करें। इससे लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

4. **मोती शंख** :– यह शंख ऊपर से संकड़ा व नीचे से चौड़ा होता है। उच्च गुणवत्ता के मोती इसी शंख से उत्पन्न होते हैं। इस शंख से गंगा जल का प्रतिदिन आचमन करने से हृदय व श्वास संबंधी रोगों के लिए रामबाण औषधि का काम करता है। इससे सभी असाध्य रोगों का शमन होता है। समुद्री जीव लक्ष्मी का प्रिय आभूषण है। यह जहाँ होगा, समृद्धि व लक्ष्मी वहाँ स्थायी रूप से निवास करती है। गृहस्थ जीवन हेतु यह सर्वाधिक उपयोगी कहा गया है।**''ॐ मोती शंखाय मम् सर्व कार्य सिद्धि कुरु–कुरु नमः।।''** – इस मंत्र का 108 बार जप कर सिद्ध व प्राणप्रतिष्ठित कर शंख में गाय का दूध भरकर आचमन करें।

धार्मिक प्रयोग :– प्रातःकाल इस शंख में थोड़ा जल लेकर स्नान के पानी में मिलाकर स्नान करें। इससे शरीर पवित्र, कांतिमय और ओजस्वी होगा।

कर्ज मुक्ति हेतु मोती शंख के प्रयोग :— बुधवार को स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण कर इस शंख पर केसर से स्वास्तिक बनाएं व स्फटिक माला से लक्ष्मी मंत्र जपें तथा प्रत्येक मंत्र समाप्ति पर एक अखण्डित चावल इसमें डालें। नित्य एक माला जपें। 30 दिन बाद चावल सहित शंख सफेद वस्त्र में बांधकर व्यापार स्थल पर रखें। शीघ्र कर्ज मुक्त होकर समृद्धि होगी।

दरिद्रता नाशक :— इसे व्यापार स्थल पर रखने से दरिद्रता का नाश होता है।

5. **पांचजन्य शंख** :— महाभारत के युद्ध के समय भगवान श्रीकृष्ण ने इसे बजाया था। इस शंख से मुख्य रूप से व्यवसाय स्थल, भवन के वास्तु दोषों को बिना तोड़—फोड़ व परिवर्तन किए पूर्णतः शांत किया जा सकता है। पांचजन्य शंख माला से अभिमंत्रित कर आचमन करने का विधान **है। ''ॐ नमः पांचजन्य शंखाय मम् गृहम् धनवृद्धिम् कुरु—कुरु स्वाहा।''** — मंत्र का 108 बार जप करके इस शंख को सामने रख कर फूंक मारने से जागृत होता है। भवन, ऑफिस, फैक्ट्री या व्यवसाय स्थल पर वास्तु दोष को देखकर उस अनुसार इस शंख को ईशान कोण, भवन के मध्य या मुख्य द्वार पर एक फीट गहरा गढ्ढा खोदकर अंदर वास्तु पुरुष की तरह उल्टा गाड़कर ऊपर वास्तु शांति हवन किया जाता है। यह वास्तु दोष शांति का अचूक उपाय है।

हृदय रोग :— शंख की भस्म कैल्शियम युक्त होती है। इसकी भस्म को 1 माशा सुबह—शाम शहद के साथ सेवन करने से रोगी को हृदय रोग से मुक्ति मिलती है।

रोगों से मुक्ति :— शंख में रखा जल कभी सड़ता नहीं है। इसके जल का सेवन सुबह—शाम करने से प्राणी हर प्रकार के रोगों से मुक्त रहता है।

पेट के रोग :— जिन व्यक्तियों को पेट के रोग हैं, उन्हें शंख में जल भरकर सुबह—शाम सेवन करने से रोग से मुक्ति मिल जाएगी। शंख प्रयोग में अल्सर रोग भी ठीक हो जाता है। शंख में दूध भरकर असाध्य रोगी को पिला दिया जाय, तो रोग जड़मूल से नष्ट हो जाता है।

त्वचा रोग :— त्वचा संबंधी रोग होने पर शंख में जल भरकर उस जल से स्नान करने से सभी प्रकार के रोग शीघ्र नष्ट हो जाते हैं तथा त्वचा शुद्ध हो जाती है।

नेत्र रोग :— नेत्र रोगी शंख में जल भरकर आँखों में डालें तो रोग नष्ट हो जाता है तथा इससे नजर में तीव्रता आती है। शंख का जल आँखों की सभी बिमारियों को नष्ट करके आँखों को पूर्ण स्वस्थ बनाता है।

6. **दुर्लभ देवी शंख** :— नवदुर्गा ने इस शक्तिशाली आयुध को अपने हाथों में धारण कर रखा है। इसको अपने भवन में स्थापित करना चाहिए।

धनवृद्धि व सुख—समृद्धि :— शंख को नौ बार ध्वनि करने के बाद दुर्गा सप्तशती का पाठ करना उत्तम फलदायक माना गया है। इस शंख की पूजा करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है। यह धनवृद्धि का अचूक उपाय है। शंख माला से अभिमंत्रित कर आचमन करने का विधान है। ''ॐ नमः देवी रूपेण संस्थिता, मम् धर धनवृद्धिं कुरु—कुरु स्वाहा।'' का 108 बार जप करें व इस शंख को सामने रख कर फूंक मारने से जागृत होता है। इसके बाद परिवार के सभी सदस्यों द्वारा गंगाजल से आचमन करने पर परिवार में सुख—समृद्धि के साथ माता का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त होता है। सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होकर सुख—समृद्धि मिलती है।

हृदय व गठिया :— इस शंख में रात्रि को जल भरकर रखें व प्रातःकाल हृदय व गठिया दर्द वाले मरीजों को तांबे के पात्र से सेवन कराने पर विशेष लाभ होता है। हृदय रोगी को रोजाना इस शंख की ध्वनि कराना श्रेष्ठ है।

7. **मणिपुष्पक शंख** :— महाभारत में सहदेव को इसे बजाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस शंख का रंग पीला तथा मुँह पूरा खुला हुआ रहता है। यह पतली परत का बना हुआ होता है। दुर्लभ और चमत्कारी होने के कारण इसका मूल्य भी अधिक होता है। प्राकृतिक मणिपुष्पक शंख के दर्शन मात्र से ही सुख का आभास होने लगता है। शुद्ध एवं असली प्रमाणिक शंख प्राप्त कर अपने घर में दीपावली के दिन स्थापित करना चाहिए। **''ॐ मणिपुष्पक शंखाय नमः**

मम धर धनवृद्धिं कुरु–कुरु स्वाहा'' – मंत्र का मोती की माला से 11 दिनों तक 108 बार (एक माला) रोजाना जप कर अभिमंत्रित कर लेना चाहिए। इस शंख में फास्फोरस एवं कैल्शियम की मात्रा भरपूर होती है।

मधुमेह एव हृदय रोग :– इस शंख में रात्रि में गंगाजल भरकर तांबे की प्लेट से ढंककर प्रातः मधुमेह एवं हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों को आचमन करने से शरीर स्वस्थ रहता है।

साधना :– हनुमान एवं शिवजी के भक्तों को पीली गाय के दूध में आचमन करने से इष्ट साधनाएँ शीघ्र सफल होती हैं। साधना करते समय साधक इससे जल निकाल कर ही ग्रहण करें। यह सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है।

8. **ऐरावत शंख** :– समुद्रमंथन से निकले सफेद रंग के गजराज ऐरावत शंख को इन्द्र आयुध के रूप में हाथ में धारण करते हैं। यह शंख गजराज की सूण्डनुमा आकृति का है। इसी प्राकृतिक सौन्दर्यपूर्ण शंख से इन्द्र को अजर–अमर होने का वरदान भी मिला था। इसकी नित्य साधना एवं आचमन से मनोवांछित सिद्धि मिलती है। तभी इन्द्र ने गौतम की अनुपस्थिति में ऐरावत शंख का अनुचित प्रयोग किया। वे काम पीड़ित होकर गौतम का रूप धर कर कपट से अहिल्या के पास आए। इसके कारण गौतम ऋषि से शापित होने पर कलंक लगा। इसलिए इससे प्राप्त सिद्धि का सदुपयोग करें। **''ॐ गजराज ऐरावत शंखाय मम इच्छित रूप प्रदान कुरु–कुरु नमः।''**

श्वेत वस्त्र धारण करें और दीपावली के दिन इस शंख को सामने रखकर एकांत में उक्त मंत्र से अभिमंत्रित करें। साधक को सिद्धि में सफलता मिलती है। नारदजी को परलोक गमन एवं मनचाहा रूप धारण करने की सिद्धि भी इस शंख से मिली थीं।

9. **नीलकंठ शंख** :– समुद्र मंथन से निकले हलाहल को भगवान शिव ने पीकर जब हिमालय की ओर रवाना हुए तब समुद्र से इस शंख से जल ग्रहण किया, उसी समय से इस शंख का रंग विष के समान हो गया। तभी से इस शंख का नाम नीलकंठ शंख हो गयां शंख की आकृति दोनों ओर से खुली हुई होती है। ऊपर से नीचे तक पूरा मुँह खुला रहता है। नीलकंठ शंख का प्रमुख कार्य विष के प्रभाव को दूर करना है।

सर्प या बिच्छू विष व भय समाप्त :– यदि किसी को सर्प या बिच्छू डंक मारे तो इसमें जल भरकर पिलाने से जहर उतर जाता है। शंख में गर्म पानी डालकर जहरीले जानवर के काटे हुए स्थान को साफ करना चाहिए। इस शंख को घर पर स्थापित करने से साँप–बिच्छू व अन्य जहरीले जानवर प्रवेश नहीं करते हैं। इनसे कोई खतरा नहीं रहता है व घर में सुख–शांति बनी रहती है।

आंतरिक असाध्य रोग समाप्ति :– इस शंख में काली बकरी का दूध डालकर पीने से आंतरिक असाध्य रोग खत्म होता है। सफेद गाय का दूध डालकर पीने से मानसिक तनाव से हमेशा–हमेशा के लिए मुक्ति मिल जाती है।

10. **लक्ष्मी शंख** :– समुद्र मंथन के समय लक्ष्मीजी के दायें हाथ में यह शंख लेकर प्रकट हुई, इसलिए इसका नाम लक्ष्मी शंख है। इसकी पूजा करना लक्ष्मी की आराधना के बराबर माना गया है। दीपावली के दिन **''ॐ नमः लक्ष्मी शंखाय मम् धर धनवर्षा कुरु–कुरु स्वाहा''** – मंत्र का 108 बार जप करें।

भौतिक सुखों में वृद्धि :– इस शंख में गंगाजली भरकर भवन में छिड़काव करें तथा सभी आचमन करें। इससे लक्ष्मी का स्थाई निवास होकर घर में सुख–सुविधा बढ़ेगी तथा भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। इस शंख की स्थापना महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसे दक्षिणावर्त्ती शंख से भी अधिक लाभदायक माना गया है। यह शंख श्वेत रंग का व अर्द्ध चन्द्रमा की भांति खुला रहता है। इससे आंतरिक शांति का अनुभव होता है व इसे घर में स्थापित करने से दरिद्रता का नाश होकर लक्ष्मी का स्थाई वास होता है।

11. **वामावर्त्ती शंख** :– आज दो प्रकार के शंखों वामावर्त्ती एवं दक्षिणावर्त्ती की अधिक मान्यता है। सभी शंखों के अलग–अलग कार्य हैं। बायें हाथ से पकड़े जाने वाला उल्टा शंख कहलाताहै। इसका प्रमुख काम मंदिरों में आरती के समय बजाना होता है। यह शंख साधारणतः मिल जाता है। इसका मूल्य भी कम होता है। वामावर्त्ती शंख सभी देवी–देवताओं को स्नान कराने में काम आता है।

समृद्धिदाता मोती शंख

आपने माता लक्ष्मी के हाथों में स्थित एक शंख देखा होगा। यह देवी का सबसे महत्वपूर्ण आभूषण है। श्री यंत्र की साधना तो सभी करते हैं, लेकिन जो मोती शंख की साधना करता है और अपने कार्य स्थल, व्यापार स्थल, घर अथवा भंडार में मोती शंख स्थापित कर लें तो लक्ष्मी का वहाँ स्थायी निवास हो जाता है।

यद्यपि भारतवर्ष में दक्षिणावर्त्ती शंख का विशेष महत्व जन–साधारण में व्याप्त है। परंतु मोती शंख अपने–आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण शंख है। इसकी चमक मोती के समान होने के कारण ही इसे मोती शंख कहा जाता है। यह एक गोल आकार का सुंदर, सुरम्य शंख होता है। जो कि अपने आप में कई विशेषताएं समेटे हुए है। यह शंख छोटे–बड़े कई साइजों में उपलब्ध होता है। यह प्रकृति का वरदान है, जो मनुष्यों को सहज ही प्राप्त है।

मोती शंख में यह विशेषता है कि इस पर प्रयोग करने से साधारण गृहस्थ को भी विशेष सफलता प्राप्त हो जाती है। वैसे तो मोती शंख के हजारों प्रयोग हैं, किंतु नीचे कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग दिए जा रहे हैं :–

धार्मिक प्रयोग :– धार्मिक दृष्टि से भी इस शंख को लक्ष्मी का अत्यंत प्रिय आभूषण माना गया है। अतः जिसके घर में पूजा स्थान में यह शंख रहता है, उसके घर में निरंतर लक्ष्मी का वास माना जाता है।

1. यदि प्रातःकाल स्नान करते समय इस शंख में से थोड़ा सा जल लेकर यह बाल्टी भरे हुए पानी में मिलाकर स्नान करें, तो शरीर पुण्यवान और कांतिमय होता है।

2. यदि इस प्रकार के शंख को कारखाने में स्थापित किया जाय, तो स्वतः ही उसकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है और आर्थिक उन्नति होने लगती है। इस शंख को विशेष रूप से दारिद्रय निवारक कहा जाता है और इसके रहने से उसके व्यापार में वृद्धि होती रहती है।

लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग :– यह शंख लक्ष्मी प्राप्ति, आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि आदि में भी विशेष रूप से सहायक है। कर्ज उतारने में तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावयुक्त है। जो व्यक्ति इस प्रकार को प्रयोग चाहता है या अपने जीवन में पूर्ण आर्थिक उन्नति एवं व्यापार वृद्धि चाहता है, उसे यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

प्रयोग :– किसी बुधवार को प्रातःकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस शंख को रख दें और उस पर केसर से स्वास्तिक चिन्ह बना दें। इसके बाद निम्नांकित मंत्र का जप करें। मंत्र जप के लिए स्फटिक की माला का प्रयोग करें। मंत्र :– **ॐ श्रीं ह्रीं दारिद्रय विनाशिन्ये धनधान्य समृद्धिं देहि देहि नमः।।**

इस मंत्रोच्चारण के साथ एक–एक चावल इस शंख के मुँह में डालते रहें। इस बात का ध्यान रखें कि चावल टूटे हुए न हों। इस प्रकार नित्य एक माला फेरें। यह प्रयोग भी 30 दिन का है, जो अपने आप में अचूक और प्रभावयुक्त है।

पहले दिन की माला समाप्त होने के बाद उसमें चावल पड़े रहने दें और दूसरे दिन भी उसी प्रकार मंत्र जप करते हुए उसमें एक–एक मंत्र के साथ एक–एक चावल के दाने डालते रहें।

तीस दिन पर यह प्रयोग समाप्त होने के बाद चावलों सहित इस शंख को सफेद कपड़े में बांधकर अपने घर में या पूजा स्थान में रख दें; या कारखाने, फैक्ट्री या व्यापारिक स्थल पर स्थापित कर दें। यह शंख साधक के पास जब तक रहेगा, तब तक उसके जीवन में आर्थिक अभाव नहीं रहेगा तथा निरंतर आर्थिक, व्यापारिक उन्नति होती रहेगी। यह भी स्पष्ट है कि ऐसा प्रयोग करने पर शीघ्र ही व्यक्ति कर्ज से मुक्ति पा लेता है और सभी सभी दृष्टियों से उन्नति करता है।

यदि मंत्र सिद्ध प्राण–प्रतिष्ठा युक्त मोती शंख अपने पूजा स्थान में स्थापित किया जाय तथा उसमें जल भरकर लक्ष्मी के चित्र या विग्रह पर चढ़ाया जाय तो लक्ष्मी प्रसन्न होती है और आर्थिक उन्नति होती रहती है।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

मोती शंख को घर में स्थापित कर दें और नित्य **"ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः"** 11 बार बोलकर एक–एक चावल का दाना शंख में भरते रहें। इस प्रकार 108 दाने इस शंख में डालें और इस प्रकार 11 दिनों तक यह प्रयोग करें। यह प्रयोग करने से जन्म–जन्म की दरिद्रता समाप्त होती है।

यदि मोती शंख दुकान के गल्ले में रखा जाए तो इससे बेतहाशा वृद्धि होती है।

यदि बुधवार के दिन किसी गिलास में पानी भरकर उसमें यह शंख रख दें और एक घंटे बाद ऐसा जल रोगी पर छिड़कें तो उसका रोग समाप्त होने की क्रियास प्रारंभ हो जाती है।

यह एक अचूक प्रयोग है। मोती शंख को चावलों से भरकर लाल कपड़े में बांध लें और यह पोटली घर में किसी स्थान पर रख दें, तो लक्ष्मी प्राप्ति स्वतः होने लगती है। जब तक वह पोटली घर में रहेगी निरंतर उन्नति होती रहेगी।

वस्तुतः यह शंख अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ एवं प्रभावयुक्त है तथा ऐसे बिरले ही भाग्यशाली होंगे, जिसके घर में इस प्रकार का दुर्लभ महत्वपूर्ण शंख पाया जाता होगा। पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस प्रकार का शंख तभी सफलता देने वाला हो सकता है, जब वह प्राण संजीवनी क्रिया से युक्त मंत्र सिद्ध प्राण–प्रतिष्ठा युक्त हो। वस्तुतः यह शंख प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी है।

शंख की स्थापना :-

प्राचीन काल से ही प्रत्येक घर में पूजा-वेदी पर शंख की स्थापना की जाती है। निर्दोष एवं पवित्र शंख को दीपावली, होली, महाशिवरात्रि, नवरात्र, रवि-पुष्य, गुरु-पुष्य नक्षत्र आदि शुभ मुहूर्त में विशिष्ट कर्मकांड के साथ स्थापित किया जाता है। रुद्र, गणेश, भगवती, विष्णु भगवान आदि के अभिषेक के समान शंख का भी गंगाजल, दूध, घी, शहद, गुड़, पंचद्रव्य आदि से अभिषेक किया जाता है। इसका धूप, दीप, नैवेद्य से नित्य पूजन करना चाहिए और लाल वस्त्र के आसन में स्थापित करना चाहिए। शंखराज सबसे पहले वास्तु-दोष दूर करते हैं। मान्यता है कि शंख में कपिला (लाल) गाय का दूध भरकर भवन में छिड़काव करने से वास्तुदोष दूर होते हैं। परिवार के सदस्यों द्वारा आचमन करने से असाध्य रोग एवं दुःख-दुर्भाग्य दूर होते हैं। विष्णु शंख को दुकान, ऑफिस, फैक्टरी आदि में स्थापित करने पर वहाँ के वास्तु-दोष दूर होते हैं तथा व्यवसाय आदि में लाभ होता है। शंख की स्थापना से घर में लक्ष्मी का वास होता है। स्वयं माता लक्ष्मी कहती हैं कि शंख उनका सहोदर भ्राता है। शंख, जहाँ पर होगा, वहाँ वे भी होंगी। देव प्रतिमा के चरणों में शंख रखा जाता है। पूजास्थली पर दक्षिणावृत्ति शंख की स्थापना करने एवं पूजा-आराधना करने से माता लक्ष्मी का चिरस्थायी वास होता है। इस शंख की स्थापना के लिए नर-मादा शंख का जोड़ा होना चाहिए। गणेश शंख में जल भरकर प्रतिदिन गर्भवती नारी को सेवन कराने से संतान गूंगेपन, बहरेपन एवं पीलिया आदि रोगों से मुक्त होती है। अन्नपूर्णा शंख की व्यापारी व सामान्य वर्ग द्वारा अन्नभंडार में स्थापना करने से अन्न, धन, लक्ष्मी, वैभव की उपलब्धि होती है। मणिपुष्पक एवं पांचजन्य शंख की स्थापना से भी वास्तु-दोषों का निराकरण होता है। शंख का तांत्रिक-साधना में भी उपयोग किया जाता है। इसके लिए लघु शंखमाला का प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।[7]

शंख के वैज्ञानिक पहलू :-

- शंख का महत्त्व धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, वैज्ञानिक रूप से भी है। वैज्ञानिकों का मानना है कि शंखध्वनि के प्रभाव में सूर्य की -जब किरणें बाधक होती हैं। अतः प्रातः व सायंकाल में सूर्य की किरणें निस्तेज होती हैं, तभी शंखध्वनि करने का विधान है। इससे -द्ध रआसपास का वातावरण तता पर्यावरण शुहता है। आयुर्वेद के अनुसार शंखोदक भस्म से पेट की बीमारियाँ, पीलिया, कास प्लीहा यकृत, पथरी आदि रोग ठीक होते हैं।
- ऋषि श्रृंग की मान्यता है कि छोटेछोटे शंख बाँधने तथा शंख में जल भरकर अभिमंत्रित करके -छोटे बच्चों के शरीर पर छोटे-रहता है दोष नहीं-पिलाने से वाणी। बच्चा स्वस्थ रहता है। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि मूक एवं श्वास रोगी हमेशा शंख बजायें तो बोलने की शक्ति पा सकते हैं।

- आयुर्वेदाचार्य डॉजल का पान करें-रूक कर बोलने व हकलाने वाले यदि नित्य शंख-विनोद वर्मा के अनुसार रूक., तो उन्हें आश्चर्यजनक लाभ मिलेगा। दरअसल मूकता व हकलापन दूर करने के लिए शंखजल एक महौषधि है।-
- हृदय रोगी के लिए यह रामबाण औषधि है। दूध का आचमन कर कामधेनु शंख को कान के पास लगाने से `ॐ' की ध्वनि का अनुभव किया जा सकता है। यह सभी मनोरथों को पूर्ण करता है।
- यजुर्वेद में कहा गया है कि **यस्तु शंखध्वनिं कुर्यात्पूजाकाले विशेषत; वियुक्तः सर्वपापेन विष्णुनां सह मोदते**अर्थात पूजा के समय जो व्यक्ति शंखध्वनि करता है-, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और वह भगवान विष्णु के साथ आनंद करता है।
- 1928 में बर्लिन यूनिवर्सिटी ने शंख ध्वनि का अनुसंधान करके यह सिद्ध किया कि इसकी ध्वनि कीटाणुओं को नष्ट करने कि उत्तम औषधि है।
- ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार, पूजा के समय शंख में जल भरकर देवस्थान में रखने और उस जल से पूजन सामग्री धोने और घर के आसपास छिड़कने से वातावरण शुद्ध रहता है। क्योकि शंख के जल में कीटाणुओं को- नष्ट करने की अद्भुत शक्ति होती है। साथ ही शंख में रखा पानी पीना स्वास्थ्य और हमारी हड्डियों, दांतों के लिए बहुत लाभदायक है। शंख में गंधक, फास्फोरस और कैल्शियम जैसे उपयोगी पदार्थ मौजूद होते हैं। इससे इसमें मौजूद जल सुवासित और रोगाणु रहित हो जाता है। इसीलिए शास्त्रों में इसे महाऔषधि माना जाता है।
- तानसेन ने अपने आरंभिक दौर में शंख बजाकर ही गायन शक्ति प्राप्त की थी। अथर्ववेद के चतुर्थ अध्याय में शंखमणि सूक्त में शंख की महत्ता वर्णित है।
- अथर्ववेद के अनुसार, शंख से राक्षसों का नाश होता है - **शंखेन हत्वा रक्षांसि।** भागवत पुराण में भी शंख का उल्लेख हुआ है।
- यजुर्वेद के अनुसार युद्ध में शत्रुओं का हृदय दहलाने के लिए शंख फूंकने वाला व्यक्ति अपिक्षित है। गोरक्षा संहिता, विश्वामित्र संहिता, पुलस्त्य संहिता आदि ग्रंथों में दक्षिणावर्ती शंख को आयुर्वद्धक और समृद्धि दायक कहा गया है।[10]

शंख शंख बजाना / ध्वनि—

शंख नाद का प्रतीक है। नाद जगत में आदि से अंत तक व्याप्त है। सृष्टि का आरंभ भी नाद से ही होता है और विलय भी उसी में होता है। दूसरे शब्दों में शंख को ॐ का प्रतीक माना जाता है, इसलिए पूजाअर्चना आदि समस्त मांगलिक अवसरों पर शंख ध्वनि की - विशेष महत्ता है। हिन्दू संस्कृति में पूजा और अनुष्ठान के समय शंख बजाने की परंपरा है जो बहुतुरानी है। जैन, बौद्ध, शाक्त, शैव, वैष्णव आदि सभी संप्रदायों में शंख ध्वनि शुभ मानी गई है। शंख ध्वनि किसी का ध्यान आकर्षित करने या कोई संकेत देने के लिए की जाती है। दूसरी बात ये कि क्योंकि शंख पानी से निकलता है और पानी को जीवन से जोड़ा जाता है इसलिए इसे जीवन का प्रतीक भी माना जाता है। तीसरा ये कि किसी राजदरबार में राजा के आगमन की सूचना शंख बजाकर दी जाती थी और सबसे प्रचलित शंख ध्वनि युद्ध के प्रारंभ और अंत की सूचना के लिए की जाती थी। महाभारत युद्ध में शंख ध्वनि की विशद चर्चा है। कई योद्धाओं के शंखों के नाम भी गिनाए गए हैं जिसमें कृष्ण के पांचजन्य शंख की विशेष महत्ता बताई गई है। जहां तक तीन बार शंख बजाने की परंपरा है वह आदि, मध्य और अंत से जुड़ी है। वैदिक मान्यता के अनुसार शंख को विजय घोष का प्रतीक माना जाता है। कार्य के आरम्भ करने के समय शंख बजाना शुभता का प्रतीक माना जाता है। इसके नाद से सुनने वाले को सहज ही ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव हो जाता है और मस्तिष्क के विचारों में भी सकारात्मक बदलाव आ जाता है।[4]

हमारे यहां शंख बजाना एक धार्मिक अनुष्ठान है। पूजा आरती, कथा, धार्मिक अनुष्टानों, हवन, यज्ञ आदि के आरंभ व अंत में भी शंख-ध्वनि करने का विधान है। इसके पीछे धार्मिक आधार तो है ही, वैज्ञानिक रूप से भी इसकी प्रामाणिकता सिद्ध हो चुकी है। और शंख बजाने वाले व्यक्ति को स्वास्थ्य लाभ भी मिलता है। शंख की पवित्रता और महत्त्व को देखते हुए हमारे यहां सुबह और शाम शंख बजाने की प्रथा शुरू की गई है। मंदिरों में नियमित रूप से और बहुत से घरों में पूजापाठ, धार्मिक अनुष्ठान, व्रत, कथा, जन्मोत्सव आदि अवसरों पर शंख बजाना एक शुभ परम्परा मानी जाती है। कहा जाता है कि शंख बजाने से घर के बाहर की आसुरी शक्तियां घर के भीतर प्रवेश नहीं कर पाती हैं। पारद शिवलिंग, पार्थिव शिवलिंग एवं मंदिरों में शिवलिंगों पर रुद्राभिषेक करते समय शंख-ध्वनि की जाती है। आरती, धार्मिक उत्सव, हवन-क्रिया, राज्याभिषेक, गृह-प्रवेश, वास्तु-शांति आदि शुभ अवसरों पर शंख-ध्वनि से लाभ मिलता है। धार्मिक शास्त्रों के अनुसार शंख बजाने से भूत-प्रेत, अज्ञान, रोग, दुराचार, पाप, दुषित विचार और गरीबी का नाश होता है। शंख बजाने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। महाभारत काल में श्रीकृष्ण द्वारा कई बार अपना पंचजन्य शंख बजाया

गया था। पितृ-तर्पण में शंख की अहम भूमिका होती है। शंख में ओम ध्वनि प्रतिध्वनित होती है, इसलिए ओम से ही वेद बने और वेद से ज्ञान का प्रसार हुआ। पुराणों और शास्त्रों में शंख ध्वनि को कल्याणकारी कहा गया है। इसकी ध्वनि विजय का मार्ग प्रशस्त करती है। शंख की ध्वनि से भक्तों को पूजा-अर्चना के समय की सूचना मिलती है। आरती के समापन के बाद इसकी ध्वनि से मन को शांति मिलती है।

शंख के प्रकार :-

शंख कई प्रकार के होते हैं और सभी प्रकारों की विशेषता एवं पूजन-पद्धति भिन्न-भिन्न है। उच्च श्रेणी के श्रेष्ठ शंख कैलाश मानसरोवर, मालद्वीप, लक्षद्वीप, कोरामंडल द्वीप समूह, श्रीलंका एवं भारत में पाये जाते हैं। शंख की आकृति (उदर) के आधार पर इसके प्रकार माने जाते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं - दक्षिणावृत्ति शंख, मध्यावृत्ति शंख तथा वामावृत्ति शंख। जो शंख दाहिने हाथ से पकड़ा जाता है, वह दक्षिणावृत्ति शंख कहलाता है। जिस शंख का मुँह बीच में खुलता है, वह मध्यावृत्ति शंख होता है तथा जो शंख बायें हाथ से पकड़ा जाता है, वह वामावृत्ति शंख कहलाता है। शंख का उदर दक्षिण दिशा की ओर हो तो दक्षिणावृत्त और जिसका उदर बायीं ओर खुलता हो तो वह वामावृत्त शंख है। मध्यावृत्ति एवं दक्षिणावृति शंख सहज रूप से उपलब्ध नहीं होते हैं। इनकी दुर्लभता एवं चमत्कारिक गुणों के कारण ये अधिक मूल्यवान होते हैं। इनके अलावा लक्ष्मी शंख, गोमुखी शंख, कामधेनु शंख, विष्णु शंख, देव शंख, चक्र शंख, पौंड्र शंख, सुघोष शंख, गरुड़ शंख, मणिपुष्पक शंख, राक्षस शंख, शनि शंख, राहु शंख, केतु शंख, शेषनाग शंख, कच्छप शंख आदि प्रकार के होते हैं। हिन्दुओं के 33 करोड़ देवता हैं। सबके अपने- अपने शंख हैं। देव-असुर संग्राम में अनेक तरह के शंख निकले, इनमे कई सिर्फ़ पूजन के लिए होते है।

शंख की उत्पत्ति :-

शंख की उत्पत्ति संबंधी पुराणों में एक कथा वर्णित है। सुदामा नामक एक कृष्ण भक्त पार्षद राधा के शाप से शंखचूड़ दानवराज होकर दक्ष के वंश में जन्मा। अन्त में विष्णु ने इस दानव का वध किया। शंखचूड़ के वध के पश्चात् सागर में बिखरी उसकी अस्थियों से शंख का जन्म हुआ और उसकी आत्मा राधा के शाप से मुक्त होकर गोलोक वृंदावन में श्रीकृष्ण के पास चली गई।[8] भारतीय धर्मशास्त्रों में शंख का विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है। मान्यता है कि इसका प्रादुर्भाव समुद्र मंथन से हुआ था। समुद्र-मंथन से प्राप्त 14 रत्नों में से छठवां रत्न शंख था। अन्य 13 रत्नों की भांति शंख में भी वही अद्भुत गुण मौजूद थे। विष्णु पुराण के अनुसार माता लक्ष्मी समुद्रराज की पुत्री हैं तथा शंख उनका सहोदर भाई है। अत यह भी मान्यता है कि जहाँ शंख है, वहीं लक्ष्मी का वास होता है। इन्हीं कारणों से शंख की पूजा भक्तों को सभी सुख देने वाली है। शंख की उत्पत्ति के संबंध में हमारे धर्म ग्रंथ कहते हैं कि सृष्टी आत्मा से, आत्मा आकाश से, आकाश वायु से, वायु आग से, आग जल से और जल पृथ्वी से उत्पन्न हुआ है और इन सभी तत्व से मिलकर शंख की उत्पत्ति मानी जाती है। भागवत पुराण के अनुसार, संदीपन ऋषि आश्रम में श्रीकृष्ण ने शिक्षा पूर्ण होने पर उनसे गुरु दक्षिणा लेने का आग्रह किया। तब ऋषि ने उनसे कहा कि समुद्र में डूबे मेरे पुत्र को ले आओ। कृष्ण ने समुद्र तट पर शंखासुर को मार गिराया। उसका खोल शेष रह गया। माना जाता है कि उसी से शंख की उत्पत्ति हुई। पांचजन्य शंख वही था। पौराणिक कथाओं के अनुसार, शंखासुर नामक असुर को मारने के लिए श्री विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया था। शंखासुर के मस्तक तथा कनपटी की हड्डी का प्रतीक ही शंख है। उससे निकला स्वर सत की विजय का प्रतिनिधित्व करता है।

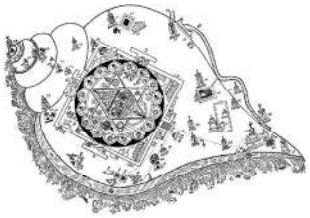

-: बिना औषधि रोग निदान : मुद्रा प्रयोग :-

1. **केश संबंधित रोग** :— जिन व्यक्तियों के केश संबंधित रोग जैसे बाल सफेद होना, बाल गिरना, रूसी होना, गंजापन फैलना, ऊम्र से पहले बालों का सफेद होना आदि रोग हो, उनके लिए तत्व मुद्रा श्रेष्ठ है।
   विधि :— नहाने के पहले खड़े होकर अनामिका अंगुली को अंगूठे से मिलावें व शेष अंगुलियाँ खड़ी रखें व नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ावें। इससे लाभ होगा।
2. **नेत्र रोग** :— जिन व्यक्तियों को नेत्र संबंधी रोग होते हैं, उन्हें अंकुश मुद्रा लाभदायक होती है। इससे नेत्रों की ज्योति बढ़ती है और रोग निदान होता है।
   विधि :— पद्मासन की मुद्रा में बैठकर दायें हाथ की मुट्ठी बांधकर तर्जनी अंगुली को सीधी रखें। फिर मध्यमा अंगुली पर अपनी दृष्टि केंद्रित रखें व नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ायें। इससे लाभ होगा।
3. **चेहरे का आकर्षण** :— यदि आपके चेहरे का आकर्षण समाप्त हो गया है, फोड़े—फुंसी निकल रहे हों या त्वचा रूखी महसूस हो रही हो तो कुम्भ मुद्रा लाभदायक होगी।
   विधि :— प्रातःकाल दाहिने एवं बायें हाथ से हल्की मुट्ठी बनावें एवं दोनों हाथों के अंगूठे से तर्जनी अंगुली को स्पर्श करें एवं बायें हाथ को दायें हाथ के ऊपर रखें। इससे चेहरे का आकर्षण बढ़ता है। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ायें। इससे लाभ होगा।
4. **स्वर शोधक** :— जिन व्यक्तियों को बोलने में हिचकिचाहट होती हो व जिनका आवाज स्पष्ट न हो अथवा बोलते समय स्वर घरघराता हो, उनके लिए प्राण मुद्रा श्रेष्ठ है।
   विधि :— अपने अंगूठे से अनामिका एवं कनिष्ठिका उंगली के पोरों को स्पर्श करें व शेष दोनों अंगुलियों को सीधी रखें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ाएं। इससे लाभ होगा।
5. **मुख शोधन** :— जिन व्यक्तियों के मुख से दुर्गन्ध आती हो या मुख संबंधित कोई रोग हो, उनके लिए व्यान मुद्रा श्रेष्ठ है।
   विधि :— अपने अंगूठे से कनिष्ठिका व मध्यमा के पोरों का स्पर्श करें व शेष दोनों अंगुलियाँ सीधी रखें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ाएं। इससे लाभ होगा।
6. **गले के रोग** :— जिन व्यक्तियों के गले में सूजन हो, टॉन्सिल हो या दद्र हो, उनके लिए उदान मुद्रा श्रेष्ठ है।
   विधि :— अंगूठे से तर्जनी को स्पर्श करें व सीधे बैठकर **'सौं'** बीजमंत्र का जप करें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ाएं। इससे लाभ होगा।
7. **फेफड़ों के रोग** :— जिन व्यक्तियों के श्वास नली में सूजन या फेफड़े संबंधी रोग हो, उनके लिए सन्निधापिनी मुद्रा श्रेष्ठ है।
   विधि :— दोनों हाथ की अंगुलियों से मुट्ठी बनायें, मुट्ठी सीधी रखें व उन्हें आपस में जोड़ लें। दोनों अंगूठे को अलग—अलग रखते हुए 90^0 अंश पर रखें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ायें। इससे लाभ होगा।
8. **हृदय संबंधी रोग** :— जिन व्यक्तियों के परिवार में हृदय रोग हो एवं जिनके हृदय संबंधी रोग हो या रोग की संभावना हो, उनके लिए आवाहनी मुद्रा श्रेष्ठ है।
   विधि :— पद्मासन या सुखासन की मुद्रा में बैठकर दोनों हाथों को मिलाकर अंगुली बना लें व अंगूठों से अनामिका के मूल को स्पर्श करें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ायें। इससे लाभ होगा।
9. **पेट संबंधी रोग** :— जिन व्यक्तियों के पेट में कीड़े या पित्त बनता हो या पेट संबंधित रोग रहता हो, उनके लिए सम्मुखीकरण मुद्रा श्रेष्ठ है।
   विधि :— सीधे बैठकर अपने दोनों हाथों से मुट्ठी बनायें व दोनों हाथों की मुट्ठी को परस्पर कनिष्ठिका अंगुली से मिला लें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ाएं। इससे लाभ होगा।
10. **कमर संबंधी रोग** :— जिन व्यक्तियों को कमर दद्र रहता है, उनके लिए सन्निरोधिनी मुद्रा श्रेष्ठ है।

प्रस्तुति :— श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:— हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

विधि :– दोनों हाथों से मुट्ठी बांधकर आमने–सामने रखकर जोड़ें व कमर बिल्कुल सीधी रखें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ाएं। इससे लाभ होगा।

11. **हाथ–पैर संबंधी रोग** :– जिन व्यक्तियों के हाथ–पैरों में दद्र रहता है, उनके लिए सम्पुटी मुद्रा श्रेष्ठ है।
विधि :– इस मुद्रा में बायें हाथ को आकाश की तरफ रखें तथा उस पर दाहिने हाथ से सम्पुट करें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ाएं। इससे लाभ होगा।
12. **वात रोग** :– जिन व्यक्तियों को वात रोग हो, उनके लिए शंख मुद्रा उत्तम है।
विधि :– सीधे बैठकर संध्या से पूर्व बायें हाथ के अंगूठे को दायें हाथ से मुट्ठी बनाकर पकड़ें तथा मुट्ठी को दाहिने हाथ की अंगुली से स्पर्श करायें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ायें। इससे लाभ होगा।
13. **गुद्रे के रोग** :– जिन व्यक्तियों को गुर्दा का रोग हो, उनके लिए गदा मुद्रा श्रेष्ठ है।
विधि :– दोनों हाथ की अंगुलियों को परस्पर मिलाएं। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ायें। इससे लाभ होगा।
14. **चर्म रोग** :– जिन्हें त्वचा संबंधी रोग हो, उनके लिए चक्र मुद्रा श्रेष्ठ है।
विधि :– दोनों हाथ की अंगुलियों को फैलायें व बायें हाथ की कनिष्ठिका से दायें हाथ की कनिष्ठिका को स्पर्श करें तथा बायें हाथ के अंगूठे से दायें हाथ के अंगूठे को परस्पर स्पर्श करें।
15. **उच्च रक्तचाप** :– जिन व्यक्तियों को उच्च रक्तचाप की शिकायत हो, उनके लिए ज्ञान मुद्रा उत्तम होता है।
विधि :– अंगूठे व तर्जनी को मिलाकर स्पर्श करें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ायें। इससे लाभ होगा।
16. **तनाव/अनिद्रा** :– जिन व्यक्तियों को तनाव या अनिद्रा की शिकायत रहती है अथवा सर्दी–जुकाम इत्यादि रहते हैं, उनके लिए हिरणी मुद्रा श्रेष्ठ है।
विधि :– सीधे बैठकर मध्यमा व अनामिका के पोर से अंगूठे को परस्पर मिलाएं। शेष दोनों अंगुलियों को सीधी रखें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ायें। इससे लाभ होगा।
17. **हीन भावना** :– जिन व्यक्तियों में हीन भावना महसूस होती है, उनके लिए नेतृत्व मुद्रा अच्छी होती है।
विधि :– तर्जनी अंगुली को सीधी रखकर शेष अंगुलियों को मुट्ठी की तरह बंद करें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ायें। इससे लाभ होगा।
18. **मोटापा** :– मोटे व्यक्तियों हेतु रवि मुद्रा लाभकारी है।
विधि :– अनामिका को अंगूठे की जड़ में लगायें व अंगूठे से दबायें तथा शेष अंगुलियाँ सीधी रखें। नित्य पाँच मिनट से प्रारंभ करते हुए अभ्यास बढ़ायें। इससे लाभ होगा।
19. **सिरदर्द** :– सिरदर्द होने पर दोनों हाथों की कोहिनी के ऊपर धोती के किनारे अथवा रस्सी से खूब कसकर बांध देना चाहिए। इससे पाँच–सात मिनट में ही सरदद्र जाता रहेगा। ऐसा बांधना चाहिए कि रोगी को हाथ में अत्यंत दद्र मालूम हो। सिरदर्द अच्छा होते ही बांहें खोल देनी चाहिए।
20. **आधासीसी** :– सिरदर्द दूसरे प्रकार का एक और होता है, जिसे साधारणतः 'अधकपारी' या 'आधासीसी' कहते हैं। कपाल के मध्य से बाईं या दाहिनी ओर आधे कपाल और मस्तक में अत्यंत पीड़ा महसूस होती है। प्रायः यह पीड़ा सूर्योदय के समय आरंभ होती है और दिन चढ़ने के साथ–साथ यह बढ़ती भी जाती है। दोपहर के बाद घटनी प्रारम्भ होती है और सायंकाल तक प्रायः नहीं रहती है। जिस तरफ के कपाल में दद्र हो, उसी तरफ के कोहिनी के ऊपर जोर से रस्सी बांध देनी चाहिए। थोड़ी ही देर में दद्र शांत हो जाएगा। यदि पुनः दद्र शुरू हो और प्रतिदिन एक ही नासिका से श्वास चलते समय हो तो सिरदद्र मालूम होते ही उस नाक को बंद कर देना चाहिए और हाथ को बांधे रखना चाहिए।
21. **अजीर्ण** :– दाईं नासिका से श्वास चलते समय ही भोजन करना चाहिए। प्रतिदिन इस नियम द्वारा आहार करने से वह बहुत आसानी से पच जाएगा और कभी अजीर्ण रोग नहीं होगा। भोजन के बाद थोड़ी देर बाईं करवट सोना चाहिए।

22. **उदर रोग** :– स्थिरता के साथ बैठकर नाभिमंडल में अपलक दृष्टि जमाकर नाभिकंद का ध्यान करने से एक सप्ताह में उदरामय 'उदर संबंधी' रोग दूर हो जाता है।
23. **प्लीहा** :– रात को बिछौने पर सोकर और प्रातः शय्या त्याग के समय हाथ और पैरों को सिकोड़कर छोड़ देना चाहिए। फिर कभी बायीं ओर और कभी दायीं करवट टेढ़ा–मेढ़ा शरीर करके समस्त शरीर को सिकोड़ना और फैलाना चाहिए। प्रतिदिन चार–पाँच मिनट ऐसा करने से प्लीहा, यकृत, तिल्ली, लीवर रोग दूर हो जाएगा। सदैव करने से प्लीहा–यकृत रोगी को पीड़ा कभी नहीं भोगनी पड़ेगी।
24. **दंत रोग** :– प्रतिदिन जितनी बार मल–मूत्र का त्याग करें, उतनी बार दांतों की दोनों पंक्तियों को मिलाकर जोर से दबायें रखें। जब तक मल या मूत्र निकलता रहे, तबतक दाँतों से दाँत मिलाकर दबाए रहना चाहिए। दो–चार दिन ऐसा करने से कमजोर दाँतों की जड़ मजबूत हो जाएगी। नियमित अभ्यास करने से दंतमूल दृढ हो जाता है और दाँत दीर्घ कालतक काम देते हैं तथा दाँतों में किसी प्रकार की बीमारी होने का कोई भय नहीं रहता।
25. **स्नायविक वेदना** :– छाती, पीठ या बगल में, चाहे जिस स्थान में स्नायविक या अन्य किसी प्रकार की वेदना हो तो वेदना प्रतीत होते ही जिस नासिका से श्वास चलता हो, उसे बंद करने देने से दो–चार मिनट के पश्चात् अवश्य ही वेदना शांत हो जाएगी।
26. **दमा या श्वासरोग** :– जब दमे का जोर का दौरा पड़ा हो, तब जिस नासिका से निःश्वास चलता हो, उसे बंद करके दूसरी नासिका से श्वास चलाना चाहिए। दस–पंद्रह मिनट में दमे का जोर कम हो जाएगा। प्रतिदिन ऐसा करने से महीने भर में पीड़ा शांत हो जाएगी। दिन में जितने ही अधिक समय तक यह क्रिया की जाएगी, उतना ही शीघ्र यह रोग दूर हो जाएगा। इस क्रिया से बिना किसी दवा के बीमारी चली जाती है।
27. **वात** :– प्रतिदिन भोजन के बाद कंघी से सिर झाड़ना चाहिए। कंघी इस प्रकार चलानी चाहिए, जिससे उसके कांटे सिर को स्पर्श करें। उसके बाद दोनों पैर पीछे की ओर मोड़कर पंद्रह मिनट तक बैठना चाहिए। प्रतिदिन दोनों समय भोजन के बाद इस प्रकार बैठने से कितना भी पुराना वात क्यों न हो, अच्छा हो जाएगा। यदि स्वस्थ आदमी करे तो उसे वातरोग होने की कोई आशंका नहीं रहेगी।
28. **नेत्र रोग** :– (क) प्रतिदिन सबेरे बिछावन पर से उठते ही सबसे पहले मुँह में जितना पानी भरा जा सके, उतना भरकर दूसरे जल से आँखों को बीस बार झपट्टा मारकर धोना चाहिए। (ख) प्रतिदिन दोनों समय भोजन के बाद हाथ–मुँह धोते समय कम–से–कम सात बार आँखों में जल का झटका देना चाहिए। जितनी बार मुँह में जल डालें, उतनी बार आँख और मुँह को धोना न भूलें। (ग) प्रतिदिन स्नान के समय तेल–मालिश करते समय पहले दोनों पैरों के अंगूठों के नखों को तेल से भर देना चाहिए, फिर तेल लगाना चाहिए।

ये उपाय नेत्रों के लिए विशेष लाभदायक हैं। इनसे दृष्टि–शक्ति तेज होती है, आँखों में कोई बीमारी होने की संभावना नहीं रहती।

श्री गायत्री यंत्र

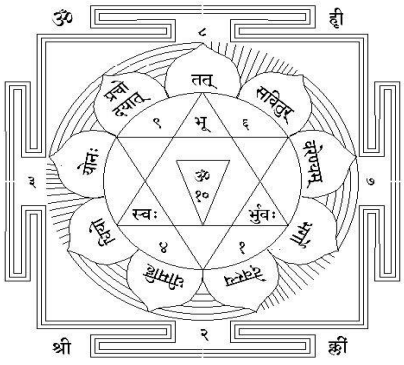

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो०:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

-: पिरामिड के प्रयोग :-

मिश्र के पिरामिड विश्व के सात आश्चर्यों में सम्मिलित है। पिरामिड का अर्थ शक्ति व ऊर्जा से है। यह ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को आकर्षित करके अंदर प्रेषित करते हैं। ग्रीक भाषा में 'पायरा' का अर्थ अग्नि व 'मिड' का अर्थ केन्द्र होता है। अर्थात् वह त्रिभुजाकार आकृति जिसमें अग्नि ऊर्जा का केन्द्र है। इसकी आकृति से सभी परिचित है। इसमें अधिक ऊर्जा हेतु एक के नीचे 9 पिरामिड रखते हैं। 9 अंक पूर्णता व शक्ति का प्रतीक हैं, जिसका स्वामी मंगल को माना गया है। तभी हमारे मंदिर गुंबदनुमा आकृति में होते हैं।

1. **कृषि में पिरामिड** :– बीजों को पिरामिड में रखकर बुवाई करने पर बोने से बीज शीघ्र अंकुरित होंगे। इसे खेत के चारों ओर रखने से उपज बढ़ती है।
2. **वास्तु दोष में पिरामिड** :– भवन के ऊपरी हिस्से पर पिरामिडनुमा आकृति बनवाने से वास्तु दोष का शमन होता है व उसमें निवास करने वाला व्यक्ति दीर्घायु, निरोगी, धार्मिक व शुभ विचारों वाला बनता है।
3. **धर्म व आध्यात्म में पिरामिड** :– पूजा कक्ष के ऊपर पिरामिड बनवाकर उसके नीचे बैठकर ध्यान करने से ऊर्जा अधिक मिलती है और पूजा में मन लगता है।
4. **उपकरणों में पिरामिड** :– एक्यूप्रेशरी या अन्य योग संबंधित उपकरण पिरामिड आकृति में होने से उनका प्रभाव बढ़ता है।
5. **एकाग्रता व स्मरण शक्ति वृद्धि** :– बर्तन में चावल रखें व उस पर पिरामिड रखकर सरस्वती या गणपति मंत्र का जप करें और उन चावलों की खीर खाने से एकाग्रता बढ़ती है व स्मरण शक्ति की वृद्धि होती है।
6. **आर्थिक संपन्नता व व्यापार वृद्धि** :– शुभ मुहूर्त्त में पिरामिड लाकर लक्ष्मी जी के मंत्रों से अभिमंत्रित करके ईशान या उत्तर दिशा में रखने से धन वृद्धि होगी।
7. **शत्रु नाश हेतु पिरामिड** :– ताम्र धातु से निर्मित पिरामिड बगलामुखी के मंत्र से अभिमंत्रित करके दक्षिण दिशा में लगाएं व शत्रु के नाम का उच्चारण करें और दीपक जलाएं।
8. **रोग निवारणार्थ** :– जिस अंग में रोग हो, उस पर पिरामिड रखने या बांधने से रोग का निवारण होता है। शीघ्र लाभ मिलता है।
9. **पिरामिड के अन्य प्रयोग** :– (i) मानव मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और हमारे विचार अच्छे हो जाते हैं। (ii) बच्चों को घर पर अध्ययन काल में पिरामिड पहनायें तथा कुर्सी के नीचे रखें। इससे उनकी बुद्धि का विकास होकर उन्हें जल्दी याद हो जाएगा। (iii) पिरामिड को जल की हाँड़ी के ऊपर रखने से बारह घंटे के भीतर ही जल अधिक स्वादयुक्त, मीठा तथा आरोग्यप्रद होता है। (iv) खाने–पीने का सामान एवं अंकुरित खाद्य पदार्थ, सब्जी तथा साग–भाजी आदि पिरामिड के नीचे रखने से अधिक गुणयुक्त एवं स्वादयुक्त व अधिक समय तक ताजे बने रहते हैं। (v) शरीर के जिस भाग में रोग या दर्द हो, उस भाग पर पिरामिड रखने से रोग एवं दर्द दूर हो जाता है। पिरामिड द्वारा चार्ज गर्म जल पीने से लाभ होता है। (vi) प्रतिदिन चेहरे एवं आँखों को पिरामिड युक्त जल द्वारा धोने से त्वचा चमकने लगती है। चेहरे की कांति एवं आँखों की रोशनी बढ़ जाती है। (vii) पिरामिड को टोपी की तरह प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल आधे घंटे तक पहने रखने से सिर दर्द, आधाशीशी, बालों का झड़ना, साइनस, टेंशन, डिप्रेशन, अनिद्रा, बाल सफेद होना आदि बिमारियाँ दूर हो जाती हैं। (viii) ध्यान तथा पूजा–प्रार्थना करते समय पिरामिड पहन लेने से एकाग्रता मिलती है। (ix) ऑफिस में कुर्सी के नीचे पिरामिड रखने से ऊर्जा मिलती है तथा शरीर में फुर्ती आती है। (x) टूथपेस्ट, तेल, बाम एवं दवाईयाँ पिरामिड के नीचे तीन–चार दिनों तक रखने से उनकी शक्ति बढ़ जाती है। (xi) बागीचों में पिरामिड युक्त जल का सिंचन करने से फूलों के रंग आकर्षक हो जाते हैं और वे रोगमुक्त हो जाते हैं। (xii) रात को सोते समय पलंग के नीचे पिरामिड रखने से बहुत अच्छी नींद आती है तथा नींद की गोलियों से छुटकारा मिल जाता है। (xiii) पिरामिड के जल से तैयार की गयी तुलसी की पत्ती को खाने से सर्दी, ज्वर, दर्द तथा अनेक रोगों में लाभ होता है। (xiv) अनेक पिरामिडों से बने यंत्रों को नित्यप्रति व्यवहार में लाने से शरीर के हर प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

-: शालिग्राम के बारे में जानकारी :-

पद्म पुराण के अनुसार चार भुजाधारी भगवान विष्णु के दाहिनी एवं ऊर्ध्व भुजा के क्रम से अस्त्र विशेष ग्रहण करने पर केशव आदि नाम होते हैं अर्थात, दाहिनी ओर का ऊपर का हाथ, दाहिनी ओर का नीचे का हाथ, बायीं ओर का ऊपर का हाथ और बायीं ओर का नीचे का हाथ– इस क्रम से चारों हाथों में शंख, चक्र आदि आयुधों को क्रम या व्यतिक्रमपूर्वक धारण करने पर भगवान की भिन्न–भिन्न संज्ञाएँ होती हैं। उन्हीं संज्ञाओं का निर्देश करते हुए यहाँ भगवान का पूजन बतलाया जाता है।

उपर्युक्त क्रम से चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करने वाले विष्णु का नाम श्केशवश है।
पद्म, गदा, चक्र और शंख के क्रम से शस्त्र धारण करने पर उन्हें श्नारायणश कहते हैं।
क्रमशरू चक्र, शंख, पद्म और गदा ग्रहण करने से वे श्माधवश कहलाते हैं।
गदा, पद्म, शंख और चक्र–इस क्रम से आयुध धारण करने वाले भगवान का नाम श्गोविन्दश है।
पद्म, शंख, चक्र और गदाधारी विष्णु रूप भगवान को प्रणाम है।
शंख, पद्म, गदा और चक्र धारण करने वाले मधुसूदन–विग्रह को नमस्कार है।
गदा, चक्र, शंख और पद्म से युक्त त्रिविक्रम को तथा
चक्र, गदा, पद्म और शंखधारी वामन मूर्ति को प्रणाम है।
चक्र, पद्म और गदा धारण करने वाले श्रीधर रूप को नमस्कार है।
चक्र, गदा, शंख तथा पद्मधारी हृषीकेश! आपको प्रणाम है।
पद्म, शंख, गदा और चक्र ग्रहण करने वाले पद्मनाभ विग्रह को नमस्कार है।
शंख, गदा, चक्र और पद्मधारी दामोदर! आपको मेरा प्रणाम है।
शंख, कमल, चक्र तथा गदा धारण करने वाले संकर्षण को नमस्कार है।
चक्र, शंख गदा तथा पद्म से युक्त भगवान वासुदेव! आपको प्रणाम है।
शंख, चक्र, गदा और कमल आदि के द्वारा प्रद्युम्नमूर्ति धारण करनेवाले भगवान को नमस्कार है।
गदा, शंख, कमल तथा चक्रधारी अनिरुद्ध को प्रणाम है।
पद्म, शंख, गदा और चक्र से चिह्नित पुरुषोत्तम रूप को नमस्कार है।
गदा, शंख, चक्र और पद्म ग्रहण करने वाले अधोक्षज को प्रणाम है।
पद्म, गदा, शंख और चक्र धारण करने वाले नृसिंह भगवान को नमस्कार है।
पद्म, चक्र, शंख और गदा लेने वाले अच्युतस्वरूप को प्रणाम है।
गदा, पद्म, चक्र और शंखधारी श्रीकृष्ण विग्रह को नमस्कार है।

शालिग्राम का स्वरूप और महिमा का वर्णन :-

जिस शालिग्राम–शिला में द्वार–स्थान पर परस्पर सटे हुए दो चक्र हों, जो शुक्ल वर्ण की रेखा से अंकित और शोभा सम्पन्न दिखायी देती हों, उसे भगवान श्री गदाधर का स्वरूप समझना चाहिये।

संकर्षण मूर्ति में दो सटे हुए चक्र होते हैं, लाल रेखा होती है और उसका पूर्वभाग कुछ मोटा होता है।

प्रद्युम्न के स्वरूप में कुछ–कुछ पीलापन होता है और उसमें चक्र का चिह्न सूक्ष्म रहता है।

अनिरुद्ध की मूर्ति गोल होती है और उसके भीतरी भाग में गहरा एवं चौड़ा छेद होता हैय इसके सिवा, वह द्वार भाग में नील वर्ण और तीन रेखाओं से युक्त भी होती है।

भगवान नारायण श्याम वर्ण के होते हैं, उनके मध्य भाग में गदा के आकार की रेखा होती है और उनका नाभि–कमल बहुत ऊँचा होता है।

भगवान नृसिंह की मूर्ति में चक्र का स्थूल चिह्न रहता है, उनका वर्ण कपिल होता है तथा वे तीन या पाँच बिन्दुओं से युक्त होते हैं। ब्रह्मचारी के लिये उन्हीं का पूजन विहित है। वे भक्तों की रक्षा करनेवाले हैं।

जिस शालिग्राम–शिला में दो चक्र के चिह्न विषम भाव से स्थित हों, तीन लिंग हों तथा तीन रेखाएँ दिखायी देती होंय वह वाराह भगवान का स्वरूप है, उसका वर्ण नील तथा आकार स्थूल होता है। भगवान वाराह भी सबकी रक्षा करने वाले हैं। कच्छप की मूर्ति श्याम वर्ण की होती है। उसका आकार पानी की भँवर के समान गोल होता है। उसमें यत्र–तत्र बिन्दुओं के चिह्न देखे जाते हैं तथा उसका पृष्ठ–भाग श्वेत रंग का होता है।

श्रीधर की मूर्ति में पाँच रेखाएँ होती हैं

वनमाली के स्वरूप में गदा का चिह्न होता है।

गोल आकृति, मध्यभाग में चक्र का चिह्न तथा नीलवर्ण, यह वामन मूर्ति की पहचान है।

जिसमें नाना प्रकार की अनेकों मूर्तियों तथा सर्प–शरीर के चिह्न होते हैं, वह भगवान अनन्त की प्रतिमा है।

दामोदर की मूर्ति स्थूलकाय एवं नीलवर्ण की होती है। उसके मध्य भाग में चक्र का चिह्न होता है। भगवान दामोदर नील चिह्न से युक्त होकर संकर्षण के द्वारा जगत की रक्षा करते हैं।

जिसका वर्ण लाल है, तथा जो लम्बी–लम्बी रेखा, छिद्र, एक चक्र और कमल आदि से युक्त एवं स्थूल है, उस शालिग्राम को ब्रह्मा की मूर्ति समझनी चाहिये।

जिसमें बृहत छिद्र, स्थूल चक्र का चिह्न और कृष्ण वर्ण हो, वह श्रीकृष्ण का स्वरूप है। वह बिन्दुयुक्त और बिन्दुशून्य दोनों ही प्रकार का देखा जाता है।

हयग्रीव मूर्ति अंकुश के समान आकार वाली और पाँच रेखाओं से युक्त होती है।

भगवान वैकुण्ठ कौस्तुभ मणि धारण किये रहते हैं। उनकी मूर्ति बड़ी निर्मल दिखायी देती है। वह एक चक्र से चिह्नित और श्याम वर्ण की होती है।

मत्स्य भगवान की मूर्ति बृहत कमल के आकार की होती है। उसका रंग श्वेत होता है तथा उसमें हार की रेखा देखी जाती है।

जिस शालिग्राम का वर्ण श्याम हो, जिसके दक्षिण भाग में एक रेखा दिखायी देती हो तथा जो तीन चक्रों के चिह्न से युक्त हो, वह भगवान श्री रामचन्द्रजी का स्वरूप है, वे भगवान सबकी रक्षा करनेवाले हैं।

द्वारकापुरी में स्थित शालिग्राम स्वरूप भगवान गदाधर को नमस्कार है, उनका दर्शन बड़ा ही उत्तम है।

1. भगवान गदाधर एक चक्र से चिह्नित देखे जाते हैं।
2. लक्ष्मीनारायण दो चक्रों से
3. त्रिविक्रम तीन से
4. चतुर्व्यूह चार से
5. वासुदेव पाँच से
6. प्रद्युम्न छरू से
7. संकर्षण सात से
8. पुरुषोत्तम आठ से
9. नवव्यूह नव से
10. दशावतार दस से
11. अनिरुद्ध ग्यारह से
12. द्वादशात्मा बारह चक्रों से युक्त होकर जगत की रक्षा करते हैं।
13. इससे अधिक चक्र चिह्न धारण करने वाले भगवान का नाम अनन्त है।

दण्ड, कमण्डलु और अक्षमाला धारण करनेवाले चतुर्मुख ब्रह्मा तथा

पाँच मुख और दस भुजाओं से सुशोभित वृषध्वज महादेव जी अपने आयुधों सहित शालग्रामशिला में स्थित रहते हैं।

गौरी, चण्डी, सरस्वती और महालक्ष्मी आदि माताएँ, हाथ में कमल धारण करनेवाले सूर्यदेव, हाथी के समान कंधेवाले गजानन गणेश, छरू मुखों वाले स्वामी कार्तिकेय तथा और भी बहुत–से देवगण शालिग्राम प्रतिमा में मौजूद रहते हैं, अतरू मन्दिर में शालिग्राम शिला की स्थापना अथवा पूजा करने पर ये उपर्युक्त देवता भी स्थापित और पूजित होते हैं। जो पुरुष ऐसा करता है, उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि की प्राप्ति होती है।

प्राप्तिस्थल :– गण्डकी अर्थात नारायणी नदी के एक प्रदेश में शालिग्राम स्थल नाम का एक महत्त्वपूर्ण स्थान हैय वहाँ से निकलनेवाले पत्थर को शालिग्राम कहते हैं। शालिग्राम शिला के स्पर्शमात्र से करोड़ों जन्मों के पाप का नाश हो जाता है। फिर यदि उसका पूजन किया जाय, तब तो उसके फल के विषय में कहना ही क्या हैय वह भगवान के समीप पहुँचाने वाला है। बहुत जन्मों के पुण्य से यदि कभी गोष्पद के चिह्न से युक्त श्रीकृष्ण शिला प्राप्त हो जाय तो उसी के पूजन से मनुष्य के पुनर्जन्म की समाप्ति हो जाती है। पहले शालिग्राम–शिला की परीक्षा करनी चाहियेय यदि वह काली और चिकनी हो तो उत्तम है। यदि उसकी कालिमा कुछ कम हो तो वह मध्यम श्रेणी की मानी गयी है। और यदि उसमें दूसरे किसी रंग का सम्मिश्रण हो तो वह मिश्रित फल प्रदान करने वाली होती है। जैसे सदा काठ के भीतर छिपी हुई आग मन्थन करने से प्रकट होती है, उसी प्रकार भगवान विष्णु सर्वत्र व्याप्त होने पर भी शालिग्राम शिला में विशेष रूप से अभिव्यक्त होते हैं। जो प्रतिदिन द्वारका की शिला–गोमती चक्र से युक्त बारह शालिग्राम मूर्तियों का पूजन करता है, वह वैकुण्ठ लोक में प्रतिष्ठित होता है। जो मनुष्य शालिग्राम–शिला के भीतर गुफा का दर्शन करता है, उसके पितर तृप्त होकर कल्प के अन्ततक स्वर्ग में निवास करते हैं। जहाँ द्वारकापुरी की शिला– अर्थात गोमती चक्र रहता है, वह स्थान वैकुण्ठ लोक माना जाता हैय वहाँ मृत्यु को प्राप्त हुआ मनुष्य विष्णुधाम में जाता है। जो शालग्राम–शिला की कीमत लगाता है, जो बेचता है, जो विक्रय का अनुमोदन करता है तथा जो उसकी परीक्षा करके मूल्य का समर्थन करता है, वे सब नरक में पड़ते हैं। इसलिये शालिग्राम शिला और गोमती चक्र की खरीद–बिक्री छोड़ देनी चाहिये। शालिग्राम–स्थल से प्रकट हुए भगवान शालिग्राम और द्वारका से प्रकट हुए गोमती चक्र– इन दोनों देवताओं का जहाँ समागम होता है, वहाँ मोक्ष मिलने में तनिक भी सन्देह नहीं है। द्वारका से प्रकट हुए गोमती चक्र से युक्त, अनेकों चक्रों से चिह्नित तथा चक्रासन–शिला के समान आकार वाले भगवान शालिग्राम साक्षात चित्स्वरूप निरंजन परमात्मा ही हैं। ओंकार रूप तथा नित्यानन्द स्वरूप शालिग्राम को नमस्कार है।

तिलक की विधि :–तिलक की विधि का वर्णन इस प्रकार है–

ललाट में केशव, कण्ठ में श्रीपुरुषोत्तम, नाभि में नारायणदेव, हृदय में वैकुण्ठ, बायीं पसली में दामोदर, दाहिनी पसली में त्रिविक्रम, मस्तक पर हृषीकेश, पीठ में पद्मनाभ, कानों में गंगा–यमुना, दोनों भुजाओं में श्रीकृष्ण और हरि का निवास समझना चाहिये।

उपर्युक्त स्थानों में तिलक करने से ये बारह देवता संतुष्ट होते हैं। तिलक करते समय इन बारह नामों का उच्चारण करना चाहिये। जो ऐसा करता है, वह सब पापों से शुद्ध होकर विष्णु लोक को जाता है। भगवान के चरणोदक को पीना चाहिये और पुत्र, मित्र तथा स्त्री आदि समस्त परिवार के शरीर पर उसे छिड़कना चाहिये। श्रीविष्णु का चरणोदक यदि पी लिया जाय तो वह करोड़ों जन्मों के पाप का नाश करने वाला होता है।

-: पूजा एवं उपासना में काम आने वाले विभिन्न प्रकार की करमुद्रायें :-

जिसे देख सभी देवता प्रसन्न होते हैं, तथा जिसके द्वारा समस्त पापपुंज दूर होते हैं, उसे मुद्रा कहते हैं। पूजा, जप, ध्यान, आवाहन, प्रतिष्ठा, अभिषेक तथा नैवेद्य आदि में मुद्राओं का उपयोग होता है। नीचे विभिन्न प्रकार की करमुद्रायें वर्णित हैं।

1. **अंकुश मुद्रा** :– दाहिने हाथ की मुट्ठी बांधकर मध्यमा अंगुली को प्रसारित करें तथा तर्जनी को संकुचित कर मध्यमा के मध्यम पर्व से संलग्न करें। इस मुद्रा द्वारा त्रैलोक्य का आकर्षण किया जा सकता है।

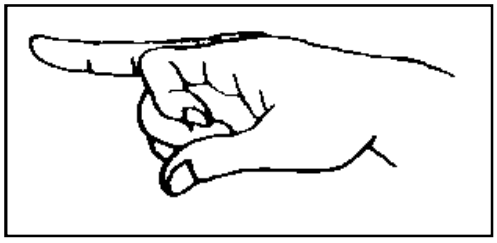

2. **अवगुण्ठन मुद्रा** :– बायें हाथ मुट्ठी बांधकर तर्जनी को प्रसारित करें एवं अधोमुख कर दाहिनी ओर घुमायें।

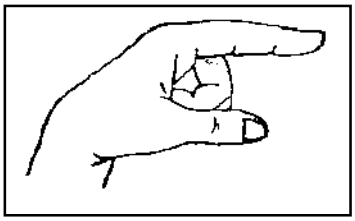

3. आवाहन्यादि पंचमुद्रा :– इन पाँच मुद्राओं का प्रयोग देवता के प्राण–प्रतिष्ठा एवं आवाहन इत्यादि में होता है। वे ये हैं – (क) आवाहनी मुद्रा (ख) संस्थापनी मुद्रा (ग) सन्निधापिनी मुद्रा (घ) सन्निरोधिनी मुद्रा (ङ) सम्मुखीकरण मुद्रा

(क) आवाहनी मुद्रा :– दोनों हाथों को अंजलीबद्ध कर अनामिकाओं के मूल पर्वों पर अंगुष्ठों को मिलाते हुए हाथों को ऊपर से नीचे की ओर लाने से आवाहनी मुद्रा होती है।

(ख) संस्थापनी मुद्रा :– आवाहनी मुद्रा में दोनों करतलों को अधोमुख करने से संस्थापिनी मुद्रा होती है।

(ग) सन्निधापिनी मुद्रा :– दोनों हाथों की मुट्ठी बांधकर उन्हें जोड़ते हुए दोनों अंगूठों को मिला देने से सन्निधापिनी मुद्रा होती है।

(घ) सन्निरोधिनी मुद्रा :– सन्निधापिनी मुद्रा में दोनों हाथों के अंगूठों को मुट्ठी के भीतर प्रविष्ठ कर देने पर सन्निरोधिनी मुद्रा होती है।

(ङ) सम्मुखीकरण मुद्रा :– सन्निरोधिनी मुद्रा में दोनों मुट्ठियों को उत्तान (ऊर्ध्वमुख) कर देने से सम्मुखीकरण मुद्रा होती है।

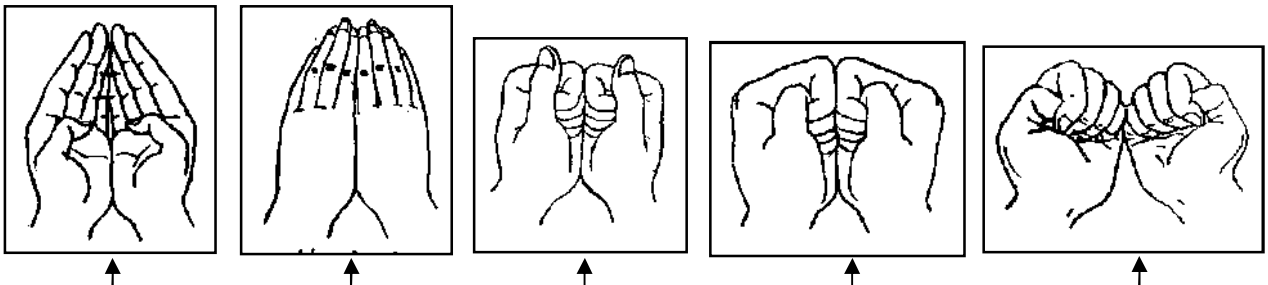

(क) आवाहनी मुद्रा (ख) संस्थापनी मुद्रा (ग) सन्निधापिनी मुद्रा (घ) सन्निरोधिनी मुद्रा (ङ) सम्मुखीकरण मुद्रा

4. **कूर्म मुद्रा** :– ऊर्ध्वमुख वाम हस्त की तर्जनी के अग्रभाग में अधोमुख दक्षित हस्त की कनिष्ठा का अग्रभाग तथा वाम हस्त के अंगुष्ठाग्र पर दक्षिण हस्त की तर्जनी का अग्रभाग संयोजित कर दक्षिण हस्त का अंगुष्ठ ऊँचा उठा रखें; वाम हस्त की मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठिका को दक्षिण करपृष्ठ पर स्थापित करें; दक्षिण हस्त की मध्यमा तथा अनामिका को बीच से मोड़कर वाम हस्त की तर्जनी तथा अंगुष्ठ के मध्यभाग में अधोमुख रखें एवं दक्षिण करपृष्ठ को कूर्मपृष्ठ की तरह ऊँचा उठायें। देवताओं के ध्यान के समय इस मुद्रा का उपयोग होता है।

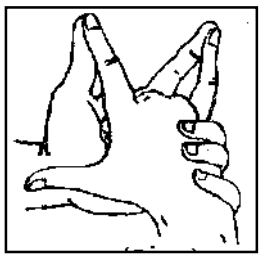

5. **गालिनी मुद्रा** :– दोनों करतलों को परस्पर सम्मुखीन कर दक्षिण हस्त की कनिष्ठा का वाम हस्त के अंगुष्ठ के साथ एवं वाम हस्त की कनिष्ठा को दक्षिण हस्त के अंगुष्ठ के साथ संयुक्त करे तथा दक्षिण हस्त की तर्जनी, मध्यमा तथा अनामिका के साथ वाम हस्त की अनामिका, मध्यमा तथा तर्जनी को सरल रेखा में मिलायें।

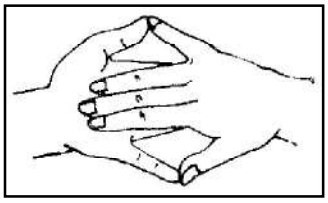

6. **गोयोनि मुद्रा** :– दाहिने हाथ की मुट्ठी बांधकर उसे उत्तान (ऊर्ध्वमुख) तथा शिथिल करें।→

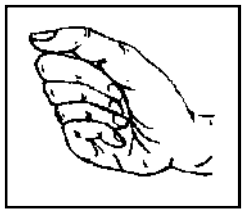

7. **ग्रास मुद्रा** :– उत्तान बायें की अंगुलियों को परस्पर वियुक्त रखते हुए अर्धविकसित कमल की पंखुड़ियों के सदृश कुछ संकुचित करें।

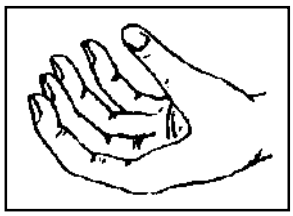

8. **चक्र मुद्रा** :– दाहिने हाथ के अंगुष्ठ के गर्भ में दाहिने हाथ की कनिष्ठा तथा बायें हाथ के अंगुष्ठ के गर्भ में बायें हाथ की कनिष्ठा को रख अन्य अंगुलियों को प्रसारित करें। अब बायें हाथ को दाहिनी ओर तथा दाहिने हाथ को बायीं ओर दोनों को परस्पर संयुक्त करें।

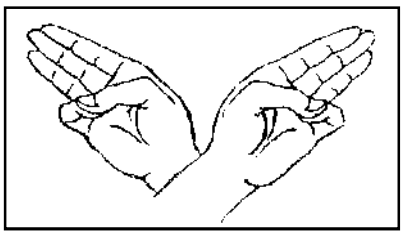

9. **ज्वालिनी मुद्रा** :– दोनों हाथों के प्रसारित करें तथा अंगुष्ठ के सहित अंगुष्ठ एवं कर उन्हें दोनों करतल के बीच में मिलायें। मुद्रा प्रदर्शित की जाती है। इस प्रकार सप्तजिह्वाओं का प्रदर्शन होता है।

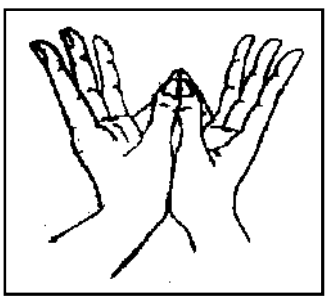

मणिबन्धों को संयुक्त कर अंगुलियों को कनिष्ठा के सहित कनिष्ठा को संयुक्त होम में अग्नि प्रज्वलन के समय यह ज्वालिनी मुद्रा से अग्नि की

10. तत्व मुद्रा :– दाहिने हाथ के अंगुष्ठ तथा अनामिका के अग्रभागों को संयुक्त करें। यह मुद्रा गुरु एवं देवताओं के तप्रण तथा न्यास आदि में प्रयुक्त होती है।

नोट :- कहीं-कहीं दाहिने हाथ के अंगूठे, अनामिका और मध्यमा को मिलाकर भी तत्व मुद्रा कही जाती है।

11. धेनु मुद्रा :– दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर सन्धि में मिलाकर बायें हाथ के कनिष्ठिकाग्र के साथ दाहिने हाथ का अनामिकाग्र तथा दाहिने हाथ के कनिष्ठकाग्र के साथ बायें हाथ का अनामिकाग्र संयुक्त करें। इसी प्रकार बायें हाथ के तर्जन्याग्र के साथ दाहिने हाथ का मध्याग्र तथा दाहिने हाथ के तर्जन्याग्र के साथ बायें हाथ का मध्यमाग्र संयुक्त करें। दोनों अंगुष्ठों को परस्पर संयुक्त रखें। इस मुद्रा को अमृतीकरण मुद्रा भी कहते हैं। इसके द्वारा पूजा में नैवेद्यादि उपकरणों का अमृतीकरण किया जाता है।

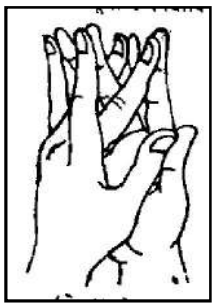

12. नाराच मुद्रा :– दाहिने हाथ की तर्जनी के अग्रभाग के साथ दाहिने हाथ के अंगुष्ठाग्र को संयुक्त कर अन्य सभी अंगुलियाँ प्रसारित करें तथा मुद्रा युक्त हस्त को दाहिने कंधे पर स्थापित करें।

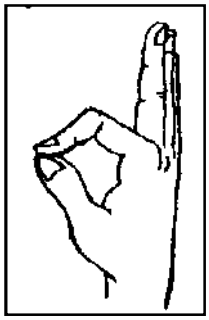

13. परमीकरण मुद्रा :– दोनों अंगूठों को परस्पर ग्रथित करते हुए अन्य अंगुलियों को संयुक्त रखकर प्रसारित करें।

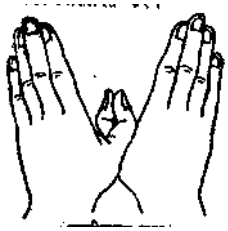

14. प्राणादि पंचमुद्रा :– (1) प्राण मुद्रा :– दाहिने हाथ की अंगुष्ठ, अनामिका तथा कनिष्ठा के अग्रभाग को जोड़ने पर प्राण मुद्रा होती है। (2) अपान मुद्रा :– अंगुष्ठ, मध्यमा एवं तर्जनी को जोड़ने पर अपान मुद्रा होती है। (3) व्यान मुद्रा :– अंगुष्ठ, अनामिका एवं मध्यमा को जोड़ने पर व्यान मुद्रा होती है। (4) उदान मुद्रा :– कनिष्ठा छोड़ बाकी सभी अंगुलियों को जोड़ने पर उदान मुद्रा होती है। (5) समान मुद्रा :– सभी अंगुलियों को जोड़ने पर समान मुद्रा होती है।

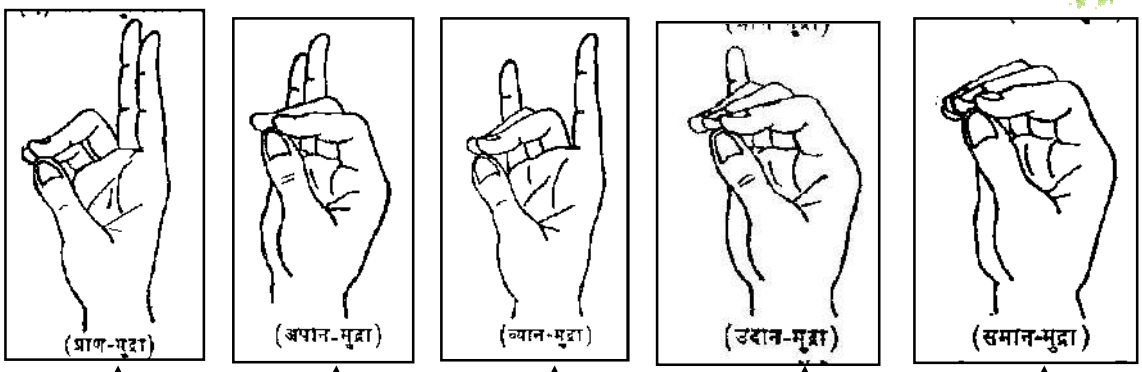

(प्राण मुद्रा) (अपान मुद्रा) (व्यान मुद्रा) (उदान मुद्रा) (समान मुद्रा)

नोट :- इन मुद्राओं के प्रदर्शन के समय बायें हाथ से ग्रास मुद्रा प्रदर्शित करनी चाहिए। देवताओं को नैवेद्य निवेदन करते समय इन मुद्राओं का प्रयोग होता है।

15. मत्स्य मुद्रा :– दक्षिण करपृष्ठ पर वाम करतल स्थापित कर जल में दौड़ती हुई मछली के समान अंगुष्ठों को संचालित करें तथा दूसरी सभी अंगुलियों को सीधी रखें।

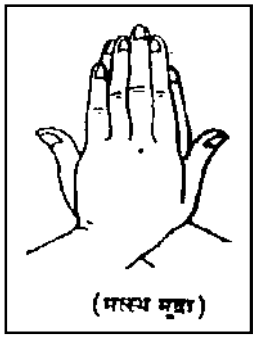

16. मृग मुद्रा :– दाहिने हाथ की अनामिका, मध्यमा तथा अंगुष्ठ के अग्रभाग को जोड़कर बाकी दोनों अंगुलियों को उन्नत तथा दण्डाकार रखें। (व्यान मुद्रा का रेखाचित्र देखें)। भगवान महामृत्युंजय के तस्वीर में उनके दोनों हाथों में यह मुद्रा देखी जा सकती है।

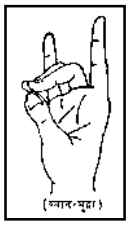

← मृग मुद्रा

17. योनि मुद्रा :– दोनों कनिष्ठिकाओं को परस्पर संयुक्त कर एक हाथ की तर्जनी से दूसरे हाथ की अनामिका को बांधें। इस प्रकार बद्ध अनामिकाओं के ऊपर दण्डाकारस्थित मध्यमाओं के अग्रभाग लगा रखें तथा मध्यमाओं के मूलेदश पर अंगुष्ठों के अग्रभाग मिलाकर रखें।

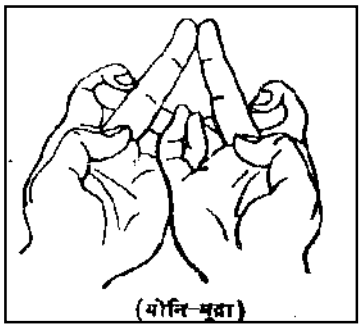

18. लेलिहान मुद्रा :– दक्षिण करतल अधोमुख रखकर तर्जनी, मध्यमा तथा अनामिका को संयुक्त रूप से अधोमुखी रखें। अनामिका के मूल पर अंगुष्ठ स्थापित कर कनिष्ठिका को दण्डाकार रूप से सीधी रखें। जीवन्यास के समय इस मुद्रा का प्रयोग होता है।

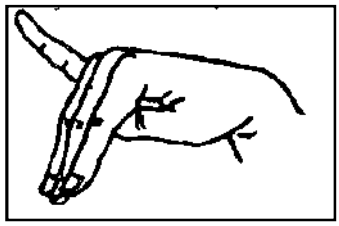

19. संहार मुद्रा :– वाम हस्त को अधोमुख रख कर उस पर ऊर्ध्वमुख दक्षिण हस्त स्थापित करें। उभय (दोनों) हाथों की कनिष्ठिका से कनिष्ठिका, अनामिका से अनामिका, मध्यमा से मध्यमा तथा तर्जनी से तर्जनी ग्रथित करें। अब इस संयुक्त हस्त को घुमाकर तर्जनियों के अग्रभाग से निर्माल्य ग्रहण कर उसे नाक के सम्मुख धारणपूर्वक आघ्राण करते हुए देवता को हृदय में स्थापित करें। फिर विपरीत रूप से हस्त घुमाकर उस निर्माल्य को भूमि पर स्थापित करके मुद्रा भंग करें।

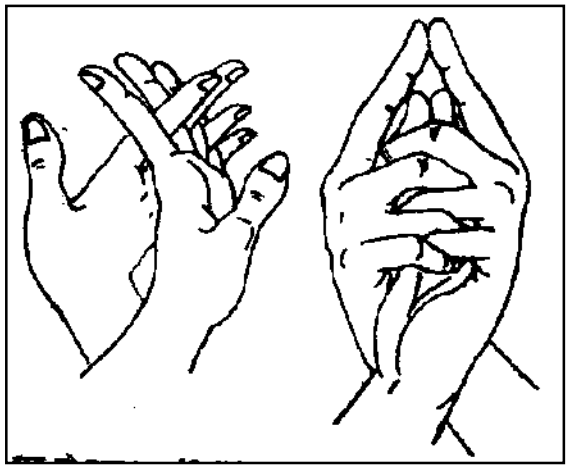

← संहार मुद्रा

सर्व सिद्धयै व्याघ्र चर्म, ज्ञानं सिद्धर्यं मृगाजिनम्। वस्त्रासनं रोग हरं वेत्रजं श्री विवर्धनम्।।
मुद्रं करोति देवानां द्रावय त्यसुरांस्तथा। मोदनाद् द्रावणाच्यैव मुद्रेति परिकीर्त्तिता।।

– अर्थात् देवताओं को हर्ष तथा असुरों का विनाश करने के कारण इसका नाम मुद्रा पड़ा। यहाँ पर साधकों की जानकारी के लिए कुछ अन्य मुद्राओं की भी संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत किया जा रहा है, क्योंकि साधनाओं में सफलता पाने के लिए इनका उपयोग अवश्य किया जाना चाहिए।

नित्य पूजा मुद्रायें :– 1. प्रार्थना 2. अंकुश 3. कुन्त 4. कुम्भ 5. तत्व

उपरोक्त पाँच मुद्रायें प्रत्येक साधक को दैनिक स्नानादि के समय करनी चाहिए।

सन्ध्या मुद्रायें – संध्या करते समय इन चौबीस करमुद्राओं को किया जाता है।

1. सम्मुखी 2. सम्पुटी 3. वितत 4. विस्तृत 5. द्विमुखी 6. त्रिमुखी 7. चतुर्मुखी 8. पंचमुखी 9. षणमुखी 10. अधोमुखी

11. व्यापक 12. आंजलिक 13. शकट 14. यम पाश 15. ग्रथित 16. सन्मुखोन्मुखा 17. प्रलय 18. मुष्टिक 19. मत्स्य

20. कूर्म 21. वाराह 22. सिंहाक्रान्त 23. महाक्रान्त 24. मुद्गर

अंगन्यास मुद्रायें – अंगन्यास करते समय शरीर के इन छः स्थानों पर तत्व मुद्रा या तंत्र शास्त्र में वर्णित मुद्राओं द्वारा स्पर्श किया जाता है। अंगन्यास की छः मुद्रायें इस प्रकार हैं :– 1. हृदय 2. शिर 3. शिखा 4. कवच 5. नेत्र 6. फट्

करन्यास मुद्रायें – करन्यास की भी छः मुद्रायें होती हैं। अंगुठे द्वारा विभिन्न अंगुलियों को स्पर्श किया जाता है।

1. अंगुष्ठ 2. तर्जनी 3. मध्यमा 4. अनामिका 5. कनिष्ठिका 6. फट्

जीवन्यास मुद्रायें :– 1. बीज 2. लेलिहान 3. त्रिखण्डा 4. नाद 5. बिंदु 6. सौभाग्य

देवोपासना की मुद्रायें :– 1. आवाहन 2. स्थापन 3. संनिद्ध 4. अवगुण्ठन 5. धेनुमुद्रा 6. सरली

भोजन मुद्रा :– 1. प्राणाहुति 2. अपानाहुति 3. व्यानाहुति 4. उदानाहुति 5. समानाहुति

कुण्डलिनी जागरण हेतु मात्र तीन मुद्रायें ही ज्यादा उपयोगी हैं '– 1. शक्ति चालिनी 2. योनि और 3. खेचरी

1. शक्ति चालिनी मुद्रा :– सर्वप्रथम साधक सिद्धासन में बैठ जाए तथा दोनों एड़ियों को मूलाधार से लगाये तथा ठोड़ी को हृदय से लगाकर जोरों से श्वास–प्रश्वास करें। इससे मणिपुर चक्र पर दवाब पड़ेगा तथा साथ ही गुदा संकोचन– खोलन करें। फलस्वरूप मूलाधार की अपान वायु का दवाब प्राण वायु पर होगा और इससे कुण्डलिनी जागरण होगी। यही शक्ति चालिनी मुद्रा कहलाती है।

2. योनि मुद्रा :– सिद्धासन पर बैठकर नौ द्वारों को बंद करें। दोनों अंगूठों से दोनों कानों को, दोनों तर्जनी से दोनों नेत्रों को, दोनों मध्यमाओं से दोनों नासिका छिद्रों को तथा गुदा व लिंग को दोनों एड़ियों से अवरूद्ध करें। फिर कौए की चोंच के समान जीभ कर श्वास अंदर खींचे तथा दोनों कनिष्ठिका उंगलियों से दोनों होठों को बंद कर दें। फिर कुंभक विरोचन कर षट्चक्र में कुण्डलिनी ध्यान करें और **'हुं'** मंत्र का मानसिक जप करें। इससे सुप्त कुण्डलिनी का निश्चय ही जागरण होता है।

3. खेचरी मुद्रा :– जीभ को काफी बाहर निकाल कर फिर मोड़कर मुँह के भीतर नासिका के नीचे छिद्र को स्पर्श करें। दोनों नेत्रों को भृकुटि के मध्य में स्थापित करें। यह मुद्रा सर्वाधिक कठिन एवं दुष्कर है। इसके अभ्यास से योगी हृदय की गति को नियंत्रित कर अखण्ड समाधिक या इच्छानुसार समाधि अवस्था में रत हो सकता है।

❄ खास दिनों किया गया ऐसा भोजन करता है, धन का नाश : क्या–क्या कब न खाएं ❄

1. प्रतिपदा को कूष्मांड न खाएं क्योंकि उस दिन यह धन का नाश करने वाला होता है।
2. द्वितीया को बृहती (छोटा बैंगन या कटेहरी) निषिद्ध है।
3. तृतीया को परवल खाने से शत्रुओं की वृद्धि होती है।
4. चतुर्थी को मूली खाने से धन का नाश होता है।
5. पंचमी को बेल खाने से कलंक लगता है।
6. षष्ठी को नीम की पत्ती, फल या दातुन मुंह में डालने से नीच योनि की प्राप्ति होती है।
7. सप्तमी को ताड़ का फल खाने से रोग बढ़ता है।
8. अष्टमी को नारियल फल खाने से बुद्धि का नाश होता है।
9. नवमी को लौकी न खाएं।
10. दशमी को कलंबी शाक त्याज्य है।
11. एकादशी को सेम खाने से पुत्र का नाश होता है।
12. द्वादशी को पोई (पूतिका) खाने से पुत्र को परेशानी होती है।
13. त्रयोदशी को बैंगन खाने से पुत्र का नाश होता है।
14. अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रांति, चतुर्दशी और अष्टमी तिथि, रविवार, श्राद्ध और व्रत के दिन तिल का तेल निषिद्ध है।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

—: इस पुस्तक के बारे में लेखकों के विचार :—

श्री राजेश वर्मा (सोनी) :—

व्यक्ति के जीवन में उसकी इच्छानुसार कार्य न होना ही दुःख व समस्या है। इसमें 85 प्रतिशत समस्याएँ व्यक्ति के स्वयं के कामों के द्वारा व 15 प्रतिशत समस्याएँ भाग्य व पूर्व जन्मकृत कर्मों पर आधारित हैं। ज्यों—ज्यों हमारी महत्वाकांक्षाएँ, मोह, इच्छाओं व अर्थ का दायरा बढ़ने लगा, त्यों—त्यों हमारी अपेक्षाएँ अधिक होती गयीं व वहाँ से समस्यायें आना शुरू हुईं। हम चाह कर भी मजबूरी व बाहरी आवरणवश अपने को संकुचित नहीं कर सकते, इसलिए प्रत्येक छोटी—छोटी समस्याओं के लिए किसी तांत्रिक, ज्योतिषी या डॉक्टर के पास चले जाते हैं। क्योंकि कुछ संकोच, समयाभाव व कुछ इनके द्वारा ठगे जाने का भय रहता है। इसके लिए हमने रोजमर्रा की सहज सुलभ सामग्री द्वारा अपने कार्य सिद्धि के उपायों पर प्रकाश डालाहै। मेरे निजी विचार से आज कोई भी कितना बड़ा ज्योतिषी, तांत्रिक या चमत्कारिक शक्ति आपके भाग्य व कर्म से अधिक कुछ भी नहीं दे सकते। जीवन—मरण, हानि—लाभ, यश—अपयश आपके कर्म व ईश कृपा पर निर्भर है। उपाय तो इतना ही कार्य करते हैं कि जैसे एक पाईप में कोई कंकड़ फँसता है तो जल का प्रवाह अवरूद्ध होता है। यदि उस कंकड़ को हटा दें तो पानी पूरे प्रवाह से आएगा।

मेरे विचार से उपाय का अर्थ ऊर्जा का उपयोग है, क्योंकि ग्रह कोई ठोस व्यक्ति विशेष न होकर राशियों या अन्य पार्थिव कणों, जैसे—मिट्टी, चट्टान, गैस इत्यादि के पिंड मात्र हैं। प्रत्येक व्यक्तिपर उन राशियों का कम या अधिक प्रभाव पड़ताहै। हम उपायों द्वारा इस न्यूनाधिकता को सम करते हैं, जो कार्य सिद्धि में सहायक होती है।

उपायों के पीछे गहन विज्ञान छिपा है। जैसे पीली हल्दी की गाँठ को पूजा करके अपने पास रखने से धन शुभता का मार्ग प्रशस्त होता है। इसके पृष्ठ में देखें तो पीली हल्दी गुरु ग्रह का प्रतिनिधित्व करती है और गुरु धन व ज्ञान का कारक है। जब पूजा करते हैं तो हमारे दिमाग की तरंगे उसमें प्रविष्ट होकर उसका प्रभाव बढ़ाती हैं व उसे शरीर में रखने से यह शेष रंगों को अवशोषित करके पीले रंग को प्रभावी बनाती है, जिससे हमारे शरीर या उस स्थान पर विशेष औरा बनती है, जो अनुकूल होकर उससे संबंधित तत्वों को आकर्षित करती है। इसमें हमारी आस्था व विश्वास जितना ज्यादा होगा, उतनी ही अधिक औरा (आभामण्डल) बढ़ेगा व आपसे संबंधित व्यक्ति/वस्तु स्वतः ही अनुकूल होगी।

टोने—टोटके, तंत्र—मंत्र पर हजारों पुस्तकें उपलब्ध हैं। अनेक खर्चीले उपाय व्यक्तियों द्वारा करवाए जाते हैं, परंतु यह पुस्तक भारतवर्ष की पहली ऐसी पुस्तक होगी, जिसमें सभी समस्याओं को सहज सुलभ छोटी—छोटी सामग्री द्वारा प्रयोग करवाकर दुर्लभ से दुर्लभ कार्य सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

भरत बोधा :—

विगत कई वर्षों से मैं ज्योतिष के क्षेत्र से जुड़ा हुआ हूँ। जातकगण विभिन्न प्रकार की अपनी—अपनी समस्याएँ हमारे समक्ष लाते हैं, जहाँ तक संभव होता है, वहाँ तक ज्योतिषिय उपायों के द्वारा हम उनकी समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास करते हैं। हमारे द्वारा बताए गए उपाय शास्त्रीय पद्धति के आधार लोक प्रचलित उपायों एवं प्रचलित टोटकों के आधार पर होते हैं। मेरे परम मित्र श्री राजेश वर्मा जी जो देश के जाने—माने ज्योतिषि हैं, उनके साथ एक दिन उपायों को लेकर चर्चा के दौरान ही उन्होंने मेरे समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि क्यों नहीं हम इस विषय पर एक पुस्तक लिखें, जिससे आम जनता लाभान्वित हो सके। उन्होंने मुझे सुझाया कि हमारे इर्द—गिर्द जितनी भी प्राकृतिक वस्तुएँ हैं, जो सुलभ रूप से उपलब्ध हैं, चाहे वे खाने—पीने से संबंधित हों, चाहे दैनिक दिनचर्या में काम आने वाली वस्तुएँ हों या अन्य वस्तुएँ, उनका भी अपना ही प्रभाव होता है। उनका हम किस प्रकार से उपायों में प्रयोग कर सकते हैं? उन सभी वस्तुओं को लेकर अपने विषय की पुस्तक की सामग्री बनाए तो उत्तम रहेगा। हमने अपनी पुस्तक का नामाकरण भी **"सुलभ सामग्री दुर्लभ प्रयोग"** उसी आधार पर रख दिया है। उसी दिन से हमने इस विषय—वस्तु पर कार्य प्रारंभ कर दिया तथा हमारे देखने में आया कि इन सभी वस्तुओं का किसी—न—किसी तरह से वैदिक उपायों में, लोक प्रचलित उपायों में एवं तंत्र—मंत्र में भली—भाँति प्रयोग होता है। हमने एक—एक वस्तुओं को लेकर भिन्न—भिन्न

प्रकार के कष्टों को दूर करने हेतु उपायों में उनका प्रयोग किस प्रकार से करना है, इसको सरल रूप से समझाया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारतवर्ष की इस अनूठे विषय पर यह पुस्तक उस समुद्र की तरह है, जिसमें अनेकानेक नदियाँ समाहित हैं। यह एक अलग प्रकार की अनोखी पुस्तक है, जिससे सभी लोग लाभान्वित हो सकेंगे।

श्रीमती संतोष कुमावत :–

जीवन में चमत्कार नाम की कोई चीज नहीं होती, बल्कि प्रकृति प्रदत्त प्रत्येक वस्तु स्वयं में चमत्कार है। मेरे विचार से सत्य केवल वही नहीं है, जो प्रत्यक्षतः दिखता है, बल्कि सत्य वह भी है, जो दिखता नहीं है, परंतु अनुभूत है। आज की कल्पना कल का सत्य हो सकती है।

यहाँ दिए गए सभी उपाय शास्त्रीय पुस्तकों, पारम्परिक स्तर पर गाँवों–कस्बों में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रक्रियाओं, ओझाओं, वैद्यों एवं बुजुर्गों आदि से प्राप्त किए गए हैं और प्रमाणिक हैं, परंतु सभी हमारे द्वारा परीक्षित नहीं हैं। इनमें से अनेकों क्रियाओं का प्रयोग हमारे द्वारा किया गया है व अपने प्रशंसकों और लोगों को प्रयोग करवाया जाकर लाभान्वित होते देखा गया है। अतः हमें यह विश्वास है कि शेष उपाय भी प्रमाणिक ही होंगे।

॥ शुभमस्तु ॥

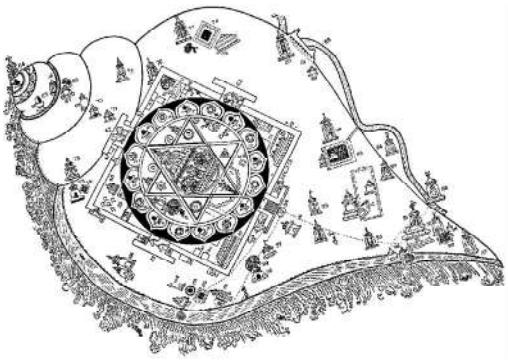

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः॥

सुलभ सामग्री दुर्लभ प्रयोग

❁ विषय सूची ❁

विषय सूची		पेज संख्या
1. विवाह एवं प्रेम संबंधी प्रयोग	-	5
2. शीघ्र विवाह कैसे हो	-	6
3. प्रेम प्राप्ति हेतु प्रयोग	-	7
4. नजर भय व भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति हेतु प्रयोग	-	8
5. विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति हेतु	-	12
6. रोग नाशक वनस्पतियाँ	-	33
7. विभिन्न राशियों के लिए लक्ष्मीदायक प्रयोग	-	35
8. दो ग्रहों की अनिष्टकारी युति के उपाय	-	37
9. महिलाओं के करने के लिए विशेष वास्तु नियम	-	38
10. यह न करें	-	39
11. ग्रहों के सामान्य एवं लाल किताब के टोटके	-	40
12. ग्रह बाधा दोष निवारण हेतु	-	47
13. ऋण मुक्ति एवं सुख-समृद्धि प्राप्ति के उपाय	-	49
14. लक्ष्मी कहाँ रहती है	-	57
15. लक्ष्मी कहाँ नहीं रहती है	-	59
16. संतान प्राप्ति एवं गर्भधारण हेतु विशेष प्रयोग	-	61
17. उत्तम शिक्षा हेतु विशेष प्रयोग	-	64
18. विभिन्न प्रकार के धर्म एवं कर्मकाण्ड संबंधी प्रयोग	-	66
19. आकर्षण एवं वशीकरण संबंधी प्रयोग	-	69
20. शत्रुओं के नाश एवं वशीकरण संबंधी विभिन्न प्रकार के प्रयोग	-	72
21. घर एवं परिवार संबंधी प्रयोग	-	74
22. छोटे बच्चों संबंधी समस्यायें एवं उनके प्रयोग	-	77
23. सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए प्रयोग	-	78
24. विभिन्न प्रकार के जानवरों तथा विष एवं नशा संबंधी प्रयोग	-	80
25. विभिन्न पदार्थों व प्रयोजनों हेतु शिवलिंग	-	82
26. व्यापार, नौकरी व आजीविका के लिए प्रयोग	-	84
27. 84 प्रकार के रत्नों और उपरत्नों की जानकारियाँ	-	88
28. फेंगशुई और वास्तुदोष से संबंधित जानकारियाँ	-	94
29. सुलेमानी हकीक के बारे में जानकारी	-	101
30. विभिन्न प्रकार के सामान्य समस्याओं के लिए उपाय	-	102
31. विभिन्न प्रकार के शंख एवं उनके प्रयोग	-	105
32. समृद्धिदाता मोती शंख	-	108
33. शंख की स्थापना	-	109
34. शंख के वैज्ञानिक पहलू	-	109
35. शंख के प्रकार	-	111
36. शंख की उत्पत्ति	-	111
37. बिना औषधि रोग निदान : मुद्रा प्रयोग	-	112
38. पिरामिड के प्रयोग	-	115
39. शालिग्राम के बारे में जानकारी	-	116
40. पूजा एवं उपासना में काम आने वाले विभिन्न प्रकार की करमुद्रायें	-	119
41. क्या-क्या कब न खाएं	-	124
42. इस पुस्तक के बारे में लेखकों के विचार	-	125